हिमाचल प्रदेश
में
गुग्गा परम्परा

हिमाचल प्रदेश
में
गुग्गा परम्परा

मुख्य संपादक

बी॰आर॰ जसवाल

संपादक

डॉ॰ कर्म सिंह

संपादन–प्रकाशन सहयोग

सूनृता गौतम

हिमाचल कला संस्कृति भाषा अकादमी

क्लिफ एण्ड एस्टेट: शिमला – 171001

ISBN : 81–86755–60–8

प्रकाशक : सचिव
हिमाचल कला संस्कृति भाषा अकादमी
शिमला –171001 (हि.प्र.)

संस्करण : 2010

मूल्य : 165.00 रुपये

कम्पोजिंग : रविन्द्र नाथ

मुद्रक : ईशान ऑफसेट एण्ड लेज़र प्रिंटर्स
नवीन शाहदरा, दिल्ली–110 032

Himachal pradesh mein Gugga Parampra
Published by : **B.R Jaswal Secertary**
Himachal Academy of Arts Culture & Languages, Shimla-1
Price : Rs 165/- Edition 2010

दो शब्द

देवों की भूमि हिमाचल में अनेक देवी देवताओं की पूजा की जाती है। यह भूमि अनेक ऋषि मुनियों की तपस्थली रही है। शैव, शाक्त तथा वैष्णव परंपराओं का हिमाचल की लोक संस्कृति में विशेष स्थान है। यहां अनेकों देवी देवताओं तथा सिद्धों व नाथों के मंदिर स्थापित हैं। यहां के देवालयों में विभिन्न पर्वों के अवसर पर मेलों का आयोजन होता है। यहां की धार्मिक मान्यताओं में अन्य पूजित देवी–देवताओं के साथ गुग्गा के प्रति भी विशेष श्रद्धा व आस्था है। गुग्गा नवमी के अवसर पर श्रद्धालु अपनी मन्नतें पूरी होने पर गुग्गा देवता को अपने घर में बुलाते हैं तथा गुग्गा देवता अपनी मंडली सहित पधारते हैं और पूजन के साथ गुग्गा की गाथा गाई जाती है।

हिमाचल प्रदेश के चंबा, कांगड़ा, हमीरपुर, बिलासपुर, ऊना, सोलन शिमला तथा सिरमौर आदि जिलों में गुग्गा परंपरा का प्रचलन है।

हिमाचल प्रदेश के लोकसाहित्य में, रामायण, महाभारत, ऐंचली, भर्तृहरि, गुग्गा, बूढ़ी दिवाली, बरलाज आदि से सबंधित अनेक ऐतिहासिक, तथा धार्मिक गाथाएं प्रचलित हैं। अतः इन लोकगाथाओं का संरक्षण, प्रलेखन तथा प्रकाशन किया जाना अत्यंत महत्वपूर्ण तथा उपयोगी भी है।

हिमाचल अकादमी ने प्रदेश की पारंपरिक सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण तथा प्रलेखन और प्रकाशन की दिशा में कुछ सार्थक प्रयास किए हैं।

हिमाचल अकादमी द्वारा लोक संस्कृति तथा देव परंपरा से संबंधित "कुल्लू देव समागम" "मण्डी देव मिलन" "मणिमहेश" तथा "जालन्धर पुराणम्" आदि पुस्तकें प्रकाशित की गई हैं। इसी कड़ी में **हिमाचल प्रदेश में गुग्गा परंपरा** पुस्तक का प्रकाशन एक प्रशंसनीय कार्य है। अकादमी की इन गतिविधियों से लोकपरंपराओं का संरक्षण, प्रलेखन तथा प्रचार–प्रसार हो सकेगा। मैं पुस्तक की लोकप्रियता की कामना करता हूं।

प्रो॰ प्रेम कुमार धूमल
मुख्यमन्त्री, हिमाचल प्रदेश
एवं अध्यक्ष हिमाचल अकादमी

प्राक्कथन

हिमाचल प्रदेश को प्राचीन काल से ही देवी देवताओं की भूमि मानाजाता रहा है। यह पुण्य भूमि पौराणिक काल में असंख्य ऋषियों–मुनियों की भी तपस्थली रही। अतः यहां अनेक ऋषियों के मंदिर स्थापित हैं तथा उनकी पूजा की जाती है। कालान्तर में जिन दिव्य आत्माओं ने अपने अलौकिक तेज एवं पराक्रम से जन कल्याण के अपूर्व कार्य किए उनके भी मंदिर स्थापित हुए तथा उन्हें देवता मानकर पूजा जाने लगा।

इसी परंपरा में गुग्गा के प्रति भी अपार आस्था, श्रद्धा तथा विश्वास होने के कारण वे भी भारतीय जनमानस में देवता के रूप में प्रतिष्ठित हुए तथा राजस्थान से लेकर हिमाचल प्रदेश तक उनके मंदिर स्थापित हुए। इन मंदिरों में गुग्गा नवमी तथा अन्य पर्व त्यौहारों के अवसर पर मेले लगते हैं। गुग्गा पूजन की अनेक परंपराएं हिमाचल प्रदेश के जनजीवन के साथ जुड़ी हुई हैं तथा यहां के लोगों द्वारा पूरी श्रद्धा, भक्ति और आस्था के साथ उन परंपराओं का निर्वाह किया जाता है।

हिमाचल प्रदेश के लोक साहित्य में अनेक ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, धार्मिक तथा सामाजिक घटनाओं से जुड़ी गाथाएं, झेड़े तथा लोकगीत प्रचलित हैं। यद्यपि इस प्रदेश ने अपनी सांस्कृतिक विरासत को संजोकर रखा हुआ है पुनरपि कुछ महत्वपूर्ण लोक साहित्य धीरे–धीरे लुप्त होता जा रहा है। अनेक नामी कलाकार काल के विकराल गाल में समाते जा रहे हैं और नई पीढ़ी इन परंपराओं को अपनाने में उदासीन है। अतः इन लोकगाथाओं का संरक्षण, प्रलेखन तथा प्रचार–प्रसार अत्यन्त आवश्यक तथा समयोपयोगी है।

हिमाचल प्रदेश की लोक संस्कृति से संबंधित विषयों पर पुस्तकों का प्रकाशन अकादमी की एक महत्वपूर्ण योजना है। सीमित संसाधनों के होते हुए भी अकादमी द्वारा अब तक हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, उर्दू तथा पहाड़ी भाषा में लगभग एक सौ पुस्तकों का प्रकाशन किया जा चुका है।

इसी कड़ी में **हिमाचल प्रदेश में गुग्गा परंपरा** पुस्तक का

प्रकाशन किया गया है। इस पुस्तक में प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में प्रचलित गुग्गा गाथा को हिन्दी व्याख्या सहित प्रस्तुत किया गया है जिससे मूल गाथा भी सुरक्षित रह सकेगी तथा मूल कथानक को भी समझना आसान हो जाएगा।

उन सभी लेखकों का सादर आभार जिनके प्रयास से पुस्तक तैयार हो आपके हाथों में आई हैं। साथ ही हिमाचल अकादमी को बधाई।

पुस्तक से संबधित आपके बहुमूल्य सुझावों का अकादमी स्वागत करती है।

मनीषा नन्दा
भा॰ प्र॰ से॰
प्रधान सचिव
(भाषा कला एवं संस्कृति)
हिमाचल प्रदेश सरकार

हिमाचल प्रदेश में गुग्गा परम्परा

बी.आर. जसवाल
सचिव
हिमाचल कला संस्कृति भाषा अकादमी

वीर गाथायें, लोक कथाएं तथा लोक गीत चिरकाल से ही धार्मिक आस्था, सामाजिक चेतना तथा संस्कृति के संवाहक रहे हैं। हिमाचल प्रदेश का पूरा क्षेत्र इन से भरा पड़ा है। राजा रसालू, गोपी चंद, शिव गाथा, ऐंचली, झेड़े, भर्तृहरि, पूर्ण भक्त, श्रवण कुमार, लोक रामायण, लोक महाभारत, हारें, वारें तथा गूग्गा गाथा इत्यादि ऐसी लोक गाथाएं हैं जिनका हिमाचल के जनमानस पर गहरा प्रभाव है तथा वर्ष भर विभिन्न अवसरों पर मंझे हुए कलाकारों द्वारा वाद्य यन्त्रों सहित इनका गायन होता है। ये गाथाएं अतीत को वर्तमान से तथा वर्तमान को भविष्य से जोड़ने के दृष्टिगत सदियों से अनवरत रूप में लोक साहित्य के संरक्षण की भूमिका निभा रही हैं।

गूग्गा गाथा एक ऐसे युग पुरुष की शौर्य गाथा है जिसका न केवल ऐतिहासिक महत्त्व है अपितु लोक में अगाध धार्मिक श्रद्धा व विश्वास भी है। गुग्गा का प्रभाव राजस्थान के मारूप्रदेश से हरियाणा, दिल्ली, पंजाब, जम्मू, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड के जौनसार बावर क्षेत्र के साथ–साथ हिमाचल प्रदेश के अधिकतर भागों में प्रत्यक्ष रूप से दृष्टिगोचर होता है। हो सकता है कि गूग्गा राणा हिमाचल प्रदेश के इस क्षेत्र में नहीं आए हों परन्तु यहां के लोकमानस में इनके प्रति बहुत धार्मिक श्रद्धा है। गुग्गा इनके कण–कण में बसे हैं।

गूग्गा गाथा की प्रामाणिकता के अनुसार राजस्थान (मारुदेश) के दारूहेड़ा (दरेड़ा) रियासत का ऐंसर नामक राजा था। उसके दो पुत्र जेवर तथा नानक उत्पन्न हुए। साथ लगती गज़नी रियासत के राजा की बाछल और काछल दो कन्यायें थीं। जेवर का विवाह बाछल तथा काछल का विवाह नानक के साथ सम्पन्न हुआ परन्तु कई वर्षों तक दोनों बहनों को

संतान सुख प्राप्त नहीं हुआ जिससे राजा का चिंतित रहना स्वभाविक ही था। दोनों ने संतान प्राप्ति के लिए कई देवी देवताओं से मन्नतें मांगीं परन्तु फिर भी उन्हें संतान सुख प्राप्त नहीं हुआ।

रिकार्डित गाथा के अनुसार सृष्टिकर्ता ने सबसे पहले अपने हाथ की मैल समुद्र में मिला दी, उस मैल को मच्छली ने खाया और उसके पेट से मत्स्येन्द्रनाथ (मच्छेन्द्रनाथ) की उत्पत्ति हुई तथा मच्छेन्द्रनाथ की करामात से गुरु गोरख नाथ गोबर के उपलों से पैदा हुए। फिर गुरू गोरखनाथ ने धूड़ूनाथ, चरपत नाथ, मंगल नाथ, गोदड़ी सिद्ध, भरथरी सिद्ध, गुलेरिया सिद्ध, काइनी चेला, नौ लाख शंख इत्यादि बनाये।

बाछल के सिर के केश सफेद होने को आए। संतान प्राप्ति के लिए रानी बाछल ने बारह वर्षों तक गुरू गोरख नाथ की तपस्या की। उसने धरती को अपनी शैय्या बनाया, एक पैर के बल खड़ी रही, बिना नमक भोजन किया, जीभ से चौका लगाया तथा बारह वर्षों तक सिर के केश खुले रखे ताकि गुरू गोरखनाथ उसकी भक्ति से प्रसन्न होकर बाछल को संतान सुख प्रदान करें।

गुरू गोरख नाथ ने बाछल की भक्ति को देखकर आंखें खोलीं और इसका कारण पूछा। बाछल ने गुरू गोरख नाथ को सारी व्यथा सुनाकर संतान प्राप्ति की प्रार्थना की तथा सिद्ध गुलेरिये द्वारा बाछल को दी गई पोशाक को पहन कर गुरूगोरख नाथ के डेरे आने को कहा। बाछल बहुत प्रसन्न थी कि गुरु ने उसे संतान प्राप्ति हेतु अपने आश्रम में बुलाया है। इतने में इस सारी बात का भेद बाछल की बहन कांछल को लग गया। काछल बहुत चालाक थी। उसने छल से अपनी बहन बाछल को अगली सुबह कहा कि इस पोशाक को मुझे दे दे कि मैंने कैलू देवता की पूजा के लिए जाना है। बाछल ने विश्वास कर वह पोशाक काछल को दे दी। अगली सुबह कांछल उस पोशाक को पहनकर गुरु गोरखनाथ के डेरे चली गई तथा उनसे दो पुत्ररत्न प्राप्ति का वरदान लेकर वापस घर आ गई और पोशाक बाछल को लौटा दी।

उसके बाद उस पोशाक को पहन कर बाछल गुरु के आश्रम में संतान प्राप्ति का वर मांगने गई तो गुरु ने कहा कि कल ही तो तुम्हें दो वर दिए थे, आज तू फिर आ गई। परन्तु बाछल ने कहा कि मुझे गुरु जी ने संतान प्राप्ति का वर नहीं दिया, हो सकता है बाछल की बहन काछल छल कपट से ये वर ले गई हो। परन्तु सिद्ध गुलेरिया की

शिनाख्त पर यह पता चला कि बाछल के पुत्र प्राप्ति हेतु गुरु ने वर नहीं दिया जबकि काच्छल वरदान को धोखे से ले गई।

बाछल द्वारा विनती करने पर गुरु गोरखनाथ उसे पुत्र रूपी वरदान देने के लिए राजी हो गए। इस हेतु गुरु गोरख नाथ ने पाताल लोक तथा इन्द्र देव से उधार मांग कर एक वर लाया तथा इहलोक में आ गए और अपनी झोली से निकाल कर रानी बाछल को एक धागा तथा गुगलफल देकर उसे आशीर्वाद दिया कि इस फल को खाकर तेरे गर्भ से बड़ा शूरवीर तथा बलवान पुत्र पैदा होगा जो सांपों का दुश्मन होगा तथा जन्म लेने पर उसका नाम गूग्गा मल रखना और वह सदा जवान ही रहेगा। रानी बाछल गुरु से फल ग्रहण कर अपने घर वापिस आई और पत्थर की शिला पर पीस कर उस फल को खा लिया और गर्भ धारण किया। शिला को बाछल की मिश्राइन, दासी व घोड़ों ने भी चाट लिया और उन सभी ने गर्भ धारण कर लिया।

विचित्र रूप से बारह महीनों के गर्भ धारण के पश्चात् बाछल ने सुबह के समय गूगामल को जन्म दिया। गूग्गामल इतना करामाती था कि उसके जन्म के समय अंधी दाई की आंखों में ज्योति लौट आई तथा उसके साथ–साथ मिश्राइन के गर्भ से नाहर सिंह, दासी से गुगड़ी तथा घोड़ों ने नीला नामक घोड़ा पैदा हुए। इससे पूर्व काछल के गर्भ से भी अर्जुन–सुर्जन दो लड़के पैदा हो चुके थे जो गूग्गा मल के मौसेरे भाई थे।

समय के साथ–साथ गुगामल बड़ा होता गया। राज दरवार में खुशी का माहौल था। इतने में गौहड़ बंगाल के राजा मालप संजय की पुत्री सुरियल के साथ गूग्गा मल का विवाह तय हो गया। विवाह में बड़ी अड़चनें आई। अर्जुन–सुर्जन मौसेरे भाईयों ने गूग्गा को बड़ी परेशानी में डाला। गुरु गोरख नाथ की कृपा से गूग्गा मल का विवाह सम्पन्न हो गया तथा जब वह गौहड बंगाल से अपनी पत्नी सहित मारुदेश वापिस आ रहा था तो अर्जुन–सुर्जन ने गूग्गा से मारु देश की आधी सम्पत्ति लेने के लिए लड़ाई शुरू कर दी।

अर्जुन–सुर्जन ने दिल्ली के राजा अपने नाना तथा मामा की फौजों की सहायता से गूग्गा मल पर आक्रमण की योजना बनाई जिसमें बड़े–बड़े योद्धा तथा वीरांगनाएं शामिल थीं। इस षड्यन्त्र का पता गुगड़ी को गूग्गा के हीरमल नामक तोते के संदेश द्वारा चला तथा वह भी गूगा राणा के पक्ष में उतर आई। नाहर सिंह, गुगड़ी तथा नीले घोड़े ने अन्त

तक गूगा का साथ दिया। लडाई में लाखों की संख्या में योद्धा मारे गए। अर्जुन–सुर्जन दोनों मौसेरे भाई गूग्गा राणा के हाथों मारे गए जिसकी सूचना जोगण ईल ने रानी बाछल को दी। बाछल ने जोगण ईल की रक्तरंजित लाल चोंच को देखकर कहा कि तूने किसका मांस खाया। इस पर ईल ने उत्तर दिया कि राजी रहे गूगा राणा जिसने हमें खूब मानव मांस खिलाया। फिर भी बाछल को विश्वास नहीं हुआ कि गूगा ने अपने मौसेरे भाईयों अर्जुन–सुर्जन का लड़ाई में वध कर दिया है। युद्ध क्षेत्र में गूगा ने अपने मौसेरे भाईयों का अंतिम संस्कार कर दिया तथा अपनी पगड़ी फाड़ कर उन पर कफन डाला। इस सब का गूगा को भी दुःख हो रहा था।

कुछ दिनों बाद गूगा अपने घर वापिस आ गया तो उसकी मां ने युद्ध वृत्तांत सुनाने हेतु उसे कहा। गूगा ने वृत्तांत शुरू किया–"अपार धन सम्पत्ति का विनाश हुआ लाखों योद्धा मारे गए, मौसेरे भाई अर्जुन–सुर्जन मारे गए।" परन्तु बाछल के विश्वास नहीं हो रहा था कि जिन भानजों को उसने बचपन में पाल पोस कर बड़ा किया उन्हें उसी के पुत्र गूगा ने मार डाला। इतने में गूगा ने अर्जुन–सुर्जन के कानों की बालियां, हाथ के कंगन, गले की कंठी तथा कटे सिर थाली में रखकर अपनी मां बाछल के सामने रख दिए। यह सब देख बाछल नयन भर–भर कर रोने लगी और उसे बहुत दुख हुआ।

बाछल ने दुःखी मन से गूगा को शाप दे दिया और कहा कि तू घर से चला जा और वापस यहां नहीं आना। माता की आज्ञा को शिरोधार्य कर गूगा रानी सुरियल के महलों को छोड़ कर नीले घोड़े पर सवार होकर ड्योढ़ी से बाहर निकल गया तथा दूर जाकर ऊंचे टीले पर आकर फलाही के पेड़ के पास धरती माता को नमस्कार कर कहा कि "हे धरती माता! मुझे अपने आगोश में समा लो।" वहां पर रहीम नामक अंधा माली गऊएं चरा रहा था। गूगा ने उसे कहा कि तू इस स्थान पर मेरी माढ़ी का निर्माण करना। मैं तेरी आंखों में ज्योति भर दूंगा तथा युगों–युगों तक भोजन उपलब्ध करवाऊंगा। गूगा अपनी मां के कटु वचनों के फलस्वरूप धरती में छिप जाना चाहता था परन्तु धरती माता ने उसे कहा कि तू हिन्दू है इसलिए मैं तुम्हें अपने में नहीं छिपा सकती अगर तू मुसलमान होता तो छुपा लेती। अगर तू छिपना ही चाहता है तो मक्का मदीना जा कर इस्लाम धर्म का कलमा पढ़कर आओ।

इस तरह गूगा राणा ने मक्का मदीना जाकर कलमें पढ़े और वापिस आकर नीले घोड़े सहित धरती के आगोश में छिप गया। इस सारी घटना का वृत्तांत रहीम माली ने बाछल को सुनाया। बाछल वहां रोती हुई आई और विलाप करने लगी। सुरियल रानी को भी गूगा राणा के धरती में छिप जाने की सूचना मिली तथा वह बिजली से प्रार्थना करने लगी कि वह गूगा राणा को ढूंढे। बिजली उत्तर दिशा गई, दक्षिण गई, पश्चिम गई, पूर्व गई परन्तु गूगा कहीं दिखाई नहीं दिया। अंत में हार कर पाताल लोक गई वहां देखा कि गूगा वहां जल देवता ख्वाजा के साथ चौपड़ खेलने में व्यस्त था। बिजली ने गूगा को सुरियल की व्यथा सुनाई तथा धरती पर चलने को कहा। ख्वाजा के कहने पर गूगा धरती पर एक वर्ष में नौ दिनों तक आने के लिए तैयार हो गया। इस प्रकार पाताल लोक से बिजली आगे–आगे चली तथा गूगा राणा नीले घोड़े पर चढ़ कर धरती की और चला और पहुंच गया मारू देश।

मारू देश पहुंच कर गूगा राणा ने अपनी पत्नी सुरियल से कहा कि नौ दिनों तक रात को कपिला गऊ के गोबर से चौका लीपा करो। जब तक चौका गीला रहेगा तब तक गूगा सुरियल रानी के साथ रहेगा। इस प्रकार प्रत्येक वर्ष गूगा राणा रक्षाबंधन के दिन से गूगा नवमी के दिन तक पाताल पुरी से चल कर धरती पर आता है। नौवें दिन गूगा के चले जाने पर उसकी मां बाछल को भी बहुत दुःख होता है और कहती कि 'अपनी औलाद को कभी शाप नहीं देना चाहिए जिससे सारी उम्र पछताना पड़े।'

वास्तव में गूगा राणा हिन्दुओं और मुसलमानों का सांझा आराध्य देव है। इसलिए हिन्दु इसे गूगा वीर तथा मुस्लिम गूगा पीर के नाम से पुकारते हैं। उपरोक्त तथ्यों से निश्चित रूप से ही सिद्ध होता है कि गूगा राज परिवार से संबंध रखता था। इसीलिए भी उसे गूगा राणा कहा जाता है। मुस्लिम आक्रान्ता मुहम्मद गजनवी के साथ भी गूगा राणा के युद्ध का वर्णन मिलता है। इस प्रकार गूगा का काल 12–13 वीं शताब्दी रहा होगा। ऐसा भी प्रमाण मिलता है कि गूग्गा राणा गऊ रक्षक रहा।

यह तो स्पष्ट हो ही चुका है कि हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा, हमीरपुर, बिलासपुर, शिमला के कुछ भाग सोलन, सिरमौर, कुल्लू तथा चम्बा इत्यादि जिलों में गूगा राणा के मंदिरों तथा मढ़ियों की भरमार है। इन मंदिरों तथा माढ़ियों में विभिन्न जातियों के लोग पूजा करते हैं।

प्रदेश में हजारों की संख्या में गूगा की मढ़ियां तथा मंदिर हैं जो जनमानस की आस्था के केन्द्र बिन्दु हैं।

हमीरपुर में लहड़ा, नारा, नादौन, धनेटा, अरधार, पट्टा बलोखर, महारल, ऊना में पंजपीरी, बिलासपुर का गूगा गेहड़वी, भ्याणू, शाहतलाई, दसलेहड़ा ज्वालामुखी के नजदीक कुटियारा, नाहन तथा शिलाई का गूगा मंदिर, शिमला स्थित गूगा मंदिर, चम्बा के गूगा मंदिर आदि प्रदेश की जनता के आस्था के केन्द्र हैं, जिनमें गूगा राणा सहित पांच पीरों की मूर्तियां स्थापित की गई हैं और धरोहर रूप में विद्यमान हैं।

गूग्गा गाथा का कथानक गूगा पर ही केंद्रित रहता है। हिमाचल के अधिकांश लोगों का गूगा आराध्य देव भी है। कुछ लोग अपने बच्चों के जमालू (मुंडन) गूगा मंदिरों में चढ़ाते हैं। गूगा को मीठा रोट चढ़ाया जाता है। रक्षा बंधन के नौ दिनों तक गूग्गा गाथा गायकों की टोलियां गांव–गांव जाकर रात को गूगा गाथा का गायन करती हैं। सारी रात डमरूओं की थाप और कांसे की थाली की आवाज़ पर गूगा गाथा गाई जाती है। आग का घियाना जला कर रात को मंडली गाई जाती है। गायक नौ दिनों तक नंगे पांव चलते सात्विक भोजन खाते हैं। उनके डमरूओं में राखियां तथा लाल डोरियां बंधी होती हैं। चेला लोग गूगा का रंग बिरंगा झंडा उठाकर आगे–आगे चलते हैं। गूगा मंदिर सांप का विष उतारने व जादू टोना के निवारण में भी सहायक हैं, ऐसी जनमानस की आस्था है। इस प्रकार गूगा की शौर्य गाथा का हिमाचल के जनमानस पर विशेष प्रभाव है।

इस पुस्तक में प्रकाशित उन सभी विद्वानों का आभारी हूं जिन्होंने हमें शोधात्मक लेख भेजे। मैं आभारी हूं जिला हमीरपुर के महारल–समैला के बसन्त राम एण्ड पार्टी का, जिनके सौजन्य से तीन दिनों तक मैंने स्वयं पूरी गूगा गाथा को रिकार्ड किया। यह गाथा इस पुस्तक में 'हमीरपुर जनपद में गुग्गा परंपरा' शीर्षक से प्रकाशित की गई है। मैं आभारी हूं भाषा विभाग के पूर्व निदेशक श्री के. आर. भारती का, जिनकी प्रेरणा से हमीरपुर क्षेत्र की गुग्गा गाथा को रिकार्ड कर पांडुलिपि तैयार की जा सकी तथा इस पुस्तक को मूर्त रूप देने में हमें सफलता मिली।

'हिमाचल प्रदेश में गुग्गा परम्परा' पुस्तक में लेखकों के शोधपूर्ण आलेख शामिल किए गए हैं। इन लेखों में कहीं–कहीं कथानकों तथा कुछ प्रसंगों में भिन्नता है। यद्यपि गाथा का आधार प्रचलित परंपरा है

पुनरपि लोक प्रसंगों की समीक्षा तथा विश्लेषण का दृष्टिकोण लेखकों का अपना है। आलेखों की मौलिकता तथा लेखकीय विचारों से अकादमी तथा संपादक की सहमति आवश्यक नहीं है। हमारा लक्ष्य पारंपरिक लोक गाथाओं का संरक्षण तथा प्रकाशन है।

प्रो॰ प्रेम कुमार धूमल जी, माननीय मुख्यमंत्री हिमाचल प्रदेश एवं अध्यक्ष हिमाचल अकादमी के आशीर्वाद तथा प्रेरणा के लिए हम विशेष आभारी हैं।

श्रीमती मनीषा नन्दा, मा॰ प्रधान सचिव भाषा कला एवं संस्कृति हिमाचल प्रदेश सरकार एवं उप सभापति कार्यकारी परिषद् के भी हम विशेष आभारी हैं जिनके मार्गदर्शन से इस पुस्तक का प्रकाशन सम्भव हो पाया है।

साथ ही में अकादमी के अनुसंधान अधिकारी डॉ0 कर्म सिंह तथा श्रीमती सृनूता गौतम और पुस्तकालयाध्यक्ष श्री देवराज शर्मा का भी इस पुस्तक के संपादन तथा प्रकाशन कार्य में सहयोग के लिए आभार व्यक्त करता हूं।

यह शोध ग्रन्थ शोधार्थियों तथा सुधीजनों के लिए सहायक होगा, ऐसी मैं कामना करता हूं।

विषयानुक्रम

गूगा जी

राहुल सांकृत्यायन

गौओं की रक्षा में प्राण देने वाले गूगाजी कुरु और राजस्थान के ही आराध्य वीर नहीं हैं, वह चंबा और दूसरे पहाड़ी प्रदेशों में देवता की तरह पूजे जाते हैं। गूगाजी को गुरु गोरखनाथ का शिष्य बतलाया जाता है। गूगाजी के पँवाड़े को गाने वाले आरंभ करते कहते हैं :

देवी तो सिमरां सारदा हे, जागो मैया देगी रंगीलो ज्ञान।
बागउ सिमराँ पीरने ए, जागो मैया डिग्यां बंधावगी धीर।

बोल्या गोरखै जोगी, अबकी तो बागड रै चालां।
जोगीआं ने नांद तो बजाया है, अबकी।
मेख तेरो मरियो तिसायो है।
बाछल माता न्हाण सँजोया, जोगीडांने नूत जिमावां है।

पैले नांव राम को लेइये हे, छत्रियो दूजे ने वीर सूर को हे।
नगरकोट की ज्वालां सिमरां हे।
ओ सरियल को भरतार हे, चेला गोरखनाथ जोगी का हे।
बण सिर पर धर दियो हाथ हे, कर लियो आपसे सवायो हे।

जाग रे झेंबर का जाया अम्मां बाछल जगावे होया बिहाण रै
थे जाग्या थारा जोडा भाई जाग्या, गुगा राणा होया बिहाण रै।
पून रै पाणी जाग्या सरियल गोरी जागी, गूगा होया बिहाण रै।
थें जाग्या सारी दुनियां जागी, झेंवर का जाया होया बिहाण रै।

"सावण का सतरे गयाजी, आगी रै नवली रै तीज।
सात सहेल्यां क झूल रै, सासूजी मेरी, जाउँगी समंद–तलाब।"

"सास की बरजी बउ ना रवैगीजी, जाउंगी समंद–तलाब।
बरजी तो हटकी ना रवैगी, सरियल गोरी जावैगी समंद–तलाब।
अपनो जोडाको बैर से, एव्वड मेरी आवैगी लखन जडाव।
किरत्यां को सो झूलरो रै भैया मेरा टूट्यो तालके मांय।
गूगा के दुश्मन भाई अरजन–सरजन ताक में हैं –"
"घुडलांतो काठी मांडल्यो रै बीरा मेरा, चालांगा डूंगोडी ढाब।
मालो तो लेल्यो बीजलसार को रै बीरन मेरा, असल गैंडे की ढाल।
कमर कटारो बांध ल्यो रै छोरो मेरो, सोरठडी रै तलवार।
बैरी को कालो कुत्तो मारिये रै बीरण मेरा, आगी सागी की नार।
कर घोडा असर कै रै भैया मेरा, गेर्या सैयां का मांय।
और सहेली सब भाजगी रै मरदो मेरा, सरियल समंद–तलाब।"
"किण राजा की बहू–बेटियां कहियेजी, किण घरां की तू नार ?"
"कोई तो लागै म्हारा देवरियौ जी, कोई तो लागै जेठ।
राजा संजय की बेटी–पोतियां कहिये जी, थारै भाई घर नार।"
छैल बछेली काढ़ी नो मरीकी रै, नो भलकांकी नाथ।
परैसे आवै हीरू गूजरी रै मरदो, कोटां मैं पड़ी रै पुकार।
रोवती सी ठिणकती सी सरियल गोरी आवै सासु जी के पास।
"बरजी तो इटकी न रही ए बउवड मेरी, क्यूं गई समंद–तलाब ?"
"मेरी उठा द्यो पोमचोजी सासू मेरी, उण सिरां की पाग।
लडूंगी रणखेत में ए सासू मेरी, जाय जोडा के साथ।"
"गूग्यो तो सूत्यो रंगमहल में ए सरियल गोरी, कूण जगावण जाए ?"
"कै जगावै भाई–भाणज़ा ए सासू मेरी, कै जगावै बाछल माय।"
दूध को भरियो बाट को भैया मेरा, गूगो जगावण जाय।
"काई तो ओडी पड़ी ए बाछल माता, काची तो नींद जगाय।
नाई कनै ललकारिये ए बाछल माता, पाणीडो गरम कराय।"
चंदन चौकी ढाल कर बाछल माता, हलहल न्हाण संजोय।

"माला तो ल्या दे सोवणी ए बाछल माता, लूं साहेब का नांव।
लीलो तो ल्या दे सिणगारक ए माता मेरी,
पांचो ल्या दे हथियार।"
"किण तो लीलै नै पीडियो रै मामा मेरा, कुण गरैगो भात।
घरै छे रे बाछल माता भाणज मेरा, वाही भरैगो तेरो भात ?"
भली तो पटकी हींच मैं रै बीरा मेरा, हो ग्यो मामैके साथ।
आगे तो मिल ग्यो रे भैया मेरे, हो रही रामो–राम।"
"किनसा, लीलैनैं पीडियो रै गूगा राणा, किन लगाया हथियार ?"
खांडो तो ले ल्यों बीजलसार को रै भैया मेरा, ले लो
सिरोही कटार।
खांडो तो दे दे मेरै हाथ मैं रै गूगा राणा, परखीज मेरा हाथ।"
"कइयां नै ल्या दूं सीपो तेजरौ रै जाहिर राणा,
कइयां नै पकड़ाउं खाट।।"
"दगै दगै सेना मरा दिये रै जोडा भायो, आवैगा एक हथियार।
"सौ घोड़ा की गारद उंछल रै बीरन मेरा, दगैसे मत ना मराय।"
कां को हाली बालदी रै भाामा पाली, किणकी चरावै गाय।"
"मत नी मारै गायांक कोरडा रै जोडा भैया, तन–तन छीजै मेरो मांस।
जो घणी चट बावडै तो जोडा मरदो, कर देगा कइयां की रांड।
भाामा पाली की बंध बांध ल्यो रै बीरो मेरो, कर ल्यो घोडां के लार।
परैस्यूं आवै हीरु गूजरी रै बाछल माता कोटा में पड़ी पुकार।
चूंटै रम्है बाछरु ए बाछल माता, रीति जावै छा की आस।
मूंधा पड़्या बिलोवणा माखन तेरा, कठैस्यूं ल्यावै गूगा खाय।"
जो गूगो मेरी बावडै रै हीरु बाई, दिन की करेगा रात।"
गूगा ने हमला बोल्या चाली भााही फौजां भागी दिल्ली की राह।
"मासी का जागा कर ल्यो बावणी रै, कर ल्यो दो–दो हाथ।"
अरजन–सरजन दोनूं मार कै रै, गूगो गाय ल्यायो साथ।

❐

हिमाचल में गुग्गा–इतिहास एवं परंपरा

डॉ० ब्रह्मदत्त शर्मा

हिमाचल प्रदेश के विभिन्न भागों में गुग्गा ज़हर पीर की लोक देवता के रूप में पूजा–अर्चना की जाती है। यहां के जनमानस में गुग्गा के प्रति अगाध श्रद्धा एवं विश्वास है। गुग्गा पीर, ज़हर पीर, गुग्गामल चौहान, राजाछत्री, गूगा राणा आदि कई नामों से लोकप्रिय है। सर्प–पूजा के साथ ही गुग्गा चौहान की पूजा का भी विधान है। इसका मूल कारण यह है कि उसमें सर्पदंश से व्यक्ति को नीरोग, स्वस्थ करने की अद्‌भुत शक्ति है। एक जनश्रुति के अनुसार गुरु गोरखनाथ गुग्गल में वासुकि नाग की झाग लाए थे और उसी से गुग्गे का जन्म हुआ था। इसीलिए उसके श्रद्धालु गुग्गल धूप जलाकर उसकी पूजा करते हैं और वह अपने श्रद्धालुओं पर प्रसन्न हो जाता है।

एक अन्य कथा प्रकारान्तर में वासुकि नाग ने तक्षक को गुग्गे की सहायता करने के लिए भी भेजा था। जैन धार्मिक–साहित्य में गुग्गा को एक शक्तिशाली बृहद्‌प्रचण्ड विषधर चित्रित किया गया है जिसने भगवान महावीर को तीन बार काटा था, परन्तु उन पर कोई भी प्रभाव नहीं हुआ था। तदुपरान्त खिन्न होकर गुग्गा (गो.भूमि, ग=जा) ने अपना फन बिल में डाल दिया और उसके शरीर को चींटियों ने खा लिया। यह सहनशक्ति और अहिंसा में गुग्गा की आस्था दिखाए जाने का आयास मात्र ही प्रतीत होता है। हमें निःसंकोच रूप में मान लेना चाहिए कि सर्प निवारण, दंशोपचार तथा वासुकि मित्र होने से ही गुग्गा का सर्पों के ऊपर प्रभुत्व रहा है। हिमाचल, पंजाब, हरियाणा और राजस्थान में गुग्गा चौहान के अनेक मंदिर है और गुग्गा नवमी के दिन श्रद्धालु मेले का आयोजन करते हैं। रक्षा–बन्धन से लेकर कृष्ण जन्माष्टमी तक घर–घर जाकर उसके जीवन की गाथा को बड़े ही सुन्दर और मार्मिक ढंग से गाते हैं।

गुड़गांव (हरियाणा) में गुग्गा चौहान

हिसार ज़िले के दारुहेड़ा ग्राम में जवार नामक मध्यवर्गीय चौहान

राजपूत रहता था (अन्य रूपान्तरों में उसे राजा कहा गया है)। उसने तथा उसकी पत्नी बाछला ने बारह वर्ष तक गुरु गोरखनाथ के शिष्य सदानन्द की सेवा की क्योंकि उनके यहां कोई संतान न थी परन्तु इसका भी कोई सुफल न मिला। तब सदानन्द तो वह स्थान छोड़कर चला गया, परन्तु एक बार गुरु गोरखनाथ अचानक वहां आ पधारे। उनके वहां पधारने से सूखे वृक्ष पुनः पुष्पित एवं पल्लवित हो गए। इस कौतुक को देखकर बाछला जोगी के दर्शन करने गई परन्तु जोगी ने स्त्री को देखकर आंखें बन्द कर लीं तथा मौन बैठे रहे। इतने में सदानन्द भी वहां आ गया। उसने गुरु की चमत्कारिक शक्ति का वर्णन बाछला के सामने किया। अंतिम आयास रूप बाछला ने उसके अंग की बंधी घंटी को छू लिया। इस पर योगी ने आंखें खोलीं और उससे पूछा कि तुम मेरी सेवा क्यों कर रही हो? बाछला ने संतान प्राप्ति का अपना अभिप्राय कह सुनाया। उसके अनुनय के उत्तर में योगी ने कहा कि संतान तुम्हारे भाग्य में नहीं है। यह सुनकर बाछला चिन्ता में डूब गयी परन्तु वह अपने हठ की पक्की थी। उसने पुनः बारह वर्ष गुरु गोरखनाथ की भक्ति की। बारह वर्ष बाद योगी का वहां पुनरागमन हुआ।

बाछला की बहन काछला की उससे नहीं बनती थी। अतः उसने अपनी बहन बाछला के वस्त्राभूषण धारण किए और योगी के समक्ष उपस्थित हो पुत्र प्राप्ति हेतु याचना की। गुरु गोरखनाथ उसके छद्म को जांच गए, परन्तु फिर भी उसे दो फल दिए और फल खाने पर दो पुत्र होने का वर भी। काछला प्रसन्न होकर बहन बाछला के पास पहुंची और कहा कि योगी जाने ही वाला है। यह सुनकर बाछला दौड़ती हुई उसके पास पहुंची और रोकर याचना दोहराई। योगी ने कहा कि मैंने तो तुम्हें पहले ही वर दे दिया है। इस प्रकार बाछला को पता चला कि काछला उसे धोखा दे गई है। उसकी निर्दोषता योगी भी जान गए और उन्होंने उसे अपनी गुथली में से थोड़ी गुग्गल निकाल कर दी और वर दिया कि इसे खाने से तुम्हारी इच्छा पूर्ण हो जाएगी। यह भी कहा जाता है कि यह गुग्गल वासुकि नाग के मुखफेन से भीगी हुई थी।

जेवार की सहोदरा सनीर देई को सात मास बाद गर्भ का पता चला तो उसने भाई के सामने बाछला के सतीत्व पर संदेह प्रकट किया। बांदी सावलदे की अनुनय तथा रानी के निष्कलंक होने का दावा करने पर भी जेवार ने पत्नी को पीट–पीट कर महल से बाहर निकाल दिया। तब बाछला बैलगाड़ी में अपने पितृगृह को चल पड़ी। सिरसा के मार्ग पर जब एक

सर्प–विवर के पास से गुज़री तो गाड़ी की ध्वनि सुनकर वासुकि नाग ने अपनी रानी को बताया कि गाड़ी में बैठी स्त्री के गर्भ में उसका शत्रु पनप रहा है। उस रानी के उत्प्रेरण से वासुकि ने अपने पुरोहित द्वारा आस्तीक (जन्मेजय के नागयज्ञ से सम्बद्ध) को बुलाया। वह वासुकि नाग का पौत्र था। उसे आदेश मिला कि बाछला को काटे। जब आस्तीक ने गाड़ी पर अपना फन फैलाया तो बाछला ने उसे धकेल कर गिरा दिया। तदुपरान्त आस्तीक ने गाड़ी खींचने वाले बैलों में से एक को डस लिया। इस समय वे दोपहर को विश्राम करने के लिए रुके थे। यह विपत्ति देखकर बाछला रोने लगी और रोते–रोते सो गई। स्वप्न में एक बालक ने उसे परामर्श दिया कि एक डोरा अपने सिर पर बांधे और उसका दूसरा सिरा बैल के सिर से बांध दे। जागने पर उसने ऐसा ही किया और बैल उठ खड़ा हुआ।

बाछला शीघ्र ही सुरक्षित अपने पितृगृह पहुंच गयी। यहां फिर एक बालक स्वप्न में दिखाई दिया और उसने उसे वापिस पतिगृह चलने का आदेश दिया। उसने कहा कि यदि वह अपने नाना के घर जन्म लेगा तो यह अपने माता–पिता तथा परिवार के लिए कलंक होगा। अतः वह उसके कहने के अनुसार पुनः पति के घर लौट आई और यहां जेवार ने उसे एक टूटी–फूटी झोंपड़ी रहने के लिए दे दी तथा नौकरों को उसकी ओर कोई ध्यान न देने का आदेश भी दे दिया। वहीं पर भाद्रपद की कृष्णपक्षीय अष्टमी को आधी रात के समय गुग्गे का जन्म हुआ। उस समय सारी कुटिया प्रकाशमान हो उठी और सेवारत अंधी वृद्धा दाई को दृष्टि प्राप्त हो गई। जेवार ने इस शुभ अवसर पर बड़ी धूमधाम से खुशियां मनाई और गरीबों को प्रभूत मात्रा में दान दिया।

बड़ा होने पर गुग्गे का विवाह सुरहिल के साथ हुआ। उसके जुड़वां सौतेले भाइयों ने भरसक प्रयास किया कि यह विवाह न हो। उन्होंने तो यह भी यत्न किया कि सिद्धराजा, सुरहिल का विवाह गुग्गे की बजाए उनसे कर दे। परन्तु नारसिंह वीर तथा कैलावीर के प्रयास से गुग्गे के साथ उसका विवाह सम्पन्न हुआ। यह भी कहा जाता है कि तक्षक नाग ने भी सहायता की थी। उसने पुष्प रूप धारण कर सुरहिल को आकृष्ट किया, दंशित किया तथा बाद में ब्राह्मण रूप में गुग्गे के साथ विवाह का वचन लेकर विषचूषण कर उसे स्वस्थ कर दिया।

एक दिन मृगया से लौटते समय उसने देखा कि उसके पुरोहित की

पत्नी नारू पानी भर रही है। प्यासा होने के कारण उसने उससे पानी मांगा। ब्राह्मणी समझी कि गुग्गा उसके साथ उपहास में ही कह रहा है। अतः वह पानी का भरा घड़ा लेकर चली गयी। गुग्गे को क्रोध आ गया और उसने तीर मारकर उसका घड़ा गिरा दिया और वह स्त्री पानी से नहा गयी। प्रतिशोध की भावना से पुरोहित ने गुग्गे के विवाह पर एक सम्पूर्ण ग्राम दक्षिणा में मांगा। गुग्गा पहले ही एक सौ एक गायें उसे दक्षिणा में दे चुका था। इसलिए उसने और कुछ देने से इनकार कर दिया। पुरोहित ने अपनी मांग पर जब फिर जोर डाला तो गुग्गे ने उसे अपनी खड़ाऊं से मारा।

इस पर ब्राह्मण उसके सौतेले भाइयों के पास गया और उन्हें भड़काया कि वे अपना हिस्सा मांगें। दोनों सौतेले भाई अपना हिस्सा मांगते रहे। इस पर गुग्गे ने नारसिंह द्वारा उन्हें कारागार में डलवा दिया। माता की मध्यस्थता पर उन्हें मुक्त किया गया। जनश्रुति के अनुसार काछल के मरणोपरान्त बाछल ने उन्हें अपना धर्मपुत्र बना लिया था। ब्राह्मण के उकसाने पर वे अपना झगड़ा दिल्ली नरेश पृथ्वीराज चौहान के पास ले गए और उससे न्याय की मांग की। पृथ्वीराज चौहान ने अपने एक अधिकारी गंगा राम को राज्य का विभाजन कराने के लिए भेजा।

गुग्गा के अनेक मंदिर हैं और उनके साथ सर्पविष–निवारण की अनेक घटनाएं जुड़ी हुई हैं। यहां कुछ प्रमुख गुग्गा मंदिरों का उल्लेख किया जाता है :–

सलोह का गुग्गा मंदिर

यह मंदिर सलोह ग्राम, तहसील पालमपुर में स्थित है। कहा जाता है कि इस स्थान पर सम्वत् 1866 में गुग्गा प्रकट हुआ था। यहां का पुजारी घिर्थ होता है। साधारण सा मेला प्रति रविवार को होता है परन्तु विशेष मेले का आयोजन गुग्गा नवमी के दिन होता है। उस मन्दिर दूर दराज के लोग मंदिर में आते हैं। मंदिर में गुग्गा, गूगड़ी तथा गुरु गोरखनाथ की तीन फुट ऊंची प्रतिमाएं हैं जो अश्वारूढ़ हैं। गुग्गा के श्रद्धालुओं में मिट्टी मिश्रित जल का भोग वितरित किया जाता है।

सिब्बो दा थान (मंदिर)

यह मंदिर भरवाड़ में कोटला थाना क्षेत्र में स्थित है। कोई 500 वर्ष पूर्व सिब्बो नामक एक नाई गुग्गा की पूजा किया करता था। उसकी भक्ति से प्रसन्न होकर गुग्गा ने उसे एक मंदिर निर्माण करने को कहा । उसने यहां

पर एक मंदिर बनवाया और उसमें गुग्गा की प्रतिमा प्रतिष्ठापित कर दी। गुग्गा ने शिब्बो को सर्प विष–निवारण शक्ति प्रदान कर दी और उसे कहा कि जो सर्पदंशित व्यक्ति मूर्ति धोकर वह जल का पान करेगा, स्वस्थ हो जायेगा। यहां का पुजारी नाई होता है। यहां श्रावण मास के प्रति रविवार को मेला लगता है। मंदिर में अश्वारोहियों की छः प्रतिमाएं पत्थरों पर उकेरित हैं, उनकी ऊंचाई एक से तीन फुट तक है। ग्यारह पत्थर की पिण्डियां हैं जिनकी ऊंचाइयां एक इंच से तीन इंच तक है।

शिवजी की पिण्डी एक फुट ऊंची है। एक गाय की दो फुट ऊंची मूर्ति भी प्रस्तर पर उकेरित है। गुग्गा–पूजा का स्थान शिब्बो के पूजन ने लिया है। सेवक फकीर दंशित व्यक्ति को मंदिर में लिटा देता है व बाबा शिब्बो की स्तुति करते हुए उसे मूर्ति धोए जल का पान कराता है। उस स्थल (थान) की कुछ मिट्टी भी उसे खिलाता है और कुछ दंश घाव पर मल देता है। कहते हैं ऐसा करने पर व्यक्ति बहुत शीघ्र ठीक हो जाता है। श्रद्धालु थान की मिट्टी अपने साथ घरों को ले जाते हैं।

कुटयारे का गुग्गा

ज्वालामुखी से नादौन जाते हुए व्यास नदी के इस पार भड़ोली–कुटियारा नामक ग्राम में गुग्गे की एक सुन्दर माढ़ी है जिस का भवन किसी प्रचलित पद्धति पर न होकर सामान्य ढंग का कमरा ही है परन्तु भीतर प्रस्थापित अश्वारोही और दो पदातियों की मूर्तियां निश्चय ही उच्चकोटि की हैं। 200–250 वर्ष पहले इनके निर्माण के संकेत मिलते हैं। इस क्षेत्र में प्रायः सुनने में आता है कि इन घोड़ों को दूर से देखकर स्थानीय राजा के घोड़े हिनहिनाने लगते थे। यहां पर तीन अश्वारोही, गुग्गा, उसकी बहिन गुगड़ी और दीवान हैं तथा दो पदाति वीर हैं।

गुग्गा नवमी के दिन यहां मेला लगता हैं जिसमें मल्ल युद्ध भी होते हैं। चेला खेलता है और लोगों के प्रश्नों का उत्तर देता है। यहां सर्पदंश का इलाज भी होता है। दंशित व्यक्ति थान की तीन परिक्रमाएं लेता है और फिर गुग्गे की मूर्ति के सामने दण्डवत् प्रणाम करता है। इस तरह कुछ देर करने के पश्चात् सर्प का ज़हर उतर जाता है। श्रद्धालु यहां पर अन्न, घी, दूध भेंट स्वरूप चढ़ाते हैं और प्रसाद स्वरूप हलवा या मीठी खीलें वहां एकत्रित लोगों में बांटी जाती हैं। कांगड़ा जनपद में पठियार का गुग्गा, टीक्कर का गुग्गा, कटारे का गुग्गा आदि भी लोकप्रिय मंदिर हैं, जहां गुग्गा नवमी के दिन मेला होता है

और लोगों में गुग्गे का रोट बांटा जाता है। हमीरपुर जनपद में भी गुग्गा पूजा की जाती है। यहां पर भी अनेक स्थानों पर गुग्गे की माढ़ियां हैं जिनमें से कुछ इस प्रकार से है– मदली का गुग्गा, जलाड़ी का गुग्गा, किटपल में गगोटी का गुग्गा, वसारल का गुग्गा और ग्वालपत्थर का गुग्गा।

चम्बा जनपद में गुग्गा

चम्बा का मुण्डलिख नामक प्रवर वीर जिससे बाद में देवत्व जोड़ कर दिया गया, गुग्गा ही रुपांतर या नामान्तर निश्चित हो जाता है। गुग्गा निःसंदेह एक ऐतिहासिक व्यक्ति था और उसने पृथ्वीराज चौहान (1170–1193) के काल, में कई युद्ध मुसलमान बादशाहों के विरुद्ध लड़े थे। अंतिम युद्ध में उसका सिर चक्रप्रहार के कारण धड़ से अलग हो गया था। यथास्थिति टिके सिर से वह अढाई घड़ी लड़ता रहा। उसके सिर और धड़ के बीच पृथक्कारी लीख के कारण उसका नाम मुण्डलिख पड़ गया। कुछ समय पश्चात् उसने भू–समाधि ले ली। अपने साज संगीत के साथ पहाड़ी भाट इस वार्ता को सुन्दर ढंग से गाते हैं। कहते हैं कि मुण्डलिख की मृत्यु भाद्रपद के कृष्ण पक्ष की नवमी को हुई थी इसलिए इस दिन पहले गुग्गा का श्राद्ध किया जाता है और यह दिन गुग्गा नवमी के नाम से अभिहित किया जाता है। चम्बा जनपद में प्रस्तर मूर्ति में एक अश्वारोही के रूप में उसे दिखाया जाता है। पूजा–विधान अन्य मंदिरों जैसा ही प्रचलित है।

चम्बा में गुग्गा मंदिर

मुण्डलिख (गुग्गा) के मंदिर गढ़ (परगणा तीसा), ग्राम पालेवर (साई क्षेत्र) तथा शालु (हिमगिरि) में स्थित है। शालु में यह गुग्गा मुण्डलिख सिद्ध नाम से जाना जाता है। इसे गुग्गा और मुण्डलिख के अभिन्न होने का एक प्रमाण भी माना जा सकता है। इन सभी स्थानों पर मूर्तियां तो पत्थर की हैं, परन्तु आकार तथा संख्या में असमानता और विभिन्नता है। गढ़ वाली मूर्ति एक फुट ऊंची है और एक ही है। पालेवर में पुजारी व चेला हरिजन होने की प्रथा है और यहां भी यह पद वंशानुसार चलते हैं। गढ़ का मुण्डलिख जन्माष्टमी के बाद आठ दिन भ्रमण करने जाता है। पालेवर का मुण्डलिख उससे तीन दिन बाद आता है। जन्माष्टमी के दिन तक गुग्गा के छत्र और सांकल की शोभा यात्रा चलती है।

मुण्डलिख (गुग्गा) सम्बंधी लोककथा

राणा मुण्डलिख जो गुग्गा के नामान्तर से भी प्रख्यात है, एक चौहान

राजपूत था और उसका राज्य वृन्दावन के पास गढ़ ददमेर (दारुहेडा) में था। उसके पिता का नाम देवीचन्द (अन्य रूपान्तरों में जेवार) तथा मां का नाम बाछला था। कई वर्ष के विवाहित जीवन में उन्हें पुत्र प्राप्ति न हो सकी। यह स्थिति बाछला के लिए विशेष दुखदायिनी थी। दर्पण में उसने अपना चेहरा देखा और अपने सफेद बालों को देखकर उसने फूट–फूट कर रोना आरम्भ कर दिया। इतने में उसका पति वहां आ गया और रोने का रहस्य पूछने लगा। बाछला ने बताया कि अब उसके भीतर में संतान प्राप्ति की इच्छा भर गई है। जब यौवन में ही संतान प्राप्ति न हुई तो अब ढलती उम्र में कैसे आशा की जा सकती है। पति ने उसे भरसक सान्त्वना दी, परन्तु बाछला पर उसका कोई प्रभाव नहीं हुआ। उसने निराश होकर वन में घोर तपस्या करते हुए जीवन व्यतीत करने की ठान ली जिसके फलस्वरूप सम्भव है पुत्र प्राप्ति हो जाए। तपस्या एवं त्याग साधना में उसके बारह वर्ष बीत गए और वह सूख कर कांटा हो गई।

एक दिन उसकी कुटिया में एक अतिथि आया और बोला कि मैं गुरु गोरखनाथ हूं। उसने यह भी पूछा कि वह ऐसी आत्मपीड़क तपः साधना क्यों कर रही है। उसने अपनी सारी दुःख व्यथा जोगी को सुना दी। एक राजपूत राणा की पत्नी होने के नाते धन, मान, वस्त्राभूषण एवं सुख साधन सभी उपलब्ध हैं पर ये सब कुछ वंशावली चलाने वाले पुत्र के अभाव में सारहीन और व्यर्थ हैं। गुरु गोरखनाथ ने कहा कि तुम्हारी घोर साधना सफल है तथा तुम सीधी अपने घर चली जाओ और तीन दिन के बाद पुनः यहां आना, तब तुम्हें पुत्र प्राप्ति का वर मिलेगा।

रानी बड़ी प्रसन्न हुई और घर जाकर सारा वृत्तान्त सुना दिया जिसे सुनकर सभी प्रसन्न हो उठे। रानी बाछला की एक बहन काछला थी जो भूत–प्रेतों की पूजा करती थी और गढ़ मालवा के राजा से ब्याही गई थी। वह भी निःसंतान थी। उसकी एक और बहन आछला थी जो ख्वाजा पीर की भक्ति करती थी। बाछला की सारी बातों को काछला ने सुना और तुरन्त गुरु गोरखनाथ से मिलने का कार्यक्रम बनाया। गुरु गोरखनाथ के वर सम्बंधी वचन का ज्ञान होने पर भी उसने मन में ठान लिया कि जैसे भी हो, वह यह वर स्वयं प्राप्त करेगी।

निश्चित दिन से एक दिन पहले ही भोली रानी बाछला के पूजा के वस्त्र धारण करके वह गुरु गोरखनाथ के डेरे में जा पहुंची और वर मांगा।

उसने स्वयं को गुरु की भक्तिन बाछला बताकर गुरु से पुत्र प्राप्ति का फल मांगा। समय से पहले आने पर योगी ने उसे फटकारा, पर वह बोली कि मैं अधिक प्रतीक्षा नहीं कर सकती, वर अभी दे दीजिए। गुरु ने फल देते हुए कहा इससे तुम्हारे दो पुत्र होंगे। काछला प्रसन्न होकर घर लौटी और उसने जौ के दाने (फलों) का सेवन किया और परिणामस्वरूप कालान्तर में उसके यहां अर्जन और सुर्जन नाम के दो पुत्र हुए।

निश्चित दिन पर बाछला योगी गोरखनाथ की सेवा में पहुंची और वर देने की प्रार्थना की। गुरु गोरखनाथ को अपने साथ हुए छल का भान न था। उन्होंने बाछला को कहा कि बांछित फल पाकर भी फिर वर मांग कर तुम दोषपूर्ण व्यवहार कर रही हो। इस उत्तर से व्यथित होकर तथा सोचकर कि गुरु गोरखनाथ अपना वचन पूरा नहीं करना चाहते, वह वापिस चली गई और फिर बारह वर्ष तक घोर साधना में तल्लीन हो गई और गुरु की भक्ति में मिट्टी बन गई। इस अवधि के अंत में गोरखनाथ पुनः आए और कहा कि तुम्हें परितोष अवश्य मिलेगा। परन्तु रानी उपहार देखकर चिढ़ गई और उसे फैंक दिया क्योंकि योगी ने थोड़ी सी राख मात्र उसकी हथेली पर रख दी थी। उस विभूति के भूमि पर गिरते ही दो योगी नर्म सिद्ध तथा गूर्य सिद्ध प्रकट हुए और उन्होंने गुरु की स्तुति आरम्भ कर दी।

गोरखनाथ ने बाछला से पूछा कि तुमने विभूति को क्यों फैंका। तुमने यह भारी अपराध किया है परन्तु तुम्हारे तप को देखकर एक बार पुनः देता हूं, घर जाकर इसे खा लेना। अधीरा बाछला ने तुरंत उसे वहीं निगल लिया। तुरन्त ही उसे आभास हो गया कि वह गर्भवती हो गई है। वह घर पहुंची तो उसके उभरे पेट को देखकर उसका पति देवी सिंह बोला कि तुम जोगियों या गुसाइयों की अवैध संतान ले आई हो। वह चुप रही। पति ने उसे अपने महल से निष्कासित कर दिया। वह बैलगाड़ी में बैठकर अपने पितृगृह को चल पड़ी। उसका पिता कृपाल अजमेर का राजा था। मार्ग में बैलों ने चलना बन्द कर दिया। उधर से ध्वनि आई कि स्वधाम मुड़ चलो अन्यथा बारह वर्ष तक मेरा जन्म न हो पायेगा। जब बैलगाड़ी को मोड़ा, तो बैल त्वरित गति से गढ़ दुदनेरां की ओर चल पड़े और वहां पहुंच बाछला अपने पूर्व स्थान पर राज भवन में रहने लगी।

उचित समय आने पर उसने पुत्र को जन्म दिया। जब बालक सात वर्ष का हुआ, तो राजा ने राजपद त्याग उसे राजा बना दिया। मुण्डलिख (गुग्गा) का जन्म माघ के प्रथम रविवार को प्रातः काल में हुआ था। बाछला

ने गुगड़ी नाम की एक कन्या को भी जन्म दिया। बाछला का एक भाई पिथौरा (पृथ्वी राज) चौहान भी था।

अगली मुख्य घटना थी मुण्डलिख की सुरिहल के साथ सगाई। यह एक ब्राह्मण के यत्नों से सम्पन्न हुई। सुरिहल बंगाल देश के राजा की पुत्री थी तथा उसकी मंगनी पहले वासुकि नाग के साथ हो चुकी थी। उचित समय पर मुण्डलिख अपनी सेना के साथ विवाहार्थ गौड़ बंगाल देश को चल पड़ा। उसके दल में 52 वीर थे जिसमें कैलूवीर (उसका कोतवाल) और हनुमान वीर आदि सौ लाख सेना के साथ थे। वहां जाकर वह एक नदी के तट पर ठहरे। उधर भी कोई बड़ा सैन्य दल पड़ाव डाले है, यह देखकर मुण्डलिख ने कहा कि कौन वीर वहां जाकर इस जन समूह के एकत्र होने का कारण व प्रकृति का पता लगाएगा, कैलू ने यह कार्य अपने जिम्मे लिया। वह अपने घोड़े पर सवार हुआ और उसे विशेष रूप से ताड़ित किया। घोड़ा एक छलांग में उसे दूसरे तट पर ले पहुंचा। कैलू घोड़े से उतरकर तथा उसे छिपाकर गन्धाधरी ब्राह्मण के रूप में उस शिविर में जा पहुंचा। मुख्याधिकारी से उसकी भेंट हुई और उससे ज्ञात हुआ कि यह वासुकि नाग का सैन्यदल है और मुण्डलिख से सगाई की चर्चा सुनकर वह पहले हुई सगाई के आधार पर उस कन्या पर आपना दावा पेश करने आया है।

कलिहर नाम उस अधिकारी ने बताया कि वह मुण्डलिख की सेना को नष्ट कर देगा और विशेषतः उसके कोतवाल कैलू वीर को तो निश्चय ही समाप्त कर देगा। ऐसा कहने पर कैलू क्रोधित हो उठा परन्तु उनकी सहायता करने का छद्म कर उसने कलिहर को परामर्श दिया कि वह अपनी सेना को ऊंची–ऊंची घास में छिपा दे और जब मुण्डलिख की सेना आगे आये तो छुप–छुपे ही उस पर आक्रमण कर दे। उन्होंने ऐसा ही किया ।

कैलू ने छद्मवेश उतार फैंका और अपने घोड़े पर सवार हो गया। घोड़ा दुलत्तियां झाड़ने लगा और उससे उत्पन्न आग से घास जल उठी। इससे नाग–सेना जल कर राख हो गई। फिर घोड़ा उसे एक ही छलांग में नदी के दूसरे तट पर अपने शिविर में ले पहुंचा। वहां उसने सारी कहानी गुग्गा को सुना दी।

तब बारात बंगाल देश में पहुंची और गौड़ बंगाल पहुंचने पर मुण्डलिख का सामना सुरिहल की भेजी जादूगरनी से हुआ। जादू डालने से लिए जादूगरनी ने सुन्दर पुष्पहार मुण्डलिख के गले में डाल दिया। हनुमान

वीर वास्तविक भेद को भांप गया। उसने एक चित्कार किया और हार टूट कर गले से गिर गया। तीन बार ऐसा ही हुआ। तीसरी बारी में तो जादूगरनी का अधोवस्त्र भी नीचे गिर गया और वह सबके सामने नंगी हो गई। इस प्रकार लज्जित किए जाने की शिकायत उसने मुण्डलिख से की। मुण्डलिख ने हनुमान वीर को बुरी तरह से डांटा और उसे बुरा भला कहा। तदुपरांत हनुमान वीर ने दुःखी होकर कहा कि मैं इसी क्षण गढ़ दुनेर लौट रहा हूं। परन्तु मेरा जाना आपके लिए हानिकारक रहेगा। आपको बारह वर्ष गौड़ बंगाल में ही रहना पड़ेगा।

मुण्डलिख ने राजप्रासाद में प्रवेश किया, उसका विवाह सम्पन्न हो गया। उसकी सेना ने सिपाहियों पर जादू कर दिया। मुण्डलिख अपनी नवविवाहिता पत्नी के प्रेम पाश में जकड़ा गया।

इधर मुण्डलिख और सेना मोहपाश में बंधी थी और उधर गढ़ ददनेर पर भारी संकट आ पड़ा। उसके सौतेले भाई जो वास्तव में बाछला को दिए गए वर से ही उत्पन्न हुए थे, अपने को बाछला का ही पुत्र मानते थे और राज्य का आधा हिस्सा भी लेने के लिए षडयंत्र रच रहे थे।

कुछ कथान्तरों में कहा गया है कि काछला की मृत्यु के पश्चात् बाछला ने उन्हें अपनी गोद में ले लिया था और धर्मपुत्र भी बना लिया था। इसी समय गढ़ ददनेर में एक अद्भुत पंच कल्याणी बछेरे का जन्म हुआ। वे दोनों सौतेले भाई इसे भी प्राप्त करना चाहते थे। मुण्डलिख की अनुपस्थिति का अनुचित लाभ उठा उन्होंने महमूद गज़नवी की सहायता से गढ़ ददनेर पर आक्रमण कर दिया। उनके लिए मुण्डलिख सेना व युद्ध विशारदों की अनुपस्थिति में विजय प्राप्त करना असंभव न था। लूटमार के बाद उन्होंने नगर पर अपना अधिकार जमा लिया। परन्तु जिस दुर्ग में बाछला और उसकी पुत्री गुगड़ी थी, उसको अपने कब्जे में लेना अभी शेष था। दुर्ग के परकोटे से गुगड़ी ने सभी कुछ देखा। क्रोधदग्ध और विक्षिप्त सी वह महल में इधर–उधर घूमती रही। अपनी दुरावस्था पर रोती हुई वह मुण्डलिख को याद करने लगी, महमूद गज़नबी का पत्र आया कि यदि गुगड़ी मुसलमान बनकर उसके हरम में आ जाए और दुर्गवासी आत्मसमर्पण कर दें तो उनकी सुरक्षा का वचन दिया जाता है अन्यथा आक्रमण कर सबको काट डाला जाएगा।

घोर निराशा की स्थिति में हतोत्साही होकर गुगड़ी कमरे में घूम रही थी अंत में, वह मुण्डलिख के कक्ष में जा पहुंची। यह वैसा ही सजा था, जैसा

इसे वह छोड़ गया था। उसकी तलवार और पगड़ी उसके पलंग पर रखी थी। जब उसने मुण्डलिख को स्मरण किया, तो म्यान से निकल कर तलवार उसके हाथ में आ गई। उसने मुण्डलिख की पगड़ी धारण की। चण्डी का रूप धारण कर नितांत अकेली ही शत्रुओं की सेना पर टूट पड़ी और उन्हें मार–मार कर वहां से खदेड़ दिया।

वापिस दुर्ग में आकर गुगड़ी को अपने भाई के मित्र राजा अजयपाल का ध्यान आया। उसने उससे प्रार्थना की कि वह भाई गुग्गा को खोज लाए। अजयपाल कुछ समय से साधना में तल्लीन रहता था। उसने एक रात स्वप्न भी देखा था कि मुण्डलिख बिना सिर ही युद्ध कर रहा है। गुगड़ी के आग्रह करने पर वह मुण्डलिख की खोज में निकल पड़ा। पांच वीर भी उसके साथ चले, जिनमें नारसिंह वीर तथा काली वीर प्रमुख थे। वे खौढ़ (बंगाल) देश में पहुंचे और इस भावना से कि शायद मुण्डलिख सुन ले। गढ़ ददनेर के गीत गाते जंगमों की भांति वह द्वार द्वार घूमने लगे। मुण्डलिख अभी तक जादू के प्रभाव में था। एक दिन महल में गीत सुनाया गया जिसे सुनकर वह उत्तेजित हो उठा। सुरिहल ने उसे शांत करने का प्रयास किया किन्तु अब उस पर जादू का प्रभाव खत्म हो चुका था। गढ़ ददनेर की दुरावस्था सुनकर उसने अपने देश लौटने का निर्णय लिया। सभी वीर और सैनिक भी सचेत हो गए। मुण्डलिख सुरिहल व अपनी सेना के साथ गढ़ ददनेर आ गया और वहां आकर पुनः राणा का पद धारण किया।

मुण्डलिख ने मुसलमानों के विरुद्ध लगभग तेरह युद्ध किए और काबुल तक उसकी तूती बोलने लगी। अंतिम युद्ध में एक चक्र ने उसका सिर धड़ से अलग कर दिया, परन्तु वह वहां पर यथावत् मुसलमानों की सेना के विरुद्ध लड़ता रहा और एक रेखा भर उभरी दीखने लगी। इसी से उसका नाम मुण्डलिख पड़ा। इसी स्थिति में नीले धोड़े पर सवार मुण्डलिख लड़ता रहा। उसके मित्र अजयपाल को अपना स्वप्न याद आ गया और वह उसके पीछे लगा रहा कि देखें आगे क्या होता है। यदि ढाई घड़ी सिर यथावत् रहता तो मुण्डलिख बच जाता, परन्तु तभी चार चीलें आकाश में दिखाई दीं और बोली देखो–देखो, कैसा विस्मयकारी युद्ध है। मुण्डलिख बिना सिर के ही लड़ रहा है। यह सुनकर मुण्डलिख ने पगड़ी पर हाथ रखकर देखा और मुड़कर अजयपाल की ओर देखा। इससे उसका संतुलन बिगड़ गया और सिर भूमि पर गिर पड़ा। योद्धा मुण्डलिख भी वहीं गिर कर मर गया। भाद्रपद के कृष्णपक्षीय नवमी के दिन मुण्डलिख का देहावसान हुआ था। उसकी

समाधि पर इसी दिन उसका श्राद्ध होता है और यह दिन गुग्गा नवमी के नाम से प्रसिद्ध है।

आगे की कथा में मुण्डलिख की पत्नी सुरिहल ने यह मान कर कि वह मरा नहीं है, विधवा का शृंगार करने से इकार कर दिया। उसका दावा था कि वह प्रति रात्रि उससे मिलने आता है। एक रात्रि बहन गुगड़ी को अनुमति दी गई कि वह उसके कमरे में छिप जाए जहां सुरिहल पति की प्रतीक्षा कर रही थी। अर्धरात्रि में उसके घोड़े की टापों की ध्वनि सुनी और धीरे से खिसक कर घोड़े के पास गई। इसी अन्तराल में मुण्डलिख सुरिहल के कमरे में चला गया था। गुगड़ी घोड़े की ग्रीवा से चिपक गई और मुण्डलिख के कुछ दूर तक चले आने तक भी साथ चिपकी रही।

अन्त में, उसे गुगड़ी की उपस्थिति का आभास हुआ तो बोला कि क्योंकि तुमने मुझे देख लिया है, अतः अब मैं कभी नहीं आऊंगा।

उपर्युक्त कथा में गुग्गा और मुण्डलिख अभिन्न हैं और स्पष्टतः ही न तो वह कभी मुसलमान बना और न उनसे युद्ध को छोड़कर कोई वास्ता ही रहा। सम्भवतः गुग्गा कथा का यही शुद्ध और प्रामाणिक रूप है। ऐतिहासिक दृष्टि से देखा जाए तो वह पृथ्वीराज चौहान, मुहम्मद गौरी और अजयपाल के समकालीन था और यह भी सहज स्वीकार्य है कि गुग्गा उनका सम्बंधी होने के कारण उनके पक्ष में मुहम्मद गौरी से तेरह बार लड़ा था। जयचन्द नरेश, कन्नौज तथा काठियाबाड़ के गिरनार के पांच चूडासम राजा भी मुण्डलिख कहाते थे। अतः कल्पना की जा सकती है कि मुण्डलिख वीरों की कोई उपाधि होगी।

श्रीमद्भागवत में गुग्गा का उल्लेख

श्रीमद्भागवत में गुग्गा का संक्षिप्त परिचय, केवल जन्म मिलता है। तदनुसार ऋषि कश्यप की दो पत्नियां कद्रु तथा विनता थी। समयान्तर से कद्रु ने एक सर्प को और वेन्ता ने एक गरुड़ को जन्म दिया। गरुड़ तो भगवान विष्णु का वाहन बना था तथा सर्प इच्छानुसार रूप धारण कर लेता था। वह भूमि पर फिरता था अतः गू (पृथ्वी) गः (जाने वाला) 'गोगा' कहाया। गरुड़ 'ग' (गुरुत्व) रु (अन्धकार) 'ड' (उड़ना) के अनुसार ऐसा वाहन बना जो गुरुत्वाकर्षण क्षेत्र तथा उससे भी ऊपर के प्रकाशहीन क्षेत्र से भी ऊपर उड़ सकता है। जो भी हो, हिन्दुओं के लिए गुग्गा और गरुड़ दोनों समान रूप से पूजनीय हुए।

जैन ग्रन्थों में गुगा का प्रसंग

जैन ग्रन्थों में भी गुग्गा का प्रसंग आता है। प्रायः 2600 वर्ष पूर्व नन्दी ब्राहण के राज्यकाल में कनस के समीप चण्डकोशीय नामक भीषण एवम् भीमकाय विषधर रहता था। वह जिस वस्तु पर दृष्टिपात करता वह भस्मीभूत हो जाती थी। कोई भी व्यक्ति उसके निवास स्थल के पास से जीवित नहीं जा सकता था। जब 24 वें तीर्थंकर महावीर स्वामी भिक्षु बनकर भ्रमण करते उधर आए तो प्रचुर वर्जन के पश्चात् भी वे चण्डकोशीय के विविर पर गए। सर्प ने उन्हें तीन बार काटा, परन्तु उन पर कोई प्रभाव न पड़ा। भगवान महावीर ने सर्प को कहा कि अपने मूर्खतापूर्ण आचरण से तुम भगवान के सामने कैसे मुंह दिखाओगे? इस पर उसे पश्चात्ताप हुआ। उसने अपने सिर को बिल में डाल शेष शरीर को बाहर रहने दिया। मार्ग–यात्रियों के लिए निरापद हो गया। पथिक और ग्वालिनें उसके शरीर पर घी, तिल, चावल और कच्ची लस्सी आदि चढ़ाने लगीं। इस प्रकार वह सर्पाधिपति बन गया। चींटियां उमड़ पड़ीं और उसके शरीर को खाने लगीं। परन्तु वह तो अब पूर्ण अहिंसावलम्बी बन गया था और करवट तक न लेता था कि कहीं कोई चींटी उसके शरीर से दब कर मर न जाए। अब तो वह 'गूग्गा' अर्थात् भूमि में चलने वाला कहलाने लगा।

गुग्गा चौहान का उपाख्यान

गुग्गा चौहान का जन्म सिरसा से 50 मील दूर बीकानेर के अन्तर्गत दद्रेरा में हुआ था। गुग्गा चौहान पृथ्वीराज चौहान के समकालीन थे। ये बड़े पराक्रमी, साहसी, शूरवीर और बहादुर थे। इन्हें गुग्गा जहर पीर, गुग्गा छतरी (क्षत्रिय) और मण्डलीक आदि नामों से भी पुकारा जाता है। कुछ विद्वानों की धारणा है कि चाहुभान चौहान वहां का आदि पुरुष था और उसी के नाम से चौहान वंश चला। चाहुभान से चौहान शब्द बना है। चौहान का अर्थ है, चार बांह वाला, चतुर्भुज। पुराणों की कथाओं के अनुसार दैत्यों से लड़ने के लिए जिनको ब्राह्मणों ने भेजा था, उनमें चौहान के सिवा दैत्यों से सभी पराजित हुए थे। चौहानों की उत्पत्ति के सम्बंध में हिन्दुओं की जो पौराणिक कथा है, उसका यहां पर संक्षेप में उल्लेख करना नितान्त आवश्यक है–

आबू पर्वत जिसे संस्कृत में अर्बुतगिरि कहा जाता है के संबंध में लिखा गया कि उसकी चोटी पर केवल एक दिन का व्रत करने से मनुष्य सारे पापों से मुक्त हो जाता है। किसी समय इस आबू गिरि पर कुछ मुनि तपस्या

कर रहे थे। दैत्यों ने उनको तंग करना शुरू कर दिया। वे मुनियों के तप और यज्ञ को भंग करने लगे। यह देखकर ब्राह्मणों ने दैत्यों को रोकने के लिए एक अग्नि कुंड खोदा लेकिन दैत्यों ने ऐसी आंधियां उठाईं कि जिससे चारों दिशाएं अंधकारपूर्ण हो गयीं और वहां पर मुनियों तथा ब्राह्मणों के द्वारा जो यज्ञ हो रहे थे, उनमें विष्ठा, रक्त, अस्थि और मांस की वर्षा होने लगी। इससे मुनि और ब्राह्मण बहुत घबराये। अंत में उन्होंने अग्निकुण्ड कर दैत्यों के विनाश के लिए महादेव से प्रार्थना की। उस प्रार्थना के बाद अग्निकुण्ड से एक पुरुष निकला परन्तु वह देखने में योद्धा नहीं मालूम होता था। इसलिए ब्राह्मणों ने उसे द्वारपाल बनाकर वहां पर बैठा दिया। उसका जो नाम रखा गया, उसका अर्थ पृथिहार अथवा 'परिहार' होता है। उसके बाद दूसरा पुरुष निकला, उसका नाम 'चालुकू' हुआ। तीसरा पुरुष जो निकला उसका नाम 'परमार' रखा गया। वह दैत्यों से युद्ध करने गया, लेकिन पराजित हुआ। इसके बाद देवताओं से फिर प्रार्थना की गयी तो अग्निकुण्ड से एक दीर्घकाय और उन्नत ललाट का पुरुष निकला। उसके सम्पूर्ण शरीर में युद्ध के वस्त्र थे। वह एक हाथ में धनुष और दूसरे हाथ में तलवार लिये था। उसका नाम 'चौहान' रखा गया। चौहान को दैत्यों से लड़ने के लिए भेजा गया तो उसने दैत्यों को पराजित किया। कुछ मारे गये और कुछ भाग गये। दैत्यों के सर्वनाश से मुनि और ब्राह्मण बहुत प्रसन्न हुए। उस चौहान के नाम से चौहान वंश चला और कालांतर में उसी वंश में पृथ्वीराज चौहान और गुग्गा चौहान पैदा हुए।

चौहानों के वंश–वृक्ष से पता चलता है कि चौहानों का आदि पुरुष अनहिल नाम का था। उससे लेकर गुग्गा चौहान तक उनतालीस राजा चौहानों में हुए। चौहानों के इतिहास में अजय चौहान ने अजमेर के दुर्ग का निर्माण किया था। चौहानों की राजधानियों में उनकी यहां पर भी एक राजधानी थी। चौहानों की चौबीस शाखायें हैं।

कर्नल टॉड ने अपने 'राजस्थान का इतिहास' में गुग्गा चौहान के विषय में उल्लेख करते हुए लिखा है कि गुग्गा चौहान 'वाचा चौहान' का लड़का था। उसने बहुत गौरव प्राप्त किया और सतलुज से हरियाणा तक समस्त विस्तृत भूमि को अपने राज्य 'जांगल प्रदेश' में, सम्मिलित कर लिया। सतलुज नदी के किनारे मैहरा या गुग्गा की माड़ी नामक स्थान पर उसके राज्य की राजधानी थी। सुलतान महमूद के आक्रमण से अपनी राजधानी को सुरक्षित रखने के लिए गुग्गा चौहान ने भयानक युद्ध किया और अन्त में अपने

पैंतालीस लड़कों और साठ भतीजों के साथ वह युद्ध में मारा गया।

According to Tod Guga was the son of Vacha Chauhan, Raja of Jangal Des, which stretched from Sutlej of Harianas and whose capital was at Mehera or Guga ki Mairi on the Sutlej. Guga, with his 45 sons and 60 nephews, fell in defence of his capital on Sunday, the month 9th of the month. A Day held sacred to the masses of Guga through Rajputana.

राजपूतों के एक ऐतिहासिक ग्रन्थ में लिखा है कि राजा का गुग्गा चौहान से पहले कोई लड़का नहीं था। उससे वह चिंतित रहा करता था।. एक दिन कुलदेवी ने राजा को दो फल दिए। उसने एक फल रानी को खिलाया और दूसरा अपनी घोड़ी को। रानी ने गुग्गा को जन्म दिया और घोड़ी ने बच्चे को जन्म दिया। नीले घोड़े का नाम जवादिया रखा। यह 'जवादिया' घोड़ा उतना ही प्रसिद्ध हुआ, जितना कि गुग्गा चौहान स्वयं विख्यात हुआ।

गुग्गा चौहान ने जीवन सम्बंधी अनेक दंत कथाएं एवं जनश्रुतियां प्रचलित हैं। कहा जाता है कि उमर चौहान बीकानेर के बागड़ जनपद का मुखिया था। उसके बाद उसका लड़का जेवर हुआ। उसकी एक बहन सबीर देई (छवील देई) थी। जेवर का विवाह बाछला से हुआ। उसकी बहन काछला थी। काफी समय तक उनके यहां कोई संतान नहीं हुई। जेवर और बाछला संतान न होने के कारण चिंताग्रस्त थे। उन्होंने पुत्र--रत्न की प्राप्ति के लिए अनेक धार्मिक अनुष्ठान किए, परन्तु परिणाम कोई न निकला। बाछला ने भी संतान प्राप्ति के लिए अनेक साधु--संतों की सेवा की। एक दिन राज पुरोहित रंगाचार ने भविष्यावाणी की मन में धैर्य रखो। रघुवीर आपका भला करेंगे। आपके तीन पुत्र होंगे। उनमें से एक चमत्कारी और वीर होगा। राजा प्रजा सभी उसके आगे नतमस्तक होगी और उसे प्रणाम करेगी।

इसी दौरान गुरु गोरखनाथ वहां पधारे। वह राजमहल के परिसर के बाग में ठहरे। वे बड़े ही चमत्कारी संत थे। माली ने आकर राजा जेवर को यह शुभ सूचना दी कि बाग में एक साधू आए हुए हैं। राजा उनके दर्शन के लिए माली के साथ बाग को चल दिए। वहां जाकर उन्होंने दिव्य विभूति के दर्शन किए और अपनी चिन्ता के निवारणार्थ उनसे प्रार्थना की। राजमहल के परिसर में बड़ी चहल–पहल थी। रानी बाछल ने जब शोरगुल सुना तो अपनी सेविका को बुलाया और कहा कि जाकर पता करो कि आज राजमहल

में इतना शोर क्यों है ? नौकरानी हीरा देई ने महल के द्वारपाल से पूछकर रानी बाछला को बता दिया कि राजमहल के बाग में एक अलौकिक, दिव्य संत आए हुए हैं। वे बड़े पहुंचे हुए करामाती साधू हैं। वे सभी की इच्छाओं और मनोकामनाओं को पूरा करते हैं। रानी ने यह सब कुछ सुनकर वहां उनके दर्शन करने की इच्छा प्रकट की और अपनी नौकरानी को जल्दी वहां चलने के लिए कहा। बाछला ने सोलह श्रृंगार कर नए सुन्दर कपड़े पहने और दोनों गुरु गोरखनाथ के दर्शन के लिए बाग में पहुंच गई। गुरु गोरखनाथ को उसने दण्डवत प्रणाम किया और अपनी कथा की व्यथा गुरु को सुनाई।

गुरु गोरखनाथ ने उसकी व्यथा को सुनने के पश्चात् रानी को अपने महलों में जाने को कहा। यहां क्यों व्यथित हो रही हो ? रानी ने कहा, आप तो दया के सागर हैं। सभी की इच्छाओं को पूरा करते हो ? मेरी इच्छा भी पूरी करो। मैं आपके चरणों में पड़ती हूं। मैं अभागी और दुःखी हूं। मैं आपसे पुत्र रत्न की प्राप्ति का वरदान चाहती हूं।

गुरु गोरखनाथ ने रानी बाछला को दूसरे दिन संतान प्राप्ति हेतु प्रसाद देने का वचन दिया। महल में पहुंचकर बाछला ने अपनी छोटी बहन काछला से जोकि उसकी सौकन (सौत) भी थी गुरु गोरखनाथ की बात बता दी। वह दूसरे दिन अपनी बड़ी बहन से पहले ही बाछला का छद्म वेष धारण कर गुरु के डेरे में जा पहुंची और जोगी से दो फूल प्रसाद के रूप में ले आयी। जब बाछला गुरु आश्रम में पहुंची तो गुरु गोरखनाथ को काछला की चालाकी और कपटपूर्ण चाल का पता चला तथापि गुरु ने बाछला को अपनी झोली से गुगल की गठियां निकालकर दे दीं और कहा कि इन्हें पीसकर खा लेना। रानी काछला को उसने शाप दे दिया कि उसके यहां पुत्र पैदा होंगे परन्तु दोनों ही कुछ समय के पश्चात् मारे जाएंगे।

इस गुगल रूपी प्रसाद को महलों में आकर बाछला की सभी सहेलियों एवं नीली घोड़ी ने विधिपूर्वक ग्रहण किया–

She ate some of gugal her self and gave the rest to her Brahaman's and sweeper's wives, and little to her mare. Bachhal in due course gave birth to Guga, the Brahamni to Narsingh, the Sweepress to Bhaju, and the mare to a blue colt.

इस प्रसाद से भज्जू, नरसिंह तथा नीला घोड़ा उत्पन्न हुए। नीले घोड़े का नाम जवादिया था जो गुग्गा चौहान का प्रिय साथी था।

गोरखनाथ द्वारा प्रदत्त गुग्गुल के प्रसाद का सेवन करने पर रानी बाछला गर्भवती हो गई।इस बात का पता सात महीने के पश्चात् उसकी ननद सवीर देई को लगा। उसने अपने पिता उमर तथा भाई झेवर के कान भरे कि बाछला ने अवैध गर्भधारण किया है जो कुल की मान मर्यादा एवं प्रतिष्ठा के प्रतिकूल है। बाछला के ससुर उमर तथा पति जेवर यह लाछन सुनकर बड़े रुष्ट हो गए तथा उन्होंने दाई सवालदह से उसकी परीक्षा करवाई। गोरखनाथ की महिमा से दाई को गर्भ का ज्ञान नहीं हो सका और उसने बाछला को गर्भहीन बता दिया। ननद के बहकावे में आकर राजा जेवर तथा ससुर ने एक झूठा बहाना बनाकर बाछला को उसके मायके भेज दिया परन्तु राह में गर्भवती के गर्भ से शिशु गुग्गा ने बाछला को ननिहाल जाने से रोका। जब बैल गाड़ी नहीं रुकी, तो गुग्गा ने गाड़ी के एक बैल को अपनी चमत्कारी शक्ति के बल से सांप से डंक मरवा दिया, तत्पश्चात् उसका उपचार भी बता दिया। इस चमत्कार को देख रानी बाछला वापस लौट आई।

राजा जेवर ने उसे रहने के लिए एक जीर्ण–शीर्ण झोंपड़ी दे दी और अपने नौकरों को कह दिया कि उसकी कोई सहायता न करें। भाद्रपद की अष्टमी की अर्धरात्रि को गुग्गा का जन्म हुआ। उनके पैदा होते ही अंधी दाई की आंखों की रोशनी पुनः आ गयी– The old blind midwife regained her sight.

गुग्गा चौहान जब बड़े हुए तो उनकी शादी गौड़ बंगाल के राजा की लड़की सुरियल से तय हो गई। उसके जुड़वां चचेरे भाइयों अर्जन और सुरजन ने इस शादी के होने का विरोध किया परन्तु नरसिंह वीर और कालिया वीर ने गुग्गा का सहयोग दिया। यहां पर दूसरा बयान यह भी है कि दोनों जुड़वां चचेरे भाई चालाकी से सुरियल से शादी करना चाहते थे। वे नहीं चाहते थे कि उसकी शादी गुग्गा से हो। एक दिन गुग्गा शिकार करके वापस आ रहे थे। रास्ते में उन्हें प्यास लगी। उसने अपने पुरोहित की पत्नी 'नारू' को कुएं से पानी निकालते देखा। पास पहुंच कर उसने पानी पिलाने की प्रार्थना की परन्तु उसने उसकी प्रार्थना को अनसुना कर दिया। गुग्गा ने घड़े पर तीर का निशाना लगाया और घड़ा फूट गया और नारू के सारे कपड़े भीग गए।

पुरोहित इसे अपमान का बदला लेने के लिए व्यग्र था। उसने गुग्गा के विवाहोत्सव पर की गयी सेवा के बदले में सारा गांव इनाम के रूप में मांग लिया। गुग्गा ने यह कह कर कि उसने ब्राह्मण को 101 गायें दे दी हैं उसकी

मांग पूरी नहीं की। पुरोहित अपनी मांग की ज़िद करता रहा। गुग्गा ने क्रोध में आकर अपने लकड़ी के जूते से उस पर प्रहार किया। तब पुरोहित गुग्गा के चचेरे भाइयों के पास चला गया और उन्हें गुग्गा से आधी रियासत लेने के लिए उकसाया। गुग्गा ब्राह्मण के कहने पर अपने राज्य का आधा भाग अपने भाइयों को देने के लिए इनकार कर दिया। ब्राह्मण द्वारा उकसाए जाने पर वे दोनों दिल्ली के राजा पृथ्वीराज चौहान के पास चले गए। उसने अपने अधिकारी गंगा राम को रियासत का विभाजन करने के लिए प्रतिनियुक्त किया। गुग्गा चौहान ने गंगा राम को पीटा और उसका मुंह काला करके अपनी राजधानी से बाहर भगा दिया।

पृथ्वीराज चौहान सेना लेकर आ गया। उसने ब्राह्मण को आदेश दिया कि गुग्गा चौहान को बुलाओ। पर शरारती लोगों ने पृथ्वी राज चौहान से कहा कि गुग्गा चौहान की गायों को सारी रात के लिए पकड़े रखो। शाम को गुग्गा ने अपने नीले घोड़े पर सवार होकर तथा अपने 22 गांवों के लोगों के साथ पृथ्वीराज चौहान की सेना तथा अरजन–सुरजन पर आक्रमण कर दिया। गुग्गा ने दोनों चचेरे भाइयों के सिर धड़ से अलग कर घोड़े की काठी पर बांध दिए।

महल में पहुंचने पर बाछला ने पूछा कि किसकी जीत हुई ? गुग्गा का मुंह प्यास से सूखा हुआ था, उसने अरजन–सुरजन के सिरों को माता के चरणों में रखते हुए कहा कि जीत हमारी ही हुई। बाछला ने दोनों के सिरों को देखते हुए मात्र इतना ही कहा कि तुम पुनः कभी मुझे अपना मुख मत दिखाना At this sight Bachhla bade him not show her his face again.

गुग्गा चम्पा वृक्ष के नीचे उदास मन से खड़े हो गए। धरती से प्रार्थना की कि मुझे अपने में समा लो। धरती ने कहा रतन नाथ से योग सीखो या फिर आयतें पढ़ो। आश्विन मास के 14 बदी को गुग्गा धौला धरती में अपने घोड़े और अस्त्र–शस्त्र के साथ समा गए।

एक गडरिये ने गुग्गा को धरती में समाहित होते देखा। उसने बाछला और उसकी पत्नी सुरियल को आकर बता दिया। बाछला और सुरियल उस स्थान पर गयीं पर वहां उन्हें गुग्गा के कोई पदचिन्ह नहीं मिले और वे वापस घर लौट आईं। उस रात को गुग्गा की पत्नी नींद में ज़ोर से चिल्लाई। स्वप्न में उसे गुग्गा चौहान भाले के साथ नीले घोड़े पर दिखाई दिए। अगली सवेरे उसने अपनी बूढ़ी परिचारिका संदल को अपने स्वप्न के बारे में बताया। उसने

शेष जीवन गुग्गा की भक्ति एवं समर्पण में व्यतीत करने का उपदेश दिया। गुग्गा हर रोज़ मध्यरात्रि को सुरियल के पास आता। गुग्गा ने उससे वचन लिया कि बाछला को उसके आने की सूचना न मिले। तथापि एक बार तीज के त्योहार पर सभी औरतें सुन्दर कपड़े तथा श्रृंगार करके बाछला के पास गयीं। सुरियल अपने गहने तथा श्रृंगार उतार कर सादे कपड़े पहन कर औरतों के साथ तीज त्यौहार मनाने के लिए चल पड़ी। नौकरानी ने बाछला को सुरियल के श्रृंगार और सुन्दर कपड़ों की घटना सुना दी। बाछला ने उससे पूछा कि श्रृंगार क्यों करती है। गुग्गा तो मर चुका है। उसको उसने पीटा भी। अंततः उसे रहस्य बताना ही पड़ा। रात्रि को जब गुग्गा आया तो सुरियल ने सास को जगाकर अपने श्रृंगार का रहस्य खोल दिया। बाछला अपने पुत्र गुग्गा को देखकर आश्चर्यचकित हो गई और बोल पड़ी, अरे जिस मां ने तुझे नौ महीने अपने उदर में रखा, उस मां से तुझे प्यार नहीं रहा, जितना तुम इस सुरियल से प्यार करते हो। तुम्हें नारी प्यारी है, मां नहीं। इस घटना के पश्चात् गुग्गा फिर कभी भी रात को सुरियल से मिलने के लिए महल में नहीं आया और सदा–सदा के लिए अन्तर्धान हो गया।

लोक गाथा में गुग्गा के दो विवाहों का उल्लेख हुआ है। पहली घटना के अनुसार केलमदे के पिता ने शादी से इसलिए इनकार कर दिया था कि उसकी बेटी छोटी आयु की थी तथा गुग्गा की प्रौढ़ आयु थी। अन्ततोगत्वा राजकुमारी केलमदे की दृढ़ मनोभावना के कारण गुग्गा से उसका विवाह सम्पन्न हुआ। रानी बाछला ने भी पहले उसका अपमान किया तथा इस सम्बंध से इनकार कर दिया लेकिन गुग्गा ने मां की भावना का सम्मान न कर इस विवाह सम्बंध को स्वीकार कर लिया।

दूसरे विवाह–प्रस्ताव को भी मां ने स्वीकार नहीं किया था। वह गोड़बंगाल जिसे जादू टोने वाला देश माना जाता है, उस तिलस्मीदेश देश की राजकुमारी सुरियल से गुग्गा का रिश्ता नहीं करना चाहती थी लेकिन बेटे के हठ के आगे मां की एक न चली। इसी प्रकार मौसेरे भाइयों की हत्या भी गुग्गा ने अपनी माता की भावना के विरुद्ध की थी इसी के परिणामस्वरूप दुखित होकर रानी बाछला ने उसे बारह वर्ष का देश निकाला या फिर पुनः मुंह न दिखाने का आदेश दे दिया था। अर्थात् माता अपने पुत्र गुग्गा का मुंह देखना भी उचित नहीं समझती थी। इस लोकगाथा में चमत्कार जनक एक प्रसंग लगता है जब गुग्गा धरती में समा जाता है तथा गुरु गोरख नाथ उसे इन्द्रलोक से वापस लाकर अर्ध रात्रि में रानी सुरियल से मिलाने का कार्य करते हैं।

गुग्गा चौहान की लोकगाथा में गुग्गा की वीरता के दो ही प्रसंग आते हैं। एक रानी केलमदे के साथ दुर्व्यवहार के फलस्वरूप गुग्गा का मौसेरे भाइयों से युद्ध करना और उनकी हत्या करना। दूसरा प्रसंग है – गुग्गा के मौसेरे भाइयों के बहकाने पर दिल्ली के सुलतान का बृहद् फौज लेकर गुग्गा पर आक्रमण करना तथा गुग्गा चौहान का दिल्ली मुग़ल सुलतान तथा पठानों को परास्त करना। इस दूसरे प्रसंग का उल्लेख भी राजस्थानी लोकगाथा में संकेतात्मक ही किया गया है।

हिमाचल में गुग्गा गाथा में मुख्य पात्र वही हैं जिनका परिचय हमें राजस्थानी लोककथा में मिलता है, जैसे – गुरु गोरखनाथ बाछला, काछला, गुग्गा, अरजन, सुरजन, सुरियल, नीला घोड़ा, गुगड़ी, नरसिंह, भज्जू आदि।

हिमाचली लोक कथा में केलमदे का कहीं उल्लेख नहीं मिलता। यहां की गाथा में प्रधान नायिका सुरियल है। लेकिन इतना स्पष्ट है कि हिमाचली लोककथा का मूल आधार गुग्गा चौहान की प्रचलित जीवन गाथा ही रही है, तथापि कहीं–कहीं कल्पना द्वारा कुछ प्रसंगों को नवीन रूप देकर चित्रित किया है। इस प्रसंग में तीन चित्रणों की चर्चा की जा सकती है। जैसा कि गुरुगोरखनाथ से बहन काछला का अपनी बहन बाछला के साथ विश्वासघात करके संतान प्राप्ति का फल लेने पश्चात् बाछला के गुरु–आश्रम में पहुंचने पर, गुरु ने उसे तत्काल कोई फल नहीं दिया। हिमाचली लोक कथा के अनुसार गुरु गोरखनाथ को बाछला के लिए पुत्र प्राप्ति का फल प्राप्त करने के लिए पहले नागलोक में वासुकी नाग के पास, तत्पश्चात् इन्द्रलोक में राजा इन्द्र के पास, उसके बाद पवन देव तथा अंत में स्वर्गलोक में धर्मराज के पास जाना पड़ा। इस प्रसंग का कथानक में कोई विशेष महत्त्व नहीं।

हिमाचली लोकगाथा में गौड़ बंगाल की सुरियल को ब्याहने के लिए गुग्गा चौहान का बारात लेकर जाने तथा वहां के जादूई चमत्कारों के प्रसंगों का भी बड़े विस्तार से वर्णन किया गया है। प्रसंग का भी मूल कथानक के साथ या उसके विकास में कोई योगदान नहीं है।

अरजन–सुरजन के भड़काने पर दिल्ली के सुलतान (गढ़गजनी) की सेनाओं का 'ददरेवा' पर आक्रमण कर उसे लूटना। उस समय गुग्गा चौहान गौड़ बंगाल में था। गुग्गा की माता तथा बहन ने तुलसु दायी को भेजकर गुग्गा को मुगलों के दढ़ेरा पर आक्रमण करने की सूचना भेजी।

इस समाचार के मिलते ही गुग्गा सुरियल को लेकर अपने बागड़ (राजस्थान) पहुंचा। लोक कवि गेगरा ने इस प्रसंग का बड़े विस्तार से, बड़े मौलिक रूप से वर्णन किया है। इसमें मुग़ल सेना द्वारा हरण की गई एक ब्राह्मणी की गऊ की चर्चा अत्यंत मार्मिक एवं प्रतीकात्मक है। राजा गुग्गा चौहान उस गाय के बदले में ब्राह्मणी को सोने की गऊ देने लगते हैं परन्तु ब्राह्मणी अपनी असली गाय लेने का हठ करती है। जब इस धर्म संकट से बचने का कोई रास्ता नहीं रह जाता तो गुग्गा अपने साथी 'कालीवीर' को लेकर गढगजनी पहुंच जाता है। वहां मुगलों को पराजित करके ब्राह्मणी की गाय को मुक्त करवाकर वापस ब्राह्मणी को देता है।

गुग्गा चौहान ने मुगलों के साथ कई लड़ाइयों में सक्रिय भाग लिया। एक लड़ाई में उसका सिर धड़ से अलग कर दिया फिर भी वह बिना सिर के ही लड़ता रहा। इतिहास के अनुसार–

Guga is said to have fought many battles with Muhammadans and in the last his head was severed from his body, hence Mudilikh from Munda head, and Likh a line.

Mundlikh's death is supposed to have taken place on the eight days of the dark half of the moon in bhadon, and from that date for eight days his shradha, called gugganavmi, is yearly observed at his shrines. He is reprensented by stone figure of a man on horeback, accompanied by similar figures of his sister Guggari, a deified heroine, his wazlr, Kailu and others. The rites of worship are much the same at Devi temples.

Sir Richard Temple regards Gugga as a Rajput hero who stemmed the invasions of Mahmud of Ghazni and died, like a true Rajput in defence of his country but by the strange irony of fate he is now a Saint, worshipped by all the lower castes, and is as much Muhsalman as Hindu.

अतः गुग्गा को 'मुण्डलीक' के नाम से भी जाना जाता है। उसकी मौत भाद्रपद की अर्धरात्रि को नवमी के दिन हुई। इसलिए यह दिन गुग्गा नवमी के दिन के रूप में बड़े धूमधाम से मनाया जाता है।

❒

नाथ सम्प्रदाय में गूगा ज़हर पीर (बीर)

संसार चन्द प्रभाकर

गुरु गोरख नाथ, नाथ सम्प्रदाय के सशक्त चमत्कारी माने जाते हैं। राजा भर्तृहरि, राजा गोपी चन्द, राजा रसालू, गूगा जहर पीर (बीर), मच्छन्दर नाथ, चरपट नाथ आदि और भी नाथ आलौकिक शक्तियों से युक्त माने जाते हैं जिनका सिद्ध सम्प्रदाय के सिद्ध पुरुषों बाबा दयोट सिद्ध, बाबा सिब्बो, बाबा अजियापाल आदि से विशेष सम्बन्ध बतलाया जाता है। ये सभी सिद्ध तथा नाथ सम्प्रदाय के चमत्कारिक पुरुष, जो आलौकिक शाक्तियों से युक्त थे हिमाचल प्रदेश की रमणीक घाटी में अपनी योग साधनाओं हेतु आराधना के मन्तव्य से आए और इन सिद्ध तथा नाथ पुरुषों में हिमाचल प्रदेश की जिस भी गुफा, नदी, तट, टीले तथा वनखण्डी को अपनी अराधना हेतु चुना वह आज के युग में तीर्थ स्थल के नाम से इन दिव्य पुरुषों का नाम लेकर पुकारा जाता है।

हिमाचल प्रदेश में इन सिद्ध तथा नाथ पुरुषों ने अपने सम्प्रदाय का प्रचार तथा प्रसार भी किया और यहां रहने वाले कुछ लोग इनके चमत्कारों से प्रभावित होकर इनके अनुयायी बन गए। इनके वंशज अब नाथ (जोगी) जाति के लोग इन सिद्ध–नाथ पुरुषों की गाथाओं को गाकर आजीविका उपार्जन करने लगे परन्तु समय के बदलाव के साथ अब ये नाथ (जोगी) जाति के लोग गृहस्थी बन गए हैं परन्तु इन्हीं के कुछ वंशज जो अभी भी सिद्ध नाथ पुरुषों की अराधना स्थलियों पर विराजमान हैं, उनसे सिद्ध तथा नाथ सम्प्रदाय के तथ्यों का पता चलता है।

सिद्ध गुग्गापीर का ध्यान–नाथ सम्प्रदाय के स्थलों को देव स्थल कह कर पुकारा जाता है और इन स्थलों पर अभी भी अलौकिक चमत्कारों का प्रदर्शन होता है। जहां दयोट सिद्ध के स्थल पर जाने से पागलपन तथा कई प्रकार के मानसिक रोगों से छुटकारा मिलता है वहां गूगा जहरपीर, सिब्बो तथा नागनी के देव स्थलों पर पानी और मिट्टी के इलाज से सांप के काटे हुए मनुष्यों, पागल कुत्तों के काटे हुए लोगों तथा प्रत्येक प्रकार की

विषैली वस्तुओं के विष का असर दूर हो जाता है।

गूगा जहरपीर (वीर) के देवस्थल हिमाचल प्रदेश के अनेक भागों में हैं। इन देवस्थलों पर सांप के काटे लोगों का इलाज पानी और मिट्टी से किया जाता है। इन देवस्थलों पर लोगों की भारी आस्था है और यह स्थल इस बात के भी प्रतीक माने जाते हैं कि इन स्थलों पर कुछ समय बैठ कर गूगा जहर पीर (वीर) ने आराधना की होगी। इन्हीं स्थलों के आस–पास प्रतिवर्ष रक्षाबंधन के दिन से लेकर अष्टमी तक गूगा गाथा गाई जाती है।

गूगा गाथा के अनुसार गूगा जहर पीर राजस्थान के मारवाड़ इलाके के अन्तर्गत दद्रेहरा (दुधन्हेरा या दुनेरा) रियासत के शासक थे। इन के पिता का नाम जेऊर बताया जाता है। राजा जेउर की दो रानियां काशला और बाशला थीं परन्तु एक अन्य लोक गाथा के अनुसार पिता का नाम देवराज बतलाया जाता है। सम्भवतः राजा जेऊर का नाम देवराज उन की देव प्रकृति के कारण पड़ा होगा। इस भू भाग की लोकगाथा के अनुसार गजनी के राजा बलदेव राज की दो लड़कियां बाशला और काशला थीं। वे दोनों ही राजस्थान के दद्रेहरा रियासत के राजा की रानियां थीं।

एक बार गजनी का राजा बलदेव जब किसी शत्रु का दमन करने हेतु दूर गया हुआ था तो उस के गजनी जाने के उपरान्त ही बाशला और काशला का जन्म हुआ। राजा बलदेव अपने शत्रुओं का दमन करके जब बारह वर्ष के उपरान्त घर पहुंचा तो उसे काशला और बाशला महलों के पास मिलीं। राजा बलदेव के वंशज उन दिनों लड़कियों को पैदा होते ही जान में मार दिया करते थे। बाशला और काशला की माता को जब राजा बलदेव के आने की सूचना मिली तो उस ने अपने एक मंत्री को बाशला और काशला के अंगरक्षक के रूप में नियुक्त किया और अपने हाथ से राजा बलदेव के लिए एक पत्र भी लिख दिया कि वह उन लड़कियों को क्रोधित होकर जान से न मार दे क्योंकि बाशला और काशला दोनों बहनों का जन्म मंगलवार को हुआ था इस लिए उन की माता उन्हें देवियां समझती थी।

लोक गाथा के अनुसार :–

मंगल वारें परगट होईएं भक्ति नाम रखाया।
दक्खण पूर्व संघ चढ़ि आऊंदे दर विच आसन लाया।
लै परदखणा फिरन चफेरें दर विच आसन लाया।।

गजनी के बलदेव राजा की लड़कियों के प्रति क्रूरता की गाथा इस

पंक्ति में है :– **'गढ़ गज़नी दा बलदेव राजा धीया नूं रखदा नाई**

अर्थात् राजा बलदेव बेटियों को जान से मार देता था। ज़ब राजा बलदेव अपने शत्रुओं का दमन करके बारह वर्ष के उपरान्त गजनी वापस लौटा तो वह रास्ते में महल के पास बाशला और काशला दोनों बहनों को देख कर कहता है :–

राजा : केहड़ा लड़कियो तुहाड़ा भाहर ग्रां है ?
किस राजे दी जाई ?
लड़कियां : गढ़ गजनी दा भाहर ग्रां है,
बलदेवे दी जाई ?
इतणी गल्ल सुणी राजे ने,
लई ऐ तेग उठाई।
कोलों उठ वजीर प्यारा,
चिट्ठी कड दिखाई।
चिट्ठी बाची बलदेवे ने,
लईयां गोद बिठाई।

इस प्रकार जब राजे ने दोनों बेटियों को अपनी गौदी में बैठाया तो लड़कियां कहने लगीं :–

लड़कियां : जे तूं साड़ा धरमी बावल,
पट दी पींग पुआ दे।।
राजा : कुथूं दे पट दियां मंगाई,
कैहदी पींग पुआं मैं ?
पच्छम पट्ट मंगुआ देवां मैं पिप्पल पींग हुलारे
पींगां झूटदियां इक्क बाशला
दूजी काशला भैण वे हां........
इक्को दईयां झूटदियां मेरी माता दे दरबार
सदा शिव दुर्गा दे अवतार।
सिर पर सूईयां चादरां सोवन
गल़ फुल्लां दे हार
ठंडियां गुफां दियां छावां
ऊच्चे पिप्पल पींगां पईयां
सोहल पंघडू पर दियां ल्हासां
झूटन बारो–बार।

गाथा बाशला और काशला के बचपन से यौवन तक राम्बंधित है। इसके उपरान्त ग़जनी के राजा बलदेव ने इन दोनों बहनों का विवाह मारवाड़ (राजस्थान) की रियासत दद्रेहरा (दुधन्हेरा या दुनेरा) के राजा जेउर (देव राजा) से कर दिया। लम्बे समय तक ये दोनों बहनें निःसन्तान रहीं। इस बात का प्रमाण गाथा की इन पंक्तियों से मिलता है।

न्होई धोई इक दिन राणियां आरसिया मुख लाया,
कालड़ियां केसां दे धौलड़े होए केसां रंग बदलाया।
राणी रोई ए ?

रानी के रोने की बात सुन कर राजा महल को आया और पूछने लगा :–

'खुलियां तणियां पैर प्यादें राजा मैहलां की आया'।।

राजा : **सुखे दी रोंगी राणीं तां सटंगा मारी**
दुखे दी रोंगी तां पईए पुजांगा'

बाशला : **कदूं तां होणा राजा पुत्तरियां सौतरियां,**
कदूं खल्हाणे गोदा जाए ?

राजा : **कर्मां नीं लिखे साड़े गोदा नयाणें,**
कुथूं दे खल्हाणें गोदा जाए ?
हटियां हुन्दे राणी मैहंगे खरीददे
पुत्तर नीं मिलदे उधारे
सद्‌द के पण्डत बाशला पुछदी
सांजो आंसिया दा कोई जतन बता
पोथी बांची पण्डत बोलदा
गोरख टिल्ले जा

पण्डित की इस बात पर बाशला गोरख टिल्ला जाती है और बारह वर्ष तक गुरु गोरख नाथ की तपस्या करती है। बारह वर्ष की बाशला की तपस्या से जब गोरख टिल्ला हिलने लगता है तो गुरु गोरख नाथ के चेले टिल्ले के हिलने का कारण पूछते हैं तो गोरख नाथ जी कहते हैं :–

'भगति संपूरन हो गई चेलियो बाशल माई'
गोरख चल्लिया टिल्लियों गहरी नाद बजाई
तिन सौ सट्‌ठ चेला चल्लिया गासें धुंध मचाई
डरदे लोकी भाहर नगर दे एह के आफत आई ?
मैहल चड़ी राणी बाशल दिखदी एह गुरु मेरे आए
सन्दल बाग पिपलां दे हेठें संतां आसन लाए

फुल पताशे बाशल पाए गुरां दे पासें आई
अग्गें गुरु बोलदे कौन खड़ी मेरी माई?
फलां दे कारन आईयां गुरुआ दे फल हमारे ताईं
बेवक्ता फल कोई न पाए पैहली किरना आई'

बाशला को जब गुरु गोरख नाथ ने सुबह फल देने को कहा तो वह बड़ी प्रसन्न हुई और घर लौट आई। उस ने घर आ कर यह बात अपनी छोटी बहन काशला से बतलाई। काशला बड़ी चालाक थी। जब सायं काल हुआ तो वह अपनी बड़ी बहन के पास गई और कहने लगी :–

काशला :– दियां नीं भैणे वस्त्र अपणे पीर मनामण जाणा'

बाशला :– 'एह लै चाबी खोल पटारू लई लै नौआं पुराणा'

काशला :– नौए वस्त्र रैहन पटारू मैं पिंड़े दा लैणा

बाशला अपनी बहन काशला की यह बात सुन कर अपने वस्त्र उतार कर उसे दे देती है और काशला उस के वस्त्र पहन कर आधी रात के समय ही गुरु गोरख नाथ के पास चली जाती है। उसे देख कर गुरु गोरख नाथ कहते हैं :–**'अद्दिया राती पक्कें धरातें तू कौन खड़ी मेरी माई ?**

काशला :– फलां दे कारन आईयां गुरुआ दे फलहम रे ताईं

जब गुरु गोरखनाथ उसे सुबह आने की बात कहते हैं तो काशला कहती है कि पण्डित ने यही मुहूर्त फल लेने का बतलाया है। उसकी यह बात सुन कर गुरु गोरख नाथ ने अपनी झोली में हाथ डाल कर उसे जौ के दो दाने दे दिए। जिस को खा लेने से कालान्तर में काशला के दो पुत्र अर्जुन और सुर्जन पैदा हुए। सुबह होने पर बाशला भी फूल और पताशे थाली में डाल कर गुरु गोरख नाथ के पास फल लेने जाती है। गोरख नाथ उसे कहते हैं कि तू अभी फल ले कर गई है तो बाशला कहती है 'वह मेरी छोटी बहन होगी।' गुरु गोरख नाथ इस बात को सुन कर अचम्भित रह जाते हैं और अपनी झोली में पुनः हाथ डालते हैं तो उन्हें कोई फल नहीं मिलता। वह चेलों से सलाह करते हैं और विधि माता के पास जाते हैं, वहां से भी उनको नकारात्मक उत्तर मिलता है। ब्रह्मा, विष्णु और शिव के पास जा कर भी उन्हें बाशला के लिए फल नहीं मिलता और अन्त में वह पाताल लोक में बासुकी नाग के पास जाते हैं। बासुकी नाग उन्हें कहता है कि जिस प्रकार का भी फल लेना है, ले जा सकते हो तो गुरु गोरख नाथ कहते हैं :–

जे तूं फल देणा साकी तां सज्जे पौए दा नाग दई दे
रोशन चार चफेरे दा

गोरख नाथ जी की इस बात को सुनकर बासुकी नाग कहता है कि ऐसा करने से पाताल पुरी में अंधेरा हो जाएगा परन्तु गुरु गोरख नाथ नहीं मानते और वह मन्त्र के द्वारा नाग को गुग्गल धूप बना लेते हैं।

'अच्छत मारे गुरु गोरख नाथां गुग्गल गडियां नाग बणाया
अपणी झोली बिच पाया'
'मार फंकारे बान्दी नागण आई
कित्थे जाणा राजिया तू जान बचाई
तां अच्छत मारे गुरु गोरख नाथां
गुग्गल गडियां नागणी बणाई।

नागण : मैं भीतल होईयां ते मेरी पेश न कोई मेरी जोड़ी न खण्डायां'

गुरु गोरख नाथ अब उन गुग्गल की गट्ठियों को ले कर चले आए और उन्होंने वह फल के रूप में बाशला को दे दी और पीस कर खाने को कहा। बाशला फल को ले कर घर चली आई। उन गुगल की गट्ठियों को उस ने पत्थर की शिला पर पीसा तथा गुग्गल को खा कर पानी पी लिया और वह शिला को लेकर नदी में फैंकने के लिए चल पड़ी। रास्ते में उसे एक डोम की पत्नी मिली, वह उस के हाथ से शिला ले कर समुद्र में फैंकने चल पड़ी। रास्ते में उस ने शिला का शेष गुग्गल जिह्वा से चाट लिया और शिला समुद्र में फैंक दी। शिला जल घोड़ी ने खाई जिस से नीला घोड़ा पैदा हुआ जो बाद में गूग्गे की सवारी के लिए प्रयोग में आया। वह डोम की पत्नी जिस ने शिला को जिह्वा से चाट लिया था उस से बाबा कैलू की उत्पत्ति हुई।

गुरु गोरख नाथ ने दूसरी नागण वाली गुग्गल की गट्ठी गढ़ बंगाल के राजा सिरी चन्द की रानी को दी, वहां उसे सिलियर नाम की लड़की पैदा हुई जो बाद में गुग्गे की पत्नी बनी। बाशला के इस घटना के उपरान्त भी बच्चा न हुआ। गुग्गा बारह वर्ष तक बाशला माता के गर्भ में रहा। यह बात देख कर राजा ने बाशला को निस्संतान जान कर उसे देशनिकाला दे दिया। उसे रथ पर बैठा कर रथ वाहक को बाशला को जंगल में छोड़ने की आज्ञा दे दी। बाशला का रथ जब जंगल में पहुंचा तो वह उसे वहां छोड़ कर कुछ देर विश्राम करने लगा। वहां एक बड़े सांप ने रथ वाहक और घोड़ों को काट खाया और सांप बाशला की ओर बढ़ा बाशला उसे देख कर रोने लगी तो

उस के पेट से गुग्गा बोला, माता तू क्यों रो रही है? पेट से आई आवाज़ को सुन कर बाशला बोली तू कौन शै है जो मेरे पेट से बाहर नहीं आती जबकि मुझे तेरे लिए देश निकाला हो चुका है और मैं अब अपने मायके जा रही हूं। माता तू घर को वापस लौट क्योंकि मैं अपने नाना के घर पैदा नहीं होऊंगा। यदि ऐसा हुआ तो मैं नानकू कहलाऊंगा। जब इस संसार से सूतक हट जाएगा अर्थात् कोई बच्चा जन्म न लेगा तो उस समय मेरा जन्म होगा पेट के अन्दर की आवाज को सुन कर बाशला पुनः वापस गोरख टिल्ला की ओर गई और उसके एक वर्ष पुनः गुरु गोरख नाथ की तपस्या की। गोरख नाथ ने बाशला को घर जाने को कहा। जब बाशला अपने महल की मण्डी (डयोढ़ी) पर पहुंची तो गोरख नाथ ने ब्रह्माण्ड का सारा सूतक अपने हाथ पर थाम लिया तथा उसी क्षण गुग्गा का जन्म हुआ। मण्डी में पैदा होने के कारण गुग्गा चौहान को गुग्गा 'मण्डलीक' कहा जाता है।

गूगा की बरसोली (मंत्र)

लाड सहेले गुरु गोरख चेले बैठे न आसण लाई
बारह तां बारह चौबी छूए मां बाशला सेवा कमाई
उडदे तप धियाए जीह्वा चौंके पाए
लूणिया सिल्ला चट्टी धार कीते
सुन्ने केसे व्हारिएं तूं तां सेवा दे फल पाए
राजा मण्डलीक कच्चें धागें पाणी दी चूटिया
विसां दे निरविस कीते मोयां धौलां की सांस पाए
गर्भाशय बक्खें गल्लां कीतियां तां गुग्गे चौहान मण्डलीक कहाए
खुलियां तणियां पैर प्यादें देव राज मैहलां की आए
सद्द बुलाया बोलूं नगार ची चोट नगारें पुआई
गढ़ दुधन्हेरें नौबत बज्जी बज्जी गुग्गे दी बधाई
दिल खुशियां बिच आई
भण्ड मरासी करन कल्याणां बज्जी गुग्गे दी बधाई
रल मिल नारां मंगल गावन, गावन गुग्गे दी बधाई
अम्मा बाशल बन्ददी बधाईयां दिल खुशियां बिच आई
लोकी सारे करन कल्याणा ब्राह्मण सीरबाद बुलाई
सद्द बुलाए सिरीखण्ड परोहित सद्द बुलाणे गुरु गोरख
मस्तक भबूत चढ़ाई

पंज दिनां दा होया गुग्गा रास गणामण लाई
पण्डित बईयां बाचदे, पोथियां बांचदे बाचन वेद पुराणे
नानकें चंगा दादकें चंगा कुले की माड़ा नाई
चार कूंट दा राज करना राजा तेकी कमी नाईं
पहलें पहरें राजा मण्डलीक जन्मे दूजें गुगड़ी जाई
तीजें पैहरें नीला रथ जम्मियां चौथें कैला बच्छी जाई
चौने पैहरां चौरे जीव जन्मे जग बिच रोशनी आई
गुग्गे दी मां अम्मा बाशल नीले रथ दी घोड़ी
जद तक्कर रैहण गुग्गा चौहान चारे चीजां रैहंगियां
जोड़ी टल बिच आई।।

गुग्गे के विवाह का झेड़ा

पहला तमोल गुरु गोरख लान्दे, मस्तक भबूत चढ़ाई
दूआ तमोल सिरी खण्ड ब्राह्मण लान्दा तिलक जनेऊ पाई
तिज्जा तमोल मासी काशल लान्दी माख मण्डूक च आई
चौथा तमोल भैण गुगड़ी लान्दी घोड़ें बाग फड़ाई
पंजवां तमोल अम्मां बाशल लान्दी मुख मम्मा पलाई
सब साऊ सलाई करदे कैलू जानियां नीणां नाईं
सब साऊ जानियां चल्ले कैला काला जानिया नीणां नाईं
भैण गुगड़ी अरजां करदी सब साऊ जानियां चल्ले
दुधन्हेरें रिआ नी कोई, मैं किल्लिया नी रैहणा भाई
तूं रैह दूधन्हेरें भाई
जिन्हां गल्लां देई तूं गलानी मैं अग्गें जाणनां जाई
गोरे गोरे सब जानियां नीणें काला नीं नीणां कोई
लैन्दे राकियां देन फराकियां थैय्या थैय्या पर जाई
सिर ऊंकारां दियां कगलियां नाग नागणियां तलवारीं
मंजलें मंजलें चलदी जानी रैहन्दी संकर घटिया जाई
अद्दिया रातीं परभाते बेलें नागां की खबर आई
मंग थी साड़ी नागो गुग्गें व्याहमण लाई
अद्दिया रातीं ठारह खरोणी नाग
चढ़े मातर लोके की आई
फिरदा–फिरदा घेरा पाया राजैं की जाग नीं आई

छम–छम देई के राजा रोन्दा हुन्दा कैलू भाई तां लैन्दा छुड़ाई
हुकम कीता सुरगणू वीरें जा दुधन्हेंरे ताई
जाई गलायां भैणा गुगड़िया नागां घेरिया आई
रातो रात उडिया सुरगणू आया दुधन्हेरे ताई
मिलदा भैणा गुगड़िया की सारी गल्ल सुणाई
खुलियां तणियां पैर प्यादें भैण गुगड़ी कैलुए पास आई
सुतिया वीरा सुपना होया संकर घाटिया नागां घेरा पाई
उठ तैयार हो वीरा जा संकर घाटिया ताई
नागां ने युद्ध करना कनैं वीर लैणा छुड़ाई
'पंज अग्नी जे घोड़ा दैं तां मैं जाना
लैना वीर छुड़ाई जाना संकर घाटिया ताईं
ओथों चलदी भैण गुगड़ी घोड़े ने अरजां की आई
सुआरी दे कैलुए की संकर घाटिया ताई
घोड़ा बोलै बोल, 'कैलुएं सुआरी दिंगा कैलुए ताई
मेरे ने खुरी लाई तां जिमी पर मारगा भुआई
जे मेरे ने छिट्टी लाई तां आसमान दिंग्गा उड़ाई'
हुकम कीता चरबेदारें ठारहं मणां दी पक्खर पाई
हीरे मोती लाल जड़े उप्पर लाल जड़ाई
लिया अग्नी घोड़ा कैलू करदा सुआरी भाई
घोड़े दा होया सुआर कैलू वीर
डूडी पैहरे च संकर घाटिया जाई
मारियां ललकारा नागां ताईं
एह राजा दुशमण तेरा गोरे–गोरे साऊ जानियां आन्दे
काला नीं आन्दा कोई
इक्क पासे तें करो लड़ाई
ठारह खरोणी नाग किट्ठे कीते उप्पर चादर उढ़ाई
सारे नाग भस्म कीते कालिया न्हट्ठा जाई
मेरी जान रख राजिया तूं धरम दा भाई
कैलू बोले सुण राजा छड थां दुसमणें जाई
राज़ा बोलिया सुण कैलू, 'एह वणियां धरम दा भाई'।।

इस प्रकार गुग्गा चौहान की सहायता उसका भाई कैलू करता है और गुग्गा चौहान का विवाह गढ़बंगाल में सिरीचन्द राजा की लड़की सिलियर

से सम्मन्न होता है। गुग्गा चौहान बारह वर्ष अपने ससुराल में ही व्यतीत कर देता है। इस समय में अर्जुन और सुर्जन दद्रेहरा (दुधन्हेरा की रियासत पर अपना अधिकार स्थापित कर लेते हैं। उन की माता काशला का देहान्त अर्जुन और सुर्जन के जन्म लेने के उपरान्त ही बताया जाता हैं।

गुग्गा बारह वर्ष के उपरान्त जब वापस लौटता है तो वह अपना राज्य सिंहासन का अधिकार अर्जुन और सुर्जन से मांगता है, क्योंकि वह काशला की बड़ी बहन बाशला का पुत्र है परन्तु अर्जुन और सुर्जन राजगद्दी छोड़ने से इनकार कर देते हैं। माता बाशला को इस बात की खबर नहीं होती क्योंकि गुग्गा चौहान अपने ससुराल से आकर सीधा राज दरबार में जाता है। राज्य के लिए अर्जुन और सुर्जन से युद्ध होता है तथा वे दोनों भाई युद्ध में मारे जाते हैं।

इस के उपरान्त गुग्गा चौहान भारत का छत्रपति राजा बन जाता है। छत्रपति राजा बनने के लिए उसे अनेक युद्ध करने पड़ते हैं। अपने सेनापति अजियापाल और भाई कैलू की सहायता से नीले घोड़े का सवार गुग्गा चौहान सभी युद्धों में विजय प्राप्त करने के उपरान्त अपनी मां के पास जाता है। बाशला उससे अर्जुन और सुर्जन के युद्ध में उसके हाथों मारे जाने का समाचार पाकर गुग्गा को देश निकाला दे देती है। गुग्गा चौहान को भी अर्जुन और सुर्जन की मृत्यु का पश्चात्ताप होता है और वह गुरु गोरखनाथ की शरण में जाकर वैराग्य प्राप्त कर लेता हैं तथा चमत्कारयुक्त होकर भारत का भ्रमण करता है।

कुछ लोगों का कहना है कि अपने गुरुओं की रक्षा हेतु किसी युद्ध में उस का देहान्त हो जाता है परन्तु यह किंवदन्ती एक चमत्कारी पुरुष की मृत्यु के लिए ठीक नहीं उतरती। गुग्गा के कुछ भक्तों का यह कहना है कि एक बार गुग्गा की बहन के कहने पर गुग्गा की पत्नी ने गोबर में तेल डाल कर अपना भवन लीपा-पोता था और उसी गोबर का उसने चौका डाल लिया था। उससे दूसरे दिन का सूर्य उदय होने पर गुग्गा चौहान ने वहीं आकर अपनी समाधि ले ली थी।

इस प्रकार हिमाचल प्रदेश की लोक कथाओं में अनेक ऐतिहासिक तथ्य देखने को मिलते हैं। गुग्गा चौहान के जीवनवृत्त से हमें सिद्ध-नाथ सम्प्रदाय के चमत्कारों तथा अनेक अलौकिक शक्तियों एवं भारत की आध्यात्मिकता और हिमाचल प्रदेश में स्थित अराधना स्थलों का पता चलता है।

❐

हमीरपुर जनपद में गुग्गा परम्परा

बी॰ आर॰ जसवाल

हिमाचल प्रदेश के हमीरपुर, कांगडा, मंडी, बिलासपुर, चंबा, शिमला सोलन तथा सिरमौर आदि विभिन्न जनपदों में गुग्गा गाथा के गायन की परंपरा का प्रचलन है। यद्यपि यह परंपरा विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्नताओं को लिए हुए प्रचलित है तथापि गाथा का मुख्य कथानक गुग्गा के चमत्कारपूर्ण जीवन पर केन्द्रित है।

हिमाचल प्रदेश के हमीरपुर क्षेत्र में गुग्गा गाथा की प्रचलित परंपरा के प्रलेखन के आधार पर शोधपूर्ण आलेख में गुग्गा के इतिहास, संघर्षपूर्ण जीवनवृत्त तथा अनेकों चमत्कारों का विस्तृत विवरण लोक परंपरा के अनुसार प्रस्तुत है।

लोक परंपरा के अनुसार गुग्गा गाथा में सबसे पहले गुग्गा राणा की आरती इस प्रकार से गाई जाती है–

आरती गुग्गा राणा जी की

झकमक–झकमक आरती तेरैं मारूयें
झकमक–झकमक आरती तेरैं गुरुआं दे डेरैं
गुरु गोरख राणेयां मारूयें तेरैं
पंजा पांडू राणेयां मारूयें तेरैं
चौहट जोगणीं राणेयां मारूयें तेरैं
बूंजा वीर मारूयें तेरैं राणेयां
चुरासी सिद्ध राणेयां मारूयें तेरैं
काली माता राणेयां मारूयें तेरैं
हणमत जोधा राणेयां मारूयें तेरैं
भैरों छड़िये राणेया मारूयें तेरैं
चण्डी माता राणेया मारूयें तेरैं
नाहर सिंह वीर राणेयां मारूयें तेरैं

नौ नाथ राणेयां मारूयें तेरैं
कलिहर नाग राणेयां मारूयें तेरैं
चांवर झुलदी राणेयां मारूयें तेरैं
नौपत बजदी राणेयां मारूयें तेरैं
हस्त झुलदी दरबार
कुरदे नगारे बजदे राणेयां मारूयें तेरैं
परियां दा खाह्ड़ा राणेयां मारूयें तेरैं
तू माता सतवंती दा जाया
छत्री चुहान तेरा गोत
एसर पोता जेवर बेटा
अमरत रह गया राणेयां तेरा नौं
तू खोटां दा वरदाई, जादुआं दा वरदाई
नीला तेरा घोड़ा, मोतिये जड़ी कमाण
तू जै–जै छत्री चुहाना
मारू खंडा तेरा, तू रैहंदा दुसमणा च सई
जेहड़ी तेरी मनता करदा
छत्र छांयां उन्हां ते राणेयां तेरी
हत्थ देई नै रखदा, पल्ला देई नै ढकदा
लग्गे लगाये को पिछै ढांदा अपणा पैहरा पांदा
भेंट कार लेखै लांदा, साहें पराणे सुखा बरसांदा
जै–जै छत्री चुहाण जै–जै छत्री चुहाण।

आरती के बाद गुग्गा गाथा का इस प्रकार गायन किया जाता है–

गाथा का प्रारम्भ

ओ जी ना इस गुरुए दा अंत नी लगेया
न कोई बाप न माया।
भागवें गुरुआ दे कपड़े
भागवां वेस बणाया।
कान पड़ा के मुंदरां पाईयां
घर–घर अलख जगाई।
मजले–मजले माधो चल रेहा
समुंद्र टापू नू आया।

मंझ समुंद्रां टापुआ जोगी ने आसण लाया।
मैल करदा जोगिया विच पाणीएं मलाया
मैल छलेया पूरे एसरैं, पाणी विच रलाया।
मैल भड़च्छेया जला दीए मच्छलीए
मच्छ–कच्छ रैहण तिहाए।
मंझ समुंद्रां लैहरां जे उबलियां
बालक उच्छल्ल आया।
पाणिए चली मुईये झीरिये, बालक नजरी आया
परैं सट पाणिये दीया गागरा बालक लैंदी गोदा।
बालक नू पुच्छेया झीरिएं
कुण तेरा बाप कुण तेरी माया।
मच्छिया पेटा मैं पैदा होया
मच्छंदर नाम मेरा
मजले–मजले चलदा जोगीया
कजली वण विच आया, जोगीया बैठा समाधिया लाई।

अर्थ

यह गुरु महाराज अनन्त है इसका कोई अन्त नहीं है। इसकी न कोई मां है और न ही बाप, तथा यह भगवां वेश धारण किए हुए है। इस गुरु ने अपने कानों में छेद करके मुंद्रां पहनी हुई हैं और घर–घर जाकर अलख जगा रहा है।

यह महादेव गुरु मंज़िल–मंज़िल चलकर समुद्र के पास पहुंच गया और समुद्र के बीच इस जोगी ने अपना आसन लगा दिया। इस जोगी महाराज ने अपने हाथ से थोड़ा मैल समुद्र के पूरे जल में मिला दिया।

समुद्र के सम्पूर्ण मैले पानी को मछली ने पी लिया तथा शेष सभी जीव प्यासे रह गये। इस प्रकार समुद्र के बीच लहरें पैदा हुईं और उनमें से एक बालक उछल कर प्रकट हुआ।

उस समय एक झींवरी गागर लेकर पानी लाने जा रही थी, उसे वह बालक दिखाई दिया। उस झींवरी ने पानी की गागर को परे फैंक कर बालक को पानी से उठाकर अपनी गोद में ले लिया। उसने बालक से पूछा–" तू किसका बेटा है ? तुम्हारे मां बाप कौन हैं"?

इस पर उस बालक ने उत्तर दिया कि...."मेरा नाम मच्छंदर (मत्स्येन्द्र)

नाथ है और मेरा जन्म मछली के पेट से हुआ है। मत्स्येन्द्र नाथ गुरु गोरख नाथ जी के गुरु हुए हैं।

फिर वह जोगी महाराज मंज़िल–मंज़िल चलकर कजली वन में पहुंच गया और वहां धूना–समाधि लगा कर बैठ गया।

कजली वण ते चलेया जोगीया
सिरिहर नगरां च जाणा।
सिरिहर नगरी च आया जोगीया
बैठा समाधियां लाई।
मैल उच्छालेया जोगिएं गोहे दे बेठर मलाया।
गोहटुआं चुगदीए बुढ़ीए माईए बालक नजरी आया।
परैं सटेया गोहे दा टोकरा बालक कुच्छड़ लेया।
धरत पलटी सिरिये घमारियें छोड़ घरा वल आई।
इक मेरी आसा पूरी होई दूआ मेरा धर्मा दा भाई।
नहाया धुलाया बच्चा पत लपेटेया पलंगा ऊपर सुलाया।
पला विच याणा पला विच स्याणां पला विच बालक याणा।
किसा वे माईया दा बेटड़ा कुण तेरा बाप।
ना मैं माईया दा बेटड़ा न कोई बाप मेरा।
वसदें बेटा जाया, गोरख नाम मेरा।
बेटा हुंदा पूरे एसर दा,पूरा नौं ध्याया।

फिर जोगी कजली वन से चलकर सिरिहर नगर की ओर प्रस्थान कर गया। सिरिहर नगर में पहुंचकर जोगी महाराज ने समाधि लगा ली। जोगी ने हाथ का मैल निकालकर गोबर के ढेर में मिला दिया।

इस प्रकार गोबर के उपले इकट्ठे करते–करते एक बूढ़ी माई सिरी नामक कुम्हारी को उस गोबर के सूखे उपले में छुपा हुआ बालक नज़र आया।

उस माई ने गोबर के उपलों का टोकरा परे फैंक दिया तथा गोबर में छिपे बालक को गोद में उठा लिया।

उस सिरी नामक कुम्हारी ने खुशी के मारे धरती सिर पर उठा ली और दौड़ती हुई अपने घर को आ गई। वह कहने लगी–"एक तो मेरी आशा पूर्ण हुई तथा दूसरे यह बालक मेरा धर्म भाई लगा।"

उस बालक को सिरी नामक कुम्हारी ने नहला धुला कर कपड़े में लपेट कर चारपाई पर सुला दिया।

वह बालक रूप बदलता हुआ कभी बच्चा दिखाई दे रहा था तो.

कभी बड़ा। वह पूछने लगी उस बालक को कि "तू किस मां का बेटा है, तुझे किसने जन्म दिया, तेरा पिता कौन है?"

इस पर बालक का उत्तर था–"मुझे किसी भी माता ने जन्म नहीं दिया और न ही मेरा कोई पिता है। मुझे तो इस धरती माता ने पैदा किया और मेरा नाम गोरख नाथ है। नवजात बालक तो उस परम पिता परमेश्वर का है जिसकी तपस्या की जाती है।

जे तू पूरा जोगी ऐ ता चारें कुंठ सुधार
जे तू पूरा जोगी ऐ ता गंगा तीर्थ जायां।
एडे बोल न बोल, तूं मेरी धरमें दी मां।
जे तैंनू औखी भारी पौंहगी तां गोरख नाम ध्यायां।
मजले–ता–मजले गुरुआ चल रेआ विन्द्रा वण विच आया।
विन्द्रा वण में आया जोगीया बैठा ध्यान लगाई।
पहला ध्यान जो लाया गुरुएं धूडू नाथ बणाया।
दूआ ध्यान लगाया, चरपत नाथ बणाया।
तीजा ध्यान लगाया, मंगल नाथ बणाया।
चौथा ध्यान लगाया गुरुएं, गोदड़ी सिद्ध बणाया।
पंजवां जे ध्यान लगाया, भरथरी सिद्ध बणाया।
छेवां ध्यान लगाया, सिद्धा वे कनेरिया बणाया।
सतवां वे ध्यान गुरुएं लगाया काहनी चेला बणाया।
अठवां ध्यान लगाया गुरुयें, ठारा लख चेला बणाया।
नौआं ध्यान वे गुरुएं जे लाया, नौलख शंख बणाया।
चेले पुछदे गुरुआ केहड़े देसां नू जाणा।

सिरी कुम्हारी बालक को कहती है कि यदि तू पूर्ण रूप से सिद्ध योगी है तो चारों कुंठों (धामों) का सुधार कर और यदि पूर्ण रूप से योगी है तो गंगा नदी तीर्थ स्थल पर जा।

इस पर बालक गोरख नाथ सिरी कुम्हारी को कहता है.. "तू मुझे इतनी बड़ी बात न कह, तू मेरी धर्म की माता है। अगर तुझे कभी कोई कठिनाई महसूस होगी तो गोरख नाम का जप करना।"

इस प्रकार मंज़िल–मंज़िल पार करता हुआ गोरख नाथ चलकर वृन्दावन में प्रवेश कर गया। वृन्दावन में जोगी गोरख नाथ समाधि लगा कर बैठ गया। समाधि में लीन ध्यानस्थ गुरु गोरख नाथ ने पहले धूडूनाथ की उत्पत्ति की।

दूसरे ध्यान में उस ने चरपत नाथ की उत्पत्ति की।
तीसरे ध्यान में उस ने मंगल नाथ की उत्पत्ति की।
चौथे ध्यान में गोदड़ी सिद्ध की उत्पत्ति की।
पांचवें ध्यान में भरथरी सिद्ध की उत्पत्ति की।

छठे ध्यान में गुरु गोरखनाथ ने सिद्ध कनेरिया की उत्पत्ति की। सावतें ध्यान में उसने काहनी चेले की उत्पत्ति की। आठवीं बार गुरु गोरखनाथ ने अपनी करामात से अठारह लाख चेलों की उत्पत्ति की। नौवें ध्यान पर गुरु ने नौ लाख शंख बनाये।

इस प्रकार गुरु गोरखनाथ ने अपनी शक्ति से ऊपर वर्णित दिव्य पुरुषों की उत्पत्ति की, जिनकी गूगा गाथा में अहम भूमिका है।

इस पर सब चेले इकट्ठे होकर गुरु गोरखनाथ को हाथ जोड़कर पूछते हैं कि—"गुरु जी अब हम सब को किस—किस देश की ओर जाना है" ? तब गुरूगोरखनाथ जी ने कहा—

गुरु बोलदा मेरे चेलेया गंगा तीर्थ नू जाणा।
मजले—मजले चलदे गंगा वे डेरे आये
नीऊएं ता नीऊंएं गंगा बगदी उच्चे आसण लाया।
हुकम करदा मंगल नाथा तम्बू तुरत लायां।
भगवां तम्बू जरद किनारी रेसमी लड़ीया लासां।
हुकम करदा सिद्धा वे कनेरिए धूणीयां तुरत लगायां।
नौ सौ धूणियां धुखदियां, गुरुए गोरख दे डेरैं
नौ सौ संख कलकोरदा, गुरुए दे डेरैं।
गंगा ता बोलै पूरेया जोगिया धामा तू मेरीया खायां
धामा मैं तेरीया नी खांदा तू मुड़देयां खाणी।
रोयां धोई गंगा मैया उच्छल डेरैं आई।
रोएं होया गुरु गोरख नाथ गंगा तूंबिया पाई
धोया पतंबर मारेया अंबर, बरखां बंद कराईयां।

गुरु गोरख नाथ अपने चेलों को कहते हैं पहले गंगा तीर्थ स्थल को जाना है। इसके बाद मंज़िल—मंज़िल चल कर सभी गंगा तीर्थ स्थल पर पहुंच गए और वहां डेरा डाल दिया।

गंगा नदी निचले स्थान पर बह रही थी और गुरु गोरखनाथ तथा सभी चेलों ने गंगा से ऊपरी स्थल पर डेरा लगा दिया। गुरु गोरखनाथ ने मंगल नाथ को शीघ्र तम्बू गाड़ने का आदेश दिया। मंगलनाथ ने गुरु

गोरखनाथ की आज्ञा का पालन करते हुए शीघ्र ही भगवें रंग का तम्बू गाड़ दिया। उसमें लाल रंग की किनारी तथा रेशमी लड़ियां लगी हुई थीं।

गुरु गोरखनाथ ने सिद्ध कनेरिया को शीघ्र धूना जलाने का हुक्म दिया। देखते ही देखते गुरु गोरखनाथ के डेरे पर नौ सौ धूनियां जलती हुई नज़र आईं और नौ सौ शंखों का नाद शुरू हो गया। इस पर गंगा माता ने गुरु गोरख नाथ को कहा कि मैंने धाम तैयार की हुई है। इस सारे खाने को आप को खाना होगा। गुरु गोरखनाथ गंगा मैया को कहने लगे कि "मैं तेरी बनाई हुई धाम को नहीं खा सकता क्योंकि तू मुर्दों को खाती है" अर्थात् मृत शरीर की अस्थियों को गंगा नदी में प्रवाहित किये जाने के कारण गुरु गोरखनाथ ने गंगा द्वारा तैयार किए गए भोजन को खाने से इन्कार किया।

इस प्रकार गंगा नदी रोने-धोने लगी तथा गुस्से से उछल कर गुरु गोरखनाथ के डेरे में आ गई अर्थात् डेरे पर प्रवाहित होने लगी।

यह सब देखकर गुरु गोरखनाथ को गुस्सा आ गया और उन्होंने गंगा नदी को तूम्बे में बंद कर लिया। गोरखनाथ ने गंगा में पीताम्बर धोकर आकाश की ओर फेंक कर वर्षा बन्द कर दी।

खबरां होईयां बाबें नानका गंगा कुनी छपाई ?
कान पड़ाया मुंदरां पाईयां गल मरगानी, गंगा उनी छपाई।
गोशठ लग्गी बाबे नानका गुरु गोरख नाथा दे नाल
छडी दे गुरुआ गंगा, मच्छ-कच्छ मरह्न ध्याये।
गंगा छड्डी पूरैं जोगीऐं बगदी रैहण विहाणेया।
तेयोआ पतंबर मारेया अंबर रिमझिम बरखां लाईयां।
गंगा परसी पूरैं जोगीऐं हुण पूरब देसां जो जाणा।
पूरब देस गुरुएं परसेया चूड़े मुल्ख नूं जाणा।
चूड़ा मुल्ख परसेया पूरैं जोगीऐं गौहड़ बंगाले नूं जाणा।
गौहड़ बंगाला जादुए रा धेया रखदीयां भेडुआं बणाई।
हुकम करदा मंगल नाथा नग्गर फेरा पाणा।
गौहड़ बंगाला गुरुऐं परसेया दक्खण देसां नूं जाणा।
दक्खण देस गुरुऐं परसेया पच्छम देसां नू जाणा।
पच्छम देस गुरुऐं परसेया बगले कुंठ नू जाणा।

इस तरह सृष्टि के सर्जक परमपिता परमेश्वर को गंगा को छुपाने की खबर पहुंच गई और वह पूछने लगे कि गंगा को किसने छुपाया? उन्हें सूचना मिली कि कान में छिद्र डालकर जिस ने मुद्राएं धारण की हुई हैं, गले

में मरगानी (कंठी) धारण की हुई है, उसी ने गंगा नदी को छुपाया है।

इस प्रकार बाबा नानक (परमेश्वर) तथा गुरु गोरखनाथ के बीच बातचीत हुई। परमेश्वर गुरु गोरख नाथ को कहने लगे कि हे गुरु जी ! गंगा को मुक्त कर दो क्योंकि मछलियां और सभी जीव प्यासे मर रहे हैं।

इस तरह विचार–विमर्श के बाद गुरु गोरखनाथ ने गंगा नदी को तूंबी की कैद से मुक्त कर दिया और गंगा फिर से दिन–रात बहने लगी।

गुरु गोरखनाथ ने उसी प्रकार फिर से अपनी करामात दिखाई और आसमान से रिमझिम–रिमझिम वर्षा शुरू हो गई।

इस प्रकार गंगा नदी की पूजा कर गुरु गोरखनाथ अपनी संगत सहित पूर्व देश की ओर प्रस्थान कर गए। पूर्व देस में पहुंच कर उन्होंने पूजा अर्चना की और फिर चूड़ देश की ओर चले गए।

सिद्ध जोगी ने चूड़े देश की पूजा अर्चना कर गौहड़ बंगाल देश की ओर प्रस्थान किया।

गौहड़ बंगाल देश में जादू टोने का डर रहता है और वहां की औरतें पुरुषों को जादू टोने द्वारा वश में कर भेड़ू बना कर रख लेती हैं।

गुरु गोरखनाथ ने मंगल नाथ को आदेश दिया कि वह पूरे नगर गौहड़ बंगाल को घूम कर आए।

गुरु गौहड़ बंगाल की पूजा अर्चना कर दक्षिण दिशा की ओर प्रस्थान कर गए।

दक्षिण देश की पूजा अर्चना कर पश्चिम दिशा की ओर चले गए।

पश्चिम देश की अर्चना कर गुरु गोरखनाथ बगला कुंठ की ओर गए।

बगला कुंठ गुरुऐं परसेया, उत्तर देसां नू जाणा।
उत्तर देस गुरुऐं परसेया, सिंगल दीपा नू जाणा।
सिंगल दीप गुरुऐं परसेया हुण गढ़ पक्खड़ नू जाणा।
गढ़ पक्खड़ उच्चा न जित अग न पाणी।
चेले ता बोल्लण गुरुआ मेरेया देखणी अजमत तेरी।
देखो चेलेयो अजमत मेरी बिण अग्गी बिण पाणीएं
गुड़ बुड़ रिह्जदे पाणीएं।
एह गढ़ पक्खड़ गुरुऐं परसेया हुण सिरियर नगरा नू जाणा।
ओ जी सिरियर वे नगर घमारी जे बसदी सिरियर नगर बसाया।

हुकम करदा सिद्ध गुलेरिये नौलख डिवकी ल्यायां।
मैं क्या जाणां गुरुआ केहड़ा घर सिरिया घमारिया दा।
आंगण चंबा बाहर बजूरी सीसै रंग द्वारा
सैह घर सिरिया घमारिया दा।

बगला कुंठ की पूजा अर्चना कर गुरु गोरखनाथ उत्तर देश (दिशा) की ओर प्रस्थान कर गए। उत्तर दिशा की पूजा अर्चना करके वे सिंहल द्वीप की ओर (लंका) प्रस्थान कर गए।

सिंहल द्वीप की पूजा अर्चना के बाद गुरु गोरखनाथ गढ़ पक्खड़ नामक स्थान की ओर चल दिए। गढ़ पक्खड़ बहुत ऊंचाई वाला स्थान था, वहां न तो आग ही उपलब्ध थी और न ही पानी था।

वहां पहुंच कर सभी चेले गुरु गोरखनाथ को कहने लगे कि वे उनका चमत्कार देखना चाहते हैं। इस पर गुरु गोरखनाथ ने मंत्र मार कर अग्नि और जल पैदा करके अपने चेलों तथा अनुयायियों से कहा–"देखो सामने उबलते हुए पानी में चावल पक रहे हैं।"

इस प्रकार गढ़ पक्खड़ स्थान की पूजा अर्चना करके वे अपने चेलों सहित सिरियर नगर की ओर प्रस्थान कर गए। सिरियर नगर में सिरी नामक कुम्हारी रहती थी। उसी के नाम पर यह नगर बसा हुआ था।

गुरु गोरखनाथ ने अपने चेले सिद्ध गुलेरी को सिरी नामक कुम्हारी के घर से नौ लाख मिट्टी की डिवकियां (पात्र) लाने के आदेश दिए। इस पर उस ने गुरु से विनती की कि वह सिरी कुम्हारी का घर नहीं जानता, पहले उसे उस कुम्हारी के घर का पता बताया जाए।

गुरु गोरखनाथ ने सिरी कुम्हारी का पता बताते हुए कहा कि ऐसा घर जिसका बहुत बड़ा सुन्दर आंगन है तथा घर के बाहर बुर्ज हैं। दरवाजे पर रंग–बिरंगे शीशे जड़े हुए हैं, वही सिरी नामक कुम्हारी का है।

अट्ठ लख डिवकी देयां सिरिये घमारिये
नौ लख चेला नुहाणा।
अट्ठ लख डिवकी मैं कीते देयां
छ्या म्हीनेयां मेरा औआ पकदा।
खोह्ल कन्नां ते इक मुंदर दित्ती
इस दा चक्क बणांयां
हत्थां ते दित्ता संगुल सोठा इहदा फेरा लायां।
कच्चा करुआ अल्ला धागा उल्टा न्हेर बगायां।

अट्ठ लख चेला परगट कीता नौ लख गुपत रहाया।
इक्को गागर पाणिऐं दी लंदी नौ लख चेला नुहाया।
सेर का चौल डिबिया पाये नौ लख चेला रजाया।
हुकम ता करदा गुरु चेलेयां जो
खिलका सेमण लागे।
सिद्ध चुरासी गुरुआं दे चेले
खिलका सेमण लागे।
कितने मणा दा खिलका गुरुआ तेरा
कौ मण लगणे धागे।
अट्ठां फुल्लां दा खिलका मेरा
नौ फुल्ल लग्गा दे धागे।

सिरी कुम्हारी के घर पहुचकर सिद्ध गुलेरी ने उस से कहा कि– आठ लाख मिट्टी की डिवकियां दो, नौ लाख चेलों को स्नान करवाना है।

सिरी कुम्हारी का उत्तर था कि वह मिट्टी से बनी डिवकियां आठ लाख नहीं दे सकती क्योंकि छः मास के बाद तो मिट्टी के बर्तन भट्टी में पक कर तैयार होते हैं।

उस का उत्तर सुनकर सिद्ध गुलेरिया गुरु गोरखनाथ के पास आया और कुम्हारी का उत्तर गुरू जी को बताया। इस पर गुरु गोरखनाथ ने अपने कान की एक मुद्रा खोलकर कुम्हारी को चाक बनाने के लिए दी, हाथ से अपनी सोठी (डंडा) दी ताकि डिवकियां बनाने हेतु प्रयोग में लाने वाले चाक को उस डंडे से घुमाया जा सके।

जब गीली मिट्टी से डिवकी चाक पर बन कर तैयार हो जाए तो उसे काटने के लिए एक विशेष धागा दिया और कहा कि निर्मित बर्तन को इस धागे के उल्टे फेरे से चाक से काटकर अलग करना। इस प्रकार आठ लाख डिवकियां तैयार करवा ली गईं।

गुरु गोरखनाथ ने आठ लाख चेलों की उत्पत्ति कर उन्हें साक्षात् रूप से प्रकट किया तथा नौ लाख को गुप्त रूप से छिपा रखा।

गुरु गोरखनाथ ने एक गागर पानी भर कर मंगाई तथा उस पानी से नौ लाख चेलों को स्नान करवाया। एक सेर चावलों को बर्तन में पका कर नौ लाख चेलों को भरपेट भोजन करवाया।

गुरु गोरखनाथ ने अपने चेलों को आदेश दिया कि उनके लिए एक विशेष पोशाक तैयार की जाए। इस प्रकार गुरु गोरखनाथ के चौरासी सिद्ध

चेले खिलका (पोशाक) तैयार करने में जुट गए।

चेले गुरु गोरखनाथ को पूछने लगे कि– हे गुरु जी! आपके लिए कितने मन वजन की पोशाक (चोला) तैयार की जानी है तथा इसे तैयार करने हेतु कितने मन धागों का प्रयोग होगा ?

गुरु जी का उत्तर था कि– आठ फूलों के वजन के बराबर मेरी पोशाक होगी तथा उसमें नौ फूलों के वजन के बराबर धागे लगेंगे।

खिलका सी समाहेया चेलेयां धरेया गुरुआं दे अग्गे।
खिलका ता पैहनी चढ़ी खेड़ोता सरे पर लैंदा छाला।
भगवां करदा गुरु अंचलियां अंग भभूता लाया
अंगा वे सूहै, मरगानियां सूहै दाहड़ी वासकी नागा।
कन्नां तांबे दीयां मुंदरां सोहन गोशे लिर दे धागे
पैरे खड़ौआं सियूने रूपियां हत्थ जप माला।
हत्थ सोने दीयां किंगरियां ते राग बजाओ ए ताने
मजले ता मजले गोरख चलेया भरथरिये दैं आया।
हत्थ लगाया पूरैं जोगिएं बरह्मेयां रूप धराया।
कजली बणे दा गोरख राजा उतरेया वे मंझ बागैं
अप्पू ता गुर मंझ बागै बैठेया इश्ट फिरया घनेरा।
इक्को माई सतवंती कहिए उसनू देखण जाणा
हुकम करदा गुरु चेलेआं गढ़ मारू नू जाणा।
इक्की ता मजला दूईया मजला गढ़ मारूए आया।
सुकेया बागे उतरेया गुरु हुकम करदा मंगलनाथा,
तम्बू तुरत लगाणा।

इस प्रकार सभी चेलों ने खिलका (पोशाक) सिलकर गुरु गोरखनाथ के आगे रख दिया। वे पोशाक धारण कर खड़े हो गए और सिर पर मृगछाला धारण की।

गुरु गोरखनाथ ने भगवें रंग के कपड़े शरीर पर धारण किए व सभी अंगों पर भभूति लगाई। गले में कंठी धारण किए हुए उनकी दाढ़ी मूंछ वासुकी नाग की तरह प्रतीत हो रही थी।

कानों में सजी हुई तांबे की मुद्राएं सुन्दर धागों से बंधी हुई थीं। पैरों में उन्होंने सोने की खड़ावें पहनी हुई थीं तथा हाथों में धारण माला का जाप कर रहे थे।

हाथों में सोने के छल्ले धारण किए हुए वे वीणा बजा रहे थे। इस

प्रकार गुरु गोरखनाथ मंज़िल–मंज़िल चलकर भरथरी के पास आये।

उन्होंने धरती माता की वंदना कर ब्रह्मा का रूप धारण किया।

गुरु गोरखनाथ कजली वन के बीच में उतर कर बैठ गये और चारों लोकों में आध्यात्मिक रूप से दिव्य दृष्टि से भ्रमण करने लगे।

गुरु गोरखनाथ को एक ही माई सतवंती बाच्छल दिखाई दी। गुरु गोरखनाथ ने अपने चेलों को आदेश दिया कि गढ़ मारू प्रदेश को चलो। गढ़ मारू प्रदेश राजस्थान में विद्यमान था जहां पर सतवंती बाच्छल को गुरु गोरखनाथ ने दिव्य दृष्टि से देखा था तथा वह उसी से मिलने जा रहे थे।

मंज़िल–मंज़िल चल कर गुरु गोरखनाथ अपने शिष्यों सहित राजस्थान के गढ़ मारू प्रदेश में पहुंच गए। सूखे बागों में पहुंच कर गुरु गोरखनाथ ने मंगलनाथ (शिष्य) को वहां तुरंत तम्बू गाड़ने के आदेश दिए।

भगवें तम्बू जरद कनारी रेस्मी लाईयां लासां।
हुकम करदा औघड़ नाथा धूणियां तुरत लगाणा।
चेले जे बोलदे गुरुआ मेरेया धूणियां कित्त वल लाणियां।
उत्तर लायो दक्खण लायो पूरब लायो पच्छम लायो,
धूणियां तुरत लगाणियां।
हुकम कित्ता सिद्ध गुलेरिये नग्गर दैणा फेरा।
इकसी अंगण दूजे अंगण जेवर दे घर जाई खेड़ोता,
गैहरा संख बजाया
संख बजाया जोगीए सब्द सुणाया सुण रही बाच्छल माया।
हुकम करदी रूपां गोलिया बाहर कोई भ्यागत आया।
रूपां गोलिया एह फरमाया नैड़ै करी नै बुला ईहजो।
आप ता माई खड़ी रंग दुआरे जोगीए पलंग ढलाया।
आप ता बैठी माई रंगुलैं पीहड़ें जोगी गल्ले लाया।
जरा क मठड़ा हो जोगीया भोजन खाई कै जाणा।
हुकम जे करदी माई बाच्छला,
झीवरियां ने पाणी गरम कराया।
ठंडड़ा पाणी गरम जे होया नौंह्गी बाच्छल माया।

मंगलनाथ ने वहां पर भगवें रंग के तम्बू तुरंत लगा दिये जिनमें रेशमी लहरें (रस्सियां) लटक रही थीं।

गुरु गोरखनाथ ने शिष्य औघड़ नाथ को उस बाग में धूनियां जलाने के आदेश दिए। चेलों ने गुरु गोरखनाथ से पूछा कि गुरू जी किस दिशा की

ओर धूनियां लगाई जाएं। गुरु ने शिष्यों को तुरन्त उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम दिशाओं में धूनियां जलाने को कहा।

गुरु गोरखनाथ ने सिद्ध गुलेरिया को आदेश दिया कि पूरे नगर में फेरा लगाओ अर्थात् अलख जगाओ।

एक घर से दूसरे घर पहुंचता–पहुंचता सिद्ध गुलेरिया राजा जेवर के घर में जाकर खड़ा हो गया और ज़ोर–ज़ोर से शंखनाद करने लगा। उस शंखनाद को बाच्छल माई सुन रही थी। राजा जेवर मारू देश का राजा था और बाच्छल उसकी पत्नी।

बाच्छल माई ने रूपां नामक नौकरानी को आदेश दिया कि बाहर कोई मेहमान आया है, उसे देखो।

बाच्छल माई ने रूपां नौकरानी को इस व्यक्ति को नज़दीक बुलाने के लिए कहा। बाच्छल माई अपने आप रंगमहल में खड़ी हो गई और जोगी के लिए चारपाई बिछा दी।

माई अपने आप रंग–बिरंगे पीहड़े पर बैठ कर उस जोगी से बात करने लगी। माई बाच्छल ने जोगी को कहा कि थोड़ी देर ठहरो, भोजन पक रहा है, भोजन खाकर जाना।

माई बाच्छल ने झीवरियों को पानी गर्म करने के आदेश दिये, पानी जब गर्म हुआ तो बाच्छल माई नहाने लगी।

कपड़े खोह्ल समाने धरे, अंगा वे चमेलिया लाया।
चनण चूरा ऐह कस्तूरी, अंगा वे चमेलिया लाया।
चुली क दहियां दे पड़छाला बीणी वे छंड लगाया।
लम्बड़े केस भिजण मलाईये, चो–चो पौहन तरासां।
नहाई वे ता धोई उठ खड़ोती, भोरा लपेटी काया।
चलदीए माईयैं ऐंचू विहनेया, बाहें चूड़ा फरनाया।
औसर झोटी दुधां तुआरी, तां जोगी सरमाया।
खंडां वे खीरां दे अमृतभोजन जोगीएं पखर पाया।
खाई नै सीसां बोलदा पुत्रबंतिया हो।
पुत्र नहीं पूरेया जोगीया एह तैं क्या हौल गलाया।
बेटे नहीं पूरे जोगीया एक तैं क्या हौल गलाया
सुन्ना गढ़ दा दलेरा।
मलके आयां माई आसणां इक फल गुरुए ते दुआंगा
एह लै माई चोला मेरा इस चोले पहनी आयां आसणा

इक फल तिजो गुरुए ते दुआंगा।
मैं क्या जाणां गुरुआ केहड़ी वल तेरा आसण।

बाच्छल माई ने कपड़े खोलकर अलग रखे, अपने अंगों में,शरीर में चमेली, चंदन चूरा व कस्तूरी इत्यादि के सुगंधित इत्र लगाए।

नहाने से पहले मुट्ठी भर दही बाच्छल ने सिर में लगाया, फिर चोटी से उस दही को सारे सिर में फैला दिया। उसके लम्बे केस दही से भीगे हुए थे और चारों ओर दही की बून्दें गिर रही थीं। बाच्छल ने नहा धोकर अपने शरीर को मृगछाला से ढक लिया। उसने बाजुओं में कंगण, चूड़ा इत्यादि सुंदर आभूषण धारण किए।

बाच्छल माई ने अपने सत की करामात दिखाते हुए, बिन ब्याही भैंस की पीठ पर हाथ फेरा, उसके थनों से दूध की धारा निकलने लगी यह सब देख कर जोगी शरमा गया।

बाच्छल माई ने इस प्रकार इस दूध से मीठी खीर पकाकर उस जोगी को भोजन खिलाया।

भोजन खा कर जोगी ने बाच्छल को 'पुत्रवती' होने का आशीर्वचन दे दिया।

बाच्छल माई ने उस पूर्ण जोगी से कहा कि उसकी किस्मत में पुत्र नहीं है। यह आपने कैसा आशीष दे डाला ?

हे योगी! मेरी किस्मत में (संतान) पुत्र सुख नहीं है।

यह मारू देश का गढ़ (किला) सूना–सूना ही है। सिद्धि गुलेरिये ने बाच्छल माई को कहा–

अगली सुबह गुरु जी के डेरे में आ जाना, वहां मैं उनसे आपके लिए पुत्र रूपी एक फल दिलाऊंगा (एक पुत्र का वरदान)।

हे माई बाच्छल ! यह चोला (पोशाक) लो, इसे धारण कर गुरु गोरखनाथ के डेरे में अगली सुबह आना, फिर एक फल गुरु से आपको दिलाऊंगा जिसका सेवन करके आपको पुत्र अवश्य होगा।

इस पर बाच्छल माई ने सिद्ध गुलेरिया को कहा–हे गुरु जी ! मुझे नहीं पता कि कहां तुम्हारा आसन (डेरा) स्थित है ? अपने डेरे का पता बताते हुए जोगी बोला–

जोगी– **सुक्के बाग हरे खूहे नीर बगदा नौ सौ धजां झुलदियां**
उत्त वल गुरुए गोरखा दा डेरा
नौ सौ संख कलकोरदा, उत्त वल गोरख गुरूए दा डेरा।

नौ सौ धूणियां धुखादीयां लरजां लैंदीयां लोरां
उत्त वल गुरु गोरखा दा डेरा
नौ सौ चेला खेलदा गुरु गोरखा दे आसणे।

बाछल– **बारा ता बरसां ब्रह्मा सिमरेया**
सेवा मेरी निस्फल होई।
बारा ता बरसां मैं बिस्णू सिमरेया
सेवा मेरी निस्फल होई।
बारा ता बरसां सिवजी सिमरेया सेवा मेरी निस्फल होई।
बारा तां बरसां मैं खवाजा सिमरेया सेवा मेरी निस्फल होई।
बारा ता बरसां मैं अलणा खाह्दा
जीभा वे चौका पाया।
बारा ता बरसां मैं भुईयां सुत्ती केस बुहारिया रखे।
बारा ता बरसां मैं गोरख सिमरेया सेवा मेरी निस्फल होई।
गढ़ दलेरा छडेया बणे च कुटिया लाई
अन्दर लिप्पां बाहर लिप्पां गोलुए दा देयां मैं परोला।
भैण दे घर भैनड़ आई पुछदी घरा देयां भेतां

बाछल– तिथ नी कोई तिहार नी तैं क्या कारज रचाया
क्या तेरा कोई वीर परौह्णा या क्या तेरा पुत्र बधाईयां।

जहां सूखे हुए बाग हरे हो गए, सूखे कुओं में पानी भर कर बह रहा है, नौ सौ ध्वजायें झूल रही हैं, नौ सौ शंखों की ध्वनि हो रही है, वही गुरु गोरख नाथ का डेरा है।

जहां नौ सौ धूनियां जल रही हैं, ध्वजायें हवा में झूल रही हैं, नौ सौ चेले खेल रहे हैं, वही गुरु गोरख नाथ का डेरा है।

बाच्छल कहती है– मैंने बारह वर्षों तक ब्रह्मा भगवान की पूजा–अर्चना की फिर भी मेरी सेवा निष्फल गई। फिर बारह वर्षों तक विष्णु भगवान की तपस्या की फिर भी मेरी सेवा निष्फल ही रही अर्थात् औलाद से वंचित रही।

मैंने बारह वर्षों तक भगवान शिव की तपस्या की, बारह वर्षों तक ख्वाजा की पूजा अर्चना की। इस पर भी मेरी सेवा निष्फल हुई अर्थात् संतान के सुख से वंचित ही रही।

बारह वर्षों तक मैंने अधपका, बिना नमक, रूखा–सूखा भोजन खाया, जीभ से चौका लगाया फिर भी मेरी भक्ति निष्फल गई।

बारह वर्षों तक मैं भूमि पर सोई, सिर के केशों से झाड़ू दिया। बारह

वर्षों तक गुरु गोरख नाथ की तपस्या की, तब भी मेरी भक्ति निष्फल ही गई।

बाच्छल ने राजमहल छोड़ दिया, वन में बनाई कुटिया में रहने लगी। कुटिया के अन्दर -बाहर लिपाई की और गोलू का चारों तरफ लेप किया, ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे किसी कारज का आयोजन किया जा रहा है।

काच्छल का बाच्छल के घर आना और छल करना

इतने में काच्छल अपनी बहन बाच्छल के घर आई और यह सब देखकर पूछने लगी कि न कोई त्योहार की तिथि है, फिर भी यह शुभ कार्य किस लिए रचाया है ? क्या तेरा भाई मेहमान आया है अथवा तेरे पुत्र पैदा हुआ है जिसके लिए बधाईयां दी जाएं।

बाछल– ना मेरा वीर परौह्णा न मेरे पुत्त बधाईयां
भोली हुंदी बाच्छल माई दसदी घरा देयां भेतां।
अन्दर लिप्पां बाहर लिप्पां गोलुए दा देयां मैं परोला
अपणै घरें बाच्छलें माईयें धामां खूब रचाईयां।
मैंनू टुपेया गुरु गोरख मैं कल फल मंगणे जाणा।
देयां नी भैणे अपणै ओह्डणां मैं कैलुए पूजणे जाणा।
कपड़े केह्ड़े काच्छल लैंदी छोड़ घरां वल आई
स्वाये सेरा दा रोट पकाया आधा कर सक्कर पाई।

बाच्छल ने काच्छल को उत्तर दिया कि– न तो कोई भाई मेहमान यहां आ रहा है, न ही मुझे पुत्र पैदा होने की बधाईयां हैं। बाच्छल भोली थी उसने अपनी बहन काच्छल को घर के सारे भेद बता दिये।

बाच्छल माई ने अपने घर के अंदर–बाहर लिपाई की, गोलू से चारों तरफ रंगाई की और अपने घर में खूब धाम रचाई अर्थात् भान्ति–भान्ति के पकवान पकाए गुरु गोरख नाथ के लिए।

बाच्छल ने काच्छल से कहा कि गुरु गोरखनाथ मेरी भक्ति के कारण मुझ पर मेहरबान हो गये हैं। मैं कल उनसे फल (पुत्र रत्न) मांगने जाऊंगी। काच्छल के मन में खोट था, उसके भी कोई संतान नहीं थी। बाच्छल को सिद्ध गुलेरिये द्वारा दिया गया चोला (पोशाक) काच्छल ने मांग लिया और कहा कि–

हे बहन बाच्छल! मुझे इस पोशाक को थोड़ी देर के लिए दे दो, मैंने कैलु देवता की पूजा करने जाना है।

फिर उस पोशाक को बाच्छल से प्राप्त कर काच्छल जल्दी–जल्दी

अपने घर को गई। उसने सवा सेर का मीठा रोट बनाया और उसमें थोड़ी सी शक्कर डाल दी।

अधर लेई नें चलदी काच्छल पलुए हेठ लुकाया
जाई नें गुरां नू देवस करदी ज्यूं जागेया माया।
झोलि़या हत्थ पसारेया गुरुयें मौलि़या दा धागा आया
लै नी माईए तैनू दो फल देओआं हुंगे बड़े वरदाई।
अरजण सुरजण दो फल लै के छोड़ घरा दे वल आई
लै नी भैणे अपणे ओह्डणा, मैं कैलुए पूजी नै आई
लै नी भैणे अपने ओह्डणा, नागां मैं पूजी नै आई।
दूऐं ध्याड़ैं बाच्छल धाम रचा नीहला ते मैं कणक मंगावां
मैदा वे करी भयाओआं नगरा ते नारां सदियां,
दड़बड़ मुकियां लाहन।
नगरा ते नारां सदियां
गजगज मंडे झोलण नारां, ज्यू वासकी घनेरा।
नीहला ते बकराटै मंगावां खस्सी वे करी ओ बणावां
इक्को वे ता फट सेलिया मारां होरना ल्हाल करावां।
ओ जी वल्ले–वल्ले सुआरना लगदे
चम नी बखियां लाणा खड़ी वे खड़ोली होर कलेजी
जुदा वे जुदा करावां हड्डियां खुडियां जुदीयां करो
लग–लग मास बणाणा।

उस विशेष पकवान (रोट) को अपने पल्लू (ओढ़नी) के नीचे छिपाकर काच्छल गुरु गोरखनाथ के डेरे को चल पड़ी। वहां पहुंच कर उसने गुरु को नमस्कार किया। भक्ति में लीन गुरु ने अपनी आंखें खोलीं।

यह सब देख गुरु गोरखनाथ जी ने अपनी झोली में हाथ डालकर मौली का धागा निकाला और कहा– माई ! ये लो हम तुम्हें दो फल अर्थात् दो पुत्रों का वरदान देते हैं, ये बड़े बलशाली व शत्रुओं को हराने वाले होंगे।

इस प्रकार काच्छल छल से गुरु गोरखनाथ से अर्जुन और सुर्जन रूपी दो फल लेकर जल्दी अपने घर को आ गई और ओढ़ना अपनी बहन बाच्छल को वापिस करते हुए बोली– "मैं कैलू देवता और नागों की पूजा करके आ गई हूं। इसलिए अपने इस ओढ़न को सम्भाल लो।"

दूसरे ही दिन बाच्छल माई ने अपने घर धाम रचा दी। मैदानी क्षेत्रों से बढ़िया गेहूं मंगवा कर मैदे की तरह बारीक आटा पिसवाया। आटा गूंधने

के लिए सारे बाजार की नारियों को बुलाया गया।

रोटियां पकाने के लिए नगर से नारियों को बुलाया गया। उन्होंने वासुकी नाग की तरह बड़ी–बड़ी (गज भर) रोटियां पकाकर तैयार कर लीं।

बाच्छल ने मैदानी इलाकों से बकरे मंगवाए। कुछ को एक ही फट मार कर गर्दन से काट दिया गया, कुछ को हलाल करवाया गया। अब बकरे काटने वाले लोग उन कटे हुए बकरों का मांस साफ करने लगे। मांस इस तरह साफ किया गया कि चमड़ी के साथ चिपका न रहे। अच्छे मांस और कलेजी को अलग–अलग किया गया, हड्डियां अलग कर दी गईं और अलग–अलग मांस पकाया गया।

इक्को वे मांस दुधें दहिएं बणदे होर ध्योये तलावां।
मांह दे मैं बड़े पकावां अध क मिर्चा पावां।
दिलीया ते सन्यार सदो भई कंगणा घड़ो सुहौयां।
रूपे दा इक नाग घड़ो भई गोरख नू नसाणा।
रूपे दा कंगणा घड़ो भई स्यूने दा हत्थ प्याला।
गोरख नू झोलियां लहटकन बुंबल काले।
गड्डा वे भरी पुकानां धौले भार चलाया।
पकड़ बगारी झीर जे अंदे खारेयां लेई ने जाणां।
अग्गैं वे तां राणा जेवर चलेया मत्थैं वे तिलक लगाया।
सौलह सौ सठ सहेली घुंवर पांदी मंझ पर बाच्छल माया।
जाई वे गुरां नू देवस करदी ज्यूं जागेया ज्यूं माया।
सिधा बल जोगिया उल्टा बैठेया भोजन बल चित्त नी लाया।
क्या माईये तू भोली–भाली क्या तैं दहिया रचाया।
क्या जोगी तैं भुखा देखेया बहुती वे भुखत ल्यौऐ।

कुछ मांस दूध दही में पकाया गया और कुछ को तालाबों में धोया गया। माश की दाल के बड़े पकाये गए, उसमें थोड़ी सी मिर्च भी डाली गई।

तब बाच्छल ने कहा-- दिल्ली से सुनार बुलाओ जो गुरुओं के लिए सुन्दर कंगण तैयार करें। गुरु गोरखनाथ को निशानी के रूप में दिया जाने वाला सोने का एक नाग तैयार किया गया। इसी तरह गुरु को भेंट देने के लिए सोने का कंगण तथा हाथ में धारण किया जाने वाला प्याला तैयार किया गया।

गुरु गोरख नाथ के लिए झोली तैयार की गई जिसमें काले बुंबल

(लड़ियां) झूल रहे थे। अर्थात् झोली काली लड़ियों से सुसज्जित थी।

इसी प्रकार विभिन्न प्रकार के पकवान तैयार कर एक बैलगाड़ी में भर दिए गए। उस बैलगाड़ी को खींचने के लिए धौला नामक बैल जोता गया। बेगार करने वाले झीवरों को बुलाया गया जो पकवान के भरे हुए बड़े–बड़े टोकरों को सिर पर उठा कर गुरुओं के डेरे की ओर चल पड़े।

सबसे आगे बाच्छल का पति राणा जेवर अपने माथे पर तिलक लगाए हुए चल रहा था। उसके पीछे बाच्छल की सोलह सौ साठ सहेलियां नाचती हुई चल रही थीं और उन सबके बीच बाच्छल माई थी। गुरु गोरखनाथ के डेरे पर पहुंच कर माई बाच्छल ने उन्हें नमस्कार किया तो भक्ति में लीन गुरु गोरखनाथ जाग गए।

बाच्छल को अपने आश्रम में देख गुरु गोरखनाथ ने अपना मुंह उल्टी दिशा की ओर फेर लिया और उसके द्वारा लाए हुए भोजन की ओर भी कोई ध्यान नहीं दिया।

गुरु गोरखनाथ ने बाच्छल को कहा हे भोली–भाली माई! तूने यह क्या पाखंड रचाया है ? क्या तूने योगी को भूखा समझ रखा है, जिसके लिए बहुत सारे पकवान पका कर लाई है ?

गोरखनाथ– **इक फल मंगेया दो फल दित्ते**
फेर वी आसण औऐ।

बाच्छल– **हत्थां छूआं पासणा छूआं आसण दी दुहाई।**
मैं नी होसी पूरेया जोगीया होर गई छल लाई।
मेरीया नुहारी मेरी भैनड़ सैह् गई छल लाई।

हट के चलदी माई बाच्छल रोंदी वे अन्दर घूंडा।
हट के चलदी माई बाच्छल रोजैं वे भर तलाईयां।
सादो सिद्धा वे गुलेरिया सैह ओ पछयाह्णगा माया।
बोले सिद्ध वे गुलेरिया, एही ओ बाच्छल माया।
गुलेरियें बोलेया तू मत रोंदी माई बाच्छले
इक फल गुरुए ते दुआंगा।
इक दिन दी खड़ी माई बाच्छल गोरख प्यालां नूं जांदा।
पंजां दिनां जे खड़ी रही माई बाच्छल गोरख सुरगां नूं जांदा।
अरजां करदा महाराज दे कोल एक फल देणां दुहारा
एह् फल लैके गुरुआ वे गोरख वापस बागौं डेरैं आया।

तुमने संतान प्राप्ति का वर मांगा था परन्तु मैंने तुम्हें दो पुत्रों का

वरदान दिया। फिर भी और मांगने के लिए आसन (डेरे) में आई हो।

यह सुनकर माई बाच्छल गुरु के हाथ–पावं छूने लगी, उनके डेरे–गद्दी की कसमें खाने लगी और कहा-- हे योगी महाराज। मैं आपके पास पुत्र रूपी वरदान मांगने कभी नहीं आई। आपको किसी अन्य स्त्री ने छला है।

मेरी शक्ल सूरत बहन काच्छल से मिलती–जुलती है, हो सकता है वह आपको छल गई हो। उसी ने मुझसे वस्त्र भी मांगे थे।

इस प्रकार बाच्छल घूंघट में मुंह छिपाकर रोती हुई गुरु गोरखनाथ के डेरे से वापस आने लगी। उसकी आंखों से अनवरत अश्रुधारा बह रही थी। यह सब देखकर गुरु गोरखनाथ ने सिद्ध गुलेरिये को बुलाया और कहा कि इसे पहचानो कि यह कौन सी माई है ?

सिद्ध गुलेरिये ने पहचानकर कहा कि यही तो आपकी भगतन बाच्छल माई है। उसने बाच्छल को ढाढ़स बंधाते हुए कहा कि तू रो मत, तुझे एक फल अवश्य गुरु जी से दिलवाऊंगा।

इस प्रकार इस घटनाक्रम में बाच्छल वहां एक दिन खड़ी रही। गुरु गोरखनाथ पाताल लोक को चले गए। बाच्छल इस तरह पांच दिनों तक और खडी रही परन्तु गुरु स्वर्ग लोक को चले गए।

गुरु गोरखनाथ के पास अब कोई वरदान शेष नहीं था। उनके पास जो दो वरदान थे वे पहले ही काच्छल छल कर ले आई थी। अब गुरु जी वरदान उधार मांगने पाताल लोक तथा स्वर्गलोक में पहुंच गए।

स्वर्गलोक में पहुंचकर उन्होंने इन्द्र से अनुनय किया कि एक फल उधार दे दो। इन्द्र ने गुरु गोरखनाथ की विनती स्वीकार कर एक फल उनको उधार दे दिया। उस फल को लेकर गुरु गोरखनाथ वापस धरती पर अपने डेरे में आ गए।

गोरखनाथ का बाच्छल को वरदान

झोलियां हत्थ पसारेया गुरुएं मौली़या धागा आया।
बटुएं वे हत्थ पसारेया गुरुएं गुगल ढेलिया आया।
लैह् माईए इक फल दित्ता हुंगा बड़ा बलवान।
लैह् माईए इक फल दित्ता हुंगा नागां दा वरदाई।
लैह् माईए इक फल दित्ता जौडुआं दा वरदाई।
कदी नी हुंगा बाल विरधा कदी नी हुंगा स्याणा।

जे तेरैं हुंगी आसा तृष्णा प्योकड़े घर उठ जायां।
भैण तेरी जादुएं राधी जादू वे करम करै।
जे तेरैं हुंगी बाली कन्या गुगड़ी नौं रखायां।
जे तेरैं हुंगा बालक बेटा तां गूगामल नौं रखायां।
पहला माह गणौंदिया, माह्याड़ दूआ आया
दूआ माह गणौंदिया, तीया माह्याड़ वे आया
बागां दे डेरे ते चल्ली, गढ़ मारू नी आई।
धौल़ा प्यूल़ा गड्डी जुड़ाया बाच्छल पेईयां चल्ली।
खबर होई काच्छला राणियां, दावे लैंदी हिक्का।
गई प्याल, (कालिया) नाग जगाया।
तू जागेयां वे कालिया नागा तूं हा मेरा धरमा दा भाई।

गुरु गोरखनाथ ने अपनी झोली में हाथ डालकर कच्चे धागे की लाल रंग की एक मौली (डोरी) बाच्छल को दी। अपने बटुए में हाथ डालकर गूगल धूप का टुकड़ा निकाला, फिर उस टुकड़े को भी बाच्छल को दिया।

गुरु गोरखनाथ ने बाच्छल माई को एक फल देकर कहा कि यह बड़ा बलवान होगा। यह नागों (सर्पों) का भी दुश्मन व उनसे बदला लेने वाला होगा।

गुरु गोरखनाथ ने बाच्छल माई को पुत्र रूपी एक फल देते हुए यह भी कहा कि यह अरजुन–सुरजन जुड़वें भाईयों का शत्रु होगा। अरजुन–सुरजन काच्छल के गर्भ से पैदा होंगे।

गुरु गोरखनाथ ने फल देते हुए बाच्छल को कहा कि यह यह सदा जवान ही बना रहेगा, कभी वृद्ध नहीं होगा। इस प्रकार बाच्छल गुरु गोरखनाथ के डेरे से फल लेकर घर को आ गई।

गुरु ने बाच्छल से कहा कि यदि तू गर्भवती हो गई तो मायके चले जाना क्योंकि तेरी बहन काच्छल जादू–टोना जानती है, कभी भी वह तुझ पर जादू कर सकती है। अगर तूने कन्या को जन्म दिया तो उसका नाम गुगड़ी रखना। यदि बेटे को जन्म दिया तो उसका नाम "गूगामल" रखना।"

गुरु गोरखनाथ के आशीर्वाद से बाच्छल गर्भवती हो गई। गर्भधारण का पहला, दूसरा व तीसरा मास बीत गया। बागों के डेरे से बाच्छल चल पड़ी परन्तु गढ़मारू (मारूप्रदेश) वापस नहीं आई।

बाच्छल इस हालत में बैलगाड़ी में बैठ अपने मायके चली गई। बैलगाड़ी में धौला और पीला नामक बैल जुते हुए थे।

इस सारे घटनाक्रम की खबर काच्छल को पहुंच गई। वह दुख से अपनी छाती दबाने लगी। काच्छल पाताल लोक में गई, वहां सोए हुए कालिय नाग को जगाया और कहा कि हे कालिय नाग! तुम मेरे धर्म के भाई हो और मेरी सहायता करो।

बाच्छल राणी प्योकिए चला दी धौले जो डंगेयां जाई।
धुर प्याला ते चलदा नागा चलदा वे अपणै भारैं।
उपरैं मंडल आया वे नागा नजर घुमाई चफेरैं।
औंदा नाग पांजे पर बैठेया धौले नू डंग चलाया।
उललेया बैल धड़फिये पौंदा पधर खोला होया।
नेड़ैं नी कोई वैद नी चेला धौले दा डंग मलेरै।
ठंडियां छौंआ दलेरां होईयां बाच्छल पलंग ढलाया।
गरभा अंदर दिंहगा सुणयांदर तूं हां सुणेया मेरिये माया
खोहल पटारिया सेत्ता वे धागा धौले दे गल पायां।
उठेया वे धौला जुग्यालिया लगयाबड़ी रहांसीया माया।
तीया महीना गणैंदिया, बाच्छल पेकियां आई
चौथा महीना गणैंदिया, महीना पंजवां आया
छेओआं महीना गणैंदिया, महीना सतवां आया
सतवां महीना गणैंदिया, माहयड़ अठवां आया।
नौवां वे माहयड़ आई गया महीना दसवां आसां पूरीयां होईयां
ग्यारवां जे माहयड़ चढ़ेया जरम नी लैंदा चुहाणा।

काच्छल ने कालिय नाग से अनुनय किया कि बाच्छल रानी बैलगाड़ी में बैठकर अपने मायके जा रही है, तू बैलगाड़ी में जुते हुए धौले बैल के पैर में डंक मार ताकि वह अपने मायके न पहुंच सके।

काच्छल की विनती स्वीकार कर कालिय नाग पाताल लोक से चल पड़ा। वह लोट-पोट होकर चल रहा था।

इस धरती पर आकर कालिय नाग ने चारों तरफ अपनी नज़र घुमाई। इस तरह बैलगाड़ी में जुते हुए धौले नामक बैल के पैर पर कालिय ने डंक मार दिया। डंक मारते ही धौला बैल उछल कर धरती पर गिरा जहां काफी बड़ा गड्ढा पड़ गया।

नज़दीकी क्षेत्र में कोई भी चेला-वैद्य नहीं था जो धौले बैल का विष उतार सके। बाच्छल ठंडी छाया में पलंग लगा कर उस पर बैठी, और सोच

में पड़ गई। इस परिस्थिति में गर्भस्थ शिशु (गुगा) ने अपनी माता बाच्छल को आभास दिलाया कि पटारी खोलकर सेता धागा (मौली) निकाल करके धौले बैल के गले में बांध दो। यह धागा गुरु गोरखनाथ ने बाच्छल को दिया था। सफेद डोरी को बाच्छल ने बैल के गले में बांध दिया। धागा बांधते ही बैल उठ गया और जुगाली करने लगा। इस पर माई बाच्छल को हैरानी हुई।

गर्भ के तीसरे मास में बाच्छल अपने मायके पहुंच गई। चौथा महीना गिनते-गिनते पांचवां महीना आ गया।-इस प्रकार बाच्छल को गर्भ धारण किए हुए छठा, सातवां और आठवां मास बीत गया। इसी तरह बाच्छल माई को गर्भ धारण किए हुए नौवां, दसवां महीना हो गया इस आशा के साथ कि अब शिशु जन्म लेगा परन्तु ग्यारहवें मास तक गर्भस्थ शिशु गूगा चौहान जन्म लेने में नहीं आ रहा था।

अजी ठंडीयां छौंआं दलेरां हुंदियां बाच्छल पलंग ढलाया
गरभा वे अन्दर देहंगा सुणयांदर तूहे सुणयां मेरी माया।
नानकड़े घरे जन्म नी लैणा नानकू नौं रखोणां।
अजी मारुएं जाई मैं जरम जै लैंहंगा गूगामल नौं रखाणा।
अजी पेओकड़े ध्याण कहिए मारूएं बाच्छल माया।
ग्याहरवां महीना गणैंदिया बाहरवें महीने मारुएं जो आई।
हां जी वे सद्धो अन्हियां दाईया जरम लैणा चुहाणां।
मैं किह्यां औणा मेरेया साहबा नैणे वे अंदर लोयण
नहीं है मेरेया।
अह्नियां ता दाईया लोयण जे मिलेया जरम लेया चोहाणा।
अधिया ता राती वे गुगड़ी वे जरमी रैहण विहाणेया राणा।
रैहण विहाणेया राणा जे जरमेया सिकर दपैहरेया नीला।
सद्दो स्यामूऐं झीरा गंगाजल नीर मंगाणा
जोड़ सहेलियां माई बाच्छलें रण-झुनणे गाणे।
सद्दो कुला दे परोहता, राणे दी रास गणाणी।
हां जी केहड़िया रासी राणा वे जरमेया केहड़ा वे नौं रखाणा।

बाच्छल माई ठंडी छाया में पलंग लगाकर बैठ गई। सलाह सूत्र होने लगे कि शिशु क्यों जन्म नहीं ले रहा है।

गर्भस्थ शिशु ने अपनी माता से कहा कि हे माता! जो मैं कहूं वैसा करना। गूगा राणा ने गर्भ से अपनी मां को आभास दिलाया कि-

"ननिहाल के घर मैं जन्म नहीं लूंगा क्योंकि मेरा नाम नानकू रख

दिया जाएगा। मैंने मारू प्रदेश (अपने घर) में ही जन्म लेना है। वहां मेरा नाम गूगामल रख देना। मायके में बाच्छल को ध्याण कहेंगे परन्तु मारू प्रदेश में बाच्छल माई कहलाएगी।''

इस प्रकार गर्भ के ग्यारह मास पूरे कर बाच्छल बारहवें मास मारू प्रदेश में आ गई ताकि गूगा चौहान जन्म ले सके।

जब अंधी दाई को प्रसव करवाने के लिए बुलाया गया तो दाई ने कहा, हे मेरे मालिक! मेरे नयनों (आंखों) में दृष्टि नहीं है, मैं कैसे आ पाऊंगी आपका जन्म करवाने। उस मालिक की कृपा से अंधी दाई की आंखों में तुरंत दृष्टि आ गई और गूगा चौहान ने एकदम जन्म ले लिया।

इस प्रकार आधी रात के समय गुगड़ी गूगा की बहन ने जन्म लिया। प्रातः काल गूगा राणा का जन्म हुआ। भर दोपहर को नीले गूगा राणा के घोड़े का जन्म हुआ। राणे के जन्म के पश्चात् श्यामू झीवर को बुलाया गया ताकि वह गंगा जल लाये जिससे नवजात शिशु को नहला कर पवित्र किया जा सके। माई बाच्छल की सहेलियां इकट्ठी होकर बधाई गीत गाने लगीं। राणा (शिशु) की जन्म राशि दिखाने के लिए कुल पुरोहित को बुलाया गया। कुल पुरोहित से पूछा गया कि राणा का जन्म किस राशि में हुआ है, उसका क्या नाम रखा जाए।

गुगा का जन्म

दाडूएँ रासी राणा वे जरमेया गूगामल नौं रखाणा।
सद्दो स्यामुएं झीरा, गंगा जल नीर मंगाणा।
सद्दो रघुए नाईये, तेल फलेल लगाणा।
सद्दो मंगलचारियां, मारूएं बह्जण बधाईयां
धग्गे चोटां गैहरियां, हेकम कुरदे नगारे।
नेजे झुलदे राणेया, चौर झुलदी नसाणे।

गूगा राणा का बाल्यकाल

ओ जी इस दखणेटे जो सुफना जे होया फिरदा कालिये धारा।
इस दखणेटे जो सुफना जे होया चनण रुख कटाणा।
जो चनण दा वे पलंघूड़ा बणेया मोतियां नाल जड़ाई।
ओ जी स्यूने दी पटियां स्यूने दे पौए, मुल्ल हजारैं लायो।
स्यूने दीयां लगदियां किंगरियां मुल्ल हजारैं लायो।

उप्पर सोने दी चिड़ी वे बणाई सैहर तमासैं आया।
मारूए अन्दर छैल बड़ोटा, जित पलंघूड़ा पाया
ओ वे सोने दीयां लरजां जे लगीयां
इत राणा वे गूगा झुटाया
अन्हीं दाई झुटारेयां देओऐ, ऊआरैं–पारैं पुकारै।
खबरां होईयां काच्छल राणियैं, दावै लैंदी हिक्का
काच्छल राणी गई वे प्यालैं कलिहर नाग जगाया।
तू जागेयां वे वीरा कलिहर नागा तू है मेरा सोहयर भाई।
बालकड़ा वे पलंघूड़े झूटे उसनू तू डंगेयां जाई।

कुल पुरोहित का उत्तर था कि राणा का जन्म दाड़ू राशि में हुआ है। अतः इसका नाम गूगामल रखा जाए। फिर गंगाजल मंगवाने के लिए श्यामू झीवर को बुलाया गया। शिशु को तेल–इत्र लगाने के लिए रघु नामक नाई को बुलाया गया। मंगलगान करने वाले वादकों को बुलाया गया। सारे मारू प्रदेश में बधाई संगीत बज रहा था, वड़े–बड़े तथा छोटे–छोटे नगारे बजाए जा रहे थे। राणे के जन्म की खुशी में मारू प्रदेश में जगह–जगह चंवर और ध्वजाएं लहरा रही थीं।

शहर के सुन्दर कारीगर बढ़ई को स्वप्न हुआ कि गूगामल के आसन के लिए चन्दन वृक्ष काटा जाए। इस हेतु वह काली नामक धार (पहाड़) पर पेड़ काटने चला गया और चन्दन की लकड़ी लेकर वापस आ गया।

गूगामल के लिए चन्दन की लकड़ी का झूला (पलंघूड़ा) बनाया गया। उसे चारों तरफ हीरे–मोती जड़े गए। उसको तैयार करने के लिए सोने के पाए, सोने की ही पटियां लगाई गईं जिसकी हज़ारों रुपये कीमत हो गई।

उस झूले पर सोने की किंगरियां लगाई गईं। उसके ऊपर सोने की चिड़ियां तैयार कर के लगाई गईं। झूला इतना सुन्दर प्रतीत हो रहा था कि सारा शहर उसे देखने के लिए उमड़ पड़ा।

मारू प्रदेश में एक सुन्दर वट वृक्ष था जिस पर गूगामल का झूला बांध दिया गया। झूले को लटकाने के लिए सोने की रस्सियां तैयार की गईं। उस झूले में बैठकर गूगा राणा झूल रहा था, अन्धी दाई उस झूले को आगे–पीछे धक्का देकर झुला रही थी।

इस सारे खेल की सूचना काच्छल को लग गई। वह दुःखी होकर अपनी छाती पीटने लगी। काच्छल दुःखी होकर पातालपुरी चली गई। वहां उसने सोए हुए कलिहर नाग को जगाया।

पाताल लोक में पहुंच कर काच्छल कलिहर नाग को जगाती हुई बोली, हे कलिहर नाग ! तू जाग, तू मेरा सूरमा भाई है। बालक गूगामल झूले में झूल रहा है, तू जाकर उस झूलते हुए बालक को डंक मार।

साडा ता डंगेया मरदा नाहीं, सूंपुए लेयां जगाई।
तू जागेयां वे वीरा सूंपुआ नागा, तू है मेरा सोहयर भाई।
प्यालपुरी दा मैं राज दुआऊं मारूएं अध बंडावां।
ओ जी बालकड़ा वे पलंघूड़ैं झूटै उसनू डंगेयां जाई।
धुरों प्याले चलदा वे नागा चलदा वे आपणेयां भारैं।
उपलैं ता मंडल आया वे नागा नजर गई चफेरैं।
उपलैं ता मंडल आया वे नागा नजर गई पलंघूड़ैं
बड़ी चढ़ेया बड़ोटैं उतरेया नाग पर लमीयां ल्हासे।
ओ जी उठेयां नी रूपां गोलड़िये नाग आया सरहाणे।
बालकड़े दीया नजरी जे पौंदा करदा हत्थ पलासा।
पकड़ मुंडिया मुख पावे राणा रक्तै पीया सणै मासा।
तिह्यां चुंह्गै राणा गूगामल नागा जिह्यां बच्चा चुंह्गदा मौआं।

कलिहर नाग का काच्छल को उत्तर –

मेरे द्वारा डंक मारने पर गूगामल नहीं मरेगा, इसलिए तू सोये हुए सूंपु नाग को जगा। काच्छल सूंपु नाग को जगाने लगी कि हे सूंपु नाग! तू निद्रा से जाग, तू मेरा सूरमा भाई है।

काच्छल सूंपु नाग से अनुनय करती है कि मैं तुम्हें पाताल लोक का सिंहासन दिलवा दूंगी, मारू प्रदेश में भी आधा हिस्सा बंटवाऊंगी। बालक गूगामल झूले में झूल रहा है, उसको जाकर डंक मारो।

काच्छल की विनती स्वीकार कर सूंपु नाग पाताल लोक से झूलता हुआ धरती लोक पर आ गया। यहां आकर उसने अपनी दृष्टि चारों तरफ घुमाई (अर्थात् सब कुछ देख लिया)।

काच्छल की विनती स्वीकार कर सूंपु नाग इस धरती लोक में प्रवेश कर गया। यहां आकर नाग ने अपनी नज़र चारों ओर घुमाई और झूला झूलते हुए गूगामल पर दृष्टि डाली।

जिस वट वृक्ष के साथ गूगामल का झूला बंधा हुआ था उस पर नाग चढ़ गया और वट वृक्ष की नीचे लटकी रस्सियों (शाखाओं) के सहारे झूले तक उतरने लगा।

इस पर दाई रूपां नामक गोली (नौकरानी) को कहती है कि हे रूपां गोली ! सूंपु नाग गूगामल के सिरहाने के पास पहुंच गया है। जब गूगामल की नज़र उस नाग पर गई तो दोनों गुत्थमगुत्था होने लगे। गूगामल ने नाग को पकड़ कर उस का सिर अपने मुंह में डाल कर चबा दिया और मांस सहित उसका खून भी पी गया। गूगामल ने सूंपु नाग को सिर से ऐसे चूसा जिस प्रकार बच्चा अपनी मां के स्तन चूसता है।

जिह्यां चुंग्है गूगामल नागां जिह्यां बछड़ा चुंघदा गौआं।
जिह्यां खावे गूगामल नागां जिह्यां गरी छुआरे बदामां।
नागां दे मुख भनदा वे राणा कुंडल मार सरहाणे।
पैहली वरही देया राणेया खेह्लदा दाईया दीया गोदा।
तीन बरहेयां दे राणेया खेह्लदा माई दीया गोदा।
पंजा बरहेयां दे राणेया खेह्लदा वे राज दरबारे।
सत्ता वरहेयां दे राणेया खेह्लदा वे नाल ग्वालां।
राणा खिन्नुयें खेह्लदा नागैं घेरेया बागां।
राणा गुरुए ध्यांदा जे कोई हुंगा सहाई मेरा।
राणा फक्कड़ां ध्यांदा जे कोई हुंगा सहाई।
स्यूने खुंडियां संघासण ते आईयां राणें दे हत्थैं सम्हालियां।
राणें गजां जे चलाईयां नाग पये प्याला़ं।
मार पलाकिया बामियैं बैठेया राणा भर–भर उंजला काढै।
इक्क वर ता रंग बरंगे कढ़े होर कढ़े रखड़याले।

गूगामल राणा ने नाग को ऐसे चूसा जैसे बछड़ा गाय के स्तनों को चूसता है।

गूगामल इस प्रकार नागों को खा रहा था जैसे कि गरी, (नारियल) छुआरे और बादाम आदि मेवे खा रहा हो।

गूगा राणा ने उन सभी नागों के मुख तोड़ दिए और उनके कुंडल बनाकर तकिए के पास रख लिए।

इस प्रकार गूगा राणा अपने जीवन के पहले वर्ष में अन्धी दाई की गोद में खेलता रहा।

तीन वर्ष की आयु तक वह अपनी माता बाच्छल की गोद में खेलता रहा। जब वह पांच वर्ष का हो गया तो वह राजदरबार में सारी जगह खेलता रहा।

सात वर्ष की आयु प्राप्त होने पर गूगा राणा गोपालकों के साथ खेलता रहा।

इस प्रकार एक गूगामल राणा जब गेंद खेल रहा था तो उसे एक बाग में नाग ने घेर लिया।

इस परिस्थिति में उस ने अपने गुरु का ध्यान किया कि वे इस कठिन घड़ी में उसकी सहायता करे। गूगामल राणा ने अपने बचाव के लिए साधु, ऋषि-मुनि इत्यादि का ध्यान किया कि वे संकट की घड़ी में उसका साथ दें।

उन सबका ध्यान कर गूगामल के हाथ में सोने की छड़ियां (खुंडियां) सिंहासन से उठकर पहुंच गई जिन्हें गुरु गोरखनाथ ने भेजा था। उन सोने की छड़ियों (डंडों) से गूगामल ने नागों को ऐसे मारा कि वे सभी पातालपुरी भाग गए। फिर गूगा राणा उठकर बांबी के ऊपर बैठ गया और उसमें से दोनों हाथों से भर-भर कर सांपों को बाहर निकालने लगा।

गूगा राणा ने एक बार तो रंग-विरंगे सांप बांबी से निकाले तथा अन्य कई रंगों के सांप निकाले।

इक्को वे नागा बेलीं जे कढे धूपें दे लमकाये
इक्को वे विशिहर-इसिहर कढे वीहां दित्ते चणाई।
इक्को वे तां नाग पौणिया भारी, रैहंदे वे ठंडड़े बागें
इक्को वे तां नाग चनण रुखा पर रैहंदे, वासू दे भुखे।
इक्को वे तां गारजू मींडकियां दे रैहंदे छपड़ां च जाई
राणे बामी जे सोहदे, कढे नाग प्याला ते
अश्टकुलीं दे नाग कढे राणे, उपरैं मण्डल आये।
दित्तीयर नाग रखे ट्यालेयां चणाई
बेली जेहे नाग मंजेया दौणी पाईयां।
विशिहर नाग बड़े लम्मै नीले जो पछयाड़ियां पाईयां।
बड्डे खबर होई वासकी नागा नाग चवंदिया लाये।
वासकी नागैं रेसमी धोती लाई मत्थे जो तिलक लगाया
हत्थ विच सोठियां जे लईयां ब्राह्मण बण के आया।
राणे जे गूगें दूरा ते पछयाणेया वासकी नाग जे आया
राणे जे गूगें पुछणा जे लाया जाति दा कुण हुंदा।
सुणेयां गूगेया राणेया, हुंदा मैं कुला दा ब्राह्मण
हुकम करदा चरवेदारां, कोरड़ा साफ कराओ
तड़ै-तड़ाकें पौणे जे लगियां, तांई वे नाग करलाया।

इस प्रकार गूगाराणा ने बेलों (लताओं) की तरह सांप बाहर निकाले और धूप में सूखने डाल दिये। विषिहर और इसिहर नाम के नागों को भी गूगामल ने बांबी से बाहर निकाल कर दीवार में चिनवा दिया।

इस प्रकार कुछ बड़े-बड़े नाग ठंडे बागों में रहते। कुछ नाग चंदन के पेड़ पर वास करते जोकि चंदन की गंध के भूखे होते।

कुछ नागों का आहार मेंढक होता है तथा मेंढक खाने के लिए पानी के जोहड़ों में रहते। गूगामल राणा ने धरती पर सभी बांबियों को शोध डाला। सभी आठों कुलों के नागों को पाताल पुरी से धरती पर लाया गया।

गूगामल राणा ने दितीयर नाम के नागों को टियालों (चबूतरों) की चिनाई में दफना दिया। जो बेलों की तरह लम्बे थे उन्हें चारपाई कसने के लिए रस्सियों के रूप में प्रयोग किया।

विषिहर प्रकार के जो लम्बे-लम्बे नाग थे, गूगामल ने उनको अपने घोड़े (नीले) के पुट्ठों के साथ लपेट कर बांध दिया।

सांपों के मारे जाने की खबर बड़े नाग, नागों के राजा वासुकी को पातालपुरी में हुई। तब नागराज वासुकी ने नागों को चारों ओर बिठा दिया और स्वयं रेशमी धोती पहन कर, माथे पर तिलक लगाकर, हाथ में सोठा (डंडा) लेकर ब्राह्मण रूप धारण कर गूगामल राणा के मारू देश में पहुंच गया।

ब्राह्मण रूप धारण किए हुए नागराज वासुकी को गूगा राणा ने दूर से आते हुए देख व पहचान लिया। इस पर गूगामल राणा ने उस ब्राह्मण रूपी वासुकी नाग को पूछा कि तुम्हारी जाति कौन सी है?

वासुकी नाग ने उत्तर दिया कि हे गूगा राणा ! मैं ब्राह्मण हूं। यह जानकर गूगामल राणा ने अपने नौकरों-चाकरों को आदेश दिया कि एक डंडा लाओ। उस डंडे से उसने तड़ातड़ उस नाग पर कोड़े बरसाना शुरू कर दिए और वह चिल्लाने लगा।

तूं मत मारेयां गूगे राणेयां चाकर हुंगा मैं तेरा
विण हुकमा नी डहंगगा, रैहंगा राह विच
नट्ठे नाग उतर गये प्याळां।
सद्दे औहंगे राणेया भेजे जाहंगे प्याळ
रैंहगे तेरिया कारा।

गुग्गा राणा की सगाई

हुम्मत दा जाया, जेवर दा बेटा अमरा ते रह गया तेरा नौं।

पार समुंद्रां कन्या जे जरमी मारूएं जरमेया गूगामल राणा।
पंजां तिहाड़ेयां दी होई कन्या
खेह्लदी दाईया दीये गोदे, बेटी राजेयां दी।
इह्यां सैह कन्या बधदी जांदी, जिह्यां न्हेरे पक्खा दा चांद
वधदी–वधदी वधी गई सैह्, होई गी बारह बरहेयां दी।
हुकम ता करदा कुला दे परोहता लड़की दा टोलेयां कोई साक
मेरे जेहा राजा होऐ हस्त झुल्लै दरबार।
फिरदा घिरदा पंडत चलेया, पंहुचेया मारू देस
दूरों आया नेड़ैं पच्छाणेया।
माई बाच्छलें सोने दा पलंग ढलाया
केहड़े मुलखां ते आया केहड़े मुलखां नू जाणा।
गौहड़ बंगाले ते आया गढ़ मारूए दा ध्यान लगाया
लड़कें तेरे दा टिक्का लेई नैं आया कारजकरना तुसां घर आपणे।

इस पर नाग ने विनती की कि हे गूगा ! आप इस तरह हम नागों को मत मारो हम आपके नौकर होंगे, बिना आपके आदेश के डंक नहीं मारेंगे चाहे रास्ते में ही पड़े हों। सभी नाग फिर डर के मारे पाताल लोक में उतर गए।

नागों ने गूगामल राणा को कहा कि सभी नाग उस के आदेश के अनुसार आयेंगे और जायेंगे और उसके द्वारा खींची लकीर के अन्दर ही रहेंगे। इस प्रकार गूगामल ने सभी नागों को अपने नियन्त्रण में कर लिया।

मारू देश में हुम्मत नाम का राजा हुआ करता था। उसका एक बेटा जेवर पैदा हुआ। उसके घर पर एक पुत्र गूगा पैदा हुआ, उसका नाम अमर हो गया।

समुद्र के पार बंगाल में राजा मालप के घर कन्या सुरियल का जन्म हुआ और मारू देश के राजा हुम्मत के पुत्र जेवर के घर गूगामल राणा का जन्म हुआ।

उधर बंगाल के राजा मालप के घर जन्मी कन्या पांच दिनों की हो गई और वह दाईयों की गोदी में खेल रही थी।

इस प्रकार कन्या कृष्ण पक्ष के चन्द्रमा की भांति बढ़ती–बढ़ती बारह वर्षों की हो गई और राजा मालप अपनी कन्या के लिए वर ढूंढने की बात सोचने लगा।

राजा मालप ने कुलपुरोहित को बुला कर अपनी लड़की के लिए वर

ढूंढ़ने हेतु आदेश दिये और कहा कि वर मेरी तरह राजा होना चाहिए जिसकी चारों ओर जय–जयकार हो।

कुल पुरोहित घूमता–फिरता मारू देश में पहुंच गया। उसे नज़दीक से देख गूगामल राणा की माता बाच्छल ने पहचान लिया, उसे बैठने के लिए सोने की चारपाई लगा दी, फिर पूछा कि आप कौन से देश से आए और कहां जाना है। कुल पुरोहित ने उत्तर दिया कि मैं गौहड़ बंगाल देश से आया हूं और मारू देश का ध्यान कर इधर पहुंचा हूं।

तुम्हारे लड़के के लिए शगुन का टीका लेकर आया हूं। तुम्हारे घर राजा मालप की लड़की की शादी करनी है।

जिस मुलखा दा पाणी नी पीणा उसदा तू साक लेई नैं आया
जिस मुलखा दा नौं नी लैणा उसदा तू साक लेई नैं आया।
पंडत बोलया साक तेरे लड़के दा लेई ने आया
साह्या गैं सुधाया, लड़के तेरे जो टिक्का चढ़ाया।
गरीयां, छुहारेयां दे भोजन पंडता जो लाए राणिएं।
भरी कै थाल मोतियां दी दछणा दित्ती।
फिरदा घिरदा पंडत पहुंचेया गौहड़ बंगालें जाई
केहड़ेयां मुलखां ते पंडता चल के आया
कित वल टोलेया लड़की दा साक।
एसर पोता जेवर बेटा, माई बाच्छल दा जाया
इक्को बेटा गढ़ मारूए अंदर, चंदा सूरजा जोती।
अठ लख हाथी नौ लख घोड़ा हस्त झुलदी दरबार
जाति दा उच्चा हड्डां दा सुच्चा छत्री चुहाणे गोत।
जिस मुलखा दा पंडता नौं नी लैणा
उस वल टोलेया तैं लड़की दा साक।
सद बलायो जलादां जो, हुकम करदा जलादां जो
पंडत नू लायो फाह।
हत्थ जोड़ के राणी बोली राजा! होर तां हत्या नहाई धोई
सभ जांदियां, ब्राह्मण हत्या नी जांदी
हत्थ मुंह काला, पैर नीले करदे मुलखा ते बाहर।

बाच्छल माई ने पुरोहित से कहा कि– जिस देश का पानी भी नहीं पीना है, तू उस देश से रिश्ता (शगुन) लेकर आया है। जिस देश का नाम भी नहीं लेना है, तू उस देश से रिश्ता लेकर आया है।

कुल पुरोहित ने वाच्छल को कहा कि आपके लड़के (गुग्गामल) के लिए मैं रिश्ता लेकर आया हूं। मैंने इसके लिए शुभ मुहूर्त भी निकलवा लिया है। अब आपके लड़के को शगुन (टीका) लगाना है जिससे शादी पक्की हो जाए।

इस पर रानी बाच्छल ने उस पुरोहित को गरी, छुहारों से मिश्रित भोजन परोसा और मोतियों से भरी थाली उसे दक्षिणा स्वरूप भेंट की।

फिर राजा मालप का कुल पुरोहित वापस गौहड़ बंगाल देश चला गया। राजा मालप ने पुरोहित को पूछा कि पंडित जी कहां से आ रहे हो और लड़की के लिए वर किस देश में ढूंढा।

कुल पुरोहित का राजा मालप को उत्तर था कि मारू देश के राजा एसर का पोता, राजा जेवर का बेटा, जिस की माता बाच्छल है, वह वर आपकी लड़की को ढूंढा है। मारू देश में वह एक ही बेटा है जो सूर्य और चन्द्रमा की तरह शोभायमान है।

उसके पास आठ लाख हाथी और नौ लाख घोड़े हैं। सारे देश में उसकी जय–जयकार होती है। वह ऊंची क्षत्रिय जाति का है, सुडौल है तथा उसका गोत्र चौहान है।

इस पर राजा मालप ने पुरोहित को कहा कि पंडित जी जिस देश का नाम नहीं लेना है तुमने उस देश में लड़की का रिश्ता ढूंढा है।

राजा मालप ने गुस्से में जल्लादों को बुलाकर आदेश दिया कि इस पंडित को फांसी पर लटका दो जिसने रिश्ता मारू देश में ढूंढा है।

यह सब सुनकर राजा मालप की रानी हाथ जोड़कर राजा मालप से विनती करने लगी कि हे राजा ! अन्य की गई विभिन्न हत्याओं से व्यक्ति पवित्र सरोवरों अथवा नदियों में नहाकर मुक्त हो सकता है परन्तु ब्राह्मण की हत्या का पाप नहीं उतरता। अगर इस पंडित को सजा देनी है तो इसके हाथ–मुंह काले और पैर नीले करके इसे देश निकाला दे दो।

फिरदा घिरदा पंडत मारूएं पहुंचेया, बागां दे विच आया
बागां दे विच गूगामल राणा खिन्नू खेह्डदा पंडत नो मिलेया।
गूगामल राणा पुछदा, केहड़ेयां मुलखां ते आया पंडता
केहड़ेयां मुलखां नू जाणा, किह्यां करी कै तेरे आमण होए।
तेरी मंग जेहड़ी थी
राजे मालप ने सुरियल कछपां दे देस देई ती।
गूगामल राणा मां दे कोल मैहलां दे विच आया

मां दे अग्गे हत्थ जोड़ के अरज करदा
मेरे गुरू नो बुलाओ।
राणी बाच्छल जे बोलदी हाखीं नी देखेया
कन्नैं नी सुणेया केहड़िया नुहारी गुरु तेरा।
गूगामल राणा बोलदा कढ कटारा तेरिया गर्दनी मारां
टुकड़ै करां तेरे चार
किन्हें बेटा तैनूं मंदा बोलेया किन्हें दित्ती तैनूं मंदी गाल़।
न मैंनू किसे ने मंदा बोलेया न दित्ती मंदी गाल
मेरी मंग कछपां जो दित्ती राजे मालपें गईया मंगा घरे ल्यौ।
गईया मंगा बेटा जाणा दे ब्याह करां मैं तेरे चार।

इस प्रकार पंडित चलते–चलते मारू देश में विराजमान हो गया, जहां पर बागों में राणा गेंद से खेल रहा था और पुरोहित से गूगामल की मुलाकात हो गई।

गूगामल ने पंडित से पूछा कि हे पंडित जी! कहां से आए हो और कहां जाना है और यहां पर आप किस उद्देश्य से आए हो।

पंडित ने गूगामल को उत्तर दिया कि हे गूगामल ! आपकी जो मंगेतर (सुरियल) थी उसके पिता मालप ने कच्छप देश में किसी अन्य के साथ उसकी शादी तय कर दी।

पंडित जी की यह बात सुनकर राणा अपनी माता बाच्छल के पास महलों में आ गया और हाथ जोड़कर विनती करने लगा कि हे माता जी! इस समस्या के निवारण हेतु मेरे गुरु गोरखनाथ को यहां बुलाओ।

परन्तु रानी बाच्छल गूगामल को उत्तर देती है कि न तो मैंने तुम्हारा गुरु आंखों से देखा और न ही उसके बारे में कुछ सुना और न ही उसकी शक्ल सूरत देखी है।

राणा को माता की बात सुन कर गुस्सा आ गया और कहने लगा कि मैं अपनी तलवार निकाल कर तेरे काट कर चार टुकड़े कर दूंगा, नहीं तो गुरु के बारे में कोई अता–पता बता।

गूगामल का उग्र रूप देख माता बाच्छल कहने लगी कि "बेटे किस व्यक्ति ने तुम्हें बुरा भला कहा है और किस ने तुम्हें बुरी गाली है। जिस कारण तू इस तरह पेश आ रहा है।"

गूगामल ने जवाब दिया कि–"न मुझे किसी ने बुरा भला कहा और न ही किसी ने गाली दी है।"

राजा मालप ने मेरी मंगेतर को कच्छप देश के राजा को दे दिया है इसलिए उस दी हुई मंगेतर को घर ला अर्थात् उसकी शादी मेरे साथ ही होनी चाहिए।

माता बाच्छल ने उसे समझाते हुए कहा कि हे गूगामल ! यदि तेरी मंगेतर की शादी दूसरी जगह निर्धारित कर दी गई है, तो उसे अब जाने दे। उसके बारे में मत सोच। मैं तेरे एक के बदले चार विवाह करवा दूंगी।

ब्याही होंदी तां मां मैं छडी दिंदा
वरू दीया जो औयै चुहाणा जो लाज
लोक सारे बोलियां लांदे सारे लोक लांदे विच दरबार।
सठ समुन्दर नड़िनवें नदियां उन्हां ते पार गुरु तेरे
हुकम करदा चरवेदारां नीले जो करेयां पलाण।
जिक के रकाब नीले स्वार जे होया
चेला जोगिए दा, धरती नू करै नमस्कार।
पौणां दे रस्ते पौण मिलेया, टपेया समुंदरा ते पार
इक्की ता मंजला दूईया मंजला
पहुंचेया गुरुआं दे पास, चेला ओ जोगिए दा।
सुण जाहर पीरा हो बारह ता वरसां गुरु सुत्ते नू होईयां
पूर जोगीयां नू, सुत्ते नूं कौण जगाए।
हत्थ जोड़ के तिन फेरियां लैंदा चरना ते सीस नवाया
हत्थां झसदा पैरां झसदा सुत्ते नूं लैंदा जगाई,
चेला जोगीए दा।
अलख नरंजन मेरा गुरु जागेया होर नी जागेया कोई
क्या औखियां भारियां राणेयां, तूह पर आई गईयां।
किह्यां करी तेरे औवण होए, चेला ओ जोगिए दा।
ओ सुण गुरुआ मेरेया
मंग ता मेरी गुरुआ कछप जो दित्ती राजे मालपें
गईया मंगा मेरिया घरे ल्यौ।

गूगामल कहता है कि यदि– सुरियल की शादी गूगा के साथ हो गई होती तो वह उसे त्याग देता, परन्तु वह तो अभी उसकी मंगेतर ही है उसे छोड़ते हुए चौहान को शर्म आ रही है। राज दरबार के सभी लोगों के मुंह पर एक ही बात थी कि शादीशुदा को छोड दिया जा सकता है परन्तु मंगेतर को त्यागना शर्म की बात है।

फिर माता बाच्छल ने राणा को उसके गुरु के बारे में बताया कि तेरा गुरु गोरखनाथ साठ समुद्र और निन्यानवें नदियां पार जाकर रहता है अर्थात् वहां गुरु गोरखनाथ का डेरा है।

गुरु गोरखनाथ के पास जाने के लिए गूगामल अपने नौकर–चाकरों को आदेश देता है कि नीले (गूगामल के घोड़े) को काठी इत्यादि लगाकर तैयार करो।

गूगामल नीले घोड़े पर सवार हुआ, रकाब पर पैर रखा, धरती को नमस्कार किया और गुरु गोरखनाथ के डेरे की ओर प्रस्थान कर गया। उस का घोड़ा वायु मार्ग से उड़ता हुआ हवा से बातें करता कई समुद्र पार कर गया। इस प्रकार पड़ाव–दर–पड़ाव पार करता हुआ वह गुरु के डेरे में पहुंच गया।

हठ के पक्के गूगा ने हाथ जोड़कर ध्यानरत गुरु गोरखनाथ के चारों ओर तीन चक्कर लगाए और अपना सिर गुरु के चरणों पर टिका दिया। इस प्रकार गुरु के हाथ पैरों की मालिश करते–करते गूगामल ने गुरु गोरखनाथ को जगा दिया।

गुरु गोरखनाथ ने समाधि से जागते ही अपने मुंह से अलख निरंजन की आवाज़ की और कहा कि "हे राणा ! तुझ पर कौन सी कठिनाई आ पड़ी है। मेरे शिष्य तुम यहां किस प्रयोजन से आए हो।"

गूगामल ने जवाब दिया कि "हे गुरु जी! राजा मालप ने मेरी मंगेतर सुरियल की शादी कच्छप देश के राजा के साथ निर्धारित कर दी है। अतः उस शादी को तुड़वा कर सुरियल की शादी मेरे साथ करवाओ।"

गईयां ता मंगा बेटा जाणा तू देयां चेला ओ जोगिए दा
ब्याह करावां तेरे हजार।
ओ सुण गुरुआ मेरेया ब्याही हुंदी गुरुआ मैं छडी दिंदा
कुआंरिया दी औऐ चुहाणा लाज
जौडू भाई बोलियां मारदे, बोलियां लांदे सारे लोक।
लिख परवाने काहनी चेले जो भेजे सद के गुरुये डेरे बुलाया जरूर
बचना दा वधेया काहनी चलेया, पहुंचेया गुरुआं दे पास।
हत्थ जोड़ के सत्त फेरियां लैंदा काहनी वे चेला
चरना ते सीस नवाया।
काहदे कारण तैं गुरुआ मैनूं सदेया हुकम दैणा फरमाई।
ओ सुण काहनी वे चेलेया मंग राणे दी कच्छपा जो दित्ती

राजे मालपें, तूह प्यालां जो जाणा
प्याल़ पुरी कलिहर नाग, सद के ल्यौणा मेरे पास।
तेरा घलेया गुरुआ मैं सारें जांदा और सारें जौआं
पर प्याल़ पुरी नी मैं जाणा।
प्याल़ पुरी ते नागां दी धरती माणस नजरी नी औऐ
जिन्हां दे डंगे पर्वत गिरदे माणस कौण बचाये।
एह लै तू झोल़ी मेरी एह लै बटुआ
अजमत लै जा मेरी नाल।

गुरु गोरखनाथ ने गूगामल को कहा कि यदि तेरी मंगेतर की शादी कहीं और तय कर दी गई है तो उसको तू जाने दे। तेरे एक छोड़ कर हज़ार विवाह करवा देंगे।

इस पर गूगामल गुरु गोरखनाथ से विनती करता है कि हे गुरु जी! यदि सुरियल की शादी मुझसे हो गई होती तो उसे त्याग देता। परन्तु अविवाहित (मंगेतर) को छोड़ने पर (गूगा) चौहान को शर्म आ रही है। इस पर काच्छल के जुड़वां बेटे अर्जुन–सुर्जन और सारे लोग तरह–तरह की बातें कर रहे हैं।

इस प्रकार गुरु गोरखनाथ ने लिखित संदेश भेजकर काहनी चेले को बुलाया। वचन का पक्का वह चेला संदेश मिलते ही गुरु गोरखनाथ के डेरे में पहुंच गया।

डेरे में पहुंचकर काहनी चेले ने हाथ जोड़कर गोरखनाथ के सात फेरे लिए और अपना शीश गुरु के आगे झुका दिया। गुरु गोरखनाथ को पूछा कि गुरु जी ! मुझे किस कारण यहां बुलाया है, वह हुकम मुझे सुना दो।

गुरु गोरखनाथ ने काहनी चेले से कहा कि राणा की मंगेतर राजा मालप ने कच्छप देश के राजा को दे दी है। इसलिए तुम पातालपुरी में जाओ और वहां से कलिहर नाग को बुलाकर मेरे पास लाओ।

काहनी चेले ने गुरु गोरखनाथ को जवाब दिया कि हे गुरु जी! आपका भेजा हुआ मै सारी जगह जाता हूं और सारी जगह जाऊंगा परन्तु मैं पातालपुरी में नहीं जाऊंगा, क्योंकि–

पाताल लोक में नागों का वास है, वहां पर कोई भी मनुष्य नज़र नहीं आता। उन सांपों द्वारा काटे (दंशित) हुए पर्वत भी गिर जाते हैं तो फिर मनुष्य को कौन बचा पाने में समर्थ होगा।

यह सुनकर गुरु गोरखनाथ ने काहनी चेले को कहा कि मैं तुम्हें एक

झोली और बटुआ देता हूं और पाताल लोक को जाते हुए मेरे द्वारा दिए गए।

गुरुमन्त्र को भी अपने साथ ले जाना

ओ सुण काहनी चेलेया प्यालपुरी कौलां जे राणी
बेटी ओ नागां दी, उस देयां डेरेयां जो जाणा।
ऐसिया घड़िया गुरुआ मैं जाणा हट के नी औणा तेरे पास
अग्गैं चलदा पिच्छैं मुड़ी देखै नैण भरी–भरी रोऐ।
पैहला नाद काहनी नै पूरेया जिमीयां नै खोहले कवाड़
इक्की मजला दूईया मजला
काहनी चेला पहुंचेया प्यालपुरी जाई।
प्यालपुरी कौलां राणी ओ बेटी नागां दी
उस देयां डेरेयां जो जाए
सिरा ते तुआरे काहनीयें चेलें कोरे कागद
कौलां दे हत्थ फड़ाये।
लिख परवाने गुरुआं दे आए पूरे जोगीयां दे
कलिहर नाग सदेया जरूर।
वचनां दा बन्हेया कलिहर चलेया, धीए मेरिये
सुण देऊआ हट के नी औणा तेरे पास।
इक्की ता मजला दूईया मजला
कलिहर चलदा पहुंचेया गुरुआं दे पास।
गुरुएं बोलया कलिहर नागा जो मालप देसां जाणा
राणें दी मंग कच्छपा जो दित्ती सुण कलिहर नागा
गईया मंगा ओली घरे ल्यौ।

गुरु गोरखनाथ ने काहनी चेले से कहा कि पातालपुरी में नागों की बेटी कौलां रानी रहती है। आपने उसके डेरे में जाना है।

पातालपुरी के लिए प्रस्थान करता हुआ काहनी चेला कहता है कि वह ऐसे समय (मुहूर्त) में वहां जा रहा है कि फिर गुरु गोरखनाथ के पास वापस नहीं आयेगा। काहनी चेला आगे–आगे चलता हुआ पीछे मुड़कर देखता जा रहा था और उसकी आंखों से आंसुओं की झड़ी लगी हुई थी।

पातालपुरी को प्रस्थान करते हुए काहनी चेले ने पहला शंख नाद किया और धरती ने पातालपुरी जाने के लिए अपने किवाड़ खोल दिए अर्थात् धरती फट गई। इस प्रकार मंज़िल–मंज़िल पार करता हुआ काहनी चेला

पाताल लोक पहुंच गया। वहां पहुंच कर काहनी चेला नागों की बेटी कौलां रानी के डेरे में चला गया। वहां पहुंच कर काहनी चेले ने सिर से कागज़ उतारे और रानी कौलां के हाथ में पकड़ा दिए, जिन पर गुरु गोरखनाथ ने संदेश लिख कर भेजा था।

यह संदेश गुरु गोरखनाथ ने लिख कर काहनी चेले के माध्यम से नाग कन्या कौलां रानी तक पहुंचाया जिसमें उन्होंने कलिहर नाग को अपने पास बुलाया था।

संदेश पाकर वचनों के पक्के कलिहर नाग ने कौलां रानी को कहा कि हे मेरी पुत्री ! मैं कलिहर नाग गुरु गोरखनाथ के पास जा रहा हूं। अब शायद ही मैं तुम्हारे पास वापस आऊं।

इस प्रकार मंज़िल–मंज़िल पार करता हुआ कलिहर नाग गुरु गोरखनाथ के डेरे पहुंच गया।

गुरु ने कलिहर नाग को आदेश दिया कि मालप देश के राजा ने अपनी पुत्री सुरियल की सगाई गुग्गामल राणा से की थी जो बाद में अपने वचनों से मुकर गया और उसकी सगाई कच्छप देश के राजा से कर दी। अब तुम्हें (कलिहर ने) उस मंगेतर की शादी गुग्गामल से ही करवानी है।

पैहलें डेरें चढ़ी खड़ोता संगुल घाटिया डेरे लाये
दूजैं डेरें चढ़ी खड़ोता कलिहर नागा भाईया,
डेरा बागां मंझ लाये।

सठ सहेलियां सुरियल बेटी, बेटी ओ राजे दी
पैरां दीयां पाईयां डिनणी पर धरियां
हत्थां पैरां धोये ठण्डे नौणा।

भेस बदलेया कायां बदली कलिहर नागैं
बणेया असली स्पोईया।
पैरां दीयां पाईयां पैरे जे पाईयां बेटी राजे दी
हटदी नू लड़ गया काला नाग।
रोणा जे लगदी, तोबा जे करदी भैणो मेरियो जी
मैहले खबर करो जाई नै।
ओ सुण भैनड़ो मेरियो, सठ सहेलियां दौड़ी कै गईयां।
राजा मालप दे पास, महाराज म्हारे सुरियल जो
लड़ गया काला नाग।
एह सुण राजे देयां हत्थां दीया नरदां

डिग–डिग पईयां बागां दे डेरे जो आया।
राजा हत्थां झसदा पैरां झसदा धीए मेरिये
सुण देऊआ म्हारेया कित्थे लड़ेया काला नाग।
सुण बाबला मेरेया ओ जली जाहण तेरे बाग बगीचे
जली जाहण तेरे ठण्डे नौण।
ओ सुण बाबला मेरेया ओ
पैरां दीयां पाईयां पैरां पाईयां बापू मेरेया
हटदी नू लड़ गया काला नाग।
ऐसा नी नगरे कोई बैद चेला भाई मेरेया
जेहड़ा सुरियल दा विस तुआरै।

गुरु गोरखनाथ का आदेश पाकर कलिहर नाग अपनी मंज़िल की ओर चल पड़ा और पहला पड़ाव संगुल घाटी में डाला। फिर पहुंचता–पहुंचता नाग मालप देश के साम्राज्य के बागों में पहुंच गया और वहां डेरा जमा दिया।

वहां बागों में कलिहर नाग ने देखा कि राजा मालप की बेटी सुरियल साठ सहेलियों से घिरी हुई बागों में बनी ठण्डे पानी की बावड़ी में अपने हाथ–पैर धो रही थी और उसने अपने जूते खोलकर बावड़ी में एक पत्थर पर रख दिए थे।

वहां पहुंच कर कलिहर नाग ने अपना वेश बदल लिया और छोटे से सांप का रूप धारण कर अपने अगले कार्य के लिए तैयार हो गया।

हाथ–पैर धोकर ज्यों ही राजे की बेटी ने घर वापस आने के लिए पैरों में जूते पहने तो उसे काले सांप ने डंस लिया। यह देख सुरियल सखियों के सामने रोने–धोने लगी और कहने लगी कि महलों में (राजा को/पिता को) खबर कर दो।

साठ सहेलियां दौड़ी–दौड़ी राजा मालप के पास गईं और सूचना दी कि सुरियल को काले नाग ने डंस लिया है।

उस समय राजा शतरंज खेल रहा था और सुरियल को काले नाग द्वारा दंश मारने का समाचार सुनकर उसके हाथ से शतरंज के मोहरे गिर गए और वह शीघ्र सुरियल के पास बाग में पहुंच गया। राजा मालप अपनी पुत्री के हाथ–पैर की मालिश करने लगा और पूछने लगा कि मेरी पुत्री तुम्हें सांप ने कहां काटा है?

सुरियल विलाप करती हुई बोली कि पिता जी! तुम्हारे बाग बगीचों में आग लग जाए और तुम्हारे ठण्डे तालाब और बावड़ियां भी सूख जाएं।

हे पिता जी! मैं अपने पांव धोकर जूते पहन रही थी और घर जाने ही लगी थी कि काले सांप ने डंस लिया।

राजा मालप ने विचार किया कि मेरे इतने बड़े साम्राज्य में कोई ऐसा वैद्य चेला नहीं होगा जो कि क्या सुरियल का विष उतार सके?

कलिहर नाग द्वारा वैद्य का रूप धारण करना

काया बदली कलिहर नागैं बणेया असली बैद।
चार छड़िये राजे मालप नैं जोड़िये बैद ल्यौणा भई टोळी
ओ चारों ता बैद फिर घिर आईगे
महाराज राजा मालपा जी वैद लंदा टोळी।
पंज डालियां बण्हे दीयां मुंगाईयां
और सुरियल दे वेहड़ेयां जो गया
पैहली डाली बाही दखणा दी, विस चढ़ेया समाण।
दूजी डाली उत्तरा दी बाही विस चढ़ेया सुआया।
तीजी डाली पछमा दी बाही विस चढ़ेया समाण।
बैद बोलदा कि राजा कीह्दी मंग किह्जो दीत्ती,
किस दा लड़ेया काला नाग।
मारूए दी मंग मैं कछपां जो दित्ती मारूए दा लड़ेया काला नाग।
मारूए दी मंग मारूएं दै तां विस उतरी जाणा
मारूए दी मंग मारूएं न दै ता सुरियल मरी ओ जाणा।
मारूएं दी मंग मारूएं दिहंगा सुरियला जो लेयां बचाई।
चौथी डाली मारूए दी बाही विस उतरेया प्याळ।

इसी बीच कलिहर नाग अपनी काया बदल कर मुनष्य का रूप धारण कर असली वैद्य बन गया।

राजा मालप ने सुरियल का विष उतारने के लिए चारों दिशाओं में अपने नौकर भेज दिए ताकि वह विष वैद्य को ला सकें। इस प्रकार उनको कलिहर नाग के रूप में वैद्य मिल गया और उसे लेकर वे राजा के पास आ गए।

वैद्य ने विष उतारने के लिए पांच डालियां (टहनियां) बण्हे की एक झाड़ी की डाली मंगवाई। टहनियां लेकर वह सुरियल के महलों को चला गया। उसने पहले दक्षिण दिशा की ओर टहनियां चलाई परन्तु विष और ज़्यादा चढ़ गया।

वैद्य ने दूसरी बार उत्तर दिशा की ओर टहनियां करके विष उतारने का मंत्र पढ़ा परन्तु फिर भी विष उससे दो गुना हो गया।

तीसरी बार पश्चिम दिशा की ओर करके वैद्य ने विष उतारने का मंत्र पढ़ा परन्तु उत्तरोत्तर विष बढ़ता ही गया, घटने का नाम नहीं ले रहा था।

यह सब जानकर वैद्य ने राजा मालप से कहा कि तुमने किसी की मंगेतर को किसी और को दिया है और किस जगह किस सांप ने डसा है सुरियल को।

राजा मालप ने वैद्य को उत्तर दिया कि मारू देश के राजा की मंगेतर को उसने कच्छप देश के राजा को दे दिया और मारू देश में सुरियल को काले नाग ने डंक मारा।

वैद्य ने राजा मालप को कहा कि मारू देश के राजा की मंगेतर की यदि उसे लौटा दे तभी सुरियल का विष उतरेगा। यदि मारू देश के राजा गुग्गामल को सुरियल नहीं लौटाई तो विष नहीं उतरेगा और वह मृत्यु को प्राप्त हो जायेगी।

बेटी के मोह में राजा मालप वैद्य की बात मान गया और कहा कि मारू देश के राजा की मंगेतर को उसी को दूंगा परन्तु सुरियल के जीवन की रक्षा करो।

परिस्थितियों को मद्देनज़र रखकर वैद्य ने चौथी बार विष उतारने का मंत्र पढ़ा जिससे सुरियल का विष उतरकर पातालपुरी में चला गया और सुरियल ठीक हो गई।

सुरियल का गुग्गामल से विवाह

तू ही बैद तू ही चेला तू ही रखेयां साह्या सोध।
अठां दे लगन नौआं दीयां बेदीं दसां दे होणे राजा लग्ग चार।
अठे औहंगे ता लगन तुहाड़े फिर कैं देयां मैं कछपा दे देस।
तुसां ई टिक्का लेई के मारूए जो जाणा
सेर पक्की सरहों मालप राजें दित्ती
इतनी क ल्यौणी जणेत।
फिरदा–घिरदा कलिहर चलेया पहुंचेया मारू दे देस।
दूरों देखेया नेड़े पछयाणेया
माई बाच्छलैं सोने दा पलंग ढलाया
कैह्ड़ेयां मुलखां ते आया पंडता

किह्यां करी औण तेरे होये।

लड़के तेरे दा सगुन लेई आया कारज करो घर आपणै

अठां दे लगन नौआं दीयां बेदीं दसां दे होणे लग्ग चार।

अठे लगन तुहाड़े फिर कैं दैणी कछपां दे देस

सेर पक्की सरहों दित्ती राजे मालपें इतनी क नैणी जणेत।

पहला न्यूंदा नानकियां जो दैणा

सकेयां मामेयां जो, सेहरा मुकुट ल्यौणा।

सुरियल के ठीक होने पर राजा मालप ने कलिहर से कहा कि आप ही वैद्य और आप ही चेले हैं। आप ही अब सुरियल की शादी का शुभ मुहूर्त निकाल कर समय निर्धारित करना।

उस वैद्य ने ही आज से आठवें दिन के लगन व नौवें दिन वेदी का मुहूर्त निकाला। दसवें दिन विदाई का समय निर्धारित किया। इस प्रकार गुग्गामल की शादी सुरियल के साथ पक्की कर दी गई।

यह सुनकर सुरियल के पिता राजा मालप ने वर पक्ष से कहा कि यदि तुम आठवें दिन शादी को पहुंच जाओगे तो गुग्गा के साथ कन्या के लगन लगा दिए जाएंगे। यदि निर्धारित समय पर (आठवें दिन) बारात लेकर नहीं पहुंचे तो फिर कन्या का रिश्ता कच्छप देश के राजा के साथ कर दिया जाएगा।

राजा मालप ने वैद्य से कहा कि तुम ही शादी का टीका (शगुन) लेकर मारू देश जाना। राजा ने एक सेर सरसों वैद्य के पास दी और कहा कि इस सरसों के जितने दानें हैं गिनती में उतनी बारात लेकर आना।

फिर वह कलिहर नाग (वैद्य) घूमता–घुमाता मारू देश में राजा जेवर के घर पहुंच गया।

उस वैद्य (पंडित) को माई बाच्छल ने दूर से आते देखा और उसे बैठने के लिए सोने की चारपाई लगा दी। फिर बाच्छल ने पूछा कि हे पंडित जी ! कौन से देश से आए हो और तुम्हारे यहां आने का प्रयोजन क्या है ?

पंडित ने माई बाच्छल को कहा कि तुम्हारे लड़के गुग्गामल के लिए शगुन लेकर आया हूं। तुम अब शादी की तैयारी करो। आज से आठ दिन बाद शादी के लग्न व नौवें दिन वेदी का समय निर्धारित हुआ है और दसवें दिन विदाई होगी।

अगर आठवें दिन के लग्न पर तुम शादी को पहुंच गए तो शादी हो जाएगी नहीं तो नौवें दिन सुरियल की शादी कच्छप देश के राजा के साथ

कर दी जाएगी। राजा मालप ने एक सेर सरसों दी है और कहा कि जितने बीज इस सरसों में हैं उतनी ही गिनती में बारात होनी चाहिएं। इस प्रकार शादी पक्की हो गई।

गुग्गामल राणा की शादी का पहला निमंत्रण नाना के घर सगे मामों को भेजा गया और कहा गया कि विवाह के अवसर पर गुग्गामल के लिए सेहरा और मुकुट लेकर आना।

फिर कै न्यूंदा गुगड़िया दैणा सकिया भैनड़ा जो जी
जिसने केसरी बग्गा देऊआ ओ ल्यौणा।
फिर कै न्यूंदा चंदा–सूरजा दैणा सृश्टि देयां मालकां जो
राणे दे मुकुटा जो लगणा आई।
फिर कै न्यूंदा जौडुआं जो दैणा, मासिया दे जायां जो
सुणा भाईयो मेरेयो, राणे दी करो जणेत।
जौड़ू मसेर दिंदे जवाब
असां भाईया भूल ना ही जाणा।
फिर कै न्यूंदा पंडवां जो, कन्ने जणेती तुसां जाणा।
अगला न्यूंदा नर नारायणा जो, तुसां वीं जणेती जाणा।
फिर कै न्यूंदा नौआं नाथां जो, तुसां वी सौगी चलणा।
अगला न्यूंदा कांसा राजे जो, जणेती तुसां वी चलणा।

फिर कै न्यूंदा भैरों छड़िये जो, तुसां वी जणेती जाणा।
अगला न्यूंदा हनुमत जोधे जो, जणेती जरूर जाणा।

फिर कै न्यूंदा बूंजा वीरां जो, जणेती जरूर जाणा।
अगला न्यूंदा चौहट जोगणी जो, जणेती जरूर जाणा।

फिर कै न्यूंदा कैलुए जो भेजेया, तुसां भी जणेती जाणा।
फिर कै न्यूंदा गुरुआं जो दैणा पूरे जोगीये जो,
राणे दी करो जणेत।
चेले तेरे दा ब्याह जे आया पूरे जोगी बाबा
कारज करो घरे आई नैं।

उसके पश्चात् दूसरा निमंत्रण सगी बहन गुगड़ी को दिया गया और उससे अनुरोध किया गया कि वह भाई के लिए विवाह के अवसर पर केसरी

बग्गा अर्थात् केसरी रंग के कपड़े लाए। इसके पश्चात् तीसरा निमन्त्रण सृष्टि के स्वामियों चन्द्रमा और सूर्य को दिया गया, उनसे अनुरोध किया गया कि वे विवाह के अवसर पर राणा के मुकुट (सेहरे) की शोभा बढ़ाएं।

इसके पश्चात् मौसेरे जुड़वां भाइयों अर्जुन और सुर्जन को निमंत्रण दिया गया कि वे गुग्गामल राणा की बारात में शामिल हों। परन्तु जुड़वां मौसेरे भाइयों ने जवाब में कहा कि वे भूलकर भी गुग्गामल की शादी में सम्मिलित नहीं होंगे।

इस प्रकार गुग्गामल की शादी का निमंत्रण पांच पांडवों तथा नर नारायण को भी भेज दिया गया।

फिर गुग्गामल की शादी का निमंत्रण नौ नाथों और कंस राजा को दिया गया और उनसे बारात में चलने का आग्रह भी किया गया।

इसी क्रम में भैरों छड़िये और हनुमान को भी गुग्गामल की बारात में चलने हेतु निमंत्रण भेजा गया।

बावन वीरों तथा चौसठ योगिनियों को भी बारात में शामिल होने के लिए निमंत्रण भेजा गया।

इसी क्रम से गुग्गामल राणा की शादी का निमंत्रण कैलू देवता को भी दिया गया और उससे बारात में शामिल होने का आग्रह किया गया।

अन्त में गुरु गोरखनाथ को गुग्गामल राणा की शादी का निमंत्रण भेजा गया और बारात में शामिल होने का भी अनुरोध किया गया।

गुरु गोरखनाथ से अनुरोध किया गया कि आपके चेले गुग्गामल की शादी आ गई है। हे जोगी बाबा ! आप उनके घर आकर विवाह कार्य सम्पन्न करवाओ।

ओ फिर कै न्यूंदा हेसियां–बालियां
मंगला चारियां जो दैणा मारूएं बजण बधाइयां।
ओ सुण गुरुआ म्हारेआ, हुकम करदा गुरु गोरखनाथ
जणेती दी करो तिआरी, पूरे ओ जोगी बाबा।
हुकम करदा बरासां भाइयो मुंडेयो तम्बू लाणा चुगाना मंझ
तम्बू लग गया चुगाना दे विच होई गी परसाई।
बजियां बधाइयां नाले कुरदे नगारे
दूलो गुग्गामल चलेया ब्याहणा।
गुगड़ी–गुगड़ी भैण हत्थ जोड़ के अरजां करदी
सुण भाईया मेरेया अरज सुणेयां मन लाई।

जिस मुलख तू ब्याहणे चलेया मुड़ के नी औणा मारू देस
बौहड़ बंगालै तू ब्याहणे चलेया
मुड़ के नी औणा मारू देस।
बौहड़ बंगाले दीयां मंदियां नारां करदीयां जादुए दा जोर
बौहड़ बंगाला जादुऐं राधेया रखदीयां भेडू बणाई।
बड्डी साली तेरी जादुऐं राधी, रखदी मोती बणाई
मोती बणाणा बेसरा पाणा, करदी जादुए दा सुहाग।
छोटी साली तेरी जादुऐं राधी, रखदी भेडुआं बणाई
भेडू बणाणा खुंडलेया लाणा, रखणा डालिया जो लाई।
सुरियल राणी रूपै राधी रखदी औएं लाई।

इस प्रकार गुग्गामल की शादी के लिए मंगलाचारियों को भी निमन्त्रण दिया गया और मारू प्रदेश में गुग्गामल राणा की शादी के समय बधाइयां बजना शुरू हो गईं।

सभी को निमन्त्रण भेजने के पश्चात् गुग्गामल राणा गुरु गोरखनाथ से आग्रह करता है कि अब बारात के चलने की तैयारी करो।

गुरु गोरखनाथ ने सेनापति और अन्य नौकरों–चाकरों को आदेश दिया कि वे चौगान के बीच तम्बू लगा दें। तम्बू लगने के बाद गुग्गामल की शादी शुरू हुई और परसाई भी हो गई अर्थात् बारात दुलहन के घर जाने को तैयार हो गई।

इस प्रकार मारू प्रदेश में विवाह गीत और बधाई गीत बजने लगे और इसके साथ ही गुग्गामल की बारात दुलहन के घर बौहड़ बंगाल की ओर प्रस्थान करने लगी।

जब बारात प्रस्थान कर रही थी तो गुग्गामल की बहन गुगड़ी हाथ जोड़ रास्ते में खड़ी होकर उस से विनती करने लगी।

गुगड़ी ने कहा कि जिस देश में तू शादी करने जा रहा है वहां से कोई भी मारू देश वापिस नहीं आता। तू बौहड़ बंगाल देश में ब्याहने जा रहा है अतः वापस मारू देश नहीं आ सकता।

बौहड़ बंगाल की नारियां अच्छी नहीं होतीं, वे जादू टोना कर देती हैं। वहां जादू का बहुत ज्यादा प्रभाव है। वहां की स्त्रियां पुरुषों को जादू के बल पर मेढ़ा बनाकर रखती हैं।

रिश्ते की तेरी (गुग्गामल की) बड़ी साली जादूगरनी है। वह पुरुषों को मोती बनाकर अपनी नथनी में जड़ लेती है और जादू का सुहाग करती है।

तुम्हारी छोटी साली भी जादू में सिद्धहस्त है, वह पुरुष को मेढ़ा बना खूंटी से बांध कर उसे घास व टहनियां इत्यादि खिलाने लगती है।

सुरियल रानी देखने में बहुत ही सुन्दर है और सुन्दरता के कारण उसके चेहरे से आग की लपटें निकलती हैं।

चल्ले मेरे नाल गुरु गोरखनाथ काहनी चेला,
कलिहर नाग, लैंदे माणस बणाई।

ना कोई चाचा ना कोई ताया ना कोई मेरा सका वीर
इक तिहाड़ा ऐसा औणा सुन्ना पैणा मारूएं दा देस।

एसर पोता जेवर बेटा माई सतवंती दा जाया
छत्री चुहाण म्हारा गोत वरिया मंगा मैं ना छड्डां
नहीं तां मरां विस खाई।

राजेयां दे पुत्त ब्याहणां चलदे बंधुआं जांदे छुडाई।
इक मेरी अरज सुणेयां, सूंपुए देयां छुडाई।
सूंपुए नागा भैणा कदी नी छड्डां सैह मेरा जरमा दा वरदाई।
राजे दे पुत्त ब्याहणा जांदे कैदियां दिंदे सारेयां छुडाई।

स्थिति को भांप कर राणा बहन गुगड़ी को कहता है कि गुरु गोरखनाथ, काहनी चेला तथा कलिहर नाग मेरे साथ बारात में जा रहे हैं। इनके होते हुए जादू का प्रभाव नहीं हो सकता और यदि हो भी जाए तो ये फिर से मनुष्य रूप धारण करवा देते हैं।

बारात प्रस्थान पर गुगड़ी अपने भाई गुग्गामल को कहती है कि हमारा न कोई चाचा--ताया है, न कोई सगा भाई है। इस तरह एक दिन ऐसा आयेगा कि मारू देश का कोई वारिस नहीं होगा इसलिए तुम बंगाल देश में बारात लेकर मत जाओ।

परन्तु गुग्गा राणा वचन का पक्का होता हुआ कहता है कि– मारू देश के महाराज एसर का पोता, राजा जेवर का पुत्र हूं और माता सतवंती के पेट से जन्म लिया है। क्षत्रिय–चौहान हमारा गोत्र है, मैं अपनी मंगेतर को शादी के बिना नहीं छोड़ सकता, वरना मैं विष खाकर प्राण त्याग दूंगा।

फिर गुगड़ी का जवाब था कि– राजाओं के पुत्र जब बारात लेकर शादी करने जाते हैं तो बंधकों को मुक्त कर देते हैं। इसलिए गुग्गामल! तुम भी बंधक बनाये सूंपु नाग को मुक्त कर दो, यह मेरी विनती है।

परन्तु गुग्गामल अपनी बहन गुगड़ी को पलट कर कहता है कि हे बहन! मैं सूंपु नाग को कभी भी बंधन से मुक्त नहीं कर सकता क्योंकि वह

मेरा जन्म से ही दुश्मन है। गुगड़ी ने राणा से फिर एक बार विनती की कि राजाओं के पुत्र जब ब्याहने जाते हैं तो सभी कैदियों को छुड़ा देते हैं। इसलिए तुम भी कैद किए सूंपु नाग को मुक्त कर दो।

गुगा हुकम ता सजीये लुहारा जंजीरां देयो कटाई
छुटदे नागैं तड़ाका कित्ता सूरज डंगेया जाई।

सूंपु नाग गुग्गा राणा को कहता है

पहला तां बदला राणेया दर विच लैंह्गा
दूजा लगनां गैं जाई इन्हां ते राणेया तू बचगा
तां तरीजा बदला लैंह्गा बेदी गैं जाई।

सूंपु नाग गया प्याल़ सभ नाग दित्ते जगाई
उठो भाईयो नागो, गुग्गामल चलेया
राजे साची दैं ब्याहणा हरिवण मल्यो जाई।

प्याल़पुरी ते चलदे नाग कन्नै वासकी नाग
हरिवण मल्या जाई।

खबर तां होई गुग्गे राणै हरिवण नागें मल्या आई
अग्न बच्छेरा राणा छड़दा, जंगल जो अग्ग लगाई
अग्न बच्छेरैं अग्ग जे लगाई फूके नाग सारे।

अग्गैं–अग्गैं गुरु गोरखनाथ चलेया
पिछैं जे नीले दा स्वार पूरे जोगी बाबा।

पैहलैं डेरैं चढ़ी खड़ोता, डेरा संगुल घाटिया लाया
गुरु गोरखनाथ पुछदा काहनी चेले जो
एह रैन कुती पई।

गुग्गामल ने गुगड़ी बहन की विनती स्वीकार करते हुए सजीए नामक लोहार को हुक्म दिया कि जिन ज़ंजीरों में सूंपु नाग को बंधक बनाया है, उन्हें काट डालो। परन्तु लोहार द्वारा ज़ंजीरें काटे जाने पर ज्यों ही सूंपु नाग मुक्त हुआ तो उसने गुस्से में आकर कूद कर आसमान में सूरज को डंक मार दिया।

सूंपु नाग बदले की भावना से गुग्गामल को कहने लगा कि पहला बदला मैं तुम्हारे ही दरबार में लूंगा तथा दूसरा लग्न के समय। अगर इन झटकों से भी गुग्गामल राणा बच निकला तो वेदी के समय मंडप में तीसरी बार आक्रमण कर बदला लिया जाएगा।

यह कहकर सूंपु नाग पाताल लोक में चला गया और अपनी बिरादरी

के सभी नागों को जगाते हुए कहने लगा कि हे भाइयो ! गुग्गामल राणा बंगाल देश के राजा साची के घर बारात लेकर ब्याहने जा रहा है। चलो हरिवन नामक पड़ाव पर जाकर उससे बदला लेते हैं।

इस प्रकार सूंपु नाग के आग्रह पर पाताल पुरी के सभी नागों (वासुकी नाग सहित) ने हरिवन नामक पड़ाव पर डेरा डाल दिया और गुग्गामल से बदला लेने के लिए तैयार हो गये।

परन्तु इस कपट की खबर गुग्गा मल राणा को हो गई कि हरिवन में सब नाग इकट्ठे हो गए हैं तो राणा ने हरिवन में अग्नि वाण से आग लगा दी, पूरा जंगल दहकने लगा और सभी नाग आग से जला दिए। तभी तो नागों का रंग ऊपर से काला–भूरा हुआ है।

इस प्रकार बारात आगे बढ़ती गई। बारात में आगे–आगे गुरु गोरखनाथ चल रहे थे, उनके पीछे घोड़े पर सवार गुग्गा मल राणा थे तथा उनके पीछे अन्य बाराती।

पहली रात को बारात ने संगुल घाटी में पड़ाव डाला। गुरु गोरखनाथ वहां पहुंचने पर काहनी चेले को पूछते हैं कि रात का पड़ाव कहां पर पड़ा।

काहनी जे चेला बोलदा
संगुल घाटिया सैलां कित्तीयां, एत वल कटी सगली रैहन।

सुरियल की सहेलियों का कटाक्ष

सठ सहेलियां बोलियां लांदियां
कित वल आई तिजो जणेत।
सुरियल राणी चढ़ चबारैं बेटी राजे दी
नजर फेरै चारों कुंठ कित वल नी नजरी आई जणेत।

जवाब

सुरियल–ओ सुण भैनड़े मेरियो, पंज फकीर नीला जेहा टैरो
संगुल घाटिया डेरे लाये, सैह सुह्जे सुरियला जो।

सखियां– **भैणां तेरियां बोलियां लांदियां ओ सुण भैनड़ मेरिये**
जोगीयां दे लड़ लाई।
ओ राणी सुरियल रोणा जे लगदी
सुण माता मेरिये जोगियां दे लड़ लाई।
सुण देऊआ मेरिये लेखां दे नाल, कर्मा दे नाल
नी चलदा नी दावा, धीए मेरिये। सुण धीए मेरिये
कर्मा तेरेयां लिखियां फकीरियां, धीए मेरिये।

काहनी चेले का गुरु गोरखनाथ को उत्तर था कि बारात चल कर संगुल घाटी में पहुंच गई है। यहीं पर सारी रात का पड़ाव होगा।

उधर वधु पक्ष बारात न पहुंचने पर चिंतित था और सुरियल (दुल्हन) की सखियां कटाक्ष करते हुए कहने लगीं कि तुम्हारी बारात कहां आई है अर्थात् अभी तक क्यों नहीं पहुंची।

इस पर साची राजा की बेटी सुरियल अपने महल के चौबारे पर चढ़ कर चारों तरफ बारात को देखने लगी परन्तु उसे कहीं भी बारात नज़र नहीं आई क्योंकि बारात में तो बहुत से बाराती और बाजे–गाजे होते हैं।

परन्तु सुरियल अपनी सखियों को यह कहती है कि मेरी बहनो सुनो, मैंने संगुल घाटी में पांच फकीर और एक नीला घोड़ा देखा। उन्होंने वहां पर डेरा जमाया हुआ है।

सब सखियां समझ गईं और कहने लगीं कि हे बहन सुरियल! तेरी शादी जोगी (योगी) से होने जा रही है जिसका कि गृहस्थ जीवन से कोई सम्बन्ध नहीं होता।

यह जानकर सुरियल ने रोना–धोना शुरू कर दिया है और अपनी मां से कहने लगी कि मेरी शादी जोगी से की जा रही है।

सुरियल को उसकी माता ने समझाया कि हे बेटी! जो विधि ने किस्मत में लिखा है, उसके ऊपर किसी का वश नहीं चलता। लिखा हुआ तो होकर ही रहता है।

माता ने सुरियल को कहा कि बेटी तेरी किस्मत में फकीरी ही लिखी हुई है तो कोई क्या कर सकता है।

गुग्गे की बारात राजा के बागों में

दूजैं डेरैं चढ़ी खड़ोता बागां मंझ डेरे लाये।

गुरु गोरखनाथ और बाग की मालिन का आपसी संवाद

ओ हुकम जे करदा रूपां, बागां दी मालणी।

बेटी मालिए दी, शाहजादीए बागां दे फहलिए खोहल।

किसदे हुंदे बाग बगीचे, रूपां मालणी

किसदे रंगुले महल।

राजेयां दे बाग, राजेयां दे बगीचे ए संन्यासियो,

बरागीयों सुरियल दे हुंदे रंगुले महल।

किस दे कारण बैठकां बणियां,

रूपा मालणी किस नू बछाये सतरंगे।
राजेयां कारण बैठकां बणियां ओ भाई संन्यासियो,
बरागियों फौजां जो बछाये सतरंगे।
किस दे कारण खूह दुआए,
रूपां मालणी किस जो साजी हरी ताल।
फौजां खातर खूह दुआए।
घोड़ेयां खातर हरी ताल।

इसके बाद गुग्गा मल की बारात बंगाल देश के राजा मालप के बागों में पहुंच गई और डेरा लगा दिया।

गुरु गोरखनाथ बागों की मालिन से कहते हैं कि अरे बागों की मालिन! बागों का द्वार खोल दो। यहां पर बारात डेरा लगायेगी। फिर पूछा कि ये बाग बागीचे किसके हैं और ये रंग बिरंगे सुसज्जित महल किस के हैं ?

रूपां मालिन ने गुरु गोरखनाथ को उत्तर दिया कि ये बाग बागीचे राजाओं के हैं। हे संन्यासियो–वैरागियो! ये रंग–बिरंगे महल सुरियल के हैं।

गुरु गोरखनाथ ने रूपां मालिन से पूछा कि किस के लिए इतनी सुन्दर बैठकें (बैठने का स्थल) तैयार की गई हैं तथा इतने सुन्दर सतरंगे बिछावन किस के लिए बिछाये हैं। क्या यहां कोई आने वाला है ?

रूपां मालिन ने गुरु गोरखनाथ से कहा कि– हे संन्यासियो–वैरागियो! ये बैठने के स्थल (बैठकें) राजाओं के लिए तैयार किए गए हैं तथा फौजों के लिए सतरंगे बिछावन बिछाये गये हैं।

गुरु गोरखनाथ ने रूपां मालिन को फिर पूछा कि– ये कुएं किस के लिए खुदवाये हैं और ये हरे–हरे रंग के तालाब किस के लिए तैयार करवाये हैं।

रूपां का जवाब था कि– फौजों के लिए कुएं खुदवाये तथा घोड़ों के लिए तालाबों का निर्माण करवाया गया है।

मालिन– **केहड़ेया मुलखां ते आये भाई संन्यासियो**
केहड़ेयां मुलखां जो जाणा।
गोरखनाथ– **गढ़ दलेरे मुलखां ते असीं चल के आए रूपां मालणी**
आई चुहाणा दी जणेत।
इक तम्बू बागां अन्दर लगा दे रूपां ओ मालणी
राजे साचिए दे आई जणेत।

मालिन वैरागियों (गुरु) को–
लौह्केया मूहां बड्डे बोल मता बोलदे,
ओ बरागियो राजा सुणै देओऐ मार बोल मनी बोलेयो।
मंगणैं कारण तुसे उठी आए ऐ बरागियो
मंगेयो बजारां मंझ जाई।

गुरु गोरखनाथ काहनी चेले को आदेश देते हैं

हुकम करदा काहनी पत चेले जैहरी चेला
मालणी दी खबर लैह् जरा क।
सवा मणा दे नेत्र बदले अपणैं
मालण दित्ती डराई, काहनी ओ चेलैं।
मार चपेड़ दंद तोड़े मालणी दे
कित्ते मंदड़े कवाव काहनी चेलैं।

रूपां मालिन ने गुरु गोरखनाथ से पूछा कि हे संन्यासियो! तुम कौन से देश से यहां पर आए हो और किस देश को जाओगे।

गुरु गोरखनाथ बोले, हे मालिन! हम चल कर गढ़ दलेर (मारू देश) से गुग्गामल चौहान की बारात लेकर आए हैं।

गुरु गोरखनाथ ने रूपां मालिन से फिर कहा कि बागों के अन्दर बारात ठहराने के लिए तम्बू लगाए जा रहे हैं क्योंकि राजा साची के घर बारात आई है।

मालिन बोली, हे वैरागियो ! छोटे मुंह से बड़ी बातें मत करो, अगर राजा साची ने ऐसा सुन लिया तो वह मार देगा, इसलिए ऐसा कुछ भी मत कहो तुम।

हे वैरागियो ! तुम मांगने (भिक्षा याचना) के लिए यहां आए हो, बाजार में जाकर भिक्षा मांगो।

रूपां मालिन के मुख से ये शब्द सुनकर गुरु गोरखनाथ काहनी चेले को आदेश देते हैं कि मालिन की खबर ली जाए अर्थात् उसे ज़रा डांट–डपट की जाए व पीटा जाए।

काहनी चेले ने अपने बड़े–बड़े नेत्रों की भृकुटियां ऊपर चढ़ा कर डरावना रूप बनाया जिससे मालिन डर गई।

काहनी चेले ने फिर मालिन को थप्पड़ मार कर उसके दांत तोड़ दिये और उसके बुरे हाल कर दिये।

अग्गैं दौड़ पिच्छैं मुड़ी देखै नठदी नू रस्ता नी औऐ।

रूपा मालिन का पहरेदार से अनुनय

दर विच खड़ेया भाई दवाना राजे गैं लाई दे मेरी फराद।

दरबान राजा मालप से फरियाद करता है–

ओ हत्था जोड़ी नै अरजां करदा राजा ओ मालपा जी
महाराजा मेरेया, बाहर मालण बुलाओए।
हत्थां दीयां नरदां डिग–डिग पईयां
छड्ड गलीचेयां बाहर औऐ।
हत्थां जोड़ी नै अरजां जे करदी रूपां मालण
अरजां सुणेयां मन लाई महाराज मरेया।
पंज फकीर नीला जेहा टैरू एह आई तेरैं जणेत।
पहला फौह्ड़ा मारेया मेरे मुंहां च,काहनी चेले नैं
दंद तोड़े मेरे चार

राजा मालप का पुरोहित को बुलाना

हुकम कित्ता भाई मुंडेयो परोहत सदणा मेरे पास।

इस प्रकार काहनी चेले से डर कर मालिन वहां से भाग कर राजा साची के दरबार में फरियाद करने गई।

राज दरबार के द्वार पर दरबान–पहरेदार खड़ा था। मालिन ने उसे कहा कि वह उसकी बात राजा तक पहुंचा दे।

द्वारपाल हाथ जोड़कर दरबार में राजा के पास पहुंच गया और विनती करने लगा कि आपको महल के बाहर रूपां मालिन बुला रही है।

उस समय राजा शतरंज खेल रहा था। उस ने हाथ से शतरंज के मोहरे छोड़ दिये और राज दरबार से बाहर रूपां मालिन को मिलने आ गया।

रूपां मालिन ने हाथ जोड़ कर राजा के आगे विनती की हे राजा! मेरी फरियाद सुनो। पांच फकीर और एक नीला घोड़ा बस ! सिर्फ यह बारात आई है आपके द्वार। काहनी चेले ने मेरे मुंह पर फावड़ा (डंडा) मार कर मेरे चार दांत तोड़ डाले।

राजा ने गुस्से में आकर नौकरों को आदेश दिया कि उस पुरोहित को बुला कर लाओ जिसने विवाह निश्चित किया था।

हत्थां सोठी मूंहडैं पोथी, पहुंचेया राजेयां दे पास
हत्थां जोड़ी पंडत बोलै
राजा मालप काहदे कारण हऊं बुलाया

ओ महाराजा मेरेया, हुकम देणा फरमाई।

राजा मालप का जल्लाद को आदेश

ओ वे हुकम ता करदा जिन्हां जलादां
उन्हां हाडियों नो, धनीपत लाणा फाहैं।

हुकम जे राजैं दित्ता, तां परदे दे अंदर राणी आई
सुण महाराज मेरेया।
हत्थां जोड़ी अरजां करदी होर हत्यां नहाई धोई जांदीयां
ब्राह्मण हत्या नी जांदी, राजा ओ मालपा जी।

हथ पैर नीले करी दीते, मुंह काला करी ता,
करी ता राजैं मुलखा ते बाहर स्याणा पंडत जी।

पंडित गुरु गोरखनाथ के डेरे में

विस घालेया नंगेया पैरे, पंडत जोगीयां दे डेरे जो आया
गुरु गोरखनाथ दे कोल बागां पूजेया
स्याणा ओ पंडत, कीती निमो नरायण, पूरे जोगीया नू।

ओ सुण गुरुआ म्हारेया, कुण तेरे मारूये अंदर मरेया
तू मूंहदेयां नगारेयां लेई ने,
एत्थी जो आया पूरे जोगीया बाबा।

ओ सुण गुरुआ म्हारेया हत्थ वी नीले पैर वी नीले
करी दित्ता मुलखा ते बाहर, पूरे जोगी बाबा।

पुरोहित हाथ में सोठी लेकर कंधे पर अपनी पोथी लटकाए हुए राजा मालप के पास पहुंच गया। पुरोहित ने हाथ जोड़कर राजा से विनती की कि हे राजा ! मुझे किस कारण बुलाया गया।

राजा ने जल्लादों को आदेश दिया कि (धनीपत) ब्राह्मण जिसने विवाह निश्चित किया था, उसे फांसी पर लटका दो।

राजा का यह हुक्म सुनकर रानी परदे के अन्दर से राजा से कहने लगी कि हे राजा! सुनो।

रानी हाथ जोड़कर प्रार्थना करने लगी कि किसी और की हत्या करने (अर्थात् अन्य पापों) से मुक्ति मिल सकती है परन्तु ब्राह्मण की हत्या से मुक्ति नहीं मिलती।

राजा मालप ने रानी के कहने पर पंडित को फांसी देने के बजाय उसके हाथ–पैर नीले और मुंह काला करके देश निकाला दे दिया।

भारी मन से, नंगे पैर वह पंडित गुरु गोरखनाथ के डेरे पहुंचा और को नमस्कार की।

पंडित गुरु गोरखनाथ से कहने लगा कि तुम्हारे मारू देश में कौन मर गया है जो तुम नगारे उल्टे कर के यहां पर आए हो।

पंडित गुरु गोरखनाथ से कहने लगा कि मेरे हाथ–पैर नीले कर मुझे देश निकाला दे दिया गया है राजा मालप द्वारा।

हुकम करदा गुरु गोरखनाथा, काहनी चेले जो
ओ बाह्मण लैणा छपाई
भाक्ति भभूत मारी काहनी चेले नै बाह्मण लेया छपाई।
सारे सैहरा दे छोहरू जे कठेरे, राजा मालप नै
जोगी दे डेरे जो लेई के आया।
ईटां, पत्थर गारा बरसाणे जे लग्गे छोहरू
राणा बोलै एह क्या चलित्र लगेया होणा
न कोई बिजली न कोई बरखा
पत्थरां दी बरखा कूह्ते लगी एह।
गुग्गामल राणा रोणे जे लगेया
भैणा दीयां गलाईयां सच होईयां
मुड़ के नी जाणा मारू देस।
गुग्गामल गुरुएं पकड़ेया, पेटा दे हेठ लुकाया
गुरु गोरखनाथ ने हुकम जे कित्ता काहनी चेले
छोहरुआं दी खबर लैह इन्हांदी।

गुरु गोरखनाथ के आदेश पर काहनी चेले का लड़कों को गुम करना

भाक्ति भभूत मारी काहनी चेले नै
छोहरू उतारे प्याल़, कुछ चढ़ाये समाण
कोई उत्तर सट्टे, कोई पच्छम सट्टे
छोहरू नी रेहा कोई मदान।
राजैं इक दिन निहाल़े–दो दिन निहाल़े
छोहरू नी बेहड़ेयां आये
सारे सैहर दीयां माईयां आईयां
छोहरूआं दीयां मौआं, पहुंचीयां राजे दे पास।
असां जो राजा पुत्र मिलाई दे
पुत्र नी मिले मौआं जो आई ने दो दिनां ते।

यह सब भांप कर गुरु गोरखनाथ ने काहनी चेले को आदेश दिया कि पंडित को छुपा लिया जाए। काहनी चेले ने गुरु की आज्ञा का पालन करते हुए शक्ति विभूति मारी और ब्राह्मण को छुपा लिया।

राजा मालप ने शहर के सारे लड़के इकट्ठे किए और उनको लेकर वह गुरु के डेरे में पहुंच गया। वहां पहुंच कर लड़के उन सब पर ईंटें, पत्थर और गारा फेंकने लगे जिसे देखकर राणा हैरान रह गया और कहने लगा कि आसमान में न कोई बिजली चमक रही है, न ही वर्षा हो रही है। फिर ये पत्थर की वर्षा कहां से हो रही है।

यह सब देख गुग्गामल रोने लगा और उसे अपनी बहन गुगड़ी की बातें याद आई जो सच होने लगीं। फिर गुग्गामल सोचने लगा कि वह वापस मारू देश नहीं पहुंचेगा।

ईंट, पत्थर तथा गारे की वर्षा होते देख गुरु गोरखनाथ ने गुग्गामल को अपने पेट के नीचे छिपा लिया और काहनी चेले को हुक्म दिया कि वह उन लड़कों की खबर ले जो पत्थर इत्यादि फेंक रहे थे।

काहनी चेले ने शक्ति विभूति का प्रयोग किया जिस से कुछ लड़के पाताल लोक में उतार दिए, कुछ को आसमान में टांग दिया। किसी को उत्तर दिशा में फैंका, तो किसी को पश्चिम दिशा में। इस प्रकार वहां मैदान में धरती पर कोई भी लड़का विद्यमान नहीं रहा।

राजा ने एक दिन, दो दिनों तक लड़कों का इंतज़ार किया परन्तु उसके महल में कोई भी लड़का वापस नहीं आया। सारे शहर की औरतें तथा लड़कों की माताएं राजा के पास अपने लड़कों को ढूंढती हुई पहुंचीं।

वे राजा से विनती करने लगीं कि हे राजा ! हमें अपने पुत्रों से मिला दे, दो दिनों से हम अपने पुत्रों से नहीं मिल पाईं।

इक तेरैं लड़की सुरियल जरमी घर–घर पाया सोग।
खुह्लिये तणिएँ पैर पताह्णेयां
गुरुआं दे पास पहुंचेया बांगां च राजा।
हत्थ जोड़ी अरज जे करदा
अरज सुणेयां मेरी मन लाई, पूरे ओ बाबा जोगीया।
सुण गुरुया म्हारेया मौआं जो पुत्र प्यारे, मौआं जो पुत्र मला।
भाक्ति भभूत मारी काहनी चेलैं सब मुंडू आये विच मदान
इक्को सकल ते इक्को कपड़े
लऔआ अपणेयां लेया पच्छयाण।

हत्थ जोड़ी राजा अरज जे करदा
जेहड़े पैहलैं थे तेहड़ी सकल बणा
माओआं लेई ने चली गईयां पुत्र बेहड़ेयां जो।

राजा मालप का गुरु गोरखनाथ से वार्तालाप

जे तां जाणदा गुरुआ अजमत मैं तेरी
डोला पुजांदा मारू देस।
जिस जे तिहाड़े मेरे सुरियल जरमी
उस तिहाडे ते पकदे आए पुकान
जिस तिहाड़ें मेरे सुरियल जरमी।
उस तिहाड़े ते सिंजे सारे दाज।
किस नू खुआणे एह पुकान होर किस नू दैणा एह दाज।
गरब न कर राजा जिस ने गुमान कित्ता ओह ई हारेया।

हे राजा ! तेरे घर में एक लड़की सुरियल जन्मी है। तूने उसकी खातिर हर घर में शोक फैला दिया है।

यह देखकर राजा नंगे पांव उसी अवस्था में गुरु के डेरे (बागों) में पहुंच गया।

वहां पहुंच कर राजा गुरु गोरखनाथ के सामने हाथ जोड़कर विनती करने लगा-- हे गुरु जी ! मेरी विनती ध्यान से सुनो।

हे गुरु गोरखनाथ जी ! सुनो, माताओं को अपने पुत्र प्यारे हैं, उनको अपने--अपने पुत्रों से मिला दो।

राजा की विनती सुनकर काहनी चेले ने फिर शक्ति विभूति का प्रयोग किया और सभी लड़कों को धरती पर उतार कर इकट्ठा कर दिया। उन सब की एक ही शक्ल थी तथा उन्होंने एक जैसे ही कपड़े पहने हुए थे।

यह देख राजा फिर हाथ जोड़ कर गुरु से विनती करने लगा कि जिस शक्ल सूरत के लड़के पहले थे, वैसी ही शक्ल बनाओ।

काहनी चेले ने वैसी ही शक्ल सूरत बना दी तथा सभी माताएं अपने--अपने लड़कों को लेकर घर चली गईं।

राजा मालप ने गुरु गोरखनाथ से कहा, हे गुरु जी ! अगर मैं आपकी करामात पहले ही जानता तो सुरियल की डोली मैं स्वयं मारू देश पहुंचा देता।

जिस दिन मेरे घर में सुरियल बेटी का जन्म हुआ था उसी दिन से

यहां पकवान पक रहे हैं और उस दिन से लेकर आज तक दहेज–दक्षिणा इत्यादि का सामान इकट्ठा किया जा रहा है।

ये इतने सारे पकवान किसे खिलाऊं और यह एकत्रित दहेज किस को दिया जाए।

गुरु गोरखनाथ ने राजा मालप से कहा– हे राजा! ज़्यादा गर्व नहीं करना चाहिए। जिसने गर्व किया उसी की हार होती है।

गुरु गोरखनाथ ने राजा द्वारा पकाये पकवानों को खाने के लिए शुक्र और शनि आमंत्रित किए।

दक्खण देस ते सुकर सदाया
गुरु गोरखनाथ पूरे जोगीएं
ढाई दल आए उस दे साथ।
पच्छम देस ते छनिछर सदाया बाबे जोगीएं
ढाई दल आए उस दे साथ।
हुकम करदा राजा गुरु गोरखनाथ नू
के रसोई दी करो तिआरी।
गुरु गोरखनाथ कैहंदे
इन्हां दोहीं मुंडेयां जो लेई जा रोटी खुआणे
एह भुक्खा दे काहले सुण वो राजेया।
राजा दोहीं मुंडेयां जो लेई ने रसोई विच आया
रोटी खाणा बठाले।
तिन्हें मठयाई वी खाह्दी अन्न वी खाह्दा,
खूहां दा मुकाया ठंडा नीर
फेरे कैहंदे असे भुक्खे रहीगे।
छेयां महीनेयां दे पक्के पुकान,
खाई गे दोओ छोहरू
इन्हां मुंडेयां जो लेई नै राजा
गुरु गोरखनाथ दे पास आया
आपणेयां मुंडेयां लैह सम्हाल।
इक्क मेरैं लड़की सुरियल जरमी
इसने तोड़ेया मेरा मान।

शुक्र शनि द्वारा सारे पकवान खा लेने पर राजा गुरु गोरखनाथ से विनती करता है–

अन्न वी खाह्दा मठयाईयां वी खाह्दीयां
खाह्दे सारे भंडार, खूहां दा सुकाएया ठंडा नीर
इन्हां दोहां मुंडेयां नै
इन्हां नू लैह् सम्हाल, इन्हां ने तोड़ेया मेरा मान।

राजा द्वारा पकाये गए पकवानों को खाने के लिए गुरु गोरख नाथ ने शुक्र को बुलाया। शुक्र के साथ–साथ ढाई दल (सैनिक) भी भोजन करने आये।

इसी तरह पश्चिम दिशा से शनि को भोजन करने के लिए आमन्त्रित किया। शनि के साथ भी ढाई दल आए।

राजा ने गुरु गोरखनाथ को कहा कि अब भोजन करने के लिए तैयार हो जाओ।

गुरु गोरखनाथ ने राजा मालप से कहा कि हे राजा ! पहले इन दो लड़कों शुक्र और शनि को भोजन करवा दो। इनको बहुत भूख लगी है।

राजा दोनों लड़कों शुक्र और शनि को लेकर रसोई में आ गया और उनको भोजन करने के लिए बिठा दिया।

उन दोनों ने मिठाई और सारा भोजन खा लिया। सभी कुओं का पानी पी लिया और फिर कहा कि वे अभी भी भूखे हैं।

छह मास से पकवान पक रहे थे। उन पकवानों को दोनों लड़के समाप्त कर गये। राजा इन दो लड़कों को लेकर गुरु गोरखनाथ के पास आया और कहने लगा, हे गुरु जी ! अपने इन लड़कों को सम्भालें।

मेरे घर एक लड़की सुरियल का जन्म हुआ है। इसने मेरा सारा घमण्ड तोड़ दिया है।

राजा मालप ने गुरु गोरखनाथ से विनती की कि इन दो लड़कों शुक्र और शनि ने सारा राशन और मिठाइयां खाकर खत्म कर दीं, खाद्यान्न का सारा भण्डार खत्म कर दिया। सभी कुओं का ठंडा पानी समाप्त कर दिया। इन दोनों को आप संभाल लो, इन्होंने मेरा गर्व चूर–चूर कर दिया।

गुरु द्वारा राजा को समझाना

तिजो दसेया था राजा के मान नी करना
जिनी मान कित्ता ओह ई हारेया।
ढाई पौ चौल झोलि़या ते दित्ते गुरु गोरखनाथ नैं
इन्हां रसोई च देह् पाई।

ढाई पौ चौल राजैं रसोई पाये भर गै सभ भंडार
हत्थ जोड़ी राजा अरज करदा सुण गुरुआ मेरेया,
पूरे जोगीया, लगना दी करो तिआरी।

गुरु जी व पंडित का वार्तालाप

गुरु गोरखनाथ जी पंडत नों पुछदे
कैहदा बीड़ा कैहदी आरती, कैहदा सजाया थाल।
ओ सुण गुरुआ मेरेया आटे दा बीड़ा
मिट्टीया दी आरती स्यूने दा सजाया थाल।
वेदी दे अंदर राजा–राणी जे बैहंदे करदे कन्या दा दान
ढलिया ढलेला सिकर दपैहरेयां, सुरियल लगन लाये।
राजा गुरु गोरखनाथ अग्गैं अरज जे करदा
कि वेदीं दी करो तिआरी।

गुरु गोरखनाथ ने राजा मालप से कहा– हे राजा ! तुम्हें बताया था कि कभी किसी बात पर घमण्ड नहीं करना चाहिए। जिसने घमण्ड किया उसी की हार हुई।

गुरु गोरखनाथ ने ढाई पाव चावल अपनी झोली में से निकाल कर राजा मालप को दिए और कहा कि हे राजा ! रसोई में जाकर इन चावलों को पकाओ।

गुरु गोरखनाथ द्वारा दिए गए ढाई पाव चावल राजा ने रसोई में पकाये। उस के सारे भंडार भर गए, यह देख राजा ने गुरु गोरखनाथ के सामने हाथ जोड़कर विनती की, हे गुरु जी ! अब विवाह की तैयारी करो।

वेदी लग्न की तैयारी में लगे पंडित को गुरु गोरखनाथ ने पूछा कि पंडित जी ! किस चीज़ का दीप बनाया है और आरती करने के लिए थाल में क्या–क्या डाला है अर्थात् कैसे सजाया है।

हे गुरु जी ! आटे का दीप बनाया, मिट्टी की आरती और सोने का थाल सजाया है जो लग्न–वेदी में प्रयोग किया जायेगा।

इस तरह वेदी के अन्दर राजा और रानी दोनों बैठकर कन्या सुरियल का दान करते हैं। भर दोपहर तपती गर्मी में सुरियल के लग्न गुग्गामल के साथ हुए। लग्न के पश्चात् वेदी की प्रक्रिया पूरी करने हेतु राजा गुरु गोरखनाथ से आग्रह करता है।

गुरु गोरखनाथ जी पंडत नों पुछदे
कैहदी वेद कैहदी थमियां कैहदी बणाणी धरत।
स्यूने दी वेद रूपे दीयां थमियां तांबे दी बणी धरत
वेदी दे अन्दर राजा–बाणी बैठे, कित्ता लड़की दा दान।
वेदीं दे अंदर राजा–राणी जे बैठे, दूलो जाहे राजी
करदे गरड़ा दा दान
वेदी अंदर राजा–राणी जे बैठे, करदे गैहणेयां दा दान।
वेदीं दे अंदर राजा–राणी जे बैठे, करदे पैसेयां दा दान।
ओ सुण जाहर पीरा हो
वेदीं दे अन्दर जेहड़ा दान कीता सौहरे तेरे नै
ईहजो लेयां तू सम्हाल।
लिखी परवाने गुगड़ियें भेजे सकियैं भैणे जी
सुण भाई मेरेया, गढ़ पर पाया भाईये घोल।

बारात की विदाई

डोला मेरा विदा करा दे सौहरेया मेरेया
गढ़ पर पाया भाईये घोल
डोला मेरा बापू विदा कराई दे जेठे गढ़ पर पाया घोल।

गुरु गोरखनाथ पंडित को पूछते हैं कि पंडित जी ! वेदी स्थापित करने के लिए थमियां (स्तम्भ) किस चीज़ की बनाई जाएं। वेदी किस की बनाई जाए और धरती किस चीज़ की बनाई जाए।

सोने की वेदी, चांदी के स्तंभ तथा तांबे की धरती बनाई। उस वेदी के अंदर राजा–रानी दोनों ने बैठकर अपनी बेटी सुरियल का कन्यादान किया।

वेदी के अंदर राजा मालप और उसकी रानी बैठे और दूल्हे को आशीर्वाद देकर कहा कि दूल्हा राजी रहे। उन्होंने गरड़ा नामक घोड़े तथा आभूषणों का दान किया।

इसी तरह राजा तथा रानी ने वेदी के अंदर बैठकर अपनी लड़की और धन–धान्य का दान किया।

दान की प्रक्रिया समाप्त होने पर सुरियल जाहरपीर गुग्गामल को कहती है कि वेदी के अन्दर जो मेरे माता–पिता ने आपको दान दिया है उस को संभाल लो।

इस प्रक्रिया के पूरा होते–होते जब गुग्गामल वेदी में ही था तो उसकी सगी बहन गुगड़ी का लिखित संदेश प्राप्त हो गया जिसमें लिखा था कि गढ़ मारू देश में जुड़वां भाइयों अर्जुन–सुर्जन ने लड़ाई–झगड़ा शुरू कर दिया है।

यह सुनकर गुग्गामल अपने ससुर राजा मालप को कहने लगा कि मेरा डोला (बारात) विदा कर दो क्योंकि मारू देश में मौसेरे भाइयों ने लड़ाई–झगड़ा शुरू कर दिया है। सुरियल भी अपने पिता को अपनी डोली विदा करने का आग्रह कर कहने लगी कि गढ़ मारू देश में ज्येष्ठों अर्जुन–सुर्जन ने झगड़ा शुरू कर दिया है।

हुकम करदा जिन्हां छड़ी वरदारां,
चहूं घारां जो डोला बीड़ो मदान।
डोले दे अंदर राणी सुरियल जे रोए,
बेटी राजे दी रोई–रोई नैण गुआए।
माओआं धीयां मिलण जे लगीयां,
सुण माता नी मेरिये हट के नीं औणा तेरे पास।
डोले लेई कै राजा बागां दे डेरे जो आये
बागां दे अंदर सुरियल राणी रोणै जे लगी
ओ बेटी राजे दी
ओ सुण बाबल मेरेया हरा रहे तेरा बाग।
राजा मालप रोणे जे लगेया धीये मेरिये जी
सुण देऊआ मेरिया, जिंदगिया दा लगेया दरेग।
सौ सठ सहेलियां मिलणे जे लगीयां सुणो भैनड़ो मेरियो हट के नी औणा तुहाडे पास।
सौ सठ सहेलियां रोणे जे लगीयां कुंजां जैसे कित्ते वरलाप।
चारै घार बरोबर हुंदे पईगे लमड़ेया राहे।
पहले डेरैं संगुल घाटिया आए संगुल घाटी जौड़ुआं ने मल्ली
संगुल घाटिया जौड़ू बैठे भाई राणेयां डोले दा अध देई नै जाह।

राजा ने अपने नौकर चाकरों तथा चारों कहारों को हुक्म दिया कि सुरियल की पालकी तैयार की जाए।

विदाई के समय सुरियल रानी डोली के अंदर रो रही थी और रोते–रोते उसकी आंखों से अश्रुधारा बह रही थी।

विदाई के समय सुरियल अपनी माता से मिलते हुए कहने लगी कि

अब मैं तुम्हारे पास कभी भी मुड़ कर वापस नहीं आऊंगी।

इस प्रकार विदाई के समय राजा डोली लेकर बाग–बागीचों में आया। बागों में पहुंच कर सुरियल रानी रोने लगी और कहने लगी कि पिता जी ! आपके ये बाग–बागीचे सदा हरे–भरे रहें।

फिर राजा मालप भी रोने लगा और अपनी पुत्री से कहने लगा कि अब ज़िंदगी भर का बिछोड़ा पड़ गया। क्योंकि उस समय राजा लोग लड़कियों की शादी कर उन्हें फिर कभी मायके नहीं बुलाते थे।

इसी प्रकार विदाई के समय सुरियल की सभी एक सौ साठ सहेलियां भी उससे मिलने लगीं। सुरियल ने उनको भी कहा, अब तुम्हारे पास कभी भी वापस नहीं आऊंगी। विदाई के समय सुरियल की सभी एक सौ साठ सहेलियां रोने लगीं और कूंजों पक्षी की तरह विलाप करने लगीं।

चारों कहारों ने अपने कंधों पर पालकी उठाई और लम्बे रास्ते पर अपनी मंज़िल की ओर निकल गए।

चलते–चलते बारात का पहला पड़ाव संगुल घाटी में पड़ा। जहां पर पहले ही गुग्गामल के जुड़वां भाई अर्जुन–सुर्जन ने डेरा डाला था। वे दोनों गुग्गामल से डोले का आधा हिस्सा अर्थात् दहेज का आधा हिस्सा मांगने लगे।

देखो वीरो मेरेयो पैहलैं अंदरेरा मिंजो करने दो
और भैणा जो सहाब देणा देयो
फेरी हटी कै दिंदा तुसां जो सहाब।
सुरग पुरी ते परीयां सदाईयां राणी सुरियल ने
सुणो भैनड़ो मेरियो, किस विध जावां मैं मारू देस
डोला जे मेरा जेठे रोकेया, किस विध जाऊं मारू देस।

परियों और सुरियल का वार्तालाप

ओ सुण भैनड़ मेरिये तू झमण पैहलैं लाल कराह
फेरी झमणा समेत पुजाहंगे तिजो मारू देस।
डोला उड़ाया समाणा नो
डोला पुजाया मारू देस सणैं नीले ई
समेत नीले समेत घारे।
ओ सुण माता नी मेरिये, हुकम करदा माई बाच्छला जो
राणा करो अंदरेरे दी तिआरी।

अग्गैं ता मिलदे अरजण–सुरजण सिरा ते खोर तुआरे
बाहीं मरोड़ी मटकी तोड़ी दहियां मेरा डोल गुआया।

स्थिति भांप कर गुग्गा राणा ने अपने मौसेरे जुड़वां भाइयों से कहा कि पहले मुझे वधु सहित गृहप्रवेश करने दो। गुगड़ी बहन को हिसाब देने दो। फिर वापस आकर तुम्हारे साथ सारा हिसाब–किताब करूंगा।

जब सुरियल की डोली को सुंगल घाटी में अर्जुन–सुर्जन ने रोक लिया तो उसने स्वर्ग लोक से परियों को आमन्त्रित किया और कहा कि मैं मारू देश कैसे जाऊं। मेरी डोली ज्येष्ठों (अर्जुन–सुर्जन) ने रोक ली है, मैं कैसे मारू देश जाऊं। यह सुन कर परियों ने सुरियल से कहा कि पहले तो तू अपनी डोली का झमण (कपड़ा) लाल रंग में रंगना अथवा लाल रंग का करवा, फिर उस लाल रंग के झमण (कपड़े) सहित ही हम तुम्हारी डोली मारू देश पहुंचा देंगी। तभी से डोली के ऊपर लाल रंग के कपड़े की प्रथा शुरू हुई है।

इस प्रकार जब डोली को लाल झमण से ढक दिया गया तो परियों ने डोली को आसमान में उठा दिया और वायु मार्ग से घोड़े और कहारों सहित मारू देश में पहुंचा दिया।

मारू देश पहुंच कर गुग्गामल ने अपनी माता बाच्छल से कहा कि हे माता जी ! अब वधु प्रवेश की तैयारी करो।

यहां से गुग्गा राणा और जुड़वा भाइयों अर्जुन–सुर्जन के बीच लड़ाई की भूमिका शुरू हो जाती है जिसमें दहीं बेचने वाली एक गुज्जरी की अहम भूमिका रही।

इसी बीच एक दही बेचने वाली गुज्जरी को अर्जुन–सुर्जन अपने ननिहाल दिल्ली जाते हुए रास्ते में मिलते हैं। उन्होंने उस गुज्जरी के सिर से दही की मटकी उतार ली जिसे बेचने वह बाजार जा रही थी। उन्होंने उस गुज्जरी की बाजू मरोड़ी, मटकी तोड़ी और सारा दहीं धरती पर गिरा दिया।
अर्जुन–सुर्जन गुज्जरी को कहते हैं–

दहिये तेरे दा मुल्ल भर देयांगे, मत कर दिल ज्यूड़े भारे
गल्ले पांदा अरजण पुछदा घरा देयां भेतां।
कौण था मैहरी बाप म्हारा, किसदे हम जाये।

गुज्जरी का उत्तर–

एसर पोते नानक बेटे, जेवर लगदा ताया
काच्छल तुम्हारी माता, बाच्छल लगदी तुम्हारी मासी।
जेठे ता हुंदे तुसे भाई जौड़ुओ

गढ़ दलेरा दे टीके अध तुम्हारा मारूएं,
तुसे एहड़ा गुआया सिर ते बह्नियां भाइयो पगड़ियां,
सेर क सूत गुआया।

अर्जुन–सुर्जन को नारद जी का मिलना

हत्थां वे डंडोली मुहंडे पर पोथी वे नारद मिलेया आगें
नारदें वी जौडुआं जो दसेया,
अध तुम्हारा मारूएं ते हट के हुण चल्ले मारूएं।
आई नै राणे जो जै–जै कीती
जै–जै ओ भाई सुणेयां राणेया।

गुग्गा और जुड़वां भाइयों का आपसी वार्तालाप

बैठो–बैठो मेरेयो सूरमेयो ओ तुसे मेरी मासी दे जाये
बैठो मेरेयो सूरमेयो, मत खाओ रसोई।
जौडू लग्गे गल्लां करने अध देई दे राणेया असांजो
असां दा अध वंड गढ़ दिलेरे दे टिक्के

अर्जुन–सुर्जन ने गुज्जरी को कहा, तू अपना मन दुखी मत कर। तेरे दहीं का मूल्य चुका देंगे। बातों–बातों में अर्जुन ने गुज्जरी से पूछा कि हमारा बाप कौन था और हम किस के पुत्र हैं?

गुज्जरी ने अर्जुन–सुर्जन को बताया कि तुम राजा एसर के पोते तथा नानक के बेटे हो। राजा जेवर तुम्हारा ताया है, काच्छल तुम्हारी माता है और बाच्छल तुम्हारी मौसी।

तुम दोनों जुड़वां भाई गढ़ मारू देश के ज्येष्ठ पुत्र हो। मारू देश का आधा हिस्सा तुम्हारा है जो तुमने खो (गंवा) दिया है। तुमने सिरों पर पगड़ियां बांधी हैं और एक सेर सूत नष्ट किया अर्थात् तुम्हारी पगड़ियां बांधने का क्या फायदा है ?

आगे चल कर अर्जुन--सुर्जन दोनों जुड़वा भाइयों को नारद मुनि मिले। उन्होंने हाथ में डंडा पकड़ा हुआ था तथा कंधे पर पोथी लटकाई हुई थी। नारद ने जुड़वां भाइयों को कहा कि गढ़ मारू देश की सम्पत्ति में तुम्हारा आधा हिस्सा है। इस प्रकार वे दोनों मारू देश पहुंच गए।

घर के सारे भेदों की सूचना पाकर दोनों जुड़वां भाई गुग्गामल के पास मारू देश पहुंच गए तथा राणा को जय–जय अभिवादन किया और

गुग्गामल को कहा कि हमारी बात सुनो। गुग्गामल ने अर्जुन–सुर्जन जुड़वां भाइयों से कहा– मेरे शूरवीर भाइयो बैठो, तुम तो मेरे मौसेरे भाई हो। तुम रसोई में जाकर खाना खाओ।

परन्तु जुड़वां भाइयों ने गुग्गामल से कहा कि गढ़ दिलेर (मारू देश) की सम्पत्ति में हमारा आधा हिस्सा है इसलिए वह हिस्सा हमें दे दो। गुग्गा जुड़वां भाइयों से पूछते हैं–

एह गल कुनी छेड़ी कुनी एह गोधम पाया।
नारदें गल्लां छेड़ियां गुजरियें गोधम पाया।
तू मर जायां नी गुजरिये घरा विच तैं गोधम पाया।
बंडा देई दे राणेया भौलियां
नहीं ता कल्ला जो होंगी फेरी लड़ाई।
भा हुंदा सकेयां भाइयां मसेरां जो नी होंदा
सुणो पुच्छो सैहर देयां पंचां जो भा मसेरां जो नी मिलदा।
ओ सुणो वे जौडुओ बिना लड़ेयां बिना घुलेयां
आध नी देणा तुसांजो।
क्या कलेस कटेया, बालथन कटेया
मासीयें भाणजे पाले।

जौड़ू और गुग्गा का वार्तालाप

सेर क आटा तेरा मजदूरिये खाहदा कम कमाया घर तेरैं
राणा तो बैठा पकीया माढ़ीया जौड़ू फिरे हट नाले।

गुग्गा राणा जुड़वां भाइयों से पूछने लगा कि यह बात तुम्हें यह किसने बताई और पारिवारिक लड़ाई किसने शुरू की।

इस पर जुड़वां भाइयों का जवाब था कि नारद मुनि ने ये सब बातें बताईं और बूढ़ी गुज्जरी ने यह पारिवारिक लड़ाई शुरू करवाई।

गुग्गा गुज्जरी को अपशब्द कहता हुआ बोला– गुज्जरी ! तू कहीं मर जाये। तूने हमारे घर में लड़ाई झगड़ा शुरू करवाया।

जुड़वां भाई गुग्गामल से कहते हैं कि हे गुग्गामल ! आप गढ़ दलेर की सम्पत्ति का आधा हिस्सा हमें दे दो नहीं तो फिर लड़ाई अवश्यंभावी है।

गुग्गा राणा ने कहा– सम्पत्ति का बंटवारा सगे भाइयों में होता है, मौसेरे भाइयों में नहीं। शहर में पंचों (लोगों) को पूछा जाए कि घर की सम्पत्ति का हिस्सा मौसेरे भाइयों को नहीं मिलता।

गुग्गामल ने जुड़वां भाइयों को कहा कि हे अर्जुन–सुर्जन सुनो। बिना लड़ाई तुम्हें गढ़ दलेर की सम्पत्ति का आधा हिस्सा नहीं दिया जाएगा।

अर्जुन–सुर्जन के मां–बाप (काच्छल तथा नागक) बचपन में ही मर गए थे। इसलिए उन दोनों का पालन–पोषण कर माता बाच्छल (मौसी) ने लड़ाई और क्लेश मोल ले लिया।

जुड़वां भाई अपनी मौसी को कहते हमने तुम्हारे घर पर सारा काम किया। मजदूरी के रूप में हमने सेर भर आटा खाया, तुम्हारा राणा पक्के महलों में रहा और जौड़ू इधर–उधर नालों में घूमते रहे।

राणे जो बिछियां रेसमी गलीचे जौडुआं जो कम्मल़ काले
राणा ता पहनदा सूही–सूही पगड़ियां जौडुआं जो फटके काले
राणे दे हत्थ सोने दीयां तेगां जौडुए तीर सम्हाले।
बैठेया ता राणा राज कमावे जौड़ू घोड़ेयां चाह्रन।
सदा नी रैंह्दियां आफतां विपतां सदा नी रैह्ंदे राज
सदा नी रैंह्दियां मुखा पर लालियां
सदा नी रैह्ंदे केस काले।
भरियां बंदूके गोलड़ियां राणे साह्मणे आये
अधो–अध बंडांह्गे तेरे मारूएं सेर सुहारिया लांह्गे।
दो–दो कोट बठाह्ंगे तेरे मारूएं
दो–दो बैह्ठगे राजे।

गुगा राणा की प्रतिक्रिया

मारे धक्के बाहर नकाले मुलखां नी रैहणा मेरैं
सिरां दीयां पग्गां कच्छ विच लईयां
जांदे सिर खलारे।
अग्गैं वे चले पिछें मुड़ी देखै भर–भर हंजुआं रोंदे
अग्गे चलदे जौडुओ, हो गए डार बच्छोड़े।

गुग्गा राणा को रेशमी गलीचे बिछाये गये परन्तु जुड़वां भाइयों को काले कम्बलों पर सुलाया गया।

गुग्गा राणा को लाल रंग की बढ़िया पगड़ियां पहनाई गई परन्तु जुड़वां भाइयों के सिर में काले कपड़े के पटके बांधे गए।

राणा के हाथ में सोने की तलवारें दी गई परन्तु जौडुओं के हाथों में तीर सम्भाले गये।

गुग्गा राणा गद्दी पर बैठ कर राज कर रहा था परन्तु जुड़वां भाई घोड़े चरा रहे थे।

जुड़वां भाइयों ने गुग्गा को कहा कि समय सदा एक जैसा नहीं रहता। कभी अच्छा समय आता है, कभी बुरा। राज सिंहासन भी सदा किसी के पास नहीं रहते। सदा के लिए मुंह पर लाली (अर्थात् जवानी) नहीं रहती और सदा के लिए केश काले रंग के नहीं रहते।

जुड़वां भाई बंदूकों में गोलियां भर कर गुग्गा राणा के सामने लड़ाई के लिए आ गए। उन्होंने कहा कि मारू देश की सम्पत्ति में से आधा हिस्सा बांटकर लेंगे और एक–एक सेर सारी चीज़ों में से बांटकर लेंगे।

तेरे मारू देश में दो–दो राज सिंहासन होंगे और दो–दो राजा बैठेंगे, ऐसी जुड़वा भाइयों ने राणा को चेतावनी दी।

यह सुन कर राणा ने धक्के मार कर जुड़वां भाइयों (अर्जुन–सुर्जन) को अपने राज दरबार से बाहर कर दिया और कहा कि मेरे राज्य की सरहद में न रहो। सिर की पगड़ियां बाजू के नीचे दबाकर वे नंगे सिर वहां से भाग गए।

वे आगे चलते–चलते पीछे भी मुड़ कर देखते, उनकी आंखों से आंसू बह रहे थे। इस प्रकार वे सदा के लिए उस स्थान से बिछुड़ गए।

तेयोआ ई अरजण–सुरजण दिल्लीयां जाई वे फरादे
लग्गी कचहरी राजे पतौड़िये दी जाई कचहरीया पुकारे।

राजा पतौड़िया के आदेश

इक्की ता पालिया लिखणी रामो रामी
वे फिर के लिखणी लड़ाई।
दो मंगलेटे जोड़िया भेजे सिद्धे मारूएं पहुंचे जाई
सिरातें तुआरे कोरे कागज, राणे दे हत्थ फड़ाये।
ज्यों–ज्यों राणा कागद वाचै, नैणा भरी–भरी रोये
ज्यों–ज्यों राणा कागद वाचै, मन में रो वसाये।
कागद छेकी सट्टी गुआया डांगर टक्कर मारै।

संदेश वाहकों का दिल्ली लौटना

हटदे मंगलेटे पूजे दिल्लीया आई
लग्गी कचहरी राजा पतौड़िये, जाई कचहरिया खड़ोते।

जै–जै बोली मामे जो, जै–जै बोलणी सारैं
आये मामा भामा तेरिया, सरम राखणी म्हारी।
मारूएं गुग्गामल होया वे आकी, भौं न दिंदा म्हारा
मारूएं गुग्गामल आकी होया, ओ मारो–मार पुकारै।
बैठो–बैठो मेरेयो सूरमेयो
बैठो–बैठो मेरेयो दोहतेयो, राणे जो मैं समझाणा।

दोनों जुड़वां भाई राजा पतौड़िया के दरबार में दिल्ली पहुंच गए दिल्ली का राजा पतौड़िया अर्जुन–सुर्जन का नाना था। उसके दरबार में राजा की कचहरी लगी हुई थी। उन्होंने उसमें फरियाद लगाई।

राजा ने आदेश दिया कि गुग्गा राणा को पत्र लिखा जाए जिसमें पहले राम–सलाम लिखी जाए तथा दूसरी बात लड़ाई करने के बारे लिखी जाए।

राजा का आदेश लेकर दो सन्देशवाहक सीधे मारू देश पहुंच गए। उन्होंने सिर पर से संदेश के कागज़ उतार कर गुग्गा राणा के हाथ में पकड़ा दिये। ज्यों–ज्यों गुग्गा राणा उन कागज़ों पर लिखे संदेश को पढ़ता, उसकी आखों में अश्रुधारा बहती जाती और साथ ही मन में बहुत दुःख होता।

उस ने संदेश भरे सारे कागज़ फाड़ डाले। हथियार (तलवार) हाथ में लहराते हुए कहने लगा– कुछ नहीं दूंगा।

दोनों संदेशवाहक वापस दिल्ली पहुंच गए तथा राजा पतौड़िये की कचहरी में जाकर खड़े हो गए।

जुड़वां भाइयों ने अपने मामा को नमस्कार किया और कहा कि हे मामा जी! तुम्हारी शरण में हम आए हैं, अब हमारी लाज रखना।

पूरे मारू देश में गुग्गा राणा ने कब्ज़ा किया हुआ है। वह हमारा हिस्सा नहीं दे रहा। मारू देश पर उसका कब्जा होने के कारण वह वहां पर मार–काट कर रहा है।

राजा पतौड़िया ने अर्जुन–सुर्जन को कहा कि हे शूरवीरो ! बैठो मेरे दोहतो, मैं राणा को समझाऊंगा।

सदयो दिल्लीया देयां मुणसियां, एह् खत लिखणा
पैहलैं ता लिखेयो रामो रामी, जै–जै लिखणी सारैं।
मैं मंगलेटी तूह् राजेयां बेटी लड़ेयां साह्मणे आई
इन्हां वे दलां विच सुरिनर लड़दे नारां दे कम नाहीं।
जिन्हां नारां दे नर नरपत हुंदे ओह कुलवंतीयां नारां।

जे तूह्‌गैं फौजां नाहीं, ते मैं फौजां देयां घलाई
जे तूह्‌गैं सस्तर नाहीं, ते मैं सस्तर देयां घलाई।
कौ लख चढ़ेया मंगलेटा कौ लख चढ़ेया कसाई।
अठ लख मंगलेटा चढ़यो नौ लख चढ़ेयो कसाई
ढाले जिन्हां दे रोग न होया, खंडे साणी लाये।

जौड़ू पतौड़िये राजा की कचहरी में

हत्थां जोड़ी ने अरजां जे करदे राजा सुणेयां अरज म्हारी।
मारूएं वे गुगामल आकी होया, ओह मारो–मार पुकारे
दिल्लीया छेड़ां जे पौंदियां, धोबिया लोहर बुलाया।
बुलावा देई ता तिसा ममता जो आणिया दे सरदारा।
इक बेगम थी, देई दे बुलावा तिसा बेगमा जो
तुसावे लड़ाईया जो जाणा।

राजा पतौड़िया ने गुग्गा राणा को पत्र लिखने के लिए दिल्ली के मशहूर अर्जीनवीस बुला लिए। पत्र में पहले गुग्गामल को और फिर सबको नमस्कार लिखवाई।

मंगलेटी ने गुगड़ी को कहा कि मैं मंगलेटी (ताऊ चाचों की औलाद) हूं परन्तु तू तो राजा की बेटी है। तू सामने आकर लड़ना।

इन फौजों में बहादुर सिपाही लड़ते हैं, स्त्रियों का लड़ाई में कोई काम नहीं। जिन स्त्रियों के पुरुष बहादुर होते हैं वही नारियां कुलवन्ती कहलाती हैं। यदि तुम्हारे पास फौज नहीं, तो मैं तुम्हारे लड़ने के लिए फौज भेजूं। यदि तुम्हारे पास शस्त्र नहीं तो मैं शस्त्र भेजूं।

लड़ाई के लिए कितने मंगलेटे जा रहे हैं तथा कितने जालिम सिपाही जा रहे हैं।

लड़ाई में आठ लाख योद्धा तथा नौ लाख कसाई जा रहे हैं। उनकी ढालें (हथियार) एकदम लड़ाई के लिए ठीक हैं तथा तलवारें भी सान पर तेज़ कर दी गई हैं।

स्थिति देख कर जुड़वां भाई राजा पतौड़िये से हाथ जोड़ कर विनती करने लगे। मारू देश में गुग्गामल राणा हावी हो गया, वहां पर उसने मारकाट शुरू कर दी। इस सब की सूचना दिल्ली दरबार (पतौड़िया) में पहुंच गई। धोबिया चौकीदार को भी बुला लिया गया।

पतौड़िया राजा ने देवी ममता तथा लड़ाकू सरदारों को भी लड़ाई

लड़ने के लिए बुलावा भेज दिया। एक बेगम को भी लड़ाई के लिए आमन्त्रित कर लिया।

मगना हाथी मारै हुलारे, बेगम चढ़ के आवे
लिख परवाने बेगम भेजै, दैणें गुगड़िया ताईं।
रंग बरंगे नेजे जे झुलदे लसक गईयां तलवारां
धग्गे चोटां गहरियां बजदीयां एहकम कुरदे नगारे।
गढ़ा दिल्लीया ते फौजां वे चढ़ियां चढ़दे मुगल पठाण
इक्की ता मजला दूईया मजला पूजे मारूएं आये।
सुरियल बोलै हीरामल तोते लई स्नेहा जाणा
तेरा ता घलेया मैं नी जांदा तैं मैनू चोग नी पाई।
सुचेया ता मोतिये चोग चुगावां
स्यूने दा पिंजरा मढ़ावां।
हट ते मंगांदी कोरे कागद भेजणे नणाना ताईं
बैह पड़छौएं कागद लिखदी नैण भरी–भरी रोऐ।

तोते का सन्देश लेकर गुगड़ी के पास जाना

इक्की ता पालिया रामो–रामी दूईया घणी लड़ाई
लिख परवाने कागद कोरे तोते दे गल पाये।
उड़ेयां मेरा हीरामल तोता जायां गुगड़िया देसां
भरी डुआरी हीरामल तोतैं, बैठेया मैहल मोनारां।

बेगम मगना हाथी पर चढ़कर झूलती हुई लड़ाई के लिए आई। उसने लड़ाई का सन्देश लिख कर गुगड़ी को भेजा।

रंग बिरंगे बरछे तथा तलवारें लड़ाई के लिए तैयार किए गए। छोटे–बड़े नगारों पर युद्ध ध्वनियां बजने लगीं।

अर्जुन और सुर्जन सहित दिल्ली दरबार से फौजें लड़ाई के लिए चल पड़ीं। उनमें मुगल पठान सैनिक थे।

वे पड़ाव'–पड़ाव चलकर लड़ाई करने के लिए मारू देश (राजस्थान) में पहुंच गए।

यह सब देखकर गुग्गामल की रानी सुरियल हीरामल नामक तोते को सन्देश लेकर गुगड़ी के पास भेजने लगी।

हीरामल तोते ने सुरियल रानी को कहा कि तेरे भेजने पर मैं सन्देश लेकर नहीं जाऊंगा क्योंकि तूने मुझे दाना नहीं खिलाया है।

सुरियल ने तोते को कहा कि हे हीरामल तोता! तुम्हें सुच्चे मोतियों की चोग दूंगी और बैठने के लिए सोने का पिंजरा। तू गुगड़ी के पास सन्देश लेकर जा। सुरियल रानी ने गुगड़ी को सन्देश लिखने हेतु दुकान से सफेद कागज़ मंगवाये।

वह छाया में बैठकर कागज़ पर संदेश लिखती और उसी समय उसकी आंखों से अश्रुधारा भी बह उठी।

पहली पंक्ति में सुरियल ने अपने हाल–चाल तथा दूसरी पंक्ति में लड़ाई के बारे में लिखा।

सुरियल ने ऐसा संदेश लिख कर तोते के गले में डाल दिया हे मेरे हीरामल तोता ! उड़ो और गुगड़ी ननद को संदेश देने उस के देश में जाओ। गुगड़ी के देश पहुंच कर वह उसके महल के छज्जे पर बैठ गया।

मैहल मोनारां ते उड़ेया तोता, बैठेया चंपे डाळा
चंपा डाळा ते उड़ेया तोता, पहुंचेया गुगड़िया देसां।
गुगड़ी ता बैठी पूजन पाठां तोते ने झुरमुर लाई
भैणे पच्छयाणेया भाईये दा तोता, आया मेरे देसां।
जे हुंगा तू मेरे भाईये दा तोता तां बैठेयां मेरिया गोदा
भरी डुआरी हीरेमल तोतैं, बैठेया गुगड़िया गोदा।
नैण पलोंजां फंग पलोंजां गला देयां पुरजेयां खोह्लै
लई पुरानै गुगड़ी वाचै, नैण भरी–भरी रोयै।
गालीं तां दिंदी बाच्छल माईया कल्हा राणा क्यों जाया
पंज सत सूंदियां जंगला च सूरियां सूरमा इको ई बथेरा।
इक्की ता पासैं भैण दे भाई
कल्हा राणा इन्हां मारी दैणा।
सिर दा कौडा तोड़ मरोड़ेया धरती दे नाल वगाहेया
गैहणां पत्ता सभ कुछ खोलेया, कित्ता मरदानी भेस।
हुकम करदी चरबेदारां नू गरड़े जो जीन चढ़ाया
पंजो ता सस्तर वस्तर लाये, पंजो लाये थिहार।
लक्का ते खंडा निसरेया सोहै मूंह्डे सबज कमाण
अखां जिसदे घेरसू वगदे, मुख में जल्हन मसालां।

तोता महल के छज्जे से उड़कर चम्पा के पेड़ पर बैठ गया और गुगड़ी के देश में विराजमान हो गया।

गुगड़ी जहां पर पूजा पाठ में बैठी हुई थी, हीरामल तोता वहां गुटर

गूं करने लगा। बहन गुगड़ी ने अपने देस में आया हुआ भाई गुग्गामल का तोता पहचान लिया।

गुगड़ी ने तोते को देख कर कहा कि यदि तू मेरे भाई गुग्गामल का तोता होगा तो मेरी गोद में बैठेगा। यह सुनकर हीरामल ने उडारी भरी और गुगड़ी की गोद में बैठ गया।

गुगड़ी ने उस तोते की आंखों और पंखों को हाथ फेर कर सहलाया और उसके गले में बंधा हुआ संदेश का कागज़ खोला। उस संदेश को पढ़कर गुगड़ी खूब रोने लगी।

वह बाच्छल माता को गालियां देने लगी कि केवल गुग्गामल ही इकलौता क्यों पैदा किया।

जंगल में सूअरी पांच–सात बच्चे इकट्ठे पैदा करती है परन्तु उसका क्या फायदा। अतः शूरवीर तो एक ही काफी होता है।

एक तरफ बहन गुगड़ी का भाई राणा गुग्गामल है तो दूसरी तरफ जुड़वां भाइयों के साथ फौज भी है जो गुग्गामल को मार देने में समर्थ होंगे।

स्थिति भांप कर गुगड़ी ने अपने सिर से चाक उतार (खोल) कर धरती पर फैंक दिया । शरीर से सभी आभूषण खोल दिए और मरदाना वेश धारण कर लिया।

उस ने अपने नौकर–चाकरों को आदेश दिया कि गरड़े घोड़े को जीन चढ़ाकर लड़ाई के लिए तैयार करो। वह सभी प्रकार के शस्त्रों से सुसज्जित योद्धा के वेश में घोड़े पर सवार हो गई।

गुगड़ी की कमर में खंडा (कृपाण) बांध हुआ था। कंधे पर तीर कमान था। उसकी आखें आग की तरह लाल थीं और मुंह भी गुस्से से लाल था।

गुगड़ी लड़ाई को जाते हुए

मारी पलाकी गरड़े ते चढ़दी ठाकुर लेई तिहाई
उच्चैं तां चढ़ कर देखण लग्गी बेगम तम्बू लाये।
इक्की ता मजला दूईया मजला
पहुंची मारूएं आई।
जे ता हईयां तुसे भैणा वीर परौह्णियां
तां तुहाड़े आदर करां सुआये
जे तां आईयां तुसे जौडुआं दीया मजती

ता डेरे बाहर कराओआं।
असे ता आईयां भैणा जौड़ेयां दीया मजती
राणा मार मुकाणा।
इतना जे सुणेया गुगड़ियें भैणें, सेरा जैसी गरनाई।
इतना सुणेया गुगड़ियें भैणे सूत लई तलवार
इक्की ता बाहिया दस बिस मरदे दूईया घाण उतारे
दूईया चोटा सौ दो सौ मरदा वगदे खूना दे नाले।
अरजण सुरजण एह घर भेती गुगड़ी लेई पच्छयाणी
तू मत लड़दी गुगड़िये भैणे तू सांजो गऊ तिहाण।
इन्हां लड़ाईयां विच सुरियर लड़दे नारां दे कम नाहीं
इतना सुणेया गुगड़िये भैणे, हट के मारूएं औऐ।

गुगड़ी ने लड़ाई को जाते समय अपने ईष्ट को याद किया और गरड़े नामक घोड़े पर चढ़ गई। घोड़े पर चढ़ कर गुगड़ी ने अपनी नज़र घुमाई तो देखा कि दूसरी तरफ बेगमों ने लड़ाई के लिए डेरा डाला हुआ था मारू देश के समीप।

घोड़े पर चढ़ कर पड़ाव–पड़ाव पार कर गुगड़ी अपने भाई गुग्गामल के मारू देश में पहुंच गई।

वहां पहुंच कर गुगड़ी ने बेगमों से कहा कि बहनो! यदि तुम मेरे भाई गुग्गामल की अतिथि हो, तब तो तुम्हारा खूब आदर करूं और यदि तुम जुड़वां भाइयों (अर्जुन--सुर्जन) की सहायता के लिए आई हो तो तुम्हें इस स्थान से बाहर खदेड़ दूं।

परन्तु बेगमों ने गुगड़ी से कहा कि हम तो जुड़वां भाइयों की सहायता के लिए आई हैं तथा गुग्गामल राणा को मार देंगी।

इतना सुनते ही गुगड़ी शेर की तरह दहाड़ी और म्यान में से तलवार निकाल ली। उसने एक ही वार से दस वीर योद्धा काट दिए तथा बाद में काफी अधिक संख्या में शत्रुओं को मार गिराया जिससे खून के नाले बहने लगे।

अरजुन और सुरजन दोनों भाइयों ने गुगड़ी को लड़ते हुए पहचान लिया और कहने लगे कि हे गुगड़ी वहन ! तू हमारे साथ लड़ाई मत कर, तू तो हमारी ध्याण गऊ के समान आदरणीय बहन है है।

जुड़वां भाइयों ने गुगड़ी से कहा कि इन लड़ाइयों में तो शूरवीर पुरुष लड़ते हैं। स्त्रियों का लड़ाई में क्या काम ? इतना सुनते ही गुगड़ी मारू देश के राज महल में चली गई।

तू कैंह सुत्ता वीरना मेरेया तैनू निंदर घनेरी
तेरैं ता मुलखां मारूएं वीरना मुगलां ने डेरे लाये।
तूह कैंह सुत्ता वीरना मेरेया फौजां दे दल आए
देई ता बुलावा करकट नो हको हक मचाया।
देई दे बुलावा नाहर सिंघा जो
तूह् लड़ाईया जो जाणा।
नाहर सिंध जे दिंदा जवाबां असां भाईया मूल नी जाणा
लड़ने दी मैं सार नी जाणदा, हऊं जातीदा खतरेटा।
हटीया बैठी सौदा बेचां लिखेया सहाब समझावां
खीर पंजीरियां बापुएं खाह्दियां मैं क्या खाई लेया तेरा।
देई दे बुलावा हणमत जोधे तुसां वी लड़ाईया जो जाणा
देई दे बुलावा भैरों छड़िये तुसां वी लड़ाईया जो जाणा।
देई दे बुलावा चंडीया माईया तुसां वी खंडा मारन जाणा।
देई दे बुलावा कालीया माईया लोऊ भखण जाणा।

महल के अन्दर पहुंच कर गुगड़ी अपने भाई गुग्गामल को कहने लगी कि तू इतनी गहरी नींद क्यों सोया हुआ है।

भाई तेरे मारू देश में तो शत्रु की मुगल सेना ने लड़ाई के लिए डेरा डाला है। मेरे भाई तू क्यों सोया है, तेरे देश में तो शत्रुओं के फौजी दल पहुंच गए। यह देख कर गुग्गामल राणा ने अपने मंत्री करकट को बुलावा भेजा ताकि वह लड़ाई में भाग लेने हेतु सभी संबंधितों को बुलाये।

इस प्रकार नाहर सिंह को भी लड़ाई में भाग लेने के लिए आमन्त्रित किया गया।

परन्तु नाहर सिंह ने जवाब दिया कि मैं लड़ाई में भाग नहीं लूंगा। क्योंकि मैं लड़ाई लड़ना नहीं जानता। मैं तो खत्री जाति से संबंध रखता हूं। मैं (नाहर सिंह) दुकान मैं बैठ कर सामान बेचता तथा हिसाब किताब लिखता हूं। नाहर सिंह ने करकट मंत्री को जवाब दिया कि राज दरबार में खीर इत्यादि पकवान मेरे पिता ने खाये होंगे। मैंने तो तुम्हारा कुछ नहीं खाया। इस प्रकार करकट मंत्री ने हनुमत (हनुमान) योद्धा को युद्ध के लिए आमन्त्रित किया। भैरों छड़िये को भी युद्ध के लिए आमन्त्रित किया गया।

चण्डी माता को अपना खंडा लेकर युद्ध के लिए आमन्त्रित किया गया। काली माता को भी युद्ध के लिए आमन्त्रित किया गया ताकि वह खून–ही–खून बहा दे।

देई दे बुलावा किलकां जोगणां जो किलकां मारन जाणा
ढाले जिन्हां देया रोगन होया, मिसरिये साण चढ़ाई
रंग बरंगे नेजे जे झुलदे, लसक गईयां तलवारां।
अग्गैं—अग्गैं परियां दा खाहड़ा जे चलेया
कहंजकी मुरलियां वाला
ढोल नगारे जे बजदे, सारे वे खबरां होईयां।
जंगी ढोल घनेरा बजदा सारैं वे खबरां होईयां
दोआ दल जे मिलणा लगदे हालो—हाल मचाओए।
लक्खी वे जंगला च छिड़ी लड़ाई खूनां दे रोल मचोल
चली वे तोड़ा बंदूकड़िया, गोलियां दी बरखा लाई।
मारेया खंडा नाहर सिंघें, खड़को खड़क मचाई
मारेया गदा हनुमंत जोधें, खड़को खड़क मचाई।
बाही मिसरियां भैरों छड़िये, खड़को खड़क मचावे
बाही मिसरियां चंडी माईयें, खड़को खड़क मचावे।
मारेया खंडा कालियें माईयें, खड़को खड़क मचावे।
भले ते भले मंगलेटे मरे, लहुआं दे वग गये नाले।
मारेया खंडा जिस गुगमल राणे खड़को खड़क मचावे।
अरजण—सुरजण दोनों मारे मारेया दिल्लीया दा राजा।

किलकां जोगण को भी युद्ध में आमन्त्रित किया गया ताकि वह ज़ोर—ज़ोर की किलकारियां मारे।

उन सबकी रंग—बिरंगी ढालें और तलवारें सान पर तेज़ की गईं और लड़ाई के लिए हवा में लहरा रही थीं।

लड़ाई को जाते समय आगे—आगे परियों का दल था और पीछे वाद्ययन्त्र वादक चले। ढोल नगारे बजने लगे। इस प्रकार लड़ाई के बारे में सब को खबर हुई।

जंग (लड़ाई) का ढोल बड़े ज़ोर—ज़ोर से बजने लगा। इस प्रकार सभी दिशाओं में युद्ध की खबर हो गई। दोनों दल लड़ाई के लिए आमने—सामने हुए तो काफी शोर गुल मच गया।

लक्खी नामक जंगल में दोनों सेनाओं में लड़ाई छिड़ गई। योद्धाओं की मारकाट से चारों ओर खून बहने लगा। दोनों ओर से गोलियां चलने लगीं। लड़ाई में नाहर सिंह ने खंडा चलाया तथा हनुमान ने गदा चलाकर कहर मचा दिया।

भैरों छड़िये तथा चण्डी माता ने तलवारें और खंडे चला कर मारकाट मचा दी। काली माता ने भी तलवार चलाकर बड़े–बड़े शूरवीर योद्धाओं को काट डाला जिससे खून के नाले बहने लगे।

अंत में गुग्गामल राणा ने अपनी तलवार से मौसेरे जुड़वां भाइयों (अर्जुन–सुर्जन) को काट डाला तथा दिल्ली के राजा पतौड़िये को भी मार डाला जो कि सब गुग्गामल राणा के विरुद्ध मारू देश में लड़ाई लड़ रहे थे। यहां दोनों दलों के बीच लड़ाई समाप्त हो गई क्योंकि विरोधी दल के योद्धा दिल्ली के राजा पतौड़िया और गुग्गामल राणा के मौसेरे जुड़वां भाई अर्जुन–सुर्जन सभी लड़ाई में मारे गए, जो मारू देश की आधी सम्पत्ति के लिए लड़ाई कर रहे थे।

इसके पश्चात् जोगण ईल लड़ाई में अरजण–सुरजण इत्यादि के मारे जाने का संदेश लेकर मारू देश पहुंचती है।

जोगण इल पहुंची गढ़ मारूएं मैहलां दे उप्पर बैठी।
माई बाच्छल राणे दी मां, जोगण नो पूछदी
कित्थे जरमी कित्थे जाई, कित्थे लेया तैं अवतार।
जल विच जरमी जल विच जाई जल विच लेया अवतार
केहड़ेयां मुलखां ते तू आई कने केहड़ेयां मुलखां नू जाणा।
गढ़ गजनियां ते मैं चल के आई मारूए दा ध्यान लगाई
फंग वी रंगुले टुंड वी रंगुले तेरे कित्त वल खाह्‌दे अल्ले मास
गढ़ गजनियां लगीयां लड़ाईयां उत्त वल खाह्‌दे अल्ले मास।

युद्ध क्षेत्र में घटित घटना क्रम की सूचना देने के लिए युद्धोपरान्त एक ईल मारू देश में पहुंची और राजमहल के ऊपर बैठ गई।

उसे देखकर गुग्गामल राणा की माता बाच्छल ने जोगण ईल को पूछा कि तेरा जन्म कहां हुआ और तू कहां से आई तथा तूने अवतार कहां लिया। ईल ने बाच्छल को उत्तर दिया कि मेरा जन्म जल में हुआ तथा जल में ही अवतार लिया।

बाच्छल ने ईल से पूछा कि हे जोगण ईल ! तू कौन से देश से यहां आई और तुझे कहां जाना है। ईल ने बाच्छल से कहा कि मैं गढ़ गजनी से आई तथा मारू देश को जाना है। बाच्छल ने ईल से पूछा कि तेरे पंख और पैर भी खून से रंग गये हैं। तूने किस जगह पर कच्चा मांस खाया।

ईल का कहना था कि– गढ़ गजनी नामक स्थान पर लड़ाई लगी थी वहां पर कच्चे मांस खाये।

स्यूने ता रूपा तेरीया चुंजा मढ़ांगी जुझा दी खबर सुणा।
कौण मारेया कौण समाहेया किस नो आई जुझा च हार।
बड़े–बड़े मारे गए सरदार मारेया गया दिल्लीया दा राजा
जै सिंह सूरम सिंह मारेया गए
मारेया गया सेनापति हरि सिंह।
अठ लख मारेया हाथी नौलख मारेया गए कसाई।
अरजण–सुरजण मारेया गए जिन्हां जो आई जुझा च हार।
बाच्छल पुछदी मेरे राणे दा हाल सुणा,
राणा मेरा गया लड़ाईया, तीह्दा सुणा सुखसांद।
मैं क्या जाणां तेरे राणे, केहड़िया नुहारी राणा तेरा
नीला घोड़ा नरियां दा जोड़ा उप्पर पतला सुआर,
जुग–जुग जिऐ तेरा राणा, जिनी खुआए कच्चे मास
जुग–जुग जिये तेरा राणा, जिह्नू रण विच आई जीत।

हे जोगण ईल! तेरी चोंच को सोने से मढ़वा दूंगी, तू युद्ध की पूरी खबर सुना। युद्ध में कौन–कौन मारा गया तथा किस की हार हुई, ऐसा बाच्छल ने ईल से पूछा।

ईल का उत्त्तर था– युद्ध में बड़े–बड़े योद्धा मारे गए। दिल्ली का राजा पतौड़िया भी मारा गया। जय सिंह तथा सूरम सिंह सरदार मारे गए और सेनापति हरि सिंह भी मारा गया।

युद्ध में शत्रु सेना के आठ लाख हाथी तथा नौ लाख मुसलमान योद्धा मारे गए। अर्जुन–सुर्जन की युद्ध में हार हुई तथा वे दोनों ही मारे गए।

बाच्छल ईल से अपने पुत्र गुग्गामल राणे का हाल पूछती है कि मेरा राणा भी लड़ाई के लिए गया है उसकी खबर सुना। ईल ने बाच्छल को कहा कि मैं क्या जानूं कि राणा कौन है, उसकी शक्ल सूरत कैसी है।

बाच्छल ने गुग्गा राणा की पहचान बताते हुए कहा, नीले घोड़े पर वीर योद्धा सवार है तथा उसके आगे–आगे दो पक्षी उड़ते हैं, वही राणा गुग्गामल है।

जोगण ईल बाच्छल माई को कहती है कि तुम्हारा राणा युगों–युगों तक ज़िंदा रहे जिसने हमें कच्चे मांस खिलाये। तुम्हारा राणा युगों–युगों तक जीवित रहे जिसकी युद्ध में जीत हुई।

अरजण–सुरजण मारे गए दोनों भाणजे तेरे
भाणजेयां मेरेयां जो भंदड़ा नी बोलेयां

तेरे टुकड़े कराओआं चार।

मेरा गलाया तैं झूठ मनेया

पिच्छे ते आया काला काग

इस ते पुच्छी लै क्या होया।

स्यूने ता रूपा तेरीया चुंजा मढ़ावां,

कालेया कागा जुझा दी खबर सुणा।

अरजण–सुरजण दोनों मारे

मारेया गया दिल्लीया दा राजा।

मेरा तां गलाया माये तैं झूठ मनेया

पिच्छें आया नीले दा सवार।

अठ लख हाथी नौ लख घोड़ा

मंझ पर आया नीले सवार।

माये मैं वी ध्याया मेरा नीला वी ध्याया

ध्यायां जो पाणी प्याह, मां नो हक्कां मारदा।

पाणिएं दे बदले बेटा दुध प्यांहगी

नीले जो प्यौआं ठंडा नीर जुझा दी खबर सुणा।

तुम्हारे दोनों भानजे अर्जुन और सुर्जन इस लड़ाई में मारे गये, ऐसी सूचना ईल ने बाच्छल माई को दी।

बाच्छल ने जोगण ईल से कहा– तुम मेरे भानजों (अर्जुन–सुर्जन) को बुरा भला मत कहो। ऐसे कहने पर तेरे काटकर चार टुकड़े करवा दूंगी।

जोगण बोली, हे बाच्छल! अगर तुम्हें मेरे कहने पर विश्वास नहीं तो पीछे काला कौआ आ रहा है, इससे पूछो सच्चाई क्या है।

बाच्छल ने काले कौए से कहा– तेरी चोंच को सोने से मढ़ा दूं, तू मुझे युद्ध की सच्ची खबर सुना कि वास्तविकता क्या है।

काले कौए ने बाच्छल को युद्ध का वृत्तान्त सुनाते हुए कहा कि– युद्ध में अर्जुन–सुर्जन दोनों जुड़वां भाई मारे गए तथा दिल्ली का राजा पतौड़िया बाच्छल का पिता भी मारा गया। इतना कहते–कहते पीछे से गुग्गा राणा स्वयं नीले घोड़े पर सवार होकर वहां आ पहुंचा।

गुग्गा राणा के पीछे उसकी सेना के आठ लाख हाथी और नौ लाख घोड़े अपने सवारों सहित चले हुए थे तथा उनके बीच में राणा अपने नीले घोड़े पर सवार था।

उस ने अपनी माता बाच्छल को आवाज दी, हे माता जी! मैं प्यासा

हूं, मेरा नीला घोड़ा भी प्यासा है। हम प्यासों को पानी पिलाओ।

बाच्छल ने यह सुनते ही गुग्गा राणा से पूछा– बेटा ! तुम्हें पानी के बदले दूध पिलाऊं। नीले को ठंडा नीर पिलाऊं, पहले युद्ध की सही–सही खबर सुना।

पाणी ता पीऊंआं माता ठंडड़ा होआं
फेर जुझा दी खबर सुणावां।
गढ़ गजनियां छिड़ी लड़ाई महीने चार
मारेया गए बड़े–बड़े सरदार।
अरजण–सुरजण भाई मारे
मारे गजनी दे मदान।
भाइयां मारी नैं बड़ा पछताया, रोया लमीयां कूके
पग्गां छेकी कफ्फण पाया, फूके गजणी दे मदान।
हरि सिंह सेनापति मारेया गया
मारेया गया नानू पतौड़िया राजा
सूरम सिंह मामा मारेया गया
मारेया गए बड़े–बड़े सरदार।
सच्च गलाह बेटा झूठ न बोलेयां दिहंगी तिजो सराफ।
कढ कपड़े हथ फड़ांदा भाणजे दे कपड़े लेयां पच्छाण।
कपड़े जेहां बेटे कपड़े हुंदे मिलदे विच बजार।

गुग्गा ने माता को कहा कि पहले पानी पीकर ठंडा (शांत) हो जाऊं, फिर युद्ध की खबर सुनाऊं।

गुग्गा राणा ने अपनी माता बाच्छल को युद्ध का वृत्तान्त इस प्रकार सुनाया– चार महीनों तक गढ़ गजनी में युद्ध होता रहा जिसमें फौजों के बड़े–बड़े सरदार मारे गए। गजनी के रण–मैदान में अर्जुन–सुर्जन दोनों ही मारे गए।

मैं गुग्गा राणा मौसेरे भाइयों को युद्ध में मारकर बहुत पछताया। अपनी पगड़ियां फाड़कर उनको कफन डाला तथा गजनी के मैदान में उनको जला कर अन्तिम संस्कार कर दिया।

इस युद्ध में शत्रु की सेना का सेनापति हरि सिंह मारा गया। दिल्ली दरबार का राजा नाना पतौड़िया भी मारा गया।

सूरम सिंह मामा भी मारा गया। इस तरह बड़े–बड़े योद्धा सरदार मारे गए।

गुग्गाराणा से लड़ाई का वृत्तांत सुनकर बाच्छल माता कहने लगी, हे गुग्गा मल बेटे! सच–सच बताओ कि क्या हुआ, नहीं तो तुम्हें श्राप दे दूंगी।

राणा ने अर्जुन–सुर्जन के कपड़े माता के हाथ में पकड़ाये और कहा, पहचानो इन कपड़ों को, क्या तुम्हारे भानजों के कपड़े नहीं हैं ये? अर्जुन–सुर्जन के लड़ाई में मारे जाने के बाद गुग्गा राणा उनके कपड़े, गले के कंठे, हाथ के कंगन, खंडे–तलवारें तथा उनके कटे सिर प्रमाण स्वरूप अपनी झोली में मारू देश ले आया था।

बाच्छल ने गुग्गा राणा से कहा कपड़ों की तरह कपड़े बाजार में काफी मिल जाते हैं।

कढ कंठेयां, कंगणेयां हत्थ फड़ांदा कंगणेयां कंठेयां लेया पछाण।
कंगणेया जेहे कई कंगणें होंदे घड़दे कई सन्यार।
कढ खंडेयां हथ फड़ांदा नौआं लेयां पछाण।
खंडेयां जेहे बेटे खंडे होंदे घड़दे कई लुहार।
कढ मुंडीयां झोलिया ते अंदरों स्यूने दा थाल मुंगांदा
मुंडियां हाजर करदा भाणजेयां लेयां पच्छयाण।
बदली–घदली ता मुंडीयां देखदी रोंदी लमीऐं कूके
किह्यां ता बेटा तेरे हथ पैर हिल्ले
किह्यां मारी तैं तलवार।
रोहें ता होया माता हथ पैर हिल्ले धू के मारी तलवार
रण दे विच माता रोहें होया भूमि दे खातर मारी तलवार।

इस तरह (अर्जुन–सुर्जन के) गले के कंठे हाथ के कंगन अपनी माता बाच्छल के हाथ में पकड़ा दिए और कहा इनको पहचानो किसके हैं?

बाच्छल ने कहा– कंगनों की तरह कई कंगन होते हैं। कई सुनार ऐसे कंगन तैयार करते हैं।

फिर उन दोनों के खंडे–तलवारों को गुग्गा राणा ने बाच्छल मैया के हाथ में रखा और कहा इन को पहचानो इन पर किसके नाम लिखे हैं।

माता बाच्छल बोली खंडे–तलवारों की तरह कई खंडे होते हैं। कई लोहार ऐसे खंडे–तलवारें तैयार करते हैं।

अन्त में गुग्गा राणा ने अपनी झोली से अर्जुन–सुर्जन के कटे सिर निकाले और सोने की थाली में रख कर अपनी मां के सामने पेश किये और कहा– लो अब अपने भानजों की पहचान कर लो कि वास्तव में ही उनकी लड़ाई में मृत्यु हो गई।

बाच्छल बदल–बदल कर अर्जुन–सुर्जन के कटे सिरों को देखती और ज़ोर–ज़ोर से रोती हुई गुग्गा राणा को कहने लगी–

हे बेटे ! जुड़वां भाइयों को मारने के लिए कैसे तेरे हाथ पैर चले, कैसे तूने उन पर तलवार चलाई।

गुग्गा राणा ने माता बाच्छल से कहा– गुस्से में आकर मेरे हाथ पैर हिले फिर म्यान से तलवार निकालकर उन पर चला दी। युद्ध भूमि में गुस्से के कारण और अपनी मातृभूमि के कारण तलवार से दोनों के सिर काट डाले।

जिन्हां ता देसे तैं मेरे भाणजे मारे उन्हां देसे मरेयां तूह् वी जाई।
भाणजेयां खातर पुत्तर नकालेया सुखी पर बसै तेरा राज।
भाणजेयां दी खातर तैं पुत्तर बछोड़ेया रोहंगी लमीये कूके।

पहली ता बंदगी मारू देस नू करदा
सुखी बसेयो मारू देस दा राज।

राणा : **बत्ती ता धारां मैं तेरीयां दुधा दीयां पीतियां**
इन्हां ते मैनो उरण कर।

बाच्छल : **बत्ती ता धारां तैं बेटा दुधा दीया पीतियां**
जिस तरह गंगा दा निरमल पाणी।

राणा : **चक लईयां बागां फेर लेया घोड़ा**
हो गया ड्योढ़िया ते बाहर।
जांदा सुरियल दे महलां विच
सुरियल नो हक मारदा, सुणेयां मेरा बदेस।

सुरियल राणी मैहलां ते थल्लै औंदी
आरती जगाई के नमस्कार करदी।

माता बाच्छल ने गुग्गा राणा (अपने पुत्र) को श्राप देते हुए कहा कि– जिस देश में, जिस भूमि पर तूने मेरे दोनों भानजों को कत्ल किया, उसी देश में जाकर तू भी मर जा। फिर माता के श्राप से गुग्गा राणा मारू देश से निकल बाहर चला गया।

राणा ने माता को कहा– अपने भानजों की खातिर तुमने पुत्र को घर से निकाल दिया। तेरा राज (शासन) ठीक से चले। भानजों की खातिर तुमने पुत्र से बिछोड़ा डाला। इसलिए तू (माता) अब ज़ोर–ज़ोर से लम्बी कूकें मारकर रोयेगी।

राजमहल से निकलती बार सबसे पहले राणा ने मारू देश की धरती की वंदना की और कहा, तुम सुख–शान्ति से रहो। तुम्हारा राज (शासन) भी

ठीक चले। मैंने तुम्हारे (माता के) दूध की बत्तीस धारायें पी हैं अर्थात् तुम्हारा स्तनपान किया। मैं इस ऋण से उऋण होना चाहता हूं।

बाच्छल ने राणा से कहा– बेटा ! तुमने माता का जो स्तनपान किया वो समझो कि गंगा का शुद्ध जल पिया है।

इसके पश्चात् गुग्गा राणा ने नीले घोड़े पर सवार होकर उसकी लगाम पकड़ी और राजदरबार की ड्योढ़ी से बाहर हो गया। जाते–जाते अपनी पत्नी सुरियल के पास पहुंचकर बाहर से उसको आवाज़ मारकर कहा कि सुरियल मेरी बात सुनो।

सुरियल रानी ने अपने महल से नीचे आकर गुग्गा राणा को दोनों हाथ जोड़कर नमस्कार किया।

माऊं दित्ता सराप करी ता मुलखा ते बाहर
भीलां गोली घोड़े दीया बागां पकड़दी
किस दे हुआले तैं माता छड्डी
किस दे हुआले सुरियल नार।

राणा– **प्रभु दे भरोसे माता छड्डी तेरे हवाले सुरियल नार**
जिक के रकाब सवार होया होया मैहलां ते बाहर।

उच्ची–उच्ची टिकड़ी फलाहिया दा बूटा
अरज करदा धरती माता गैं।

ओह्थी रहीमू माली गऊआं चारदा
ओह् अखां ते अन्हां।

राणा– **हाखीं ता तैनू जोत दिहंगा जुग–जुग दीयां रोटियां दौलत दिहंगा**

एह्थी मेरी माह्ड़ी बणायां।
हथ जोड़ के अरजां करदा धरती माता जो मैनू लेयां छपाई।

धरत मां इनकार करदी मुसलमान हुंदा ता
मैं छपा लैंदी हिंदू छपेया नी जांदा।

माता बाच्छल ने मुझे श्राप दिया और देश निकाला दे दिया, अपने देश से बाहर कर दिया।

यह सुनकर शीलां नामक नौकरानी ने गुग्गा राणा के घोड़े की लगाम पकड़ी और राणा को पूछा कि तुमने किस के सहारे (हवाले) अपनी मां व पत्नी सुरियल को छोड़ा।

गुग्गा राणा ने शीलां को जवाब दिया, भगवान के भरोसे माता

बाच्छल को छोड़ा और तुम्हारे भरोसे सुरियल को छोड़ा।

इस तरह घोड़े की रकाब पर पैर रखकर सवार होकर बड़ी तेज़ी से महलों के बाहर हो गया।

वहां से चलकर किसी ऊंची टिकड़ी (धार) पर पहुंचा जहां फलाही नामक पेड़ था। वहां धरती माता को नमस्कार किया।

वहां रहीमू नामक माली गऊएं चरा रहा था और वह आंखों से अन्धा था। गुग्गा राणा ने रहीमू माली से कहा कि– मैं तुम्हारी आंखों में ज्योति प्रदान कर दूंगा। युगों–युगों तक के लिए भोजन इत्यादि उपलब्ध करवाऊंगा। धन दौलत दूंगा, तुम यहां पर मेरी माह्ड़ी (थड़ा–स्थान) तैयार करना।

गुग्गा राणा ने हाथ जोड़ कर धरती से विनती की कि हे धरती माता! आप फट जाओ और मुझे अपने में छिपा लो, समा लो।

वह माता के श्राप के कारण धरती में शर्म के मारे छिप जाना चाहता था। धरती माता ने उसे अपने में समाविष्ट (छिपाने से) करने से इनकार किया और कहा–यदि तू मुसलमान होता तो तुझे छिपा लेती। तू तो हिन्दू है और हिन्दुओं को छिपाया नहीं जा सकता।

ढाई कलाम मक्कैं पढ़ चोटी लै कटाई
फेरी तिज्जो मैं लैहंगी छपाई।
ढाई कलामां मक्कैं पढ़ीयां, चोटी लई कटाई
उच्ची–उच्ची पर्वत फलाहिया दा बूटा
उत वल छप गया गुग्गा राणा।
नीला ते गुग्गा राणा छप गये धरती
पग्गा दा तिल्ला रही गया बाहर।
दिन छुपेया गऊआं ने छोड़े लंगार
अग्गे–अग्गे गऊआं पिच्छे रहीमू माली।
माई बाच्छल पलंघूड़ैं झूटै
हत्थ जोड़ के माली अरजां जे करदा
मात अरज सुणेयां मेरी मन लाई।
उच्ची–उच्ची पर्वत फलाहिया दा बूटा।
उत वल छप गया तेरा गुग्गा मल राणा।
इतणा सुणेया माई बाच्छले, रोंदी लमीयें कूकैं।
स्यूने दा सुकपाल जुड़ाया चार धार बरोबर हुंदे
रहीमू माली माई बाच्छल पर्वत टुकड़ी दे कोल आए।

हत्थ जोड़ के रहीमू माली
बोलै इत वल छपेया तेरा गुग्गा राणा।
पग्गा दे तिल्ले सीनैं लगांदी रोंदी लमीयें कूकैं,
हटी घरां नो आई।

धरती माता ने गुग्गा राणा को कहा कि मक्का मदीना जाकर इस्लाम धर्म (कुरान) के ढाई कलाम पढ़ो और अपनी चोटी कटाओ फिर तुम्हें अपने में छिपा लूंगी।

गुग्गा राणा ने मक्का में जाकर ढाई कलामें पढ़ीं, चोटी भी कटवा ली। फिर वहीं ऊंची पहाड़ी पर फलाही के वृक्ष के पास धरती में नीले घोड़े सहित समा गया।

गुग्गा राणा अपने नीले घोड़े सहित धरती में समाविष्ट हो गए परन्तु उनकी पगड़ी का तिल्ला (ऊपरी हिस्सा) धरती से बाहर रह गया।

सूर्य छिप गया, गऊएं अपने–अपने घर जाने लगीं। आगे–आगे गऊएं जा रही थीं और उनके पीछे रहीमू नामक माली (ग्वाला) चल रहा था।

वह गुग्गा राणा की माता बाच्छल के घर पहुंचा। उस समय वह झूले में झूल रही थी। रहीमू ने बाच्छल को हाथ जोड़कर नमस्कार किया और कहा कि मेरी बात ध्यान से सुनो।

ऊंची पहाड़ी पर फलाही नामक पेड़ है, वहां पर तुम्हारा बेटा गुग्गा राणा धरती में छिप गया।

इतना सुनते ही रानी बाच्छल ज़ोर–ज़ोर से रोने लगी।

बाच्छल ने सोने की पालकी तैयार करवाई। चार कहारों ने उस पालकी को उठाया। रहीमू माली और बाच्छल माता पहाड़ी की ऊंची जगह पर पहुंच गए जहां गुग्गा मल धरती में छिप गया था।

रहीमू माली ने हाथ जोड़कर बाच्छल माता को कहा कि इस जगह पर छिपा है तेरा गुग्गा राणा।

माता बाच्छल ने गुग्गा राणा के सिर की पगड़ी के ऊपरी हिस्से को, जो धरती से बाहर था, अपने सीने से लगाया और रोती हुई अपने घर वापस आ गई।

जे जाणदी बेटा एहड़ा होणा तिज्जो नी दिंदी मैं सराफ।
सुरियल राणी करदी वरलाप हत्थे मैहंदी पैरे मैहंदी
कंगण रह गया बाहीं दे नाल।
जे मैं जाणदी साहबा, ऐसी होणी होणी

ता ब्याह नी करदी तेरे नाल।
मेरे हाण दीयां कन्यां कुआरियां
रैहंदीयां मापेयां दे देस।
याणे दी नी मरै मां, बुढड़े दी नी मरै जोरो
याणिया बरेसा किसी दे करम न जलेयो।
रूखां बाझ नी सजदे गौं।
पुत्तां बाझ नी रैहंदे नौं।

सुरियल– याणियां वरेसा मेरी जोड़ी बछोड़ी तोड़ी नागर जैसी बेल
न कोई द्योर न कोई जेठ किस तरह होणा गुजरान।
सस्सू वैरनी या ता मेरिया जोड़िया मला
या खड़िया जो मार तलवार।

बाच्छल– जे बहुए ज्यूंदा होंदा ता मैं आण मिलांदी
मरेया नी औंदा कोई
पीर पकंवर मौतीं हारे एह्थी नी रेहा कोई।

माता बाच्छल कहने लगी कि यदि मुझे पता होता कि ऐसा होने वाला है तो तुम्हें कभी भी श्राप नहीं देती।

उधर गुग्गा राणा की रानी सुरियल यह सब सुन कर विलाप करने लगी। अभी तक उसके हाथों और पैरों में शादी की मेहंदी की छाप थी। शादी का कंगन भी अभी तक हाथ की कलाई में ही बंधा था।

सुरियल ने कहा – अगर मैं जानती कि मेरे साथ ऐसी घटना घटने वाली है तो शादी नहीं करती।

मेरी आयु की सभी लड़कियां कुंवारी हैं और अपने माता–पिता के साथ रह रही हैं।

बच्चे की माता की मृत्यु न हो, बूढ़े व्यक्ति की पत्नी की मृत्यु न हो। किशोरावस्था में किसी लड़की की किस्मत न फूटे। वृक्षों के बिना गांव सुन्दर नहीं लगते। पुत्रों के बिना वंश का नाम नहीं रहता। सुरियल अपनी सास बाच्छल को कहने लगी कि अल्प आयु में ही मुझे मेरे पति गुग्गा राणा से अलग कर दिया जैसे कि नागर बेल तोड दी गई हो। मेरा न कोई देवर है न ज्येष्ठ, अब पूरी उम्र कैसे गुज़ारूंगी।

उस ने अपनी सास से कहा कि हे दुश्मन सास! या तो मेरे पति को मुझसे मिलाओ या फिर मुझे खड़े–खड़े तलवार से काट दो।

बाच्छल ने सुरियल को उत्तर दिया– हे बहू ! यदि गुग्गामल ज़िंदा

होता तब तो मैं उसे तुम्हारे साथ मिला देती लेकिन मरकर कोई भी वापस नहीं आता। बड़े–बड़े पीर पैगम्बर भी मौत से हार गए। यहां पर कोई भी अमर नहीं रहा।

हत्थ रूमाल कढ कसीदा कर मन परचौआ
किस नूं रूमाल सस्सू किस नूं कसीदा चले गे पैहनण हार।

पिच्छैं लै पीहड़ा अग्गैं पवन चरखा ते कत नरमें दा सूत
प्योके नी कतेया सौहरे नी कतणा लग्गै छतरी चुहाणा जो लाज।
सद बलायो नगरा दीया नैणी रजिया
तुआर मेरा सारा सुहाग
मैं वी रंडी सस्स वी रंडी रंडा मारूए दा देस।
पैहला सुहाग सिर दा चक्क तुआरेया
सस्सूं रखेया पटारिया मंझ पाई।
कन्ने दीये बालिये हत्थ दिखेयां लांदी, रजिये नैणी
एह मेरियें माऊं पाईयां
नक्का दिया बेसरा हत्थ दिखेयां लांदी
एह मेरे मामे पाईयां।
गला दा हार गुग्गेमल पाया इस नूं लेयो उतार।

बाच्छल ने सुरियल को कहा– अपने हाथों से रूमाल पर कसीदाकारी करो जिससे तुम्हारा मन बहल जाए और समय भी कट जाए।

सुरियल ने सास को उत्तर दिया, हे सास जी! किस के लिए रूमाल बनाया जाए, किसके लिए कसीदाकारी की जाए, इसके पहनने वाले तो चले गए।

फिर बाच्छल सुरियल को कहती है– पीहड़े पर बैठ कर आगे चरखा रख और चरखे पर नरमे (रूई) का सूत कात।

सुरियल ने बाच्छल से कहा कि मैंने न मां–बाप के घर चरखे से सूत काता और न मैं ससुराल में कातूंगी। ऐसा करने से चौहान (गुग्गामल) का अपमान होगा।

सुरियल ने नगर की नाईन रजिया को बुलाया और अपना सुहाग का शृंगार उतारने को कहा और बोली मैं भी रंडी (विधवा) हो गई तथा मेरी सास भी विधवा हो गई। इस प्रकार सारा मारू देश बेसहारा हो गया।

नाईन ने सबसे पहले सुरियल के सिर से चाक उतारा, सास (बाच्छल) ने उसे पिटारी में रख दिया।

जब नाईन सुरियल के कान की बालियां उतारने लगी तो उस ने कहा कि इनको हाथ मत लगाना। ये बालियां मेरी माता ने मुझे दी हैं। इसी तरह नाक में धारण की हुई नथनी को भी न उतारना क्योंकि यह मेरे मामा ने पहनाई है। गले का हार गुग्गामल राणा ने पहनाया है, इस को उतार लो।

गैहणा पत्ता सब कुछ उतारेया, कित्ता रंडिया दा भेस
चढ़ चबारे सुरियल रोऐ घर–घर कूक सुणायै।
कूक मारी सुरियल राणियें थर–थर कम्बे मारू दा देस
सामणा महीनै बादल गरजे, बिजलीयें लस–पस लाई।
किस दी बेटी किस दी जाई बरमा बिजलिये क्या भैणे तेरा नौं।
ब्रह्मे दी बेटी जसोदा दी जाई सर्व सुहागण मेरा नौं।
दक्खण बरसेयां उत्तर बरसेयां भैणे
मारूयें नी पौए तेरी बूंद।
मींह बरसावां भैणे गऊआं चुगदीयां हरा घास।
कौन तेरा मारूएं मरेया किस दा करदी तू सोग।
ना ता भैणे मेरा कोई मारूएं मरेया
न किसी दा करदी मैं सोग
मेरा गुग्गामल राणा होया लोप।
चारै कुंठ भैणे तू फिरदी।
मेरे राणे जो ल्यायां टोल़।

सुरियल ने अपने सारे आभूषण उतार कर विधवा का रूप धारण कर लिया और अपने महल की छत पर चढ़कर रोने लगी जिस के क्रन्दन की आवाज़ सभी घरों में सुनाई देने लगी।

सुरियल के ज़ोर–ज़ोर के क्रंदन से मारू देश कांपने लगा। श्रावण मास में आसमान में बादल गरजे और आसमानी बिजली भी खूब चमकी।

जब आसमानी बिजली लस–पस कर चमकने लगी तो सुरियल ने उससे पूछा कि बहन तू किसकी बेटी है, कौन तेरी मां है तथा बेटी तेरा नाम क्या है ? बिजली सुरियल से बोली– मैं ब्रह्मा की बेटी हूं तथा यशोदा मेरी मां है, सर्व सुहागण मेरा नाम है।

सुरियल ने बिजली से कहा कि– हे बहन ! तुम दक्षिण दिशा में बरसना, उत्तर दिशा में बरसना परन्तु मारू देश में एक भी बून्द नहीं बरसाना।

बिजली ने सुरियल को उत्तर दिया कि हे सुरियल बहन ! पानी तो बरसाना ही पड़ेगा क्योंकि गऊएं हरा घास खाती हैं, पानी के बिना हरा घास

नहीं होगा। बिजली ने सुरियल के वेश को देखकर उससे पूछा कि—मारू देश में तेरे परिवार में किस की मृत्यु हुई, जिस कारण तू शोकग्रस्त है।

सुरियल बोली— हे बहन बिजली ! मेरे परिवार में मारू देश में किसी की मृत्यु नहीं हुई। न ही मैं किसी का शोक मना रही हूं, परन्तु मेरा गुग्गामल राणा (पति) कहीं छिप गया है। हे बहन बिजली ! तेरी नज़र चारों धामों में जाती है, तू हर जगह सब कुछ देख लेती है, तू अपनी पैनी नज़र से मेरे राणे को ढूंढ निकाल।

मैं क्या जाणा भैणे केहड़िया नुहारी गुग्गा मल तेरा
नीला घोड़ा नरियां दा जोड़ा उप्पर पतला सुआर।
चारैं कुंठ ता भैणे मैं फिर आई पर नजरी नी आया
गुग्गामल तेरा।
अम्बर लस्केयां धरती वी परखेयां उतर जायां प्याल़।
अम्बर लस्की धरत फट गई उतर गई प्याल़।
फिरदी—घिरदी बिजल प्याल़ पुरी जांदी
पहुंची खवाजे दे पास
गुग्गामल चौपड़ खेहलै खवाजे दे नाल।
खवाजा पुछदा भौणे बिजले किह्यां करी औण तेरे होये।
मारूए अंदर राणी सतवंती सुरियल
रोई—रोई करदी वरलाप, उस दा राणा होया लोप
उस नूं टोलदी मैं आई।

बिजली ने सुरियल से पूछा-- सुरियल बहन ! मैं क्या जानूं कि तेरे गुग्गामल राणा की शक्ल—सूरत क्या है ?

नीले घोड़े पर एक पतला सा सवार विराजमान है और उसके साथ नरियों का एक जोड़ा है, वही गुग्गामल राणा है।

विजली ने सुरियल को कहा कि मैंने चारों लोकों में घूम कर अपनी पैनी नज़र से गुग्गा राणा को ढूंढा परन्तु वह कहीं भी नजर नहीं आया।

सुरियल ने बिजली से कहा— तू आसमान में चमक कर तथा धरती के चप्पे--चप्पे पर अपनी तीक्ष्ण नज़र से गुग्गा राणा को ढूंढना। इसके साथ ही पाताल लोक में भी उसे ढूंढना।

अब घूमती—फिरती बिजली पाताल लोक में पहुंच कर जलराज ख्वाजा के पास पहुंची जहां गुग्गामल राणा ख्वाजा के साथ चौपड़ (शतरंज) खेलने में व्यस्त था। ख्वाजा ने बिजली बहन से उसके वहां आने का कारण पूछा। उत्तर देते हुए बिजली ने ख्वाजा को कहा कि मारू प्रदेश की रानी

सतवंती सुरियल का रो–रो कर बुरा हाल हो गया है। उसका पति गुग्गा मल राणा लोप (गुम) हो गया है। उसको ढूंढती हुई मैं यहां पर आई हूं।

राणे ता बिज्जले मैं न देओआं चौपड़ खेहलै मेरे नाल
जो मंगै मैं तैनू बिज्जले देओआं राणे ना भेजां मैं तेरे नाल।
उपला मंडल सुक जायेगा सुकी जाहंगे नदियां दे नीर
सुक जायेगा तेरा समंदर मैं ना बरसां इक नीर।

हत्थ जोड़ के खवाजा बोलदा
भार्त मन लै मेरी इक बार
नौ दिन मैं राणे भेजगा, फेर रहेगा मेरे नाल।

बिज्जल बोलदी भार्त तेरी मणजूर
राणे भेज मेरे नाल।

अग्गै–अग्गै बिज्जल, पिच्छै नीले दा स्वार
पहुंचे मारूएं देस।

सुरियल राणी डर के रहिए इस परमात्मा ते
जेहड़ा जोड़ियां लैंदा बछोड़
चरना रहिए इस भगवान देयां
जिन्हें बिछड़ा मिलाया संजोग।

गुग्गामल राणा मारूएं आया
राणियें संगारेया सभ सुहाग।

ख्वाजा पीर ने बिजली को कहा– हे बिजली बहन ! मैं राणा को वापस नहीं भेजूंगा क्योंकि यह मेरे साथ शतरंज खेलता है। इसके अतिरिक्त तेरी जो भी मांग होगी, उसको पूरा कर सकता हूं परन्तु राणा को तेरे साथ नहीं भेजूंगा।

नाराज बिजली ख्वाजा से कहने लगी –यदि मैं बरसूंगी नहीं तो ऊपर का मंडल (धरती लोक) सूख जायेगा, सारी नदियों का जल सूख जायेगा और तुम्हारा समुद्र भी सूख जायेगा जिस पर तुम्हें बड़ा नाज़ है।

ख्वाजा फिर हाथ जोड़ कर बिजली से कहने लगा – हे बिजली ! तू एक बार मेरी शर्त मान ले कि वर्ष में राणा को मैं सिर्फ नौ दिन के लिए तुम्हारे पास भेजूंगा। शेष दिनों के लिए वह मेरे पास ही रहेगा।

बिजली ने ख्वाजा से कहा कि तुम्हारी शर्त मंजूर है। अब गुग्गामल को मेरे साथ भेजो। पाताल लोक से आगे–आगे बिजली चली और पीछे नीले घोड़े पर सवार हो गुग्गा राणा। वे दोनों मारू देश पहुंचे।

बिजली बोली : सुरियल रानी इस भगवान से डर कर रहना चाहिए जो जोड़ियों (पति–पत्नी) में बिछोड़ा डालता है। उस परमपिता परमेश्वर के चरणों में ही रहना चाहिए जिसकी असीम कृपा से, संयोग से बिछुड़े हुए सुरियल–गुग्गाराणा पति–पत्नी आपस में मिले। अब गुग्गामल राणा अपनी पत्नी सुरियल के पास पहुंच जाता है और नौ दिनों तक वहीं रहता है।

जब गुग्गामल राणा मारू देश में पहुंच गया तो रानी सुरियल ने उसके आने पर अपना श्रृंगार किया और सब जेवरात धारण कर लिए।

राणा सुरियल को कहता है :–

सुबह उठ कर चौका लगाणा
जब तक चौका गिल्ला, रेहंगा मैं तेरे पास
चौका सुक जायेगा फेर उतर जाऊंगा मैं प्याल
गोलियें मारी चुगली
माता सुरियल कीह्दा करदी सुहाग।
बाच्छल गई सुरियल दे रणवासां विच
बाच्छल पुछदी सुरियल नू
बहुए मैं वी रंडी तू वी रंडी
तू कीह्दा करदी सुहाग।
सस्सू तू वी रंडी, रंडा मारूएं दा देस
मेरा राणा मेरे पास
बहुए मैं नी करदी
इसा गल्ला दा बुसास।
सस्सू कपल गाई दे गोहे दा चौका पौआं
राणा देयां तैनू मलाई।
कपल गऊ दे गोहे दा चौका पाया
परगट होया नीले दा स्वार।

गुग्गा राणा ने सुरियल को आदेश दिया कि अपने घर के पूजा स्थान पर कपिला गाय के गोबर से चौका लगाना, जब तक चौका गीला रहेगा तब तक मैं तेरे साथ रहूंगा। जब चौका सूख जाएगा तो फिर पाताल लोक में चला जाऊंगा। इस प्रकार गुग्गा राणा हर वर्ष रक्षा बन्धन के दिन से गुग्गा नवमी तक सुरियल के पास आता।

गुग्गा नवमी के दिनों में ही यह सब देख कर नौकरानी ने माता बाच्छल से चुगली की कि सुरियल किस की खातिर सुहाग करती है।

नौकरानी की चुगली से बाच्छल सुरियल के महल में गई और पूछा, हे सुरियल। मैं भी विधवा, तू भी विधवा फिर ये शृंगार सुहाग किस की खातिर?

सुरियल ने सास से कहा तू भी विधवा, सारा मारू देश भी रंडा अर्थात् बेसहारा राज विहीन परन्तु मेरा गुग्गा राणा मेरे पास है।

बाच्छल को सुरियल की बातों पर विश्वास नहीं हुआ। फिर सुरियल ने अपनी सास से कहा– कपिला गऊ के गोबर का चौका लीप कर मैं तुम्हें गुग्गा राणा से मिला दूं।

इस प्रकार सुरियल ने कपिला गऊ के गोबर का चौका लगाया तो गुग्गा राणा नीले घोड़े पर सवार होकर प्रकट हो गया।

हत्थ जोड़ के बंदगी कीती माता दे चरणे सीस दिया नवाय।
सुणो भैणो, सुणे मारूए दा देस पुतरां नू न देयो सराफ
डरिये इस परमात्मा ते जेह्ड़ा दिंदा होर दा होर बणाई।

गुग्गा राणा प्रकट हुआ। उसने हाथ जोड़ कर अपनी माता बाच्छल को नमस्कार किया तथा चरणों में शीश झुका दिया। अंत में बाच्छल के मुंह से सब को शिक्षा के रूप में ये शब्द निकले।

हे बहनो ! सुनो, सारा मारू देश सुनो, अपने पुत्रों को कभी भी कोई औरत श्राप न दे। इस भगवान से सदा डर कर रहो जो होनी को अनहोनी में और अनहोनी को होनी में बदल देता है।

❐

कांगड़ा जनपद में गुग्गा गाथा

संसार चन्द प्रभाकर

भारत की शस्य–श्यामला धरती पर अनेक पीरों–फ़कीरों, साधु–सन्तों एवं ऋषि–मुनियों ने जन्म लेकर विद्वत्ता के साथ–साथ अपनी कठिन तपस्या और योग–साधनाओं द्वारा अध्यात्मवाद की चरम सीमा को प्रतिबिंबित किया। पिंड और ब्रह्मांड, आत्मा तथा परमात्मा के दिग्दर्शन अपनी अलौकिक शक्तियों और योग–साधनाओं द्वारा करवा कर अनेक अलौकिक चमत्कारों से संसार के लोगों को अचंभित कर दिया। ये पीर–फकीर, साधु–संत और ऋषि–मुनि अपनी योग साधनाओं की पूर्ति हेतु भारत भू–भाग की रमणीक, मनोरम एवं शांत स्थली हिमाचल प्रदेश में आए।

गुग्गा जहर पीर, राजा भर्तृहरि, राजा रसालू, राजा गोपीचन्द, मछन्दर नाथ, बाबा सिब्बो, बाबा बालकनाथ, चर्पट नाथ आदि अनेक चमत्कारी पुरुषों ने भारत में जन्म लेकर अपनी योग साधना की पूर्ति हिमाचल प्रदेश के शांत वातावरण में की और इस प्रदेश के जन--जीवन पर इस सम्प्रदाय का इतना प्रभाव पड़ा कि इस प्रदेश के अधिकांश लोग इन के अनुयायी बन गए। इसी सम्प्रदाय के प्रभाव के अंतर्गत हिमाचल प्रदेश में दो उपजातियों नाथ (जोगी) तथा सिद्ध का उदय हुआ। नाथ जन्माष्टमी से सात दिन पूर्व गुग्गा गाथा गाकर गुग्गा जहर पीर की आराधना करके अपनी जीविका उपार्जन करते हैं। डोम जाति के लोगों पर भी सिद्ध नाथ सम्प्रदाय का प्रभाव पड़ा। लोग नए संवत् के आने पर ढोलरू गीतों के साथ अनेक युग गाथाओं एवं गुग्गा गाथा को सुना कर अपना जीविकोपार्जन करते हैं। इस क्षेत्र (हिमाचल प्रदेश) में गाई जाने वाली गुग्गा गाथा गुरु गोरखनाथ के जन्म से आरम्भ होती है। इस गाथा को दो व्यक्ति वारी--बारी दोहरा का गाते हैं।

गुरु गोरखनाथ का जन्म

सुबह होया सवेरा होया
सिव जी ने भांख बजाया

नैं परमात्मा जाणैं
सिव जी ने भांख बजाया, वे आं ऽ
सिर पर धरियां टोकरियां नैं
गोहटुआं बीणन जाणां नैं परमात्मा जाणैं
बन खंडियां जे आइयां वे आं ऽ
सुबह होया सेवरा होया
बालक किसदा रोया नैं परमात्मा जाणैं
बालक किसदा रोया, वे आं ऽ
नां मैं जमिया नां मैं जाया
आपे निरंजन दीया वे परमात्मा जाणैं
ओ आपे निरंजन दीया वे परमात्मा जाणैं वे आं ऽ
सिरिया कुम्हारिया सिर पर धरियां टोकरियां जी–ए
कोछड़ बालक नीं परमात्मा जाणैं
मुड़ि वे घरां जो आइयां वे परमात्मा जाणैं
औउंदियां सस्सु पुच्छण कित्ता
बालक किसदा रोन्दा नीं परमात्मा जाणैं
बालक किसदा रोन्दा नीं परमात्मा जाणैं, वे आं ऽ
औखिऐ घाटी बिखड़ा पैंडा
गोदिया बालक याणा नीं परमात्मा जाणैं
ए गोदिया बालक याणा नीं परमात्मा जाणैं
धन मेरे करमो, धन नसीबो
ओतर दे घर पुत्तर नीं परमात्मा जाणैं
ओतर दे घर पुत्तर नीं परमात्मा जाणैं
सुबह होया सवेरा होया गोरख नाम धराया
नैं परमात्मा जाणैं
नी गोरखनाथ धराया–नी परमात्मा जाणैं वे–आं ऽ
सिरिया कुम्हारिया पालिया, गुरु गोरख नाथ धराया
नीं परमात्मा जाणैं
गुरु गोरखनाथ नाम धराया–वे–आं ऽ
ऐ मण की ऐ तेरी गोदड़ी
ऐ ध्यान की ऐ यह सूइयां नीं परमात्मा जाणैं
आप निरंजन सीया वे परमात्मा जाणैं

आप निरंजन सीया, वे–आं ऽ
ऐ दस मण दी तेरी गोदड़ी
नौ मण धागे लगदे नीं परमात्मा जाणैं
ऐ नौ मण लगदे धागे, वे आं ऽ
कन्न छेदाए मुन्दरां पाइयां
घर–घर अलख जगाया नीं परमात्मा जाणैं
घर–घर अलख जगाया, वे आं ऽ
कच्छा पाई झोली ऐ गुरुएं
हाथें चिमटा लीया नीं परमात्मा जाणैं
बाच्छल दे घर आया, वे आं ऽ
सट पलट माया बाच्छल जाणी
धन गुरु तेरी माया
थाल भरिया मोतियां दा गुरुए जो भेंट लियाई
नीं परमात्मा जाणैं
औउंदा गुरु सीस दिन्दा, पुत्तर–बन्ती मेरी माई
नीं परमात्मा जाणैं ऽ।।

इस गाथा से यह पता चलता है कि गुरु गोरखनाथ का जन्म शिवशक्ति द्वारा हुआ और यह जन्म से ही अलौकिकता से युक्त थे। इन का पालन पोषण सिरिया कुम्हारी जो निस्सन्तान थी उस के द्वारा हुआ। गुरु गोरखनाथ अपने आठ और नाथों को लेकर मारू (मारवाड़) देश के कजली वन में आए तथा वहां साधना के लिए अपना धूना रमाया। बाशला फल प्राप्त करने उन के पास गई। इस गाथा में बाशला का फल प्राप्त करना इस प्रकार गाया जाता है।

वाशल द्वारा फल प्राप्त करना

कजली बन में ले गुरु गोरख पुनियां, वे आं ऽ
हां जी ए सुकियां बागें वे ओ डेरे लाए, वे आं ऽ
हां जी सुकियां बागे वे कमल धाए वे मेरे गुरुआ
हां जी सुकियां खूहेयां वे ओ नीर आए, वे आं ऽ
हां जाणियां–जाणियां ओ छोरो गोलियो, वे आं ऽ
हां, हत्थ वे जिन्हां दे हां ए सोने किंगरियां, वे आं ऽ
हां जी वे मुख में नाद वे गुरुएं बजाया, वे आं ऽ

सैह कुण चाहिए हां वे माइए बाछले, आं
हां जी ये पूरे सतगुरु वे ओ बागें आए, वे आं ऽ
हां थाल भरिया ओ हीरे मोतियां माई बाछला
हां जी वे साधुए जो भेंट वे लै के आईये, वे आं ऽ
क्या भला करने हां ए हीरेयां मोतियां माई बाछला
हां जी ए साधू वे जो चुड़किया दे माई ए भुक्खे, वे आं ऽ
नां कुछ जम्मिया, हां ए, न कुछ जाया ए मेरे गुरुजी
हां जी ए ओतर पिंडा वे ए गुरु जी मेरा, ए आं ऽ
केस बुहारियां हां ए माइए लायां ओ, माई बाछला
हां जी ताईं भला मिलदे वे ओ पुत्तर फल, वे आं ऽ
हां बारह बरसां हां ए सेवा करियां वे माई बाछला
हां जी तां भला मिलदे वे ओ पुत्तरां फल, वे आं ऽ
पलणां पायां, हां वे ओ सेता लायां हो माई बाछला
हां जी ऐ ताईं भला मिलदे वे ओ पुत्तरां फल, वे आं ऽ
हां नौ सौ जोगी, ओ नौ सौ भंगी ओ माई बाछला
हां जी नौ सौ दूधा वे ओ माइए धारी वे आं ऽ
ओ पुत्तर बन्ती ओ माइए होयां वो माई बाछला
हां जी पुत्तर–बन्ती ओ माइए होयां, वे आं ऽ

लोक गाथा के अनुसार :–

मंगल वारें परगट होईएं भाक्ति नाम रखाया।
दक्खण पूरब संघ चढ़ि आऊंदे दर विच आसन लाया।
लै परदखणा फिरन चफेरें दर विच आसन लाया।।

गजनी के राजा बलदेव की लड़कियों के प्रति क्रूरता की गाथा इस पंक्ति में है :–**'गढ़ गज़नी दा बलदेव राजा धीया नूं रखदा नाईं'**

अर्थात् राजा बलदेव बेटियों को जान से मार देता था। एक बार राजा बलदेव अपने शत्रुओं का दमन करके बारह वर्ष के उपरान्त जब गजनी वापस लौटा तो वह रास्ते में महल के पास बाशला और काशला दोनों बहनों को देख कर कहने लगा :–

राजा : केहड़ा लड़कियो तुहाड़ा भाहर ग्रां है
किस राजे दी जाई?

लड़कियां : गढ़ गजनी दा भाहर ग्रां है,
बलदेवे दी जाई।

इतणी गल्ल सुणी राजे ने,
लई ए तेग उठाई।
कोलों उठ बजीर प्यारा,
चिट्ठी कड दिखाई।
चिट्ठी बाची बलदेवे ने,
लईयां गोद बिठाई।

इस प्रकार जब राजा ने दोनों बेटियों को अपनी गोदी में बैठाया तो लड़कियां कहने लगीं :–

लड़कियां : जे तूं साड़ा धरमी बावल,
पट दी पींग पुआ दे।
राजा : कुथूं दे पट दियां मंगाई,
कैहदी पींग पुआं मैं
पच्छम पट मंगुआ देवां मैं
पिप्पल पींग हुलारे
पींगां झूटदियां इक्क बाशला
दूजी काशला भैण वे हां ....
इक्को दईयां झूटदियां मेरी माता दे दरबार
सदा शिव दुर्गा दे अवतार।
सिर पर सूईयां चादरां सोवन
गल फुल्लां दे हार
ठंडियां गुफां दियां छावां
ऊच्चे पिप्पल पींगां पईयां
सोहल पंघड़ू पर दियां ल्हासां
झूटन वारो–वार।

यह गाथा बाशला और काशला के बचपन व यौवन से सम्बन्धित है। इसके उपरान्त गजनी के राजा बलदेव ने इन दोनों बहनों का विवाह मारवाड़ (राजस्थान) की रियासत दद्रेहरा (दुधन्हेरा या दुनेरा) के राजा जेउर (देव राजा) से कर दिया। लम्बे समय तक ये दोनों बहनें निस्सन्तान रहीं। इस बात का प्रमाण गाथा की इन पंक्तियों में मिलता है :–

न्होई धोई इक्क दिन राणियां आरसिया मुख लाया,
कालड़ियां केसां दे धौलड़े होए केसां रंग बदलाया।
राणी रोई ए ..... ?

रानी के रोने की बात सुन कर राजा महल को आया और पूछने लगा :–

खुलियां तणियां पैर प्यादें राजा मैहलां की आया

राजा : **सुखे दी रोंगी राणी तां सड़गा मारी दुखे दी रोंगी तां पईएं पुजांगा।**

बाशला : **कदू तां होणा राजा पुत्तरियां सौतरियां, कदूं खल्हाणे गोदा जाए ?**

राजा : **कर्मां नीं लिखे साड़े गोदा नयाणें,**
कुथूं दे खल्हाणें गोदा जाए ?
हटियां हुन्दे राणी मैहंगे खरीददे
पुत्तर नीं मिलदे उधारे
सद्द के पण्डत बाशला पुछदी
सांजो आंसिया दा कोई जतन बता
पोथी बांची पण्डत बोलदा
गोरख टिल्ले जा

पण्डित की इस बात पर बाशला गोरख टिल्ले जाकर बारह वर्ष तक तपस्या करती है। बाशला की तपस्या से जब गोरख टिल्ला हिलने लगता है तो गुरु गोरख नाथ के चेले उस के हिलने का कारण पूछते हैं। गोरख नाथ जी कहते हैं :–

भगति संपूरण हो गई चेलियो बाशल माई'
गोरख चल्लिया टिल्लियों गहरी नाद बजाई
तिन सौ सट्ठ चेला चल्लिया गासें धुंध मचाई
डरदे लोकी भाहर नगर दे एह के आफत आई?
मैहल चड़ी राणी बाशल दिखदी एह गुरु मेरे आए
सन्दल बाग पिपलां दे हेठें संतां आसन लाए
फुल पताशे बाशल पाए गुरां दे पासें आई
अग्गें गुरु बोलदे कौन खड़ी मेरी माई ?
फलां दे कारन आईयां गुरुआ दे फल हमरे ताईं
बेवक्ता फल कोई न पाए पैहली किरन, आई

बाशला को जब गुरु गोरख नाथ ने सुबह फल देने को कहा तो वह बड़ी प्रसन्न हुई और घर लौट आई और यह बात अपनी छोटी बहन काशला से बतलाई। काशला बड़ी चालाक थी। जब सायं काल हुआ तो वह अपनी बड़ी बहन के पास गई और कहने लगी :–

काशला : दियां नी भैणे वस्त्र अपणे पीर मनामण जाणा

बाशला : एह लै चाबी खोल पटारू लई लै नौआं पुराणा

काशला : नौए वस्त्र रैहन पटारू मैं तेड़े दा लैणा

बाशला ने अपनी बहन काशला की यह बात सुन कर अपने वस्त्र उतार कर उसे दे दिए और काशला उस के वस्त्र पहन कर आधी रात के समय ही गुरु गोरख नाथ के पास चली गई। उसे देख कर गुरु गोरख नाथ बोले :–

गुरु– **'अद्दिया राती पक्कें धरातें तू कौन खड़ी मेरी माई ?'**

काशला– फलां दे कारन आईयां गुरुआ दे फल हमारे ताईं

जब गुरु गोरख नाथ ने उसे सुबह आने की बात कही तो काशला ने कहा कि पण्डित ने फल लेने का यही मुहूर्त बतलाया है। उसकी यह बात सुन कर गुरु गोरख नाथ ने अपनी झोली में हाथ डाल कर उसे जौ के दो दाने दे दिए जिस के खा लेने से कालान्तर में काशला के दो पुत्र अर्जुन और सुर्जन पैदा हुए।

सुबह होने पर बाशला भी फूल और बताशे थाली में डाल कर गुरु गोरख नाथ के पास फल लेने जाती है। गोरख नाथ उसे कहते हैं कि तू अभी तो फल ले कर गई। तो बाशला कहती है 'वह मेरी छोटी बहन होगी'। गुरु गोरख नाथ इस बात को सुन कर अचम्भित रह जाते हैं और अपनी झोली में पुनः हाथ डालते हैं तो उन्हें कोई फल नहीं मिलता। वह चेलों से सलाह करते हैं और विधि माता के पास जाते हैं। वहां से भी उनको नकारात्मक उत्तर मिलता है। ब्रह्मा, विष्णु और शिव के पास जा कर भी उन्हें बाशला के लिए फल नहीं मिलता और अंत में वह पाताल लोक में बासुकी नाग के पास जाते हैं तो बासुकी नाग उन्हें कहता है कि जिस प्रकार का भी फल लेना है, ले जा सकते हो तब गुरु गोरख नाथ कहते हैं :–

जे तूं फल देणा साकी तां
सज्जे पौए दा, नाग दई दे
रोशन चार चफेरे दा

गोरख नाथ जी की इस बात को सुन कर बासुकी नाग कहता है कि ऐसा करने से पाताल पुरी में अंधेरा हो जाएगा परन्तु गुरु गोरख नाथ नहीं मानते और मंत्र द्वारा नाग को गुग्गुल (धूप) बना लेते हैं।

अच्छत मारे गुरु गोरख नाथां,
गुग्गल गडियां नाग बणाया
अपणी झोली बिच पाया'
मार फंकारे बान्दी नागण आई,
कित्थे जाणा राजिया तू जान बचाई
तां अच्छत मारे गुरु गोरख नाथां,
गुग्गल गडियां नागणी बणाई।
नागणा : मैं भीतल होईयां ते मेरी पेश न कोई
मेरी जोड़ी न खण्डायां

गुरु गोरख नाथ उन गुग्गुल की गट्ठियों को ले कर चले आए और फल के रूप में एक गट्ठी बाशला को दे दी तथा पीस कर खाने को कहा। बाशला फल को ले कर घर चली आई। उस ने शिला पर गुग्गुल को पीसा तथा पानी के साथ खा लिया और वह शिला नदी में फेंकने के लिए एक डोम की पत्नी के पास दी।

रास्ते में उस ने शिला का शेष गुग्गुल चिह्वा से चाट लिया और शिला समुद्र में फेंक दी। वह शिला जल घोड़ी ने खाई जिस से नीला घोड़ा पैदा हुआ जो बाद में गुग्गे की सवारी बना। वह डोम की पत्नी जिस ने शिला को चाट लिया था, उस से बाबा कैलू की उत्पत्ति हुई।

गुरु गोरख नाथ ने दूसरी गुग्गुल की गट्ठी गढ़ बंगाल के राजा सिरी चन्द की रानी को दी। वहां उसे सिलियर नाम की लड़की पैदा हुई जो बाद में गुग्गे की पत्नी बनी। इस घटना के उपरान्त भी बाशला के बच्चा न हुआ। गुग्गा बारह मास तक बाशला के गर्भ में रहा। यह देख कर राजा ने बाशला को जंगल में छोड़ने की आज्ञा दे दी। बाशला का रथ जब जंगल में पहुंचा तो उस को वहां छोड़ कर रथवाहक कुछ देर विश्राम करने लगा। वहां एक बड़े सांप ने रथ वाहक और घोड़ों को काट खाया और सांप बाशला की ओर बढ़ा। बाशला उसे देख कर रोने लगी तो उस के पेट से गुग्गा बोला, 'माता तू क्यों रो रही है?' पेट से आई आवाज़ को सुन कर बाशला बोली 'तू कौन शै है जो मेरे पेट से बाहर नहीं आती जबकि मुझे तेरे लिए देश निकाला हो चुका है और मैं अब अपने मायके जा रही हूं।

गुग्गे ने कहा, माता तू घर को वापस लौट क्योंकि मैं अपने नाना के घर पैदा नहीं होऊंगा। यदि ऐसा हुआ तो मैं नानकू कहलाऊंगा। जब इस

संसार से सूतक हट जाएगा अर्थात् कोई बच्चा जन्म न लेगा तो उस समय मेरा जन्म होगा'। पेट के अन्दर की ध्वनि को सुन कर बाशला वापस गोरख टिल्ला की ओर गई और उसने एक वर्ष तक पुनः गुरु गोरख नाथ की तपस्या की। गोरख नाथ ने बाशला को घर जाने को कहा। जब वह अपने महल की मण्डी (ड्योढ़ी) पर पहुंची तो गोरख नाथ ने ब्रह्माण्ड का सारा सूतक अपने हाथ पर थाम लिया तथा उसी क्षण गुग्गा का जन्म हुआ। मण्डी (ड्योढ़ी) में पैदा होने के कारण गुग्गा चौहान को गुग्गा "मण्डलीक" कहा जाता है। गुग्गा के जन्म की गाथा इस प्रकार गाई जाती है :–

गुग्गा का जन्म

ओ रैण विहाणै, ओ गुग्गा मल जन्मिया, वे–आं ऽ
हां जी चढ़दे धियाड़ें वे ओ भैण रोगला, वे–आं ऽ
आं खड़िया दुपहरां ओ लीला जन्मिया ए–आं ऽ
हां जी ए गरजा पइयां वे ओ समाने ए–आं ऽ
खबरा होइयां हां वे मासिया काछला, वे–आं ऽ
हां जी छातियां दब दई, वे मासी रोई वे–आं ऽ
आं ऽ टोपुआं सियान्दी ओ चोलुआं सियान्दी
रइये माई काछला
हां जी वे टोपुआं लै कर ओ मासी आई, वे–आं ऽ
आं ऽ ओ सोआ मण जैहर चीचुएं चाढ़ी लिया, वे–आं ऽ
दे दियां–दे दियां वे भैणे बालक वे–आं ऽ
हां जी ए बेदण भारी वे ओ भैणे होई वे–आं ऽ
ओ पूरियां सोतियां, ओ पके धरातें वे, ओ–आं ऽ
हां जी वो मासी पीयाले जो ओ भाइया गई वे–आं ऽ
आं छड़दियां भाणजा ओ छड़दियां मासिया वे–आं ऽ
हां जी ए धरम दी मासी वे ओ भाणजा, वे–आं ऽ
कदकणी मासी ओ कदकणा भाणजा वे–आं ऽ
हां जी ए कुण साखां जो ओ मासी लाइयां, वे–आं ऽ
हां पूरियां सोतियां ओ पक्के धरातें वे–आं ऽ
हां जी ए मासी पीयाले जो गई, वे–आं ऽ
हां जाई फिरादी ओ बासकी नागें, वे–आं ऽ
हां जी तुम्हारा जम्मिया ओ मारूएं बैरी, वे–आं ऽ

ओ बाई खरूणें हां वे, नागों चढ़ी आए, ए–आं ऽ
हां जी ए घट पर मारूएं, ओ कीती धाई, वे–आं ऽ
ढोल ढमाकियां हां वे भाइया नीलियां वे नीलियां
हां वे नागां दे पौन्दे वे ओ भाइया भारे, वे–आं ऽ
खबरां होइयां हां ए तकियर नागां दे–आं,
हां जी ए सारे नाग वे ओ मारूएं जान्दे, वे–आं ऽ
सौआ मण जैहरा हां वे तकियर पी लिया, वे–आं ऽ
हां जी ए घट पर मारूएं, ओ किती, धाई, वे–आं ऽ
टेढ़ियां तरेड़ियां हां वे घड़ोलू छाई लिया, वे–आं ऽ
हां जी ए मुंडी सिरे वो भाइया आई, वे–आं ऽ
जागणियां, चेतणियां हां वे भौह्र दे लोको, वे–आं ऽ
हां जी ए बालक लिया वो नागां छाई, वे–आं ऽ
ओ दैह्णे हाथें ओ भैणां रोंगला वे–आं ऽ
हां जी ए बाएं हाथें ओ वो मुंडी भाई, वे–आं ऽ
ओ सोआ मण जैह्रा हां वे राणे पी लिया वे छत्तरिएं
हां जी ए हड्डियां चबारी वे ओ नागें भाई, वे–आं ऽ
आं ऽ छड दे भणोइया ओ छड दे जीन्दियां वे आं
हां जी ए सुलियर भैणा वो ओ दीगां बियाई, वे–आंऽ।।

इस प्रकार इस लोक गाथा में गुग्गा की मौसी काशला गुग्गा को मरवाने की चेष्टा करती है। पहले वह अपने स्तनों पर ज़हर लगा कर दूध पिलाती है और जब वह अपने षड्यन्त्र में असफल हो जाती है तो पाताल लोक में जाकर नागों को गुग्गा के विरुद्ध उकसाती है। नाग मारवाड़ पर आक्रमण करते हैं परन्तु नीला घोड़ा उन्हें कुचल देता है और तकियर नाग (नागों का राजा) को गुग्गा पकड़ लेता है परन्तु तकियर नाग अपनी बहन सुलियर का विवाह गुग्गा से करने का आश्वासन देता है। इस पर गुग्गा तकियर नाग को स्वतंत्र कर देता है। इस गाथा में सुलियर का जन्म इस प्रकार गाया जाता है :–

सुलियर का जन्म

बारे समुन्दर राजा ए पारे समुन्दर राजा ए संजिया,
राजा ए संजिया ऽ
सुण संजिया राजा ए कन्या दा घर में ओणा नां ऽ

बारे समुन्दर राजा ए कन्या ए धर्मिया, राजा ओ धर्मिया
राणा ए संजिया, बलिहारी ए राम ए, जणमि ए, करड़े
मंगल बारे नांऽ
आं टिप्पण देखे बामण मुंडिया धरण राजा संजिया
आ जणमि ए करड़े बारे नां ऽ
ए सजनी बुलान्दा राजा पढ़ियां ओ पण्डता ओ राजा
ओ संजिया राजा ओ धर्मिया, आं ऽ
आ अम्मा नों करड़ी कन्या बापुएं करड़ी ए
भाइयां नूं करड़ी राजा संजी वे–आं ऽ
कन्या दी रासा वे जड़ाणीं णां ऽ
ऐ पतरियां देखे पंडत मुंडिया लड़ैन्दा राजा ओ संजिया
राजा ओ धर्मियां, सुण राजा ए तो कन्या जो दुख ऐ
घनेरा नां ऽ
बडड़ी होई कन्या बडेरी होई कन्या ए संजिया राजाओ
धर्मिया सुण राजा ए तो कन्यां दी सादी ए जड़ाणीनां ऽ
सदनी बुलान्दा राजा पढ़िया ओ पंडतां, ओ कुल दे
परोतां राजा ए संजिया, सुण राजा संजिया कन्या दी
सादी दे जड़ाणीनां ऽ
सदनी बुलान्दा राजा बाड्‌डी दे बेटे, ओ राजा ओ
संजिया,राजा ओ धर्मिया सुण राजा ऐ संजिया कन्या
जो रुखां कटाणां नां ऽ
सदनी बुलान्दा राजा ए तिरखाना दे बेटे ओ राजा ओ
संजिया राजा ओ धर्मिया, सुण राजा ए तो चन्दना की
चौकी ए बणाणीं नां ऽ
ए चन्दना की चौकी ये रामा रूपे दा गजुआ, रामा ए
सरपेया ओ अंग ओ मली मली न्होया ए–आं ऽ
सुलियर दा डोला ए राजा बिदा वे करान्दा,
राजा वे संजिया राजा वे धर्मिया, सुण राजा ए नैणा
भरी–भरी रोए नां ऽ।।

इस प्रकार इस गाथा में गुग्गा का विवाह गौड़ बंगाल में जन्मी राजा (सिरी चन्द) की कन्या जो तकियर नाग की बहन बताई गई है। उससे सम्पन्न हुआ। गुग्गा विवाह के उपरान्त बारह वर्ष तक अपने ससुराल गौड़ बंगाल में

ही रहे। उन के विरह में उन की बहन रोंगला विलाप करने लगी :–

कुथुआं ते उडियां हां ए कालियां बदलियां वे–आं ऽ
हां जी एक कुथुआं ते बरसिया वे ओ ठंडड़ा नीर, वे–आं ऽ
ए छातिया ते उठियां हां वे कालियां बदलियां, वे–आं ऽ
हां जी ए नैणां ते बरसिया वे ओ ठंडड़ा नीर, वे–आं ऽ
ए पौणां मैं पकड़ां हां वे पायां पटारियां, वे–आं ऽ
हां जी ए मरी तुद जाणां वे ओ मरुवै देस, वे–आं ऽ
ए जली–बली जायां हां वे मंगला वारा, वे–आं ऽ
हां जी ए तैं ई ऐ बछोड़ा वे ओ मेरा भाई, वे–आं ऽ
मंगल वारें हां वे भाइया बिछड़िया, वे–आं ऽ
ए जी ए कदीं घर ओणा वे ओ मेरे भाइये, वे आं ऽ
रुखां बाझां हां वे न बणदे गरामड़े आं
हां जी ए पुतरां बाझे न चलदे नाम वे–आं ऽ
ए कन्दां बाझां हां जी ए न बणदियां जोड़ियां ए–आं ऽ
ए सिरे दियां पुटदी भाइया मींडियां, वे–आं ऽ
हां जी ए लहएं आखर वे ओ भैणें पाए, वे–आं ऽ
ए इकसिया पालियां हां वे दुख–सुख लिखदी, वे–आं ऽ
दूइया पालिया वे ओ दिन्दी गाली, वे–आं ऽ
मरी भल जायां हां वे सुलियर भाबिए, आं ऽ
हां जी ए तैंई बिछोड़िया मेरा भाई, वे–आं ऽ
ए हाथें सोठियां हां वे ढाका धोतियां, वे आं ऽ
हां जी ए चिठियां लै कर वे ओ भाइयो भेजे–आं ऽ
ए जाई भला रमियां हां वे गोढ़ बंगाले, वे–आं ऽ
हां जी ए गिया नईं होन्दा वे ओ भाइया कोई, वे–आं ऽ
आं नदिया किनारे ओ हंसा झूरदे–आं ऽ
हां जी ए भैणा झूरे वे ओ भाइया तेरे, वे–आं ऽ
सिर दी पुटदी ओ भाइया मींडियां, वे–आं ऽ
हां जी ए लौहुएं आखर वो भाइया पाए, वे–आं ऽ
धरती छाई लइयो बासुकी नागां, वे–आं ऽ
मैं कियां आमां हां वे भैणें रोंगला, वे–आं ऽ
हां जी वे हीउएं भरियां वे ओ सैलियां धारां, वे–आं ऽ
ए सजनी बुलान्दी चन्द्रा सूरजा, वे–आं

हां जी वे हीउएं दिंग्गी वे ओ भाइया ढाली, वे–आं ऽ
ए भाई रिया, आई रिया हां वे ओ मेरा भाई, वे–आं ऽ
हां जी ए भरने सवारियां वे ओ मेरा भाई, वे–आं ऽ

इस प्रकार गुग्गा जहरपीर (वीर) मारवाड़ में वापस लौट आता है। इस लम्बे समय में गुग्गा के भाई अर्जुन और सुर्जन मारू देश (मारवाड़) पर अपना अधिकार कर चुके होते हैं। गुग्गा लम्बे सफर की थकान के कारण महल में आकर सो जाता है।

गुग्गा के आने का समाचार सुन कर एक वृद्ध ब्राह्मणी रोंगला के रोकने पर भी कच्ची नींद से जागृत कर देती है। ब्राह्मणी की गाय को अर्जुन–सुर्जन बनखड़ी से खदेड़ कर ले गए होते हैं। अपनी गाय को वापस दिलवाने हेतु वृद्धा गुग्गा से फरियाद करती है :–

हां लै हरी–हर जपदियां रे आं नाम धियान्दियां नां ऽ
भला कि हरी–हर जपदियां राजिया आज तेरा नाम ओ जी
छीरना सुखां हां–हां सुखां वो भाइयां बधाई, नां ऽ
भला कि कद घर ओणा ओ भाइएं आज मेरे ओ जी
बारह तां बरसें आ हां घर वो भाई मेरा आया नां ऽ
भला कि मारुएं बजदे ओ भाइया ढोल नगारे ओ जी
राणें ल राणें ठाकुर भाइया मानिया, नां ऽ
एभला कि ठाकर पूजा ओ भाइया अज करणीं–नां ऽ
ओ हुकम ले करदा हां–हां तेरिया वे भाइया मालियां जो
भला कि फुल्लां दे करंडू ओ भाइया भर के लियोणे ओ जी
ओ ले हुकम करदा हां–हां वे भाइया तेरिया झीरां जो
भला कि फुल्लां दे करंडू ओ भाइया गरम करणे ओ जी
हाथ में कटारा हां–हां भैणे वो विरधा ब्राह्मणिएं
भला कि विच परोली ओ बैठी आई, ओ जी
ओ ले चुप कर, चुप कर वे आं विरधा भैणे ब्राह्मणिएं
भला कि सुत्ते भाइए जो भैणें नींद घनेरी वे जी
हां वे कपला दे बदला रे हां–हां खुडिया भाइयां भैंसां नां ऽ
भला कि सोखा दिंग्गी आं भैणें तिज्जो गाई वे–आं ऽ
ओ लै टुंड मरोड़एं रे हां भाइया लींडके नां ऽ
भला कि मत्थ बिन्दा हो भाइया गऊ जा आणीं, वे आं ऽ
आ लै नौ मण दुधें हां–हां दस मण भाइया छाई नां ऽ

भला कि सुर्ग से आणनी ओ भाइया गऊ छुड़ाई ओ जी
उठदा ऐ राणा पुछदा सिरी खंड परोते, नां ऽ
भला कि खरियां जाची ओ भाइया आज जड़ाया, ओ जी
जाणा लैं हुंगा हां–हां ओणां न भाइया होसी नां ऽ
भला कि ओणा हुंगा ओ भाइया करमां पाई, ओ जी
ओ लै दैणे हत्थें रे हां दूएं बक्खें भाइया नां
भला कि दैणे हत्थे गुग्गा ओ भाइया कोई बोली, ओ जी
आ लै दैणें हत्थें रे हां कांओं आया बोले नां
भला कि दैणे हत्थें ओ भाइया चन्द्रें खंगी ए जी

इस प्रकार इस गाथा के अनुसार गुग्गा जहरपीर (वीर) वृद्धा की गाय वापस दिलाने हेतु मक्का मदीना में जाकर अर्जुन सुर्जन से युद्ध करते हैं और उनका वध कर देते हैं तथा उन के सिरों को माता बाशला के आगे रख देते हैं। माता इन्हें शाप दे देती है और शाप से गुग्गा लुप्त हो जाते हैं।

इस गाथा को दोहरा गायक इस प्रकार से गाते हैं :–

बाशला अर्जुन–सुर्जन (जोड़े–जरेठे) को पालना

भला कि काशल–बाशल सकियां भैणा,
भुर्जे पत्ते दियां सकियां वे आ ऽ, कि काशल बाशल।
भला कि काशल–बाशल सकियां ओ भैणा,
भुर्जे पत्ते दियां, दियां ए भला कि काशल–बाशल।।
भला कि लिखे आए–आए ए भला आ काशल गई ऐ
समाई, भला कि लिखे आए।
भला कि लिखे आए–आए ओ काशल गई ऐ समाई,
भला कि लिखे आए।।
भला कि बन्द पटारिया आ जोड़े पाए ले दित्ते मार, ऐ पुजाई,
भला कि बन्द पटारिया।
भला कि बन्द पटारिया जोड़े पाए दित्ते ओ मार, ऐ पुजाई,
भला कि बन्द पटारिया।।
आ कि खोल पटारिया मासी दिखदी छम–छम नैणां भरी रोई,
भला कि खोल पटारिया।
भला कि खोल पटारिया, मासी दिखी ओ नैणां ओ
भरीओ भरी रोई,
आ कि खोल पटारिया बाछल देखी नैणां हो भरी ओ भरी रोई,

भला कि खोल पटारिया।।
भला कि इकसी चीचुएं आ गुगमल पालिया,
दूएं ओ जोड़ू हो जरेठे, भला कि इकसी चीचुएं।
भला कि इकसी चीचुएं गुगा मल पालिया,
दुएं ओ जोड़े जरेठे, भला कि इकसी चीचुएं।।
भला कि तू मर जायां ए अम्बड़िये वो, काजो पाले बैरी मेरे,
भला कि तू मर जायां।
भला कि तू मर जायां अम्बड़िये ओ काजो पाले बैरी मेरे,
भला कि तू मर जायां।।
ओ गालीं न देयां न देयां बेटा चारगे तेरियां वे गाई,
भला कि गालीं न देयां।
भला कि गालीं न देयां न देयां बेटा चारगे तेरियां ओ गाई
भला कि गालीं न देयां।।
भला कि बडड़े होए ए मंगदे वे अध वो बंडाई, भला कि
बडड़े होए।
भला कि बडड़े होए, बडेरे होए मंगदे ओ मारूए दा हेसा
भला कि बडड़े होए।।
भला कि सकेआं भाइयां ए बंडां होइयां, मसेरां नूं बंडां कौनि धरियां,
भला कि सक्के पुत्तर।
भला कि सकेयां भाइयां ए बंडां होइयां, मसेरां नूं बंडां
नहीं ओ मिलियां, भला कि सकेयां भाइयां।।
भला कि चाचे दे पुत्तर ए होन्दे, भला ओ मसेरां नूं बंडां
कौनि धरियां, भला कि चाचे दे पुत्तर।
भला कि चाचे दे पुत्तर ए सक्के होन्दे, मसेरां नूं बंडां
नईओ मिलियां, भला कि चाचे दे पुत्तर।।
आ तू मत देयां, भला कि देयां न देयां, देणी वो असां
वो लड़ाई, भला कि बेटा न देयां।
भला कि देयां न देयां, ए अम्बड़िये ओ करमें दे तेरे ओ
लड़ाई, भला कि देयां न देयां।
आ कोकल खोलें आ लगियां लड़ाइयां,
कौन ओ जित्ते कौन हारे
भला कि कोकल खोलें।

भला कि मक्के मदीने लगियां लड़ाइयां,
कौन ओ जित्ते कौन हारे
भला कि मक्के मदीने।।
आ अर्जुन–सुर्जन ऐ रण बिच मारे, गुग्गे नूं आई ऐ बिसरी,
भला कि अर्जुन–सुर्जन।
भला कि अर्जुन–सुर्जन रण बिच मारे,
गुग्गे नूं आई ऐ बिसरी,
भला कि अर्जुन–सुर्जन।।

इस प्रकार इस गाथा से पता चलता है कि काशला का देहान्त अर्जुन–सुर्जन के बचपन में या उनके जन्म लेने पर ही हो गया था और उसका पालन पोषण बाशला ने गुग्गा ज़हर पीर (वीर) के साथ अपना दूध पिला कर किया था। बड़े हो कर जब अर्जुन–सुर्जन ने मारवाड़ का आधा भाग मांगा तो गुग्गा ने उनको मौसरे भाई होने के कारण कुछ भी देने से इनकार कर दिया। युद्ध की नौबत आ गई। बाशला ने गुग्गा को युद्ध से रोकने का प्रयत्न किया परन्तु संघर्ष बढ़ता गया और गुग्गा ने वृद्धा ब्राह्मणी की गाय, जिसे अर्जुन–सुर्जन खदेड़ कर ले गए थे, का बहाना ले कर युद्ध छेड़ दिया। इस युद्ध का मैदान मक्का–मदीना बना। वहां गुग्गा ज़हर पीर (वीर) ने अपने दोनों मौसेरे भाइयों को मौत के घाट उतार दिया और उन के सिरों को काट कर मारवाड़ की ओर चल दिया। कहते हैं कि उस भयंकर युद्ध की घोषणा के फलस्वरूप मक्का–मदीना में रखे नगाड़े पर लम्बे समय तक ढाई चोटें पड़ती रहीं। युद्ध भूमि में बहे रक्त पर गिद्ध पक्षी झपटे। वहां से एक गिद्ध मेवाड़ पहुंचा जिस के पंजे और चोंच लहू से भीगे थे। उससे बाशला ने युद्ध का हाल पूछा। अभी वह गिद्ध पक्षी से वृत्तांत जान ही रही थी कि कुछ ही क्षणों में गुग्गा भी अपने लीले घोड़े (सफेद घोड़े) पर सवार होकर आ गया। उस ने माता बाशला को युद्ध का सारा वृत्तांत कह सुनाया और अर्जुन–सुर्जन के सिरों का जोड़ा निकाल कर दिखाया। इस पर माता बाशला ने गुग्गा ज़हर पीर (वीर) को शाप दे दिया। गाथा में यह सारी कहानी इस प्रकार दोहरा कर दो गायकों द्वारा गाई जाती है :–

ए पौणे औन्दिए भैणे, ए पौणे ओ जान्दिए भैणे,
ओ जोगणे ओ भैणे, ओ सुरगणे ओ।।
सुण सुरगण भैणे ओ, कुथूं ओ गुआई लउएं चुंज नाऽ।।
ए सच भी गला दे भैणे, ओ सच भी बता दे भैणे

ओ जोगणे, ओ भैणे सुरगणे।
सुण सुरगण भैणे, ओ कुथूं ओ गुआई लउएं चुंज नांऽ।।
ए टुंडू तेरे लाल भैणे, ओ चुंजां भी लाल,
भैणे ओ जोगणे, ओ भैणे ओ सुरगणे।
बलिहारी ओ भैणे, कुथूं ओ गुआई लउएं चुंज नांऽ।।
ए मक्के मदीने ओ भैणे, ओ लगियां लड़ाइयां,
भैणे ओ बाशले, ओ भैणे ओ बाशले।
सुण बाशल भैणे, ए ओथूं गुआई ओ लउएं चुंज नांऽ।।
ए सोने तां रूपें ओ भैणे, ओ चुंजां मढ़ामां ओ भैणे,
टुंडू मढ़ामां भैणे ओ जोगणे।
सुण जोगण भैणे, ओ मोतियां दी चोग चुगामां नांऽ।।

युद्ध का शेष वृत्तांत गुग्गा ज़हर पीर (वीर) ने अपनी माता बाशला को इस प्रकार सुनाया :-

बाया घोड़ा ए राजा ए महलां जो आया
ओ चेला ओ जोगिए दा, ओ बेटा ओ बाशल दा,
बलिहारी वे रामा ए माता जो भीश वे नुआंदा नांऽ।।
हे बाया घोड़ा ए राजा ए महलां जो आया
चेला ओ जोगिए दा, ओ बेटा ओ बाशल दा,
बलिहारी वे रामा ए माता जो भीश नुआन्दा नांऽ।।
ए मैं भी पियासा ए माता मेरा लीला भी पियासा ओ
माता ओ मेरिए नां, ए माए मेरिए नांऽ,
बलिहारी वे माता ठंडड़ा ए नीर ए पिला दे नांऽ।।
ए पाणी दे बदले बेटा, मैं दुध वे पिलामां
चेला ओ जोगीए दा, वे बेटा ओ बाशल दा,
बलिहारी वे रामा ए तैनूं खुआवां ओ खंड-खीर नांऽ।।
ए सच भी गला दे ओ बेटा, ओ सच भी बता दे
चेला ओ जोगीए दा, बेटा ओ बाशल दा,
बलिहारी वे रामां ए रण दियां खबरां सुणादे नांऽ।।
कौण-कौण मारे ओ बेटा, ओ कौण-कौण हारे
चेला ओ जोगीए दा, ओ बेटा ओ बाशल दा,
बलिहारी वे रामा ओ असल निशानियां तू दे दे नांऽ।।
ए जोड़े-जरेठे तेरे रण बिच मारे, माता ए बाशले

ओ माए ओ बाशले, ओ माए ए मेरिए नांऽ,
बलिहारी वे माता ए, जिन्हां दा तू करदी गुमान ए नांऽ।।
ए इन्हां वी ओ बातां ओ बेटा, ए सच नई ओ मनदी
चेला ओ जोगीए दा, ओ बेटा ओ बाशल दा,
बलिहारी वे रामा असल निशानियां तू दे दे नांऽ।।
घोड़े तें कडदा राजा ए बागां दा जोड़ा हां
भाइया ओ जोड़ेयां दा, वे जरेठेआं दा,
बलिहारी वे रामा असल निशानियां पछैण नांऽ।।
इक्की वी नुहारी ए बेटा दस भी ओ बणदे
चेला ओ जोगीए दा, बेटा ओ बाशल दा,
बलिहारी वे रामा असल निशानियां तू दे दे नांऽ।।
ए पीड़ा ते कडदा ए राजा मुंडियां दा जोड़ा
भाइयां जरेठेयां दा, वे जोड़ेयां दा,
बलिहारी वे रामा ए असल निशानियां पछैण नांऽ।।
ए लै के मुंडियां दा जोड़ा बाशल गोदी खलान्दी
भाइयां ओ जरेठेयां जो, वे जोड़ेयां जो,
बलिहारी वे रामा ए नैणां ओ भरीओ भरी रोए नांऽ।।
ए किंह्यां करी बेटा तेरे हत्थ भी ओ वगदे
भाइयां जोड़ेआं जो, ओ जरेठेयां जो।।
बलिहारी वे रामा ए किह्यां मारी तलवार ए नांऽ।।
ए बनखंडी मेरी ए माता ओ हत्थ भी ओ वगदे
भाइयां ऐ जोड़ेयां जो, वे जरेठेआं जो,
बलिहारी वे रामा ए क्रोधे दी मारी तलवार ए नांऽ।।
ए देसां तें इाम बेटा परदेसां ते इाम,
चेला ओ जोगीए दा बेटा ओ बाशल दा,
बलिहारी वे रामा ए बत्तरी धारां तैनूं इाम नांऽ।।

इस प्रकार माता बाशला जब गुग्गा ज़हर पीर (वीर) को देश–प्रदेश से निकल जाने का और अपना मुख न दिखलाने का शाप दे देती है तो उन्हें पश्चात्ताप होता है और वह गुरु गोरखनाथ की शरण में चले जाते हैं। गुरु गोरखनाथ उन्हें छत्रपति होने का वरदान देकर चमत्कार युक्त कर देते हैं। दूसरी ओर गुग्गा के चले जाने के उपरान्त उनकी पतिव्रता पत्नी सुलियर विलाप करती है जिस से भगवान शिव का सिंहासन हिलता है और गुरु

गोरखनाथ को जब इस बात का पता चलता है तो वह वर्ष में एक बार गुग्गा को अपनी पत्नी से मिलने की आज्ञा देते हैं। गाथा में गुग्गा ज़हर पीर (वीर) की पत्नी का विलाप इस प्रकार गाया जाता है :--

सरली ए कोक राणी ए सुलियर मारे ओ पैदा ओ करती
आं ऽ, पैदा ओ करती आंऽ।
आ ए मेरा राम जाणे होई ऐ कचैहरी ए खाली भयाम
ए आंऽ।।
ए बरियां बरेसां ए मेरी ए जोड़ी वे बिछोड़ी,
ओ पैदा करते आं, ओ पैदा ओ करते आंऽ।
ओ मेरा राम जाणे, तोड़ी सट्टी नागर सोह्णी बेल आंऽ।।
ए सूए तां सोके मेरे कपड़े उतारे ओ पैदा ओ करते आंऽ,
ओ पैदा ओ करते आंऽ।
ओ मेरा राम जाणे, नक दा तोआरेआ सुहाग नांऽ।।
ए हथां दी महन्दी ओ मेरे हथां में ओ रह गई, ओ माइये बाशले,
ओ बाशले, ए पैरांओ रह गई माइये ओ बाशले।
बलिहारी वे रामा ए नक दा तोआरेआ सोहाग नांऽ।।
ए मैं तां नमाणी ए मेरी ए सस भी नमाणी,
ओ पैदा ओ करते आं, पैदा ए करते आंऽ।
वे मेरा राम जाणे, नमाणा रेहा ए मारु देस आंऽ।।
ए तैं तां मिलाणी ए रामा मेरी जोड़ी वे मिला दे,
ओ पैदा ओ करते आंऽ।
ओ मेरा राम जाणे, मरना मैं जैह्र कटारा खाई ए नांऽ।।

गुग्गा जहर पीर की पत्नी के इस प्रकार के विलाप से गुरु गोरखनाथ के आदेशानुसार गुग्गा ज़हर पीर (वीर) अपनी पत्नी सुलियर के पास वर्ष में नौ दिन के लिए अदृश्य रूप में आने लगे। वह रात को आते और सुबह जब सुलियर द्वारा किया गया लेपन सूख जाता तो चले जाते।

गुग्गा नवमी के दिन जब बाशला ने तेल का लेपन करवाया तो गुग्गा उस लेपन के सूखने के इन्तज़ार में वहां खड़े रहे और उनकी माता ने उन्हें देख लिया। इससे धरती फट जाने से गुग्गा धरती में समा गए। इस के उपरान्त सिद्ध नाथ सम्प्रदाय के विश्वासों के अनुसार वे अदृश्य रूप में भ्रमण करने लगे। भारत वर्ष में स्थान–स्थान पर गुग्गा ज़हर पीर (वीर) के मंदिर

देखने को मिलते हैं। इन मंदिरों में विषैले सांपों के काटे लोगों का ज़हर दूर होता है।

गुग्गा ज़हर पीर (वीर) की यह गाथा सिद्ध–नाथ सम्प्रदाय की अलौकिक शक्तियों के प्रभाव को प्रतिलक्षित करने के साथ–साथ हिमाचल प्रदेश में सिद्ध–नाथ सम्प्रदाय के प्रभाव की अमिट छाप छोड़ती है।

गुग्गा की बरसोली (मंत्र)

लाड सहेले गुरु गोरख चेले बैठे न आसण लाई
बारह तां बारह चौबी छूए मां बाशला सेवा कमाई
उडदे तप धियाए जीह्वा चौंके पाए
लूणिया सिल्ला चट्टी धार कीते
सुन्ने केसे व्हारिएं तूं तां सेवा दे फल पाए
राजा मण्डलीक कच्चें धागें पाणी दी चूटिया
विसां दे निरमिस कीते मोयां धौलां की सांस पाए
गर्भाशय बक्खें गल्लां कितियां
तां गुग्गे चौहान मण्डलीक कहाए
खुलियां तणियां पैर प्यादें देव राज मैहलां की आए
सद्द बुलाया बोलूं नागरची चोट नगारें पुआई
गढ़ दुधन्हेरें नौबत बज्जी बज्जी गुग्गे दी बधाई
दिल खुशियां बिच आई
भण्ड मरासी करन कल्याणां बज्जी गुग्गे दी बधाई
रल मिल नारां मंगल गावन, गावन गुग्गे दी बधाई
अम्मा बाशल बण्डदी बधाईयां दिल खुशियां बिच आई
लोकी सारे करन कल्याणा ब्राह्मण सीरबाद बुलाई
सद्द बुलाए सिरीखण्ड परोहित सद्द बुलाणे गुरु गोरख
मस्तक भबूत चढ़ाई
पंज दिनां दा होया गुग्गा रास गणामण लाई
पण्डित बईयां बाचदे, पोथियां बाचदे बाचन वेद पुराणे
नानकें चंगा दादकें चंगा कुले की माड़ा नाई
चार कूट दा राज करना राजा तेकी कमी नाई
पहलें पैहरें राजा मण्डलीक जन्में दूजें गुगड़ी जाई
तीजें पैहरें नीला रथ जम्मिया चौथें कैला वच्छी जाई

चौने पैहरां चौरे जीव जन्मे जग बिच रोशनी आई
गुग्गे दी मां अम्मां बाशल नीले रथ दी घोड़ी
जद तक्कर रैहण गुग्गा चौहान चारे चीजां रैहंगियां
जोड़ी टल बिच आई।।

गुग्गा के विवाह का झेड़ा

पहला तमोल गुरु गोरख लान्दे, मस्तक भबूत चढ़ाई
दूआ तमोल सिरीखण्ड ब्राह्मण लान्दा तिलक जनेऊ पाई
तिरजा तमोल मासी काशल लान्दी माख मण्डूक च आई
चौथा तमोल भैण गुगड़ी लान्दी घोड़ें बाग फड़ाई
पंजवां तमोल अम्मां बाशल लान्दी मुख मम्मा पलाई
सब साऊ सलाई करदे कैलू जानियां नीणां नाई
सब साऊ जानियां चल्ले कैला काला जातिया नीणां नाई
भैण गुगड़ी अरजां करदी सब साऊ जातियां चल्ले
दुधन्हेरें रिआ नी कोई, मैं किल्लिया नी रैहणा भाई
तूं रैह दुधन्हेरें भाई
जिन्हां गल्लां देई तूं गलानी मैं अग्गें जाणनां जाई
गोरे गोरे सब जानियां नीणें काला नीं नीणां कोई
लैन्दे राकियां देन फराकियां थैय्या थैय्या पर जाई
सिर ऊंकारां दियां कगलियां नाग नागणियां तलवारीं
मंजलें मंजलें चलदी जानी रैहन्दी संकर घटिया जाई
अद्दिया रतीं परभाते बेलें नागां की खबर आई
मंग थी साड़ी नागो गुग्गें ब्याहमण लाई
अद्दिया रातीं ठारह खरोणी नाग
चढ़े मातर लोके की आई
फिरदा–फिरदा घेरा पाया राजे की जाग नीं आई
छम–छम देई के राजा रोन्दा हुन्दा कैलू भाई तां लैन्दा छुड़ाई
हुकम कीता सुरगणू वीरें जा दुधन्हेरें ताईं
जाई गलाया भैणा गुगड़िया नागां घेरिया आई
रातो रात उडिया सुरगणू आया दुधन्हेरे ताईं
मिलदा भैणा गुगड़िया की सारी गल्ल सुणाई
खुलियां तणियां पैर प्यादें भैण गुगड़ी कैलुए पास आई

सुतिया वीरा सुपना होया संकर घाटिया नागां घेरा पाई
उठ तैयार हो वीरा जा संकर घाटिया ताई
नागां ने युद्ध करना कनैं वीर लैणा छुड़ाई
पंज अग्नी जे घोड़ा दैं तां मैं जाना
लैना वीर छुड़ाई जाना संकर घाटिया ताई
ओथों चलदी भैण गुगड़ी घोड़े ने अरजां की आई
सुआरी दे कैलुए की संकर घाटिया ताई
घोड़े बोलै बोल, 'कैलुएं सुआरी दिंगा कैलुए ताई
मेरे ने खुरी लाई तां जिमी पर मारगा भुआई
जे मेरे ने छिट्टी लाई तां आसमान दिंग्गा उड़ाई
हुकम कीता चरबेदारें ठारहं मणां दी पक्खर पाई
हीरे मोती लाल जड़े उप्पर लाल जड़ाई
लिया अग्नी घोड़ा कैलू करदा सुआरी भाई।।
घोड़े दा होया सुआर कैलू वीर डूडी पैहरे च संकर घाटिया जाई
मारिया ललकारा नागां ताई
एह राजा दुशमण मेरा गोरे–गोरे साऊ जानियां आन्दे
काला नीं आन्दा कोई
इक्क पासे तें करो लड़ाई
ठारह खरोणी नाग किट्ठे कीते उप्पर चादर उढ़ाई
सारे नाग भस्म कीते कालिया न्हट्ठा जाई
मेरी जान रख राजिया तूं धरम दा भाई
कैलू बोले, 'सुण राजा छड थां दुसमणें जाई
राजा बोलिया सुण कैलू, 'एह वाणियां धरम दा भाई'।।

इस प्रकार गुग्गा चौहान की सहायता उसका भाई कैलू करता है और गुग्गा चौहान का विवाह गढ़ बंगाल में सिरी चन्द राजा की लड़की सिलियर से सम्पन्न हुआ होता है। गुग्गा चौहान बारह वर्ष अपने ससुराल में ही व्यतीत कर देता है। इस समय में अर्जुन और सुर्जन दद्रेहरा (दुधन्हेरा) की रियासत पर अपना अधिकार स्थापित कर लेते हैं। उन की माता काशला का देहान्त के जन्म लेने के उपरांत ही बताया जाता है और गुग्गे के जन्म के एक वर्ष उपरान्त उन के पिता का देहान्त बतलाया जाता है।

गुग्गा बारह वर्ष के उपरान्त जब वापिस लौटता है तो वह अपना राज्य सिंहासन का अधिकार अर्जुन और सुर्जन से मांगता है, क्योंकि वह

काशला की बड़ी बहन बाशला का पुत्र है, परन्तु अर्जुन और सुर्जन राजगद्दी छोड़ने से इनकार कर देते हैं। माता बाशला को इस बात की खबर नहीं होती क्योंकि गुग्गा चौहान अपने ससुराल से आ कर सीधा राज दरबार में जाता है। राज्य के लिए गुग्गा चौहान का अर्जुन और सुर्जन से युद्ध होता है और वे दोनों भाई युद्ध में मारे जाते हैं। इसके उपरान्त गुग्गा चौहान भारत का छत्रपति राजा बन जाता है। छत्रपति राजा बनने के लिए उसे अनेक युद्ध करने पड़ते हैं। अपने सेनापति अजियापाल और भाई कैलू की सहायता से नीले घोड़े का सवार गुग्गा चौहान सभी युद्धों में विजय प्राप्त करने के उपरान्त अपनी मां के पास जाता है। बाशला उससे अर्जुन और सुर्जन के युद्ध में उसके हाथों मारे जाने का समाचार पाकर गुग्गा को 'देश निकाला' दे देती है। गुग्गा चौहान को भी अर्जुन और सुर्जन की मृत्यु का पश्चात्ताप होता है और वह गुरु गोरखनाथ की शरण में जाकर वैराग्य प्राप्त कर लेता है तथा चमत्कारयुक्त होकर भारत का भ्रमण करता है।

कुछ लोगों का कहना है कि अपने गुरुओं की रक्षा हेतु किसी युद्ध में गुग्गा का देहान्त हो जाता है परन्तु यह किंवदन्ती एक चमत्कारी पुरुष की मृत्यु के लिए ठीक नहीं उतरती। गुग्गा के कुछ भक्तों का कहना है कि एक बार गुग्गा की बहन के कहने पर गुग्गा की पत्नी ने गोबर में तेल डाल कर अपना भवन लीपा–पोता था और उसी गोबर से उसने चौका डाल लिया था। उससे दूसरे दिन ही सूर्य उदय होने पर गुग्गा चौहान ने वहीं आकर अपनी समाधि ले ली थी। इस प्रकार हिमाचल प्रदेश की लोक गाथाओं में अनेक ऐतिहासिक तथ्य देखने को मिलते हैं।

❒

कागड़ां घाटी में गूगा छत्री

रत्न लाल चौधरी

लोक साहित्य जन–ज़न का साहित्य होता है। रूढ़ियां एवं किंवदन्तियां इसे थामे रखती हैं। अनुयायी अनेक शाखाओं में विभक्त हो गये। एक शाखा सिद्ध कहलाई जिसमें चौरासी सिद्ध हुए। इनका उल्लेख चौरासी वैष्णव की वार्ता में मिलता है। सिद्धों में भी अनेक प्रकार की विकृतियां आ गईं पंच मकार, सहज साधना, कुडलिनी जागरण आदि सिद्धान्त थे आगे चलकर मच्छेन्द्र नाथ के शिष्य बताए जाते हैं इन्होंने अपने गुरु का उद्धार किया। गोरखनाथ ही नाथ संप्रदाय के संस्थापक माने जाते हैं। यह जन्त्र मन्त्र में विश्वास रखते थे, निर्गुणवादी थे। शंकर के अद्वैतवाद का भी इन पर प्रभाव है। संत परम्परा भी सिद्ध व नाथ परम्परा पर ही आधारित है।

नाथों ने भारतीय साहित्य को दूर तक प्रभावित किया है। आज भी नाथ सम्प्रदाय भारत के अनेक भागों में फैला हुआ है। इन्हें जोगी अथवा नाथ से अभिहित किया जाता है। मृत्यु होने पर इन्हें जलाया नहीं जाता अपितु दफन किया जाता है। लोहड़ी एवं गूगा की गाथा बड़े तन्मय होकर गाते हैं। जादू टोने का इलाज करते हैं। गूगा छत्री के मंदिर कांगड़ा जिला में ही नहीं अपितु हिमाचल के अनेक भागों में स्थापित हैं।

गूगा छत्री की कथा बड़ी ही रोचक एवं चमत्कार पूर्ण है गूगा छत्री को सांप के जहर तथा जादू टोनों के निवारण का प्रतीक माना जाता है। मंदिर में इतवार को पूजा की विशेष व्यवस्था होती है। जादू टोने से ग्रस्त स्त्रियां व पुरुष चौबीस घंटों मंदिर की परिक्रमा करते हैं। सांप के जहर से ग्रस्त लोग भी ऐसा ही करते हैं। प्रसाद के नाम पर मिट्टी एवं जल दिया जाता है, जिससे पीड़ित लोगों को उल्टियां आती हैं और खिलाया हुआ जादू या धागा उल्टी के साथ बाहिर आ जाता है। पीड़ित लोगों को मंदिर के धूप की गन्ध से ही खेल आने लगती है। पीड़ित स्वयं ही अपनी बीमारी का हाल बताने लगता है तथा जादू खिलाने वाले का नाम भी बताता है। कांगड़ा में

यूं तो गूगा छत्री के अनेक मंदिर हैं परन्तु पालमपुर तहसील के सलोह नामक स्थान पर एक भव्य मंदिर है। यह मंदिर पालमपुर से 7 किलोमीटर दूर पठानकोट रोड पर अरला नामक गांव से सलोह नामक गांव को सड़क द्वारा जोड़ता है। हर वर्ष गूगा नौमी पर यहां भारी मेला लगता है। यह मेला 6 दिन चलता है। कृष्ण जन्म अष्टमी के अगले दिन गूगा नौमी मनाई जाती है। श्रद्धालु अधिकांश अन्न की भेंट ही चढ़ाते हैं जिसे ओरा कहा जाता है।

स्थानीय लोगों के अतिरिक्त प्रदेश एवं अन्य प्रदेशों के लोग भी यहां आते हैं। सांप का काटा व्यक्ति आज तक यहां मृत्यु को प्राप्त नहीं हुआ है। कहते हैं एक बार एक व्यक्ति को विषैले सांप ने काट लिया वह दौड़ा हुआ मंदिर को जा रहा था। मंदिर के पास ही दो रास्ते हो जाते थे। एक रास्ते पर एक युवक नीले घोड़े पर बैठा हुआ मिला, उसने पीड़ित व्यक्ति को अन्य रास्ता बता दिया। अभी वह थोड़ी ही दूर गया था कि उसे अन्य व्यक्ति मिला जिसने दूसरा रास्ता बताया। पीड़ित व्यक्ति ने नीले घोड़े वाले व्यक्ति से वार्तालाप का विवरण दिया तथा उसकी मृत्यु हो गई। नीले घोड़े वाला व्यक्ति स्वयं यमराज बताया जाता है। क्योंकि मृत्यु उस व्यक्ति का पीछा कर रही थी।

गूगा छत्री की कहानी बड़ी रोचक है। यह कहानी किसी पुस्तक में प्रकाशित हुई नहीं मिलेगी। यह किंवदन्तियों पर आधारित है। कहते हैं कि किसी राजा की दो रानियां थीं। एक काच्छलां तथा दूसरी का नाम बाच्छलां था, उनके कोई संतान नहीं थी। इधर राज्य में बारह वर्ष तक वर्षा नहीं हुई। बाग–बगीचे एवं तालाब सूख गए। राज्य में हा–हाकार मच गई।

इसी बीच गुरु गोरखनाथ अपनी नौ लाख शिष्यों की सेना के साथ उस राज्य में पधारे। बड़ी रानी धर्म–कर्म जानने वाली तथा साधु संतों की सेवा किया करती थी। उसने अपने सूखे बाग में गुरु को ठहरने की प्रार्थना की। इधर गुरु की कृपा से वर्षा के साथ ओले गिरने लगे। नंगे शिष्यों की ओलों से खाल उतरने लगी और वे सर्दी से ठिठुरने लगे। गुरु ने आदेश दिया की ओलों के ढेर लगाए जाएं। गुरु ने अपनी धूनी से आग अपने हाथ पर उठाई और फूंक मारते ही सब धूनियां जल उठीं।

इतने में शिष्यों को भूख लगी तो गुरु ने उन्हें महलों में भिक्षा मांगने के लिए भेजा। रानी ने सबको सोने की अशरफियों की भिक्षा दी परन्तु इससे भूख तो मिटाई नहीं जा सकती थी। अंत में गुरुजी स्वयं उठकर गए। उन्होंने

अपनी तूम्बी रख दी, रानी ने सारा कोष उसमें डाल दिया परन्तु तूम्बी तो भरने का नाम ही नहीं लेती थी। अन्त में गुरु ने आटे की चुटकी लाने को कहा। आटा पड़ते ही तूम्बी भर गई तथा राजकोष का सारा धन राजकोष में आ गया। राज्य में हरियाली छाने लगी। 12 वर्ष के ठूंठ भी हरे हो गए।

बड़ी रानी काशला प्रतिदिन गुरु की सेवा करने के लिए बाग में जाने लगी। उसकी इच्छा संतान का वर पाने की थी। इधर छोटी रानी को भी सारा पता था। जिस दिन गुरु ने उसे वरदान देना था उस दिन प्रातः ही छोटी रानी ने बड़ी रानी से कपड़े मांगे कि मुझे मंदिर जाना है, मेरे कपड़े मैले हैं। मैं अभी वापिस आकर लौटा दूंगी। भोली–भाली रानी ने कपड़े दे दिये। छोटी रानी घूंघट निकाल कर गुरु की सेवा में हाजिर हो गई तथा धोखे से वरदान पा गई। जब बड़ी रानी गुरू के समक्ष गई तो गुरु ने सोचा कि यह लालच में आकर फिर कोई नया वरदान मांगने आई है। गुरु ने अपनी गदा धरती पर मारी और पाताल लोक को प्रस्थान किया। रानी हतप्रभ आरती लिये खड़ी रही। वह समझ गई कि मुझसे छल हो गया है परन्तु वह उस स्थान से हटी नहीं, कई दिनों तक ऐसे ही खड़ी रोती रही। सूख कर कांटा हो गई। बाम्बी ने उसके शरीर को जकड़ लिया। कौए उसका मांस नोचने के लिए आने लगे तो वह कौओं से कहती है :–

सब तन खायो कागा चुन–चुन खायो मांस,
इक दो नेना न खायो गुरु मिलन की आस।

इधर जब उसके आंसू धरती पर गिरे तो अंगारे बनकर पाताल लोक में गुरु के आसन को जलाने लगे। गुरु एक ओर से आग बुझाते तो दूसरी ओर लग जाती। अन्ततः वह समाधिस्थ हुए तो पता लगा कि उन की एक शिष्या से धोखा हो गया है।

गुरु गोरखनाथ जी ने आकर देखा कि एक हड्डियों का पंजर खड़ा है। उसके आंसू आग की वर्षा कर रहे हैं। गुरुजी ने उसके शरीर से बाम्बी हटाई तथा रानी को कहा कि मेरी झोली में हाथ डालकर जो कुछ भी मिले उसे निकाल ले। रानी को झोली में से धूप की एक गठिया मिली। गुरुजी ने कहा कि नहा धो कर इस धूप को आग पर रखना, इसके धुएं से तुम्हें एक पुत्र एवं एक पुत्री का जन्म होगा। धर में बांधी नीलों घोड़ी के एक घोड़ा पैदा होगा जोकि तुम्हारे पुत्र का आजीवन साथी होगा। पुत्र का नाम गूगा छत्री होगा जोकि बहुत ही पराक्रमी होगा तथा देवयोनि को प्राप्त होगा। छोटी

रानी को शाप दिया कि उसके यहां पराक्रमहीन संतान होगी।

वरदान के अनुसार रानी गर्भवती हुई। छोटी रानी अनेक प्रकार के षड्यन्त्र रचने लगी, जिससे डर कर बड़ी रानी मायके चली। एक बैलगाड़ी पर बैठकर रानी जंगल में जा रही थी कि छोटी रानी ने वासुकी नाग की सहायता मांगी तथा कहा कि उसके रथ के बैल को डस लिया जाए ताकि रानी जंगल में ही तड़प कर मर जाए।

वासुकी नाग क्षुद्र रूप धारण कर धौलू घास में छिप गया। बैल ने ज्योंहि घास को मुंह मारा त्यों ही उसे डस लिया गया। बैल मर गया, रानी लाचार होकर विलाप करने लगी। उसी समय उसके गर्भ से उसे आवाज आई कि मां चिन्ता न कर अपनी एड़ी को धरती पर घुमा दे, वहां से पानी निकलेगा। उस पानी एवं मिट्‌टी को बैल मे मुंह पर लगा दे, बैल जीवित हो जाएगा।

रानी ने ऐसा ही किया। बैल जीवित हो गया। मायके पहुंचते ही उसे प्रसव पीड़ा हुई और उसने एक पुत्र व एक पुत्री को जन्म दिया। कहते हैं एक बार छोटी रानी ने वासुकी नाग की पत्नी को बच्चों को जहर पिलाने के लिए भेजा। वह स्त्री रूप धारण करके आई। रानी पानी लेने गई हुई थी। उसने बालक को गोदी में उठा लिया तथा अपना स्तन उसके मुंह में डाल दिया। बालक ने जहर तो क्या उसके सारे शरीर का रस भी चूस लिया। नागिन की हड्डियां चरमराने लगीं। वह क्षमा मांग कर भागी। बालक ने आंगन में उगे 'घनीरे' (एक जहरीला पौधा जिस पर लाल रंग के फूल लगते हैं) की जड़ से सारा जहर उगल दिया। इस प्रकार बालक की हत्या के अनेक षड्यन्त्र रचे गये परंतु हर बार मुंह की खानी पड़ी।

गूगा युवा हो गया। उस की सगाई गौड़ बंगाल की राजकुमारी से हुई। जो भी संदेश वाहक गौड़ बंगाल जाता था उसे ही भेड्डू (मेढ़ा) बनाकर खूंटे से बांध दिया जाता था। रात्रि को उसे पुरुष बना दिया जाता था। अन्ततः गूगा स्वयं गये तथा राजकुमारी सहित सबको वापिस ले आए। इसके बीच अनेक उप–कथाएं भी प्रचलित हैं।

गूगा सुखपूर्वक राज्य करने लगे। उनके राज्य में गौ, ब्राह्मण तथा स्त्रियों की रक्षा की जाती थी। एक दिन बूचड़ गांव की गायों को हांक कर ले जा रहे थे। गांव के लोग भागे हुए गूगा छत्री के पास आये तथा रक्षा की पुकार लगाई। गूगा भागे हुए गये और बूचड़ों के साथ उलझ पड़े। बूचड़ संख्या में अधिक थे, घिरे हुए गूगा छत्री का सिर अपनी तलवार से कट गया

तो भी वह बिना सिर लड़ते रहे तथा बूचड़ों के छक्के छुड़ा दिये। पास ही एक बावली पर स्त्रियां पानी भर रही थीं। स्त्रियों ने देखा कि बिना सिर का युवक लड़ रहा है। उनमें से एक स्त्री ने हांक लगाई कि देखो बिना सिर के युवक लड़ रहा है। इतना कहना था कि घड़ धरती पर गिर गया। इस प्रकार गूगा छत्री का गायों की रक्षा करते हुए प्राणान्त हो गया। राज्य में आतंक छा गया, सभी दुःख में डूबे हुए थे परन्तु गूगा की पत्नी को कोई दुःख न था। यह भी एक रहस्य की बात थी। गूगा की बहिन ने इसका कारण अपनी भाभी से पूछा तो पता लगा कि रात्रि को साक्षात् रूप में गूगा उसके पास आते हैं। वह गोबर का एक 'मंदलू' (धरती पर गोबर का गोल लेपन करना) बना देती थी। जब तक वह गीला रहता था गूगा अपनी पत्नी के पास रहते थे। जब मंदलू सूख जाता था तो वह चला जाता था। गूगा की बहिन ने अपनी भाभी को सलाह दी कि वह आज रात गोबर में तेल डाल दे ताकि वह शीघ्र न सूखे तथा गूगा से बातें करने का अधिक आनन्द लिया जाए। गूगा की पत्नी ने ऐसा ही किया। सुबह तक मंदलू नहीं सूखा। सूर्य निकल आया। गूगा जब उठकर जाने लगा तो बहिन ने उसे अपनी बाहों में भरना चाहा। वह अपनी बहिन की बाहों में ही अदृश्य हो गया तदुपरान्त गूगा अपनी पत्नी के पास कभी नही आया।

देव रूप धारण किए गूगा छत्री के स्थान–स्थान पर मंदिर बनाये जाने लगे तथा उसकी पूजा होने लगी। आज भी भारत के अनेक भागों में गूगा छत्री के मंदिर हैं तथा अपनी–अपनी परम्परा के अनुसार उसकी पूजा की जाती है। सिद्धों व नाथों से प्रभावित यह लोक कथा भी बालक नाथ, पूर्णभक्त, भर्तरी आदि की कथाओं के सामन ही प्रचलित हैं। जन–जन के मुख से कही जाने वाली यह कथा अनेक रूप धारण कर गई है परन्तु मूल रूप से यही धारणा है कि गूगा जादू–टोना तथा सांप का बिष दूर करने वाले देवता हैं।

❒

गुग्गा छत्री

स्वर्ण कान्ता शर्मा

गुग्गाछत्री की स्थापना कांगड़ा, विशेषतया तहसील देहरा के तो प्रत्येक गांव में की गई है। गुग्गा को सांप के ज़हर से निवारण, जादू–टोने और ओपरे से छुटकारा दिलाने वाला देवता माना जाता है। ऐसा लोक विश्वास है कि सांप के काटे व्यक्ति को अगर गुग्गा की स्थापना वाले स्थान पर पहुंचा दिया जाए तो विष प्रभावहीन हो जाता है। स्थापना के स्थान की मिट्टी काटे स्थान पर लगाई और खिलाई जाती है। जादू और भूत–प्रेत के निवारण के लिए गुग्गा का जल पिलाकर उलटियां करवाई जाती हैं। पीड़ित लोगों को धूप की गन्ध से खेल आती है और वे स्वयं खेल में सब बता देते हैं। ऐसा विश्वास है कि बार–बार उस स्थापना पर जाने से पीड़ित व्यक्ति ठीक हो जाता है।

'गुग्गा नवमी' वाले दिन गुग्गा के स्थापना स्थलों में रात भर गुग्गा की वारें गाई जाती हैं और अगले दिन दशमी को प्रायः यज्ञ किया जाता है। गुग्गा की स्थापना पत्थर (सप्पड़) का घोड़ा और उस पर सवार बनाकर घर के कमरे की तरह कमरा बना कर की जाती है। कई स्थानों पर खुले में किसी वृक्ष इत्यादि के नीचे तीन घुड़सवार स्थापित किए होते हैं जो अधिक भी हो सकते हैं।

रक्षा बन्धन की पूर्णिमा से नवमी तक नौ दिन गुग्गा के पुजारी गुग्गा की लोकगाथा गाकर घर--घर जाकर अन्न और गुड़, डोरी, पैसे, लोगों द्वारा श्रद्धानुसार दी गई सामग्री एकत्रित करते हैं। उसी में और सामग्री डाल कर दशमी वाले दिन यज्ञ किया जाता है। टोली में ये लोग स्थानीय वाद्य–यन्त्रों, जिनमें ढोलक, थाली, चिमटा होते हैं, बजाकर, गुग्गा की वारें गाते हैं। एक व्यक्ति ने पत्तों से बना 'छतोड़ू' जिसे गुग्गा के छत्र का प्रतीक कहते हैं, बीच में एक डण्डे से बांध कर उठाया होता है, उसे ज़मीन पर नहीं रखा जाता। अन्दर की तरफ लोगों द्वारा दिया कपड़ा, डोरी बांध कर लटकाई होती है।

नवमी वाले दिन प्रत्येक परिवार में 'गुग्गा नवमी' के रोट देने की प्रथा है।

गुग्गा के जन्म के विषय में एक विश्वास है कि गुरु गोरखनाथ के आशीर्वाद से गुग्गा का जन्म हुआ था और उन्हीं के अशीर्वाद से रानी काशला के घर जुड़वां बेटे हुए थे। उनकी घोड़ी के यहां भी नीले घोड़े ने जन्म लिया था जो जीवन पर्यन्त गुग्गा के साथ रहा। इसीलिए गुग्गे को घोडे पर सवार दिखा उसकी स्थापना की जाती है। लोक गाथा में गुग्गा जन्म कथा का वर्णन निम्न प्रकार से है–

गुग्गा का जन्म

काले दे सिर धौले आये केसां रंग बदलाये
औतरां दे घर पुत्तर जी दियां
न उजाड़ियानू फेर बसा जी,
सद्द बुलाईयो जिसा अन्नियां दाईया जो
राणे ने जन्म लैणा जी।
सद्द बुलाईयो भारिया कुम्हारिया
कोरी कनाली मंगाणी जी,
सद्द बुलाईयो जिसा सन्तीया नैणी,
मोतियां चौंका पाणा जी।
सद्द बुलाईयो जिस कालूए झीरे
गुग्गा नीर मंगाणा जी,
सद्द बुलाईयो जिन्हा भट्टा दिया डूमा जो
घर–घर माठया बजाणा जी,
सद्द बुलाईयो जिस रती चंदे बाह्मणे
राणे दी रास गणाणी जी,
सद्द बुलाईयो मेरियां सठ्ठ सहेलियां,
रली–मिली मंगल गाणा जी।
ठंडा पाणी गर्म कराणा
राणा तुरंत नुआणा जी,
न्हौता–धोता राणा पट्टल लपेटिया,
कुच्छड़ दाईया दे देणा जी।
सोने दा भंगूड़ा, रेशमी डोरां
झूटे दिंदी अन्नी दाई जी,

अन्नी दाई तिजो झूटे दिंदी
अक्खी च जोत सुआई जी।
लोरी लिआं बालका, लोरी लिआं याणिया
लोरी लिआं राजा चुआना,
अन्दर संगारिया राणा गुग्गा मल,
बाहर संगारिया नीला भाई।

गुग्गा की सगाई, वंशावली और ससुराल का वर्णन

सिंह जी दे घर कन्या कुआरी मारु जोता जगिया न,
मारुए जोता जगिया जी ओ
सिंह जी दे घर कन्या जन्मी गौड़ बंगाले में,
लड़की दा करना साख जी ओ हुक्म जी कीता
सिंह जी राणे पंडित बुलाया न
लड़की दा करना साख जी ओ खोल के वेद
देखन लग्गा सुन लै स्वामी पंडता न,
देखयां मन–चित लाई जी ओ
खोल के वेद देखन लग्गा सुण लै सिंह जी राणिया न,
देखया मन–चित लाई जी ओ–
चार ता वेद टोली मैं सुट्टे, सुण लै सिंह जी राणिया न,
जुड़दा न लड़की दा साख जी ओ
मारु देस गुग्गा रजादा सुण लै सिंह जी राणिया न,
जुड़दा जी लड़की दा साख जी हो
किदा ए बेटा जी केहिये, कीदा पोता न,
क्या की ओदी जात जी हो
सेमल दा बेटा, जयमल दा पोता न, गुग्गा चौहान जात जी ओ
पंज रुपइये इक दुशाला सुण्सा लै स्वामी पंडता
न टीका मारुए लेई जा जी ओ
इस तां बेला जाणा है नी सुण लै सिंह जी राणिया न
ना ई गलाइयां जी ओ
एहो खाणियां सासण भाटियां सुण्सा लै स्वामी पंडता न,
टीका मारुए लेई जा जी ओ
सत्त समुद्र, सत्त न नदिया कौण लंघावे न,

कौण लंघावे जी ओ
चौई तां खानियां दा कुड़ा बणाई लै सुण लै
स्वामी पंडता न, टीका मारुए ले जा जी ओ
बारह महीनियां दा खर्च तू देई दे सुण लै सिंह जी राणिया न,
टीका मारुए नीणा जी ओ
खोल भंडार खर्च तू ले लै, सुण तू स्वामी पंडता न,
टीका मारुए ले जा जी ओ
चल्या जी चल्या स्वामी पंडित, पंडित चलया न,
गिआ मारुए राह जी ओ
चल्या जी चल्या स्वामी पंडित, पंडित चलया न,
जाई पुज्जा समुन्द्र पास जी ओ
जाके उदेश ख्वाजे नू करदा सुणलै ख्वाजा न
मैनू टपायां पार जी ओ
गरिया, छुआरा स्वजली का मेवा सुण लै स्वामी पंडत न,
दे दिया मेरी भेंट जी ओ
चलया वे चलया स्वामी पंडित पंडित गिआ न,
जा रिया मारुए देश जी ओ
कौण तां अर्जुन, कौन ता सुरजन ओ बैठे छत्र जवान न,
मैं जी छत्र जवान जी ओ
इस पर दावा आगे हो गये, हुक्कम फरमाया न
हुक्कम फरमाया जी ओ
सिंह जी दे कन्या जी जन्मी, गौड़ बंगाले में
टीका लंदा मारुए जी ओ
पंज रुपइये, इक दुशाला सुण लै स्वामी पंडता न
लिआं मेते दान जी ओ

अर्जुन, सुर्जन और गुग्गा की लड़ाई

जौड़े – जाके वागर देस गुग्गे नूं कंहदे, गुग्गे राजे नू।

जुड़वां – साढी तेरी अज्ज रामो–राम।

गुग्गा – अब के दिन तक भाई राम न सिमरी,
अब कैसी बोली राम–राम।

जौड़े – जां सिर लैणे जां सिर देणे, जां डोला लैणा लाल।
गूगा – डोले दे बदले दो–दो दिंगा, जंग दा न करयो जोग।
जौड़े – जां सिर लैणे जां सिर देणे, जां डोला लैणा लाल।
नीला तेरा चलया हमलुएं, पुज्या जुद्ध बिच जाई।
जंगी ढोल बजेया गनीसों, दो दल, झुझणे जो आए।

युद्ध के बाद घर पहुंचने पर

बिच वे पहाड़ां माता नू सिमरां, जोतां वालिया नू।
जे गढ़ दियां पूरे ज्ञान, मैं भी प्यासा, मेरा नीला भी प्यासा।
माता पाणी पिला।
पाणी दे बदले मैं दुध पियामां,
जौड़ियां दी खबर सुणा।
माता जौड़े तेरे रण बिच मारे, मारे पधरे मदान।
तेरे मारने दे जौड़े हैई नी, उन्हां मारदा करतार।
रावण जैसे मौत ने घेरे, जौड़े तेरे किदे पाणीहार।
बेटा इन्हां गल्ला सच्च न मन्नां, सच दी निशानी बता।
चक्क के खड़ा तेरे अग्गे सुट्टा, खड़े नू लै पछाण।
खंडिया जैसे खड़े बघेरे, रण बिच धड़ न लुआर।
माता दो तरबूज तिज्जो अंदे, महलां ते थाल मंगा।
हुकम कीता सूरज गोली, गुग्गे दे अग्गे थाल टका।
थालां दे बिच सिर रख दित्ते, लै परछावे माता खोल।
देख के मुंडियां गशियां पेईयां माता बाशला नूं,
दोनों अर्जुन, सुरजन बीर।
किस तरह बेटा तेरे हत्थ वंगी जांदे,
भाईयां मसेरां जो किस तरह मारी तलवार।
गुस्से दे मारियां दे हत्थ वंगी जांदे,
भाईयां मसेरां नू
रण बिच मारी तलवार।
जिस देश जौड़े मारे, मर जा जौड़ियां नाल।
खब्बे चीचुये जौड़े पाले, सज्जे पालिया गुग्गा राव।
पुठिया खजैआं देश निकाला, मुड़ के न आयां मेरे देस।
बत्ती धारां माता मैनू बख्शा दे, मुड़ के नी औंदा तेरे देश।

सुख वसियो तेरा नगर, बेहड़ा धर्मियों।
जींदियां दे कदी मेले।

सुलियर के पास जाना

मैं भी प्यासा, मेरा नीला भी प्यासा, प्यासे नू पाणी पिला।
पाणी दे बदले दुध पियानी, चेला गुरु गोरखनाथ दा,
इक बारी डियोढ़ी अन्दर आ।
डियोढ़ी अन्दर न आणा धर्म की राणी सुलियरे
माता ने बोले मंदे बोल,
दस्स महीने तिज्जो ढिड्ड बिच राक्खेया माता बाशला ने
मां मां दे हुंदे चंगड़े बोल।

बहु सास का संवाद

मेरे हाण दियां सीस गुंदामण मेरे गल में काले केस।
मेरे हाण दियां डेका फुल्लियां, मैं कैसी अमना मान।
मेरे हाण दियां सेजा बिछांदियां मेरी सुन्नी पेई सेज।
मेरे हाण दियां बालकां खलांदियां मेरी सुन्नी पेई गोद।

सास – अग्गे चरखा, पिच्छे पीहड़ा बैठी राज कमा।

बहु – अग्ग लगे तेरे चरखे पीहड़े,
मेरा राजा तोप मंगा।

सास – नौकर हुंदा मैं चिट्ठियां पांदी, गिआं नू कित्थों लिआं।

बहु – मां टोल मैं वी रंडी, मेरी सस्स वी रंडी
रंडा पिआ मारु देस।

सुलियर का बहिन बिजली से वार्तालाप

सभना दे महलां दीपक जगे तेरे न्हेर मनेर,
कौण गिआ कौण मर गिआ, किदा रचाया सोग।
अर्जुन, सुरजन मेरे देवर मरगे, तिजा गिआ गुग्गा राव
पिछले जन्म दिआं सकियां भैणां, लिया दे राजा टोल
अपणे राजे दा वरुण दिखा दे लिऔंगी राजा टोल

नीला घोड़ा नर्मे दा जोड़ा ऊपर पतला सवार
हाथ वरदी, लूंगी दा तहमद, गल बिच लसके काले नाग
मारेया लश्कारा गासे नू चढ़ गई, ले आऊंगी राजा तेरा टोल
दक्षिण चमकी, पश्चिम चमकी, नजर न आया गुग्गा राव,
गुग्गे बरगा दरगाह मैं देखा, चौपड़ खेले पीरां नाल।

इस गाथा में बताया गया है कि गुग्गा राजस्थान के किसी राज्य का राजकुमार था। रानी बाशला के घर बहुत समय बाद गुरु गोरखनाथ के आशीर्वाद से गुग्गा का जन्म होता है। रानी के घर बहुत खुशियां मनाई जाती हैं। उधर बाशला की बहिन काशला के दो बेटे अर्जुन–सुर्जन पैदा होते हैं। बंगाल के राजा के घर कन्या पैदा होती है। उसकी शादी की बात चलती है। तब पण्डित बताता है कि मारू देश में गुग्गा नाम का व्यक्ति है, उसके साथ कन्या की कुण्डली मिलती है। कन्या के पिता ने पूछा कि गुग्गा किसका बेटा है और उसकी जाति क्या है। अब पण्डित ने बताया कि सेमल राजा का वह बेटा है और उसके दादा का नाम जयमल है तथा चौहान उसकी जाति है। तब राजा पण्डित को वहां टीका लेकर जाने का आदेश देता है। पण्डित कहता है वहां जाने के लिए सात समुद्र और सात नदियां पार करनी पड़ेंगी, वहां कौन जाएगा। तब राजा ने आदेश दिया कि भण्डार खोल कर तुम बारह महीने का खर्च ले लो और मारु देश टीका लेकर चले जाओ।

इस प्रकार बंगाल की राजकुमारी से गुग्गा की शादी हो जाती है और वह बहुत वर्षों तक ससुराल में ही रुक जाता है। बाद में बहिन ने संदेश देकर गुग्गा को बुलाया। वापस आने पर उसकी अर्जुन–सुरजन से लड़ाई होती है और अर्जुन,सुरजन दोनों भाई मारे जाते हैं। इस पर मां गुग्गा को घर से निकाल देती है। फिर गुग्गा सुलियर (रानी) के पास जाता है और उसे कहता है कि मैं डियोढ़ी के अन्दर नहीं आऊंगा क्योंकि माता ने मुझे बुरा भला कहा है और वह वहां से चला जाता है।

इस पर बहु सास से लड़ती है और कहती है कि मेरी उम्र की महिलाएं हार–सिंगार करती हैं और बालक खेलाती हैं परन्तु मेरी गोद खाली है। सास कहती है कि तू बैठ कर राज कर, तुझे किस चीज़ की कमी है, तेरा राजा अब मैं कहां से लाऊं। सुलियर की बहिन बिजली कहती है कि सबके महलों में दीपक जल रहे हैं परन्तु तुम्हारे महल में अन्धेरा पड़ा है। कौन वहां से चला गया है और किसकी मृत्यु हो गई है जिसका तुम शोक मना रही

हो ? सुलियर कहती है कि अर्जुन, सुरजन मेरे देवर मर गए हैं और गुग्गा चला गया है। वह कहती है कि अपने राजा की पहचान बता दे। मैं उसे ढूंढ कर ले आऊंगी। इस प्रकार विरहन सुलियर का आसमान की बिजली से बहिन के रूप में वार्तालाप वेदना की तड़प दर्शाता है।

लोक गाथाओं के आधार पर गुग्गा गोरखनाथ के आशीर्वाद से पैदा हुए और उन्हीं के चेले थे। गुरु गोरखनाथ का नाम नाथ साहित्य के आधार पर दसवीं शताब्दी में प्रचलित था अतः गुग्गा चौहान भी दसवीं शताब्दी के ऐतिहासिक पुरुष प्रमाणित होते हैं। कालान्तर में उनकी प्रचलित लोकगाथा में अन्तर आते–आते हमारी धार्मिक भावनाओं के साथ जुड़कर उन्होंने देवता का रूप धारण कर लिया और अब प्रचलित रूप में निरन्तर परम्परागत पूजन–भजन होता चला आ रहा है।

अब ये लोक गाथाएं विलुप्त हो रही हैं। अतः अनेक टोलियां अब 'गुग्गे की वार' बिना गाए ही मांग जाती हैं परन्तु 'गुग्गा नौमी' वाले दिन गुरु की टोलियां अब भी गुग्गा के स्थान पर रात–रात भर रतजगा करके वारें गाकर स्तुति करती हैं। गुग्गे की ये वारें गाकर मांगने की प्रथा लगभग सारे उत्तरी भारत में प्रचलित है।

❐

सोलन जनपद में गुग्गा गाथा

डॉ० प्रेम लाल गौतम

हिमाचल प्रदेश में बरसात जब अपने बन्धन शिथिल करने लगती है और मौसम खुलने लगता है तभी गुग्गे के भक्त अपनी मण्डली के साथ गांव–गांव विचरण करते हैं। मण्डली में प्रधान पदधारी चेला होता है जो मयूर पिच्छों में महाराज गुग्गा की दोनों भुजाओं पर रंग–बिरंगे दुपट्टों को लटकाये उठाते हैं। चार व्यक्ति गुग्गा–गाथा सुनाने वाले होते हैं। गुग्गा गाथा गाने वाले दो–दो व्यक्ति इकट्ठे गाते हैं तथा गाथा के साथ एक ताल में बजने वाले डगरुओं की ध्वनि सम्पूर्ण परिवेश को मंत्रमुग्ध कर देती है। यह गाथा ज़िला सोलन के अर्की क्षेत्र में आज भी प्रचलित है। मान–मनौतियां करने वाले गुग्गा मण्डली वालों को अपनी श्रद्धा के अनुसार रात्रि विश्राम कराते हैं। गुग्गा गाथा के बोल अग्रवर्णित हैं –

आरती

पूरा जोगी नगरी आया, नगरिया लेन्दा फेरी।
गीये मींज़ो धुणिया जलाईया–नगरिया लेन्दा फेरी।

सुरमा गऊंअर बणो जो जान्दियां, जान्दिये गऊये गोआ ढालयां।
सीला बे कमारिये गोये जो गईयां, भरेया गोआ चमया।।

गोये मींजो बालक याणा, याणा जे से गोदियो लय
किसदा बेटा, कुण तेरी माया, न मैं बेटा न
मेरी माया, दे यां मेरे करुआ आल्ली डिब्बी।।

केती देवा तेरी करुआ डिब्बी, बारिये वर्शों फिरो मेरा आवा।
मांगी–चुगी गोईटे ल्याया नी माता, सवा पैर जलो मेरा आवा।।

सिला कुम्हारियें आवा जगाया, आवे मींजो बिल्लिया रे छोटे बच्चे।
सारा आवा पक्का होवे या, करुआ डिब्बी काच्ची रईया।।
करुआ डिब्बी गुरुयेगेधरियां, नजरा भरी कने देखदा पूरा जोगी।
करुआ डिब्बी ताम्बेरियां बणिया, लेन्दा जोगी झोलिया च पाई।।

आऊसर गांई रा दूध मंगाया, जाहां से जोगी पूरा होया।
सिद्धा नाले तुश्ट होया, जहां से जोगी पूरा होया।
रैन्दा जोगी बणो जो गया, जहां से जोगी पूरा होया।।

वासुकी नागो री आतरी करीये बाबा, धौल बैलों री आरती करीये।
वसुधा माता री आरती करीये रे बाबा, ब्रह्मा, विष्णु री आरती करीये।
सदा शिवजी री आरती करीये रे बाबा, मारकण्डो सिद्धो री आरती करीये।।

सात समुद्रा री आरती करीये रे बाबा,
नड़िनवे नदिया री आरती करीये।
जगन्नाथो री आरती करीये रे बाबा बद्रीनारायणो री आरती करीये।
पऊण–पाणिये री आरती रे बाबा, गंगा माए री आरती करीये।।

चन्द–सूरजो री आरती करीये रे बाबा,
नौ लख तारेया री आरती करीये।

हनुमत वीरो री आरती करीये रे बाबा, बूंजा बीरा री आरती करीये।
चौरासी सिद्धा री आरती करीये रे बाबा,
सबनी व्रता री आरती करीये।।

कालका, जालपा री आरती करीये रे बाबा,
नैणा देवी री आरती करीये।।

सबनी देवा री आरती करीये रे बाबा, बघाटड़ देवो री आरती करीये।
गूगे राणे री आरती करीये रे बाबा, नीले घोड़े री आरती करीये।।

बाछल माता री आरती करीये रे बाबा,
सूर्यल राणिया री आरती करीये।
जौड़ू भाईया री आरती करीये रे बाबा,
बाछलो काछलो री आरती करीये।।

वासुकी नागो री, धौलू बैल, धरती माता, ब्रह्मा बिठा
मारकण्ड ऋशिए, सात समुद्र, नड़िनूवे नदिया,
जगन्नाथ बद्रिनारायण री आरती हुई मेरे रामा होर सब टूटी जावो बारती।।

पऊणा–पाणिये, गंगा भोये, चन्द–सूरज, नौ लख तारा
हनुमान वीर, बूंजा वीरा री आरती हुई मेरे रामा,
होर सब टूटी जावो बारती।
चौरासी सिद्धा जतियां–सतियां तीर्थां, व्रता, काल
जालपा री आरती हुई मेरे रामा होर सब टूटी जावो बारती।।

नैणा देवी, बडौला देवी, हारिया देवी, मरयारिया देवी
चौंठ दुर्गा री आरती हुई मेरे रामा, होर सब टूटी जावो बारती।
देवो मढ़ोल, देव बघाटड़, देव दुराणिये, लाडुबोड़
बाडद्ये देवी री आरती हुई मेरे रामा, होर सब दूरी जावो बारती।।

सुईनवे देवो, टंऊबुओ देवो सबनु देवो री आरती
हुई मेरे रामा, होर सब दूरी जावो बारती।
बाछला माता, गूगेराणे, सूरियल राणिया, नीले
घोड़े, जऊड़ूआ भाईया, आरती हुई,
मेरे रामा होर सब दूरी जावो बारती।।

गोरखनाथ, कानिया चेले, नौवानाथा, पांजा पीरा,
नौलख चेलया री आरती होये मेरे रामा, होर सब दूरी जावो बारती।
डेरेया डेरेया आरती, भूलया छिलया सबनू

देवतेया, सबनू जलेया री आरती होये मेरे रामा
होर सब टूटी जावो बारती।

लोकगाथा में गोरख-कुण्डली

कानिया चेला गुरुये रा प्यारा नेड़े करी कने बुलाया,
गर्मिया रे दिन चेलेया निकली गये, दिन हुण सेले
रे आये, खिलका लेणा बणाई।
न म्हारे सुईया, न म्हारे धागे, काटोरा गुरुआ खिलका बनाणा।।

ओरे ल्यायां, ओरे ल्यायां सतगुरु दा झोलू झोलिया जो लाज न लायां।
सजड़ा हाथ गुरुये झोलिया दे पाया सुईने री किन्गिरियां नकलिया।।

सुईने रिया किन्गिरियां हाटडूये राखी आओ रेशमी रे
धागे खरीदी लेई आवो।
आगे जे भेजना नौलख चेला पीछे ते फिटक चलाइया।।

सुईने री किन्गरियां हाटडूये रुलदिया कोई भी नी पूछदा बात।
कानीय चेला तेरा अजमत दा पूरा मनो मींजो करदा विचार।।

हाटो पराधियो नौ लख चेलेयो गुरुये सानो धो कमाया।
पिछलेया पैरा जो हटदे नौ लख चेले गुरुये रे डेरेया जो आये।।

फिरद-खिरदिये लईया प्रदखणा चरणा गे भीश नवाया।
सुईने रिया किन्गरियां गुरुआ हाटडूये हाटडूये
रुलदिया कोई बी नी पूछदा बात ।।

ओरे ल्यायां, ओरे ल्यायां मेरे सतगुरुये रा झोलू,
झोलूये जो लाज न लायां।।
सजड़ा हाथ गुरुये झोलूये पाया रेशमे'-रेशम नकालया।।

एक लख चेला तेरा जुलाहे रा बेटा खिलका बुनणे लगाया।
बुणया–बुणाया खिलका त्यार होयेआ गुरुयेगे नजर कराया।।

एक लख चेला तेरा दरजीयेरा बेटा खिलक सिलणे लगाया।
कटया कटाया गुरुये रा खिलका, पूरजा पूरण निकलया।।
सिता–सिलाया गुरुये रा खिलका गुरुये गे नज़र कराया।
कानिया चेला तेरा अजमता दा पूरा खिलके रा बजन कराया।।

न गुरुआ म्हारे तकड़ी, न म्हारे बट्टे, काये कने बजन कराणा।
आखड़ू म्हारे तकड़ी बट्टे दांदड़ूये बट चेलया तू लायो।।

तोलया–तुलाया गुरुये रा खिलका, नौ मल तो व आया।
जुग–जुग जीओ मेरे नौ लख चेलयो खिलका हुई गया त्यार।।

कानिया चेला मेरा अजमत दा पूरा नेड़े करी कने बुलाया।
मैं तीज्यो बोलया मेरेया कानिया चेल्या बुझया मेरे मनो री दलेल।।

इक देदे गुरुआ मृगो रा छाला इक दे दे सिमरिन माला।
थाले बछाई लेय मृगो रा छाला हाथो दे सिमरन माला।।

सारीया नगरिया हांडी फिरी देखया भगत कोई नज़री नी आया।
बाघड़ देशो मींजो बाछल माता, करदी गुरुये री सेवा।।

आलणा खांदिया, कोरा पईनदिया इक मन गोरख ध्याया।
कानिया चेला मेरा अजमत दा पूरा जायां कुम्हारो रे डेरया।।

इक आली डिब्बी काचो रा करुआ तुरत ली आयां बणवाई।
जाणी नी जाणु बखाणी नी जाणु केई रओ शिला कुम्हारी।।

ऐते नगरोटूये नौ रंग मैहल तेती रहो शिला कुम्हारी।
इक देदे गुरुआ नाद प्याला, पैरां जो देई दे पाऊवे।।

काछा पाई लेयां झोलू–बगलू हाथो लयां नाट प्याला।
पैरा पाऊवे पाई लैयां, हाथो लई चेले सिमरिन माला।।

हाऊले–मजले कानिया चेला जे चलदा सैइर–बजारा जो आया।
सैइरो रेया पूछदा बोरेया–बणिया, केई रैन्दी शिला कुम्हारी।।
इक दर छाडेयां, दूआ दर छाडेयां तीजा हा कुम्हारो रा डेरा।
शिखर–दपैरो तिखणा धूपणू जोगीये नाद बजाया।।

छल्ली करी जागीया शिला कुम्हारिया लख लख गाली चलाईया।
शिखर दपैइरो रा तीखणा धूपणू कुण ये पराधी आया।।

गाली बी न देयां मुईये मंदा बी न बोलयां गोरख नाथो रा चेला आया।
क्या फीड़ आऊखिया पईया कानिया चेलया कंउ मेरे डेरया जो आया।।

नौ लख चेला भैणे गुरु रे अंग–अंग चलदा बरत इक बी न पाले।
इक कोरी डिबिया काच्चो रा करुआ गुरुए तुरत मुंगाया।।

भीतरो दिखिया बारे टोलया भांडा–बर्तण कोई बी नी पाले।
बारीये वर्शे फिरो मेरा चाक ठारिये–बूढो मेरा आवा।।

इतनीयां वर्शा भैणे न्यालिया बी नी जान्दियां गुरुए तुरत बुलाया।
बावें जिने हाथोरिया गुठिया काटिया धरणी सुआ गड़ाया।।

बावें जिने कानोरिया मुन्द्रा खोलिया, मुन्द्रा रा चाक बणाया।
मैं तीन्जो बोलयां भैणें नी मेरिये माटिया रा ढेर तूं लाया।।

गुनया ओ गुनाई लेयां माटिया रा ढेलू, चाके ऊपर रखाया।
मैं तीन्जो बोलया शिला ओ कुम्हारिये देयां कुम्हारुए फेरा।।

इक आली डिब्बीया काच्चो रा करुआ तुरत लया बणाई।
जुग जुग जीयां करेया कानिया चेलया रीजक कुम्हारो रा लाया।।

जे अजमल दा पूरा हुंगा मेरा जोगी काचिया ते पक्कीया बणाया।
पिछले पैरां जो हाटेया कानिया चेला गुरुए रे डेरेया जो आया।।

फिरदे–खिरदिये लईया प्रदखणा चरणा गे शीश नवाया।
पलका खोलिया गुरु गोरखनाथे हाथो बल नजरा लगाईया।।
कानिये चेले जो पूछदा गुरु गोरख उंगलिया केथी गंवाईया।
दूजिया नजरा गुरु कानो बल देंदा मुन्द्रा केथी गवाईया।।

एक थी गुरुआ मेरी धर्मो री भैण उंगली रा सूआ गडाया।
एड़ा गुरुआ टोका भैणे दीतुरा काच्चिया ते पक्कि बणाया।।

टोका बी नी मानणा गुरुआ मीणा बी नी मानणियां
नित उठ हान्डणा संसार।
पूरीया नजरा गुरुये डिब्बिया बल देंदा, डिब्बिया ताम्बे री बणाई या।।

मैं तीन्जो बोलया मेरेया कानिया चेलया, चलो बाछला परखणे जाणा।
जेता चलिया गुरुये रीया जमाता हरिद्वारो बल आईया।।

नाये–धूलये पूजा–पाठ कीता, रोटिया री जगा थोड़े फल पाये।
से ओते छाड़िया मधु होर मालिया भंखर देशा जो आये।।

आपू तूसे मांगदे आपू तूसे खान्दे मेरा तूसे नांवो बी नी लेन्दे।
सारे हांडदे फिरदे आसे गुरुआ चुगटा कोई बी नी देंदा।।

ओरे ल्यायां ओरे ल्यायां मेरे सतगुरू दा झोलू झोलुये जो लाज ना लाया।
ढाई मुट्ठु गुरुए चाऊलेया रे काडे चेलेया जो आडर लाया।।

ताली–तलाई लो तुसे इनां चाऊला जो फेरी डिबड़ी बिच पायो।
चाऊला जो देखी कने नौ लख चेला हासणे री खिड खिड लाईया।।

क्या गुरुआ तो भांग–धतूरा खाऊरा कऊं हूरा एड़ा बाऊला।

इनां पर चाऊला–धरती गेरया चिड़ूआ जो चूग चुगायां।।

ताल्या–तलाई रे चाऊला रा मुट्ठु डिबड़िया बिच पाये।
रीन्नी–रिनाई लैईया चाऊला री डिबड़िया कनारे धरीया।।

मैं तूसांजो बोलया मेरे नौ लख चेलयो पात पटवरूंआ रे ल्याओ।
आगे पर भेजदा नौलख चेलया पीछे फिटक चलाईया।।

सारी हांडिया विन्द्रावनोरिया चखंडिया हारा पात नजरी नी आया।
कानिया चेला तेरा अजमत दा पूरा मनौ मींजो करदा वचार।।

हाटो पराधियो नौ लख चेलयो गुरुवे सानू धो कमाया।
पिछले पैरा जो हटदे नौ लख चेले गुरुए रे डेरेया जो आये।।

फिरद–खिरदिये लईया प्रदखणा चरणा घे भीश नवाये।
सारीया हांडिया गुरुआ बिन्दरा बनोरिया
चखंडिया हारा पात नजरी नी आया।।

ओरे ल्यायां, ओरे ल्यायां मेरे सतगुरु दा झोलू–झोलूए जो लाज़ नी लायां।
सजड़ो हाथ गुरुए झोलियां च पाया नौ लख थालू निकाले।।

नौ लख थालू गुरु झोलूए ते काडदा चेलेया रे हाथो हाथ थमाये।
मैं तुसांजो बोलदा मेरे नौ लख चेलयो बाईठी बैठणे जो आओ।।

नौ लख चेला तेरा बाईठी बैठदा गुरु आपू परीया करदा।
नौ लख चेला तेरा भोजन खाईगा डिबड़िया आजु हुईया नी सुणाईया।।

चन्द–सूरज तेरे भोजन पाईगे डिबड़िया जो हुईया नी सुणाईया।
नौ लख तारे भोजन खाईगे डिबड़िया जो हुईया नी सुणाईया।।

बूंजा बीर भोजन खाईगे डिबड़िया रा आध भी नी होया।
आपू गुरु खाणे बैठे डिबड़िया मुंधियां धराईया।।

कानिया चेला तेरा अजमती दा पूरा नेड़े करी कने बुलाया।
जेता चलिया तेरिया जमाता बाछला बागो जो आईया।।

बाछला रे बागा तम्बू गडाये, बाछला रे बागे डेरा लगाया।
भगूंआ तम्बू गुरुए रा लगेया सदुनी चिड़िया लगाईया।।
भगूंआ तम्बू देखणे जो कई लोग तमाशे जो आये।
मैं तुसां जो बोलदा मेरे नौलख चेलयो बिरच्छा ताड़ने जो लागो।।

न गुरुआ कोई भास्त्र–घुवाड़िया काजी नाल विरच्छ जे बाडबे।
सजड़ा हाथ गुरु झोलिया पांदा सुईनेरिया (इना) किन्गिरियां हाटडूये राखो, घवाड़िया मूले म्याजो।।

आगे भजदा नौ लख चेलया पीछे ते फिटक चलाईया।
सुईनेरिया किन्गिरियां हाटडूये–हाटडूये
रुलदिया धवाड़िया कोई बी नी देंदा।।

कानिया चेला तेरा अजमत दा पूरा मनो मींजो करदा बचारा।
हाटो ओ पराधियो नौ लख चेलेओ गुरुए सानू धो कमाया।।

पिछले पैरां जो हाटदे नौ लख चेले गुरुए रे डेरेया आये।
फिरद–धिरदिये लईया प्रदखणा, चरणा घे भीश नवाया।।

सुईनेरिया किन्गिरियां गुरुआ हाटड़िया–हाटड़िया रुलदिया,
कोई बी नी घवाड़िया देंदा।
ओरे ल्यायां, ओरे ल्यायां मेरे सतगुरुए दा झोलू झोलूए जो लाज नी लायां।।

सजड़ा हाथ गुरु झोलूए च पान्दा, नौ लख घवाड़िया नकालिया।
नौलख घवाड़िया जो गुरु झोलिया ते काडदा चेलेया रे हाथो हाथ थमान्दा।।

नौलख चेला तेरा बागो दे जान्दा बिरच्छा जो बाडण लगया।

मोटिया रेलिया धूणियां च लगाईयां धूएं कने अम्बर छाया।

आम्बा–चाम्बा सबी कुछ बाडी लया, बाडी लई सूईणी री कालिया।
लौंग लाईचिया सबी किछ बाड्डी लईया बागो रा खणी कने टिकरू बणाया।

भांग–धतूरा गुरुए बीजी लेया, बागो रा टिकरू बणाया।
मोटिया–रेलिया धूणे बीच लगाईया पाता रा साग बणाया।।
तेल होर दंऊए रा देन्दा छमके धूएं कने अम्बर बी छाया।
सबेरे उठी कने माली बागो जो आया नैणा ते नीर बरसाया।।

देखी लेन्दा माली बागो रे हाल, बागो ते टिकरू बणाया।
दौड़या जान्दा माली बाछला रे मैला बाछला के अरज लगाईया।।

एड़ा इक जोगी माता बागोबिच आया, बागो रा टिकरू बणाया।
मनो मींजो माता बाछल सोचया करदी मेरा गुरु परखण आया।।

तूं जा मालिया घरो जो आपणे, मेरा गुरु परखण आया।
इतणे ध्याड़या ते सिंऊरेया करदी, येओ दिन धणभाग जे आये।।

आपू तूसे मांगदे, अपू तूसे खान्दे, मेरा तूसे नावों वी नी लेन्दे।
सारा दिन गुरुआ आसे मांगदे, चुगटा कोई बी नी देन्दा।।

सेओ पर ते छाडिया गुरुआ मधू होर मालिया भंखर देशा जो आया।
ओरे ल्यायां, ओरे ल्यायां, मेरे सतगुरु दा झोलू, झोलूए जो लाज न लायां।।

ढाई मुट्ठु गुरु चाऊला रा झोलिया ते काडदा काडी कने थालिया च पाया।
मै तुसांजो बोलदा मेरे नौलख चेलयो, चाऊला जो तलाब लागो।

ताले–तलाई लये ढाई–मुट्ठी चाऊला रे, फेरी डिबड़िया बिच पाये।
ऊपर धरिया सतो रिया डिबिया सूरजो री आंच लगाई।

रीनी–रिनाई लईया गुरुए खिचड़िया बादना ते भूईयां धराईयां।

मैं तूसां जो बोलया मेरे नौ लख चेलेयो पात पटम्बखे ल्योओ।।

आगे जे भेजदा नौ लख चेलया पीछे ते फिटक चलाईया।
सारीया हाडियां बणोरिया खंडिया हारा–पात नजरी नी आया।

कानिया चेला तेरा अजमत दा पूरा, मनो मींजो करदा बचार।
पिछले पैरां जो हाटो ओ पराधियो, गुरुए सानूं धो कमाया।।
पिछले पैरां जो हटदे नौ लख चेले गुरुए रे डेरे जो आये।
सारियां हांडी लईया आसे बागड़–देशोरियां खंडिया हारा पात नजरीं नी आया।।

ओरे ल्यायां, ओरे ल्यायां मेरे सतगुरु दा झोलू झोलूए जो लाज नी लायां।
सजड़ा हाथ गुरु झोलूए च पान्दा नौ लख थालिया नकालिया।।

नौ लख थालिया झोलिया ते नकालियां चेलेया रे हाथो हाथ थमान्दा।
नौ लख चेला मेरा बाईंठी बैठदा, गुरु परीया बांडदा ।।

नौ लख चेला तेरा भोजन पाईगा, डिबड़ूए हुईया नी सुणाईया।
चन्द सूरज तेरे भोजन पाईंगे डिबड़ूए हुईया नी सुणाईया।।

नौ लख तारे भोजन पाईगे, डिबड़ूए हुईया नी सणाई।
पांजो पीरत तेरे भोजन खाईगे, डिबड़ूए हुईया नी सणाई।।

नौ नाथ तेरे भोजन पाईगे, डिबड़ूए हुईया नी सुणाईया।
भुक्र, भानीचर तेरे भोजन पाईगे, डिबड़ूए हुईया नी सुणाईया।।

आपु गुरु जी जीमण बैठे, डिबड़िया मुंदे धराईया।
खारी खाई लइया गुरुआ तेरी खिचड़िया चलो बिना मुयेधियाये।।

सेयो पर ते छाड़िया मधु होर मालिया भंखर देशा जो आये।
गरी होर छवारे गुरुआ आसे खावे थे सारा दिन देओ थे कुलेला।।

इक तूम्बा मोया ध्वारा पाणिए रा ल्याओ कुछ अजमत चलावा।

आगे पर भेजदा नौ लख चेलया पिछनाते फिटक चलाईया।।

सारीया हांडिया बाछलारिया नगरिया पाणी कोई बनी देंदा।
बाछला रिया छोरिया ते कानिया चेला, पाणी मांगदा ध्वारा।।

इक तूम्बा देई दो मींजो पाणिये रा ध्वारा कुछ अजमत चलावा।
ऐड़िया अजमती रा पूरा हुन्दा मेरेया साधा इन्द्रो ते कऊनी बार सान्दा।।

भियागा आसे जांदिया, सांझा आसे आऊंदियां इक वे घड़ोलू ल्यांदियां।
इक वे घड़ोलू आसे पाणिये रा ल्यांऊंदियां लगदा बाछला रे धोरे।।

एड़ा मेरेया अजमती रा पूरा बिनी मिलदा ध्वारा।
कानिया चेला तेरा अजमती दा पूरा मनो मिंजाकरदा विचार।।

हाटो पराधियो नौ लख चेलेओ गुरुए सानू धो कमाया।
पिछले पैरा जो हटदा नौ लख चेला गुरुए रे डेरे जो आये।।

सारा हांडी लया गुरुआ बाछला रा देश पाणी बी नी देंदा कोई घवारा।
ऐड़ा मेणा देदियां बाछलारिया छोरिया कटी बकले जो खान्दा।।

टोका बी नी मनणा, मणा नी माननियां नित उठ मोडणा संसार।
ऐड़ा अजमती रा हुन्दा पूरा मेरा जोगिया इन्द्रा तेऊनी बरसान्दा।।

ओरे ल्यायां, ओरे ल्यायां मेरे सतगुरु रा झोलू झोलूए जो लाज न लायां।
सजड़ा हाथ गुरु झोलूए ते काडदा ताम्बे रे नादो नकालया।।

ताम्बे रे नादो जो परे जे करी दो चांदिये रा नाद नकालया।
चांदिये रे नादो जो परे जे करी दो सुईने रा नाद नकालया।।

सुईने रे नादो जो परेजे करी दो ताम्बेरिया सिंगिया नकालिया।
सिंगिया रा भाब्द गुरुए सुणाया रूठया इन्द्र मनाया।।

चान्दिये री सिंगिया रा भाब्द सुणाया जुड़ मिल बादल आया।
सुईनेरिया सिंगिया रा भाब्द सुणाया रिमझिम मेघ बरसाया।।

चली पईया कुल्ला गलीया मलाऊणे खूए छालिया लईया।
सुईणी री कलिया सरवर खिलिया सारी रौन्सी गई काया।।

गाथा में बताया गया है कि पार्वत्य प्रदेश में तुंगभद्र नाम का एक प्रतापी राजा था। सौदामिनी उसकी पत्नी का नाम था। उसकी केवल दो पुत्रियां थीं, पुत्रियों का नाम वत्सला व कुत्सला था। इन्हीं पुत्रियों को पहाड़ी या स्थानीय बोली में काच्छल और बाच्छल नाम से पुकारा जाता है। कुत्सला स्वभावतः इर्ष्यालु एवं कटु थी तो वत्सला सर्वथा सौम्य स्वभाव की थी। राजा अपनी युवा पुत्रियों का विवाह मारवाड़ प्रदेश के राजघराने में कर देता है। कुत्सला का पति राजवंश से ही सम्बन्धित अश्वकेतू नामक युवक था तथा वत्सला का पति मीनकेतु युवराज था। कुत्सला प्रायः वत्सला से बहुत ईर्ष्या व वैमनस्य रखती थी जिससे माता–पिता भी चिन्तित थे। बारह वर्ष दोनों की शादी किये हो गये थे परन्तु दोनों बहिनें निःसन्तान थीं।

वत्सला ने सन्तान प्राप्ति हेतु गुरु गोरखनाथ के सतत ध्यान से बारह वर्ष तपस्या की। वत्सला के घोर तप के परिणामस्वरूप गोरखनाथ प्रसन्न हुए तथा उन्हें सन्तान देने वाले फल के लिए अपने आश्रम में बुलाया। कुत्सला को जब रहस्य ज्ञात हुआ तो अगले दिन वह वत्सला के वेश में गुरु गोरखनाथ से फल प्राप्त कर लाई। कुत्सला के बाद जब वत्सला सन्तान प्राप्ति हेतु फल लेने पहुंची तो गुरु गोरखनाथ जी को अपनी वञ्चना की प्रतीति हुई। क्रोधित होकर गुरु गोरखनाथ ने शाप दे दिया कि कुत्सला के दो पुत्र होंगे और दोनों ही अपनी मां की भांति ईर्ष्यालु और क्रूर होंगे। वत्सला की सन्तान से दोनों मारे जायेंगे।

मीनकेतु एवं गर्भवती वत्सला चिन्तित रहने लगे। मीनकेतु ने वत्सला को इसी भय से माता–पिता के पास भेज दिया। ग्यारह मास पूर्ण हो जाने पर भी वत्सला के प्रसव नहीं हो रहा था। इससे वत्सला की माता को चिन्ता होने लगी। एक दिन आकाशवाणी हुई "मैं यहां जन्म नहीं लूंगा, मैं अपने घर पर ही जन्म लूंगा।' इस आकाशवाणी को सुनकर हैरान हुई वत्सला की मां ने उसके पति को सन्देश भेजा तथा वत्सला को उसके घर भेज दिया। एक ही दिन कुत्सला के दो पुत्रों तथा वत्सला के एक पुत्र की उत्पत्ति हुई।

कुत्सला बच्चों के पैदा होते ही मर गई। वत्सला अपने पुत्र गगन के साथ बहिन के पुत्रों अर्जुन व सुरजन का भी पालन–पोषण करने लगी।

गुगा शिक्षा–दीक्षा से विद्वान बन गया परन्तु कुत्सला के दोनों पुत्रों को पढ़ाई–लिखाई में कोई रुचि न होने से वे दोनों आवारा इधर–उधर भ्रमण करते थे। इस प्रकार की स्थिति देखकर अश्वकेतु का दुःखी होना स्वाभाविक था। गगन को नीचा दिखाने का ही दोनों भाइयों का सतत–प्रयास था।

बंगाल में गुगा की सगाई तय हुई। जब ब्राह्मण गुगा का टीका लेकर जा रहा था तो रास्ते में अर्जुन और सुरजन ने पण्डित से टीका छीन लिया। पण्डित की यह स्थिति हो गई कि यदि वह बंगाल की ओर लौटे तो अन्धा हो जाये और यदि मारवाड़ की ओर लौटे तो आंखों में रोशनी आ जाती थी। आकाशवाणी द्वारा ब्राह्मण को मारवाड़ जाने के लिए कहा गया। ब्राह्मण ने मारवाड़ जाकर गुगा का तिलक व शादी कर दी। तिलक छीनने की बात को जानकर गुगा का अर्जुन–सुरजन से और वैमनस्य बढ़ा। कुछ समय के लिए गुगा अपने ससुराल बंगाल चला गया।

अश्वकेतु ने अपने उपद्रवी बेटों को बहुत समझाया परन्तु उद्दण्ड पुत्र ठीक मार्ग पर नहीं आये। इन दोनों ने पठानों से मिलकर गुगा के राज्य पर आक्रमण की योजना बनायी। मीनकेतु को महती चिन्ता हो गयी तथा उन्होंने पण्डित भेजकर गुगा को बंगाल से बुला लिया। गुगा की प्रतिज्ञा थी कि जन्मभूमि पर किसी विदेशी के पैर न पड़ने देगा। उन्होंने अर्जुन सुरजन को राष्ट्रद्रोह का दण्ड देने की सोची।

दोनों सेनाओं में भीषण युद्ध हुआ। युद्ध में अर्जुन और सुरजन मारे गये और पठान युद्धभूमि छोड़कर भाग गये। विजय उपरान्त गुगा माता–पिता के दर्शनार्थ गया। मीनकेतु पुत्र की जीत से बड़ा खुश हुआ। माता के आदेश से गुगा वन को गया। गुगा की पत्नी योगदा के चन्द्रकेतु नामक पुत्र हुआ जिसे आश्रम में महात्मा ने सभी विद्याएं पढ़ायीं। चन्द्रकेतु के राज्याभिषेक के समय स्वयं गोरखनाथ जी आशीर्वाद देने आये।

❒

सुबाथु क्षेत्र में गुग्गा पर्व

नरेन्द्र अरुण

मारु प्रदेश, आधुनिक मारवाड़ प्रसिद्ध गुग्गा गाथा की अमिट आस्था और अटल विश्वास ने हिमाचल प्रदेश के भोले–भाले जनपद को भी प्रभावित किया। हिमाचल प्रदेश को आंचलिक छोरों सोलन, बिलासपुर, मण्डी एवं कांगड़ा के क्षेत्रों में गुग्गा राणा की गाथा और उन का यश फैला हुआ है। भक्तिकाल का उद्भव ठीक जैसे द्रविड़ (दक्षिण) में हुआ और वह उत्तरी भारत में विकसित हुआ, ठीक ऐसे ही गुग्गा गाथा का उद्भव भले ही राजस्थान की वीर भूमि पर हुआ किन्तु उसका बहुमुखी विकास पंजाब और हिमाचल प्रदेश को प्रभावित किए बिना न रह सका।

गुग्गा पीर से सम्बंधित अनेकों दंत कथाएं, किंवदंतियां एवं जनश्रुतियां प्रचलित हैं। गुग्गा नवमी के पावन पर्व पर गाए जाने वाले लोक गीतों में गुग्गा राणा से सम्बंधित उपाख्यानों एवं ऐतिहासिक तथ्यों से उपलब्ध जानकारी का ब्यौरा इस प्रकार है:–

विश्वसनीय हैं कि मारू देश (मरवाड़) में दो बहनें रहती थीं जिनको काच्छल और बाच्छल नाम से जाना जाता था। भाग्य की बिडम्बना कि दोनों ही बहनें निःसंतान थीं। काच्छल और बाच्छल ने विभिन्न देवी देवताओं की अराधना की परन्तु उनकी गोद हरी न हुई। भाग्यवश मारू प्रदेश में गुरु गोरखनाथ जी के पावन चरण कमल पड़े। उनकी चमत्कारपूर्ण आश्चर्य जनक घटनाओं से दोनों बहनें प्रभावित हुईं और उन्होंने संतान की कामना को प्रस्तुत किया। गुरु गोरखनाथ ने बाच्छल को 12 वर्ष तक अपना नाम स्मरण करते हुए सोम वृक्ष की जड़ों का चूर्ण बनाकर दो बार सेवन करने को कहा। बाच्छल ने सोम वृक्ष की जड़ों का चूर्ण बनाया। चूर्ण के सेवन के फलस्वरूप उनकी कोख से गुग्गा राणा का जन्म हुआ। कहते हैं कि शिला पर से चूर्ण का कुछ भाग बाच्छल की सहेली ब्राह्मणी तथा दो हरिजन भंगिन तथा चमारिन स्त्रियों ने भी प्रयोग किया। फलस्वरूप ब्राह्मणी ने नरसिंह

भंगिन ने भजनूं तथा चमारिन ने रतनु को जन्म दिया। शिला को भाग्यवश बाच्छल की घोड़ी भी चाट गई फलतः घोड़ी से नील नामक घोड़े का जन्म हुआ।

किंवदन्ती के आधार पर गुग्गा पीर को जन्मजात चमत्कारपूर्ण शक्तियां उपलब्ध थीं। उदाहरणार्थ इनके जन्म के समय जन्मांध दाई संदल के नयनों में ज्योति का प्रकाश हुआ था। इतना ही नहीं एक बार बाच्छल पीहर जाते समय प्रसूता अवस्था में अपनी मां को सांप के आक्रमण के समय स्पर्श करके मृत्यु के हाथों से सचेत किया था।

गुग्गा राजा के विभिन्न चमत्कारों की बात समस्त मारू प्रदेश में जंगल की आग की तरह फैल गई और परिणामस्वरूप उनके सगे सम्बंधी उनकी जान के दुश्मन बन गए। कहते हैं कि मौसेरे भाइयों अर्जुन और सुर्जन ने गुग्गा को मृत्यु के घाट उतारना चाहा किन्तु दोनों युद्ध में मारे गए।

दन्तकथा के आधार पर उसी युद्ध में इन्द्र नामक शत्रु ने उस का शीश काट दिया। किन्तु आश्चर्य यह है कि वे बिना मुण्ड के भी शत्रुओं पर घात प्रतिघात करते रहे और मुण्डलिक की उपाधि से विभूषित हुए। महाराणा गुग्गा पीर के अनेकों युद्धों के वर्णन लोकगीतों एवं लोकगाथाओं में गुम्फित हैं जो गुग्गा नौमी के पावन पर्व पर सुखना अथवा जगरातों में गायकों द्वारा श्रद्धापूर्वक गाए जाते हैं। छोटी सी छड़ी से डमरू पर पड़ी थाप तथा श्रद्धा विनीत अंगुलियों के कोरों से थामे सारंगी की गजर से तारों में निकली मधुर ध्वनि के वातावरण में एक अद्भुत संगीत लहर लहरा जाती है और भक्तजन भावविभोर होकर झूम–झूम जाते हैं।

इस प्रकार राजस्थान से लेकर समस्त हिमाचल के पूर्वी उत्तरी भू–भागों के अंचल में राणा गुग्गा के लोकगीत लोक संस्कृति के परिचायक हैं। यत्र–तत्र सर्वत्र गुग्गा माढ़ियों पर गुग्गा नौमी के पावन गीत गाए जाते हैं। बांस की छड़ी पर बने गुग्गा के पावन निशान के ध्वजा, नारियल, मोर पंख, कौड़ियों द्वारा सुसज्जित किया जाता है लहराते हुए विशालकाय ध्वज गुग्गा देवता की प्रतिष्ठा हैं। इन्हीं छड़ों का पूजन अर्चन विधिवत् चलता रहता है।

वस्तुतः गुग्गा पूजन राजस्थान में पहले से प्रचलित था। प्रायः पशु धन की रक्षा हेतु तथा सर्पदंश से भय निवृत्ति के लिए इनकी पूजा की महान् प्रतिष्ठा स्वीकार की जाती है। ऐतिहासिक परिवेश में गुग्गा राणा को चौहान वंशी स्वीकार किया गया है। चौहान वंशावली की मान्यता के अनेकों पुष्ट

प्रमाण भी उपलब्ध हैं। ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर गुग्गा चौहान को ददेरा के राव के रूप में स्वीकार किया जाता है। ऐतिहासिक प्रमाणों के आधार पर इन्होंने अनेकों बार यवन आक्रांताओं के दांत खट्टे किए। विभिन्न लोकगीतों में गुग्गा और महमूद गजनबी के युद्धों का सजीव वर्णन मिलता हैं। कहते हैं कि पारस्परिक विरोध के कारण ही तो गुग्गा के मौसेरे भाई अर्जुन और सुर्जन गुग्गा के विरुद्ध महमूद गजनवी के साथ मिलकर लड़े थे। इस प्रकार गुरु गोरखनाथ और गुग्गा का दसवीं शताब्दी के समकालीन होना सिद्ध होता है। एक अन्य दन्तकथा के आधार पर गुग्गा चौहान मुहम्मद तुगलक का समकालीन भी स्वीकार किया जाता है। इतिहास में 1315--88 के मध्य फिरोज शाह तुगलक के ददेरी पर आक्रमण का वर्णन है। अतः गुग्गा जी चौदहवीं शताब्दी में हुए। डॉ0 सत्येन्द्र भी इसी तथ्य की पुष्टि करते हैं और स्वीकार करते हैं कि इस युद्ध में ही गुग्गा पीर की मृत्यु हुई थी।

भले ऐतिहासिक तथ्य कुछ भी रहे हों किन्तु इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि वे अपने समय के अनुपम चमत्कारी पीर एवं ऐतिहासिक पुरुष रहे हों। यही कारण है कि भक्त आज भी गुग्गामाड़ी में मंदिर में विभिन्न प्रकार की मन्नतें मांगते हैं और मन से इन्हें पूजते हैं। गुग्गा सर्पदेवता के स्वरूप में भी पूजनीय हैं। प्रायः सर्प का विष तांत्रिक विधान से उतारने वाले गरड़े तांत्रिक को भी पहले मन्त्रजाप से पूर्व गुग्गा पीर की आराधना करनी पड़ती है। गुग्गा पीर हमेशा अपने पांच पीरों के साथ विराजमान होते हैं। अमुक पांच पीरों में मंत्री नार सिंह, अंगरक्षक भजनु एवं रत्नु तथा वाहन नीला घोड़ा पंजपीर के नाम से विख्यात हैं। गुग्गा राणा सदैव राजस्थानी सैनिक वेशभूषा में चित्रित किए जाते हैं। सुबाथू के पावन स्थान से गुग्गा पीर का चमत्कृत आख्यान जुड़ा हुआ है।

पर्वतीय उपत्यकाओं से घिरा हुआ एवं समशीतोष्ण जलवायु वाला यह छोटा सा नगर सुबाथू सागर तट से लगभग 3700 फुट की ऊंचाई पर कालका कुनिहार राजमार्ग पर स्थित है। सुबाथू का सम्बंध ऐतिहासिक तथ्यों के परिप्रेक्ष्य में अपना अमूल्य महत्त्व रखता है। कहते हैं कि गोरखा राईफ़ल्ज मलवाण रेजिमैंट की स्थापना 14 दिसम्बर 1815 को देवथल नामक स्थान पर सुबाथू में ही हुई थी। इस समय इसे सुबाथुम, सुबाठौर, सुबागढ़ तथा सुबाथू के नाम से ही स्वीकार किया जाता हैं। आज इसे सुबाथु कहते हैं। सुबाथु एवं निकटवर्ती क्षेत्र पौराणिक सिक्कों की पावन स्थली रही है। पाण्डवों ने 13 वर्ष का बनवास कालकू वर्तमान कालका में बिताया था। कालकुट प्रदेश में बनासर, करोल, सोलन, डगशाई,

करसौली तथा सपाटु आते हैं। महाभारत में इन स्थानों को सप्तदीप अथवा संसप्तकगण के नाम से पुकारा जाता है। वस्तुतः सप्तदीपक ही आज का सुबाथु है। 1857 के आसपास स्वतन्त्रता संग्राम से सम्बन्धित हिमाचल की ऐतिहासिक गाथाओं का केन्द्र उन दिनों सुवाथु रहा। स्वतन्त्रता सेनानी राम प्रसाद वैरागी द्वारा लिखित कुछ अंग्रेजों के विरुद्ध प्राप्त दस्तावेजों के अंग्रेजों के हाथों में जाने के कारण उनको अम्बाला में फांसी हो गई थी। जहां एक ओर सुबाथु राजनैतिक गतिविधियों का केन्द्र रहा वहां दूसरी ओर धार्मिक परिवेश में भी पीछे नहीं था।

सुबाथु में ही गुग्गाभाड़ी, गुगै हर अथवा गुग्गुड़ी का पावन मंदिर स्थित है। रक्षाबन्धन के दिन गुग्गा पीर की पुण्य स्मृति को पुन जागृत करने के निमित्त गुग्गामाड़ी पर रंग बिरंगे वस्त्रों से विभूषित विशाल सुसज्जित झण्डा चढ़ाया जाता है। इस पावन पर्व के दौरान तांबे की त्रिशूल, छत्री, छड़ियां तथा नाग प्रतिमाएं लिए घूमते हैं तथा सारंगी के स्वर अलापते हुए डमरू के मनमोहक नाद के साथ लोकगीत अलापते हुए झूमते हैं।

गुग्गा माड़ी के सुबाथु में अस्तित्व में आने के पीछे भी विचित्र दन्तकथा है। ऐसा विश्वास किया जाता है कि लगभग पौने दौ सौ वर्ष जिला रोपड़ के चिझला गांव में बाल्मीकि गुज्जर रहता था। उसका दूसरा भाई था छित्तर जिसे छोटू के नाम से भी पुकारा जाता था। छित्तर अथवा छोटू रोपड में गुग्गा पीर के गीत गाया करता था। वह मन का पवित्र एवं निश्छल व्यक्ति था। समस्त परिवार का लालन–पालन उसी पर निर्भर था।

एक दिन रात को उसे स्वप्न हुआ और दिव्य शक्ति ने उसे आदेश दिया कि वह सुबाठौर में गुग्गा माड़ी की स्थापना करे। ईश्वरीय प्रेरणा के आदेश को सिर माथे पर रख कर वह रोपड़ से चल कर सुबाठौर सुबाथु में पहुंचा। अब छितरू को यह निश्चित करना कठिन हो गया कि माड़ी का मंदिर कहां बने ? ज्यों ही गुग्गापीर का ध्यान किया उसे एक उपाय सूझा कि वह काले बकरे के गले में ईंट लटका कर समस्त सुबाथु में घुमाए, जहां पर बकरा घुटने टेक कर विश्राम करे समझो कि गुग्गामाड़ी की स्थापना उसी स्थान पर की जाए।

स्मरणीय है कि सुबाथु जाती बार वह मरू प्रदेश में जाकर बागड़ देश की ईंट लाया था। सुवाथु के नीचे वाले भाग में उत्तर पूर्व के समतल छोटे से मैदान में बकरा बैठ गया और गुग्गामाड़ी का पावन मंदिर अस्तित्व में आया। समस्त भक्तों ने हर्ष विभोर होकर गुग्गा माड़ी के निर्माण में भाग

लेना प्रारम्भ किया। भक्त छितरू बागड़ से पुनः पांच ईंटें लाया और सर्वप्रथम मिट्टी से बनी गुग्गा माड़ी का मंदिर बनाया। देखते ही देखते यहां के लोगों ने गुग्गा माड़ी के भव्य भवन का निर्माण किया। सुबाथु जनपद के सभी श्रद्धालुओं ने समय–समय पर गुग्गामाड़ी के पावन धाम का इतिहास बनाने में कोई भी कसर बाकी न छोड़ी। लाला संतराम, लाला दिलीप चन्द सूद, पं० राज चन्द्र रतिराम गुग्गा के परम श्रद्धालुओं में आज भी अमर हैं। कहते हैं कि रतिराम श्रद्धालु ने स्वर्गवास होने के समय इच्छा प्रकट की कि गुग्गा माड़ी के महान भक्त के सम्मानित पद पर भविष्य में पं० विद्यासागर को प्रतिष्ठि किया जाए तथा सम्मानित पगड़ी विद्यासागर जी को गुग्गा माड़ी के पावन पर्व के शुभारम्भ पर प्रतिवर्ष बांधी जाए। आजकल भी विद्यासागर जी को इसी सम्मान से अलंकृत किया जाता है।

गुग्गा माड़ी के मंदिर की पंजीकृत सभा आज भी तन मन धन से सक्रिय कार्य करती है तथा प्रतिवर्ष गुग्गा माड़ी के मेले का आयोजन बड़ी धूमधाम से किया जाता है। गुग्गा का मेला आज सोलन ज़िला में सम्पन्न होने वाले प्रसिद्ध मेलों में से एक है। जिस प्रकार सोलन में दुर्गा अष्टमी और कुनिहार में मेला लाहल (बसोआ) प्रसिद्ध है। महीनों पहले ही बच्चे, बूढ़े और जवान सभी माड़ी के मेले की प्रतिक्षा में डूब जाते हैं। प्रतिवर्ष मेले का आयोजन हर्षोल्लास का वातावरण छोड़ कर भविष्य के लिए भूत के स्मरण संकेत छोड़ कर चला जाता है।

सुबाथु जनपद में गुग्गा के ऐतिहासिक मेले की परम्परा का सम्बंध भी बहुत पुराना है। प्रतिवर्ष भादों की शुक्ल सप्तमी से लेकर दशमी तक मेले का विशाल आयोजन होता है। हिमाचल, पंजाब एवं हरियाणा आदि के श्रद्धालु अपनी–अपनी मन्नतें चढ़ाने के निमित्त मेले में अपने को भाग्यशाली समझते है। लगभग सप्ताह भर चलने वाले इस मेले के मुख्य आकर्षण कुश्तियां एवं रात्रि को गाई जाने वाली गुग्गे पीर की गाथाए हैं। ऐसा विश्वास किया जाता है कि गुग्गा माड़ी में जो सच्चे मन से मनौती मनाते हैं गुग्गा पीर उनकी मनोकामना को अवश्य पूरा करते हैं। नवमी–दशमी के दिन मेला भरपूर जवानी पर होता है। हिमाचल प्रदेश के सोलन ज़िले का यह गुग्गा माड़ी का महोत्सव है जो गुग्गा पीर हिमाचली परिवेश से घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित करने का प्रावधान रखता है।

❑

शिमला जनपद में गुग्गा जाहर पीर

मोहन राठौर

शिमला के चौपाल क्षेत्र व उसके सीमावर्ती जनपदों, जौनसार बावर, नौ नाली हाम्बल, हरिपुरधार व उत्तरांचल के सीमावर्ती शिमला जनपद में गुग्गा चौहान की लोक गाथा गायन का प्रचलन है।

सूफियाना मिज़ाज के लोक गायक व लोक तंत्र वाद्य सारदी के वादक, जिनको लोक बोली में साधटों के नाम से सम्बोधित किया जाता है, लोक गाथा गायन के सिद्धहस्त कलाकार हैं जो वर्षा ऋतु में पर्वों की तिथियों के अनुसार गुग्गा राणा की लोक गाथा को गांव–गांव में जाकर श्रद्धापूर्वक गाकर लोगों को सुनाते हैं।

सर्दियों के मौसम में यही 'साधटे' घर–घर जा कर पारम्परिक लोक गाथा भरथरी, लोक रामायण, लोक महाभारत एवं महासतियों की लोक गाथाओं का गायन–वादन करते हैं। ये लोक गाथा–गायक देव परम्परा से जुड़े हैं और परंपरानुसार खानदान के कम से कम एक आदमी को अपने दायित्व का निर्वाह अवश्य करना पड़ता है।

क्योंथल रियासत के जुनगा जनपद में भी गुग्गा गाथा गायन का प्रचलन है। सुन्नी–तत्तापानी, हलोग, मान्दरी के जनपदों में भी अनेकों मेले, सर्पदंश तथा अन्य व्याधियों का उपचार गुग्गा राणा की पारम्परिक पूजा–अर्चना करके द्वारा झाड़–फूंक करके किया जाता है।

गाथा के अनुसार राजा ज्योरा के मारू देस में वर्षा न होने के कारण भयंकर सूखा पड़ जाने से बावड़ियों का पानी, फसलें, बाग–बागीचे सूख गये। गुरु गोरखनाथ की कृपा से वर्षा हुई। बावड़ियां पानी से भर गईं और सूखे बाग हरे भरे हो गये।

चलदि जु गोई आम्मां बाछल
नौ लख बाग देखण जो ऽ ऽ

चलदि जु गोई आम्मां बाछल
नौ लाख बावड़िया देखकर जो ऽ ऽ ऽ
नौ लख बाग–बावड़ी भुकै जी हो ऽ ऽ
नौ लख चेले बागां में बेशै जी हां ऽ ऽ
भुकै का जी भुका बाग
आम्मां ऽऽऽ बाछल
बाछल आम्मां बंबल कुआं
भुकै का जी भुका जी हां ऽ ऽ ऽ
भुकै होन्दे बाग आम्मां बाछल ऽ ऽ ऽ
हरे कराये गुरु गोरख ऽ ऽ ऽ
जबै भुल़कु पाणें बरसाये जी हां ऽ ऽ ऽ
बाछल अम्मां बंबल कुआं ऽ ऽ ऽ
भुकै का भुका जी हां ऽ ऽ ऽ
तन्त किया अ तबै
आपणा जी ऽ ऽ हां ऽ ऽ ऽ
गुरु गोरख नाथ जीये
बाछल–अम्मां बंबल कुआं
नीर भराया जी हां ऽ ऽ ऽ
थोड़ा जेया भीछेया रा अन्न
ले आओ चेला धनेरिया
गुरु–गोरख जी बोले जी हां ऽ ऽ ऽ
गुरु गोरख जोगी कै जी हां ऽ ऽ ऽ
बेशण ले आओ चेला काह्निया

धनेरिया तथा काह्निया चेलों ने रानी बाछल के महल के बाहर शंख नाद किया। रानी की दासी ने रानी को साधुओं के द्वार पर आने की सूचना दी। रानी मोतियों, मूंगों का थाल भर कर, भिक्षा देने स्वयं बाहर निकली परन्तु साधुओं ने भिक्षा लेने से इनकार कर दिया, केवल अन्न दान लेने की इच्छा व्यक्त की :–

मेरी प्यालटि भर दे माता बाछले
होर कुछ मांगा दी माता बाछले
एक मण दिता प्यालटि खाली रये
दस मण दिता प्यालटि खाली रये

बीह मण दिता प्यालटि खाली रये
रीठे रै कटोरै देखेय बाछल हस्से थे
साधटे माता बाछल परखै लये थे
गर्ब माता बाछल रा जूर होआ था
सवा सेर भीछैया बाछले जियद दितै थे
रीठे रे कटोरड़े भर–भरैय आजै थे

राजा ज्योरा व रानी बाछल ने गुरु गोरखनाथ जी से संतति प्राप्त करने के आशीर्वाद हेतु प्रातः जाने का कार्यक्रम बनाया। शाम को रानी बाछल की बहिन काछल महल में आई, उसे सुबह के कार्यक्रम की सूचना बाछल से मिली। काछल भी निःसन्तान थी। बहाना बनाकर पहनने के लिये काछल ने बाछल से कपड़े मांगे। सुबह काछल बाछल के कपड़ों को पहन कर राजा ज्योरा व रानी बाछल से पहले गुरु गोरख नाथ जी के पास चली गई। गुरु से दो पुत्रों का वर प्राप्त कर सीधा अपने घर गई।

बाद में राजा ज्योरा और रानी बाछल भी गुरु गोरख नाथ के पास गये। गुरु ने कहा, "वर तो तुम्हें दे दिया है, अब क्यों आये हो।"

माता बाछल करे पुकार
होंऊ न थे मेरेया जोगिया
देख–सुण कर ध्यान लगाये
मेरे बहण मुन्द चात्तर
सै गये य तुम्ह–छलै।

शिमला जनपद में भी इस प्रकार गुग्गा जाहर पीर के अनेकों प्रसंगों को साधटुओं व चेलों द्वारा लोक–गाथा की शैलियों में गाया जाता है।

❒

सिरमौर में गुग्गा परंपरा

मदन मोहन 'कमल'

हिमाचल प्रदेश एक देवभूमि एवं तपोभूमि है, इसमें जहां अनेक ऐतिहासिक एवं पौराणिक देवी–देवता हैं, वहीं बहुत से सन्तों व लोक–पुरुषों एवं वीरों को भी देवता मान कर उनकी पूजा की जाती है।

ऐसे ही एक देवता जो इस श्रेणी के देवताओं में सबसे अधिक प्रसिद्ध हैं–गुग्गादेव हैं जिन्हें गुग्गापीर, गुग्गा जाहर पीर या गुग्गा चौहान भी कहते हैं। ये पृथ्वीराज चौहान के समकालीन एक धीर–वीर, दृढ़–संकल्प व संघर्षरत पुरुष थे और एक सिद्ध गुरु गोरखनाथ के वरदान के फलस्वरूप इस भूमण्डल पर आए।

राजस्थान के 'बागड़' क्षेत्र में 'जेउर' नामक एक राजा राज्य करते थे, जिनकी दो रानियां थीं– काछल और बाछल। बाछल बड़ी थीं। जैसा अक्सर राजाओं के साथ होता रहा है, राजा बूढ़े होने को आए पर उन्हें सन्तान–सुख प्राप्त नहीं हुआ। राजा इससे दुःखी रहने लगे।

उन्हीं दिनों भारत में शैव सम्प्रदाय के महात्मा गुरु गोरखनाथ प्रसिद्ध हुए जिन्हें अनेक योग- सिद्धियां प्राप्त थीं। भगवती दुर्गा मां महाकाली के अलावा ये शिव और हनुमान जी के भी उपासक थे। शाक्त सम्प्रदाय के लोग इन्हें अवतार भी मानते हैं।

सन्तानहीन राजा जेउर ने अपने दरबारी विद्वानों का सुझाव मान कर अपनी बड़ी रानी बाछल को, जोकि भगवान् श्रीराम की माता कौशल्या या ध्रुव की माता सुनीति की तरह सरल–हृदया थी, गुरु गोरखनाथ की सेवा करने तथा उनसे पुत्र–रत्न का वर मांगने के लिये भेजा। बाछल अनन्य भाव से गुरु गोरखनाथ की सेवा करती रही किन्तु उनके द्वारा गुरु की सेवा की बात सुनकर और उनका उद्देश्य समझ कर छोटी रानी 'काछल' जोकि राजा की चहेती और भरत की मां कैकेयी तथा ध्रुव की विमाता सुरुचि की तरह कुटिल थी, 'बाछल' का वेश धारण करके गुरु के पास पहुंची।

गुरु जी ने उसे दो फल खाने को दिये और कहा कि इनसे तुम्हें दो वीर पुत्र प्राप्त होंगे। कुछ समय के बाद लम्बे समय तक गुरु की सेवा करने वाली बाछल भी उनके पास पहुंची और वर देने के लिये प्रार्थना की। गुरु गोरखनाथ पहले तो बहुत क्रुद्ध हुए परन्तु रानी का सरल व नम्र स्वभाव देखकर उन्होंने योग से सब कुछ जान लिया और कहा–"बेटी, तुम्हारे साथ धोखा हुआ है। अब फल तो मेरे पास नहीं है, यह गुग्गल है, इसके सेवन से परम तेजस्वी और तुम्हारी सौत के पुत्रों से भी अधिक वीर पुत्र तुम्हें प्राप्त होगा। उन्होंने बाछल को गुग्गल खाने की विधि बताई।

कालान्तर में, पहले काछल ने दो बेटों को जन्म दिया, जिनके नाम अरजन और सुरजन रखे गए। बाछल के पुत्र का नाम गुग्गा रखा गया।

गुरुदेव ने काछल के छल का प्रतिशोध करने तथा सरल अबला बाछल को उसकी निश्छल सेवा का पुरस्कार देने के लिये ही गुग्गा के परम वीर होने का वर दिया था। गुग्गा की विलक्षणता के कारण अरजन और सुरजन बचपन से ही उनसे जलने लगे और वह वैर बढ़ता चला गया।

माता की तरह गुग्गा भी बचपन से ही गुरु गोरखनाथ की सेवा में उपस्थित रहने लगा। अतः गुरुदेव ने उसे योग की दीक्षा दी और भगवान महादेव, पवनतनय हनुमान तथा मां दुर्गा का अनुरागी बना दिया। भगवान् शिव और हनुमान में अनुराग होने के कारण उस पर भगवान् श्रीराम के चरित्र का भी प्रभाव पड़े बिना न रह सका और गुग्गा राम नाम अमृत से सराबोर हो गया।

भगवान शिव की परम कृपा से उसे वासुकि नाग का भी सहयोग प्राप्त हुआ तथा उनकी कृपा से गुरु के आश्रम में ही उसे खड्ग, भाला आदि चलाने का पूरा प्रशिक्षण मिल गया। जब भी उस पर कोई मुसीबत आती थी तो भगवान् शिव की कृपा तथा वासुकि की सहायता से सर्प आकर उसकी रक्षा करते थे।

अरजन तथा सुरजन के उस पर अत्याचार बढ़ते चले गए। बड़ा होकर गुग्गा जी का विवाह हुआ। उनकी पत्नी का नाम सिरियल था। अरजन सुरजन के विद्वेष का असर सिरियल पर भी पड़ा और पति के साथ–साथ उसे भी दुःख सहने पड़े। अपने साथ पत्नी पर भी यह अत्याचार होता देखकर गुग्गा जी ने अरजन–सुरजन को युद्ध के लिये ललकारा परन्तु गुग्गा यह देखकर हैरान हुए कि पिता की समस्त सेना अरजन–सुरजन की

सहायता के लिये आ गई। इस पर गुग्गा देव ने भगवान् महादेव का ध्यान किया। अहा! यह क्या ? देखते ही देखते रणभूमि हज़ारों सर्पों से भर गई। भयंकर विषधर काले नाग लहराते और फन उठाते हुए सेना को ललकार रहे थे। जेउर की सेना का काले सापों ने संहार कर दिया और गुग्गा ने अरजन–सुरजन को मार डाला। तभी तो कहा जाता है–

सीम कि चांपि सकइ कोउ तासू।

बड़ रखवार रमापति जासू।।

अर्थात् जिसके रखवाले भगवान् श्रीनारायण हों, उसकी क्या कोई सीमा भी दवा सकता है, अथवा उसकी ओर आंख उठाकर देखने की भी किसी की हिम्मत है ? किन्तु इससे भी गुग्गा जी का संकट दूर न हो सका और साथ ही बेचारी सिरियल के भाग्य में भी संकट ही लिखा था। पुत्र–शोक से संतप्त काछल का विलाप सुनकर उसकी सरल–हृदया सौत बाछल का हृदय द्रवित हो गया। उसे पुत्र पर क्रोध आ गया और बाछल ने अपने इकलौते पुत्र गुग्गा को मुंह न दिखाने का आदेश दिया। किन्तु किन्हीं कारणों से सिरियल पति के साथ न जा सकी। वह सास के पास ही रहकर जीवन भर पतिवियोग का दारुण दुख सहती रही।

शिरगुल के पिता 'भूकडू' ने जोकि एक छोटी सी ठकुराई के स्वामी थे और जिनको एक बार देहली के व्यापारी वर्ग ने बन्दी बना लिया था, दुःसह यातना सहते हुए एक कौए के द्वारा अपना सन्देश गुग्गा देव को भेजकर उनसे निवेदन किया कि वह उस को बन्धन–मुक्त करवाएं। वह सन्देश एक स्त्री से लिखवाया गया। गुग्गा देव आए और उन्हें राजा भूकडू के बन्धन दांतों से काटने पड़े क्योंकि वे कोई शस्त्र आदि साथ नहीं लाए थे। भूकडू को अनपढ़ और पिछड़ा हुआ समझ कर वे व्यापारी उससे रुपया ऐंठना चाहते थे। रुपया न देने पर ही उन लोगों ने भूकडू को गाय का चमड़ा लगे रस्सों से जकड़ कर बन्दी बनाया था।

अतः जब उन व्यापारियों को गुग्गा देव द्वारा दांतों से रस्सों को काट कर भूकडू को मुक्त करने की बात मालूम हुई तो गुग्गा का सामाजिक बहिष्कार कर दिया गया किन्तु एक सच्चा कर्मवीर इन गीदड़ धमकियों से कब डरता है ! माता और परिवार द्वारा तो गुग्गा देव पहिले ही निकाले जा चुके थे, इस पर भी उन्होंने हिम्मत नहीं हारी थी। अब उन्होंने सेवा और रक्षा का व्रत लिया जिससे समस्त जातियों, कवीलों के वे हृदय–सम्राट् बन गए

और वे सब लोग नगर–नगर, गांव–गांव में घूम–घूम कर कर्मवीर गुग्गा देव के चरित्र का प्रचार करने लगे। गुग्गादेव ने उन्हीं लोगों की सहायता से एक अजेय वाहिनी का गठन और अत्याचार करने वाले राजाओं का अहंकार चूर करने का प्रण किया। यह समाचार सुनकर उन व्यापारियों ने दिल्ली–नरेश सम्राट् पृथ्वीराज चौहान को गुग्गा देव के विरुद्ध भड़काया और राजद्रोह के अपराध में उन्हें प्राणदण्ड देने हेतु उकसाया। सम्राट् ने उन्हें बन्दी बनाने की कोशिश की, किन्तु गुग्गा जी पकड़े न जा सके। फिर सम्राट् ने उन्हें युद्ध के लिए ललकारा। ब्राह्मणों व व्यापारियों को गुग्गा का बढ़ता हुआ प्रभाव फूटी आंखों नहीं सुहाता था। इसीलिये अपने विरोधी का समूल नाश करने के लिए उन लोगों ने सम्राट् द्वारा गुग्गा को मरवाने की योजना बनाई थी।

युद्ध में गुग्गा देव का पलड़ा भारी रहा, क्योंकि गुग्गा देव दिव्य शक्तियों से सम्पन्न थे। एक सच्चा वीर सच्चे वीर का हमेशा सम्मान करता है। केवल दूसरों द्वारा भड़काए गए सरल हृदय सम्राट् ने गुग्गा देव से सन्धि कर ली। पृथ्वीराज व जयचंद की आपसी दुश्मनी को समाप्त करके मैत्री स्थापित करने की भी गुग्गा देव ने कोशिश की लेकिन उनके इस प्रयत्न का कोई फल न निकला। अंत में, पृथ्वीराज की पराजय से वे बहुत दुखी हुए। यातायात व संचार के साधनों की कमी के कारण उन्हें मुहम्मद गौरी द्वारा पृथ्वीराज पर किये गये हमलों का भी समय पर पता नहीं चला, वरना वे पृथ्वीराज की सहायता हेतु अवश्य युद्ध में आते। उन्होंने पृथ्वीराज को बन्धनमुक्त कराने हेतु गज़नी पर, जहां सम्राट् को बन्दी करके ले जाया गया था, हमला करने की योजना बनाई, किन्तु तब तक बहुत देर हो चुकी थी, क्योंकि तब तक पृथ्वीराज की आंखें निकाल ली गई थीं और इसके बाद, अन्धे होकर भी पृथ्वीराज ने शब्दभेदी बाण द्वारा मुहम्मद गौरी को मार कर स्वयं आत्महत्या कर ली थी। फिर भी वीर गुग्गा देव ने गज़नी पर हमला करके अपने मित्र एवं एक भारतीय शासक की पराजय का बदला ले लिया और उस युद्ध में उन्होंने विजय पाई।

गुग्गा को पत्र लिखकर सहायता करने वाली स्त्री को कालांतर में राजा भूकड़ू वहां जाकर ले आए और अपनी पुत्री मानकर सिरमौर के प्रसिद्ध पवित्र स्थान हरिपुरधार में उसे रहने को स्थान दिया। वहां वह आजीवन तप करके देवी बनी।

गुग्गा जी घर छोड़कर जाते समय अपनी पत्नी सिरियल को साथ क्यों नहीं ले जा सके, यह तो ज्ञात नहीं, किन्तु यह बात कुछ लोक–गीतों

से ज्ञात होती है कि वे पत्नी से मिलने प्रतिदिन रात्रि में आते थे। इस पर गुग्गा जी की माता बाछल बहू पर चरित्रहीनता का सन्देह करके उस पर अत्याचार करती थी। यह बात निम्नलिखित लोकगीत से स्पष्ट होती है जिसे सुहागिन स्त्रियां हरियाली तीज (श्रावण शुक्ला तीज) के दिन झूला झूलते हुए गाती हैं –

रानी : उठ, उठ मेरी मूंगा बांदी ते बाढी पे जाय,
बाढी ने ल्याओ न बुलाय।।

मूंगा : बाढी तन्नै सोवै राणी बाढण जागै।
बढ़ई की स्त्री : बाढ़ी तन्नै राणी बलावै।।
हाथ बसोला, राणी, कांधे कुहाड़ा
(बढ़ई रानी के पास गया)

बढ़ई : कह तो मूंगा हम थांब कटावैं हम चन्दन कटावैं
हम थांब गडावैं।
(झूला तैयार कर देता है)

रानी : उठ उठ मेरी मूंगा बांदी, पटवे पै जाए तू पटवै पै जा।

मूंगा : पटवा तो सोवै राणी पटवण जागै।
पटवा की स्त्री : उठ पटवे तन्नै राणी बलावै।
हाथ में कैंची, राणी, कांधे पे फेंचा।
(पटवा रानी के पास गया)

पटवा : कह तो री मूंगा बांदी हम बड़े बटावैं।
(और बड़े अर्थात् रस्सी बट कर तैयार होती है तथा झूले सहित वृक्ष में लगा दी जाती है)

रानी : उठ उठ मेरी मूंगा बांदी मेरी बहुअड़ पे जाय।
बहुअड़ तो ल्याओ न बलाय।।

मूंगा : उठ उठ मेरी बहुअड़ राणी तन्नै सास बलावै।
महलां मां पड़ा रणवास।।

बहू : कह तो री मूंगा बांदी हम सीस मुगुंदावैं।
कह तो चलै खुले केस, कि महलां मा पड़ा रणवास।

मूंगा : हमनै क्या पता ऐ बहुअड़,
तम सीस गंदाओ या तम चलो खुले केस,
तन्नो राणी बलावै, कि महलां मां पड़ा रणवास।

बहू : कह तो री मूंगा बांदी हम अबरण सारैं

कह तो री जावै मैले भेस, कि महलां मां पड़ा रणवास।।

मूंगा : हम नै क्या पता री बहुए तम अबरण सारो
या तम चलो मैले भेस, कि महलां मां पड़ा रणवास।।

बहू : कह तो री मूंगा बांदी हम डोला कसावैं
कह जो चलै पदैल साथ, कि महलां मां पड़ा रणवास।।

मूंगा : हम नै क्या पता ऐ बहुअड़ डोला कसाओ,
या तम चलो पैदल साथ, कि महला मां पड़ा रणवास।।

बहुएं आदि महल में पहुंच जाती हैं और झूलने को तैयार होती हैं। तभी, क्योंकि बाछल ने गुग्गा को मरा समझा लिया था और वह बहू को विधवा समझती थी, अतः बाछल कहती है –

पहला तो झूटा ए मेरी रांड बहू का,
पीछे झूलेगा रणवास।।
परवा तो पछवा री राणी बाल चलैती,
मुखड़े का सालू उड़ गया।।

बहुएं कहती हैं : तू तो कहैती राणी मेरी रांड बहू है।
अवरण किसपर सार लिया ?
(बाछल ने सिरियल को)
झोटे ते झटकी जमीन पे पटकी,
तन ते उधेड़ी उसकी खाल।।

सिरियल : मत तो तैं मारै री सासड़ मत तड़फावै ;
तेरे महलां का चोर बताऊं।।
अछी–सी रात री सासड़ तेरा बेट्टा री आवै;
तेरा गुग्गा री आवै; पिछली–सी रात चला जावै।
(इस पर रात को बाछल और उसकी लड़की सिरियल के पास सोई। गुग्गा यथापूर्व आए)

गुग्गा : रोज तो री राणी तैं दीवा जलावै;
आज क्यूं किया अंधेरा ?

सिरियल : रोज तो मेरे राजा थारी अम्मां थी दूर;
थारी बहणा थी दूर।।
आज पड़ी है मेरे पास!

गुग्गा : रोज तो री राणी तै अवरण सारै;
आज क्यूं पड़ी मैल्ले भेस?

सिरियल : रोज तो जी राजा थारी अम्मां थी दूर, थारी बहणा थी दूर।।
आज पड़ी है मेरे पास।
गुग्गा : रोज तो री राणी तै सीस गुंदावै;
आज क्यूं पड़ी खोले केस ?
सिरियल : रोज तो श्री राजा थारी अम्मां थी दूर,
थारी बहणा थी दूर।।
आज पड़ी है मेरे पास।

(इस पर गुग्गा जी वापिस मुड़ जाते हैं। तब सिरियल बाछल को जगाती है)।

सिरियल : उठ उठ री मेरी जनम की बैरण;
तेरे महलां का चोर दखाऊं!
बाछल : (उठकर और दौड़कर) : **खड़ा रह रे मेरे लीले रे घोड़े;**
तन्नै दाणा खलाऊं।
अम्मां सो सूरत दखाय।।
खड़ा रह रह मेरे गुग्गे रे बेटे,
मेरे दूधों के पाले; मेरे गोद खलाए;
अम्मां नो सूरत दखा जा।।
गुग्गा : तन्नौ तो प्यारे री अम्मा वै जौड़े भाई
वै अरजन, सुरजन;
मन्नौ तो प्यारी सिरियल नारी री मैया।।
(इतना कहकर गुग्गा जी चले गए और बाछल बिलखती रह गई)।

गुग्गा जी के इसी प्रकार के अन्य लोक गीत भी सुने जाते हैं। उनका पूर्ण जीवन चरित्र लोक गीतों में प्रचलित है।

गायक लोग एक मण्डली में कम–से–कम दो होते हैं, जिनमें एक व्यक्ति डमरू व सारंगी बजाता है। मण्डली में दो व्यक्ति होने की स्थिति में पहला व्यक्ति गाता और दूसरा उसका अनुसरण करता है। अधिक व्यक्ति होने की स्थिति में एक व्यक्ति के गाने के बाद दूसरे सब उसका अनुसरण करते हैं। ये गायक नंगे पांव रहने तथा श्रावणी पूर्णिमा से श्रीकृष्ण–जन्माष्टमी तक (जिस दिन गुग्गा जी का जन्मदिन माना जाता है) आठ दिन चारपाई पर न सोने का व्रत लेते हैं।

गुग्गा जी का जन्म श्रीकृष्ण जन्माष्टमी को भगवान् श्रीकृष्ण के जन्म के समय ही रात्रि बारह बजे हुआ था। यह गायक मण्डली हर एक गांव के

हर एक घर में जाती है। सायंकाल में इनका डेरा होता है, जहां रात भर गुग्गा गाने का प्रबन्ध किया जाता है। गुग्गा की गाथा को हिमाचल में 'भारथ' कहा जाता है। 'भारथ' शब्द 'भारत' अथवा महाभारत का अपभ्रंश है। क्योंकि महाभारत में सत्य की असत्य पर विजय दिखाई गई है और गुग्गा का चरित्र भी सत्य की असत्य पर विजय का प्रतीक है, अतः इसे 'भारथ' कहना युक्तिसंगत है। गायक–मण्डली के इस कार्य को 'कार करना' अथवा 'सेवा करना' कहा जाता है, क्योंकि श्रद्धालु भक्त कष्ट उठाते हुए सेवा भाव से जन कल्याण करते हैं और नागों के देवता गुग्गा का स्मरण करते हैं।

जिस घर में गुग्गा का रतजगा आयोजित हो, वहां रात्रि का भोजन पकाकर घर को पूर्ण रूप से धोकर साफ किया जाता है। कोई भी गन्दगी नहीं रहनी चाहिए। घर के सब लोग उससे पहले भोजन कर लेते हैं। भोग में चने की दाल व चपातियां बनाई जाती हैं। गायक–मण्डली के आने पर पहले उसे भोजन कराया जाता है। जिस कमरे में उन्हें भोजन कराया जाता है उसे फिर से धोया जाता है और फिर वहां गुग्गल की धूप जलाई जाती है। गायक–मण्डली में से एक व्यक्ति आयोजन करने वाले परिवार से थापा दिलवाता है। थापा गोबर से दीवार पर लिपाई करके, नौ बार घी और दूध से हाथ भर कर, दीवार के उस गोबर की लिपाई वाले भाग पर, गुग्गा व उनके परिजनों, गुरु गोरखनाथ और भगवान् श्रीराम को स्मरण करके दिया जाता है।

गुग्गा के परिजनों में उनकी दोनों माताएं, दोनों भाई अरजन–सुरजन, पिता, पत्नी सिरियल, गुग्गा स्वयं और उनके इलावा गुरु गोरखनाथ और भगवान् श्री राम कुल नौ थापे पूर्ण हो जाते हैं। थापे में दूध व घी से भरे हुए हाथ की पूरी छाप अंकित की जाती है। फिर भी कई बार किसी का नाम याद न रहने पर स्त्रियां नौवां थापा भूले'बिसरे के नाम का दे देती हैं। थापे के आगे पके हुए मीठे चावल, जोकि भोजन के लिए बनाए जाते हैं, की नौ छोटी–छोटी ढेरियां लगाई जाती हैं और मत्था टेका जाता है। हाथ में सूखे चावल चने की दाल आदि लेकर गुग्गा जी का ध्यान करके उन्हें नमस्कार किया जाता है, इसके बाद गायक अपना गाना प्रारम्भ करते हैं। पड़ोस के स्त्री–बच्चों को भी गुग्गा गाथा सुनने के लिए बुलाया जाता है।

गुग्गा की रात उस जगह भी जगाई जाती है जहां किसी व्यक्ति को सांप काट ले। परन्तु वहां यह सब आयोजन नहीं होता। केवल गुग्गा–गाथा गाकर सर्प को मंत्र बल से बुलाया जाता है और मंत्र के बल से ही वह काटे

हुए व्यक्ति का जहर चूस कर चला जाता है। उस काटने वाले सर्प को दूध भी पिलाया जाता है।

गुग्गा का जोगी, लगभग 3–4 मीटर लम्बे सीधे बांस के निचले भाग में नोक वाली लोहे की कील तथा ऊपर वाले भाग में मोर के पंख और बांस की लम्बाई के बराबर लम्बा सफेद लट्ठे का जामा सिलवा कर उस पर लाल वस्त्र का अम्बर पहनाता है, जिस पर सफेद कपड़े से बिच्छू–सांपों की आकृतियां अंकित की जाती हैं। मोर के पंखों की बड़ी गोल छत्री सी बनाई जाती है और नीचे रेशम या जाली आदि के दुपट्टे तथा खजूर या मूंज का बना एक पंखा टंगा होता है। इस प्रकार कुल मिलाकर यह मुकुट–कुंडल–अम्बरधारी आर्य महापुरुष प्रतीत होता है। इसे गुग्गा जी की छड़ी कहते हैं। यह छड़ी श्रावणी संक्रान्ति से घूमनी आरम्भ होती है, जिसके साथ एक गुरु जोगी और एक चेला जोगी, दो व्यक्ति होते हैं। गुरु जोगी छड़ी को उठाकर चलता है।

चेला जोगी डमरू, सांटा, लोहे की संगलों का गुच्छा जिसके पीछे लोहे का ही हत्था होता है तथा रसद की थैलियां और चिराग (लोहे का बड़ा दीपक) उठाकर चलता है। छड़ी सर्वप्रथम राजमहल में, फिर जगन्नाथ मंदिर में और उसके बाद अन्य घरों में जाती थी, किन्तु अब यह व्यवस्था नहीं है। श्रावणी पूर्णिमा (रक्षाबंधन) से पहले दिन शाम को यह नगर के सभी घरों में घूम कर कालीस्थान मंदिर में पहुंच जाती है। तब तक घर–घर गुग्गापूजन होता है। जिस–जिस घर में छड़ी जाती है, उस परिवार के लोग छड़ी रखने के स्थान की पहले गोबर से लिपाई करते हैं और फिर रसद (आटा, चावल, दाल, कोई सब्जी व फल, घी, तेल) जोगी को देते हैं।

दोनों जोगी वहां बैठकर गुग्गाचरित्र गाते हैं। उसके बाद कुंकुम, अक्षत, धूप, दीप इत्यादि से वह परिवार गुग्गा जी का पूजन करके हाथ जोड़ता है, गुग्गा जी का सांटा परिवार के सब लोगों को जोगी द्वारा छुआया जाता है और प्रसाद–रूप में चने की दाल के कुछ दाने रसद के बर्तन में डालकर देता है। इसके बाद जोगी अगले स्थान को प्रस्थान करते हैं।

गुग्गा जी की छड़ी को विदा करके, जोगी से प्रसाद रूप में मिली चने की दाल के वे दाने घर के सभी कमरों के कोनों में डाले जाते हैं और डालने वाला कहता है– **जै पीर बादशाह, अंधेरे काले से रक्षा करिये।** इस तरह सब घरों में गुग्गा–पूजन कराकर रक्षाबंधन से पहले दिन किसी भी

स्थिति में छड़ी मंदिर में पहुंच जाती है, जहां से श्रावणी संक्रांति वाले दिन रवाना हुई थी।

श्रावणी पूर्णिमा वाले दिन छड़ी कालीस्थान मंदिर से ढोल सहित प्रस्थान करती है। प्रस्थान से पूर्व कालीस्थान मंदिर में शंखध्वनि व ढोल सहित छड़ी (गुग्गा जी) की आरती होती है। यहां एक छोटा–सा मेला लगता है। तब गुग्गा जी का जोगी उन सब लोगों को प्रसाद रूप में सांटा छुआता है। पूर्णिमा की रात्रि को तथा अगले दिन प्रातः शंखध्वनि तथा ढोल और डमरू सहित छड़ी की आरती होती है। अगले दिन भाद्रपद कृष्ण प्रतिपदा को छड़ी फिर आरती के बाद प्रस्थान करती है। तब भी ढोल और डमरू बजता जाता है और शंखध्वनि होती जाती है।

शोभायात्रा के दौरान अनेक श्रद्धालु गुग्गा जी के प्रतीक छड़ी को पैसे, फल, मिठाई आदि अर्पित करते हैं। यहां छड़ी नवमी तक रहती है और प्रतिदिन सुबह शाम गुग्गा देव की आरती होती है जिसमें शंख, डमरू और ढोल बजते हैं। इस दौरान नगर के विभिन्न परिवारों द्वारा गुग्गा देव को निशान चढ़ाए जाते हैं।

श्री कृष्णजन्माष्टमी की रात्रि को, बारह बजे, जब भगवान् श्री कृष्ण का जन्म मानकर उनकी आरती अनेकों मंदिरों में की जाती है, उसी समय गुग्गा देव का भी जन्म हुआ था और उनके प्रतीक छड़ी की आरती शंख, डमरू, ढोल सहित की जाती है।

नवमी की प्रातः गुग्गा देव के निमित्त स्त्रियां रखती हैं। उससे पूर्व गृहिणियां अपने घरों की रसोइयों की पूरी तरह साफ सफाई करके उनकी चूने से लिपाई और फर्श की धुलाई करती हैं। उसके बाद वहां भोजन करना या चाय–नाश्ता लेना या कोई भी जूठन डालना पूरी तरह मना है। ऐसा करने वाले पर गुग्गा जी के कोप तथा सर्प–दंश का भय रहता है। गृहिणी भी उस दिन सिर धोकर बाल खुले छोड़ देती है और चोटी या जूड़ा तब तक नहीं करती जब तक गुग्गा जी का पूजन समाप्त नहीं हो जाता। इसके बाद पकवान–पतोरे गेहूं के आटे की छोटी–छोटी पतली फीकी मट्ठियां और हलुआ बनाकर गुग्गा जी का थापा दिया जाता है। थापा देने के साथ ही एक परान्दा कच्चे सूत के धागों की कई तारों वाली रंगीन डोरी हलुए से चिपकाकर दीवार पर लगाया जाता है।

थापे के आगे केश (गेहूं की छोटी–सी ढेरी) रखकर उस पर मिट्टी

का दीपक जलाया जाता है। दीपक के चारों ओर हलवे सहित पतोरों की नौ जोड़ियां घर के पुरुष सदस्यों द्वारा रखवाई जाती हैं। फिर कुंकुम, धूप आदि से गुग्गा जी की आरती की जाती है और परिवार के सभी पुरुष, स्त्री व बच्चे हाथों में सूखे चावल, पतोर का टुकड़ा व हलुआ लेकर गुग्गा जी का ध्यान करके मत्था टेकते हैं। सभी लोग अपने माथे पर कुंकुम का तिलक लगाते हैं। फिर गेहूं का केश, पतोरों की नौ जोड़ियां तथा एक परान्दा किसी बर्तन में डालकर घर का एक पुरुष छड़ी को चढ़ाने जाता है। उसमें कुछ रेज़गारी भी होती है। वह पुरुष जाकर छड़ी को परान्दा बांध कर कुंकुम से तिलक करता है।

गुग्गा का जोगी सब सामान लेकर बर्तन में चने की दाल के कुछ दाने डाल कर बर्तन लौटा देता है और उस पुरुष के सिर, हाथ या कमर पर गुग्गा जी का सांटा प्रसाद के रूप में छुआता है। दाल के उन दानों को घर के सब कमरों के कोनों में डाला जाता है और --जै पीर बादशाह, अंधेरे जाले ते रच्छा करिये" ऐसा कहा जाता है।

शाम को लगभग तीन चार बजे गुग्गा का मुख्य जोगी छड़ी को नए वस्त्र पहनाता है और अम्बर भी टैरीकॉट या किसी अन्य कीमती रेशमी लाल वस्त्र का बना हुआ होता है। उस पर सफेद वस्त्र से बनाई गई बिच्छू, सांपों की आकृतियां बनाई जाती हैं पर ये नये व बढ़िया कपड़े के होते हैं और पंखा भी नया लगाया जाता है। उसके बाद गुग्गा देव की आरती की जाती है और शंख–ध्वनि, डमरू और ढोल सहित छड़ी गुग्गा--माड़ी की ओर प्रस्थान करती है। नगर के बच्चे व कुछ पुरुष छड़ी के साथ जाते हैं। मार्ग में लगभग सभी श्रद्धालु पैसे, मिठाई आदि गुग्गा पीर को अर्पित करते हैं और मुख्य जोगी केवल पैसे चढ़ाने वालों को सांटा और फल मिठाई आदि चढ़ाने वालों को चने की दाल के दाने देता जाता है।

माड़ी पर पहुंचकर छड़ी के शीर्ष को माड़ी के अन्दर आले में बनी गुग्गा जी की मूर्ति तथा गुग्गा देव की शैया से स्पर्श कराकर माड़ी के बाहर स्थापित किया जाता है। वहां रात के बारह बजे तक मेला लगता है। मेले में माड़ी पर लोग निशान चढ़ाते हैं। रात को बारह बजे छड़ी की यथापूर्व आरती होती है और छड़ी ढोल, डमरू तथा शंखध्वनि के साथ मंदिर को ले जाई जाती है। अगले दिन दशमी को त्रिशूल भी माड़ी से ढोल के साथ उठाया जाता है। रक्षाबन्धन से गुग्गा नवमी की रात्रि तक गुग्गा जी का दीया लगातार दिन–रात प्रज्वलित रहता है।

पुत्र की उत्पत्ति, विवाह या रोज़गार आदि के उपलक्ष्य में निशान चढ़ाया जाता है। बालक की मां या दादी, बाप या दादा पहले गुग्गा देव से प्रार्थना करते हैं कि "हे गुग्गा पीर, हमें पुत्र दो", या "पुत्र का विवाह कराओ", हम तुम्हारा निशान चढ़ाएंगे।" बालक के जितनी आयु का होने पर निशान की धारणा की जाती है, उसी वर्ष निशान चढ़ाना पड़ता है अन्यथा गुग्गा जी भयंकर सर्प के रूप में प्रकट होकर भयभीत करते हैं। मनौती करने वाला परिवार यदि अपनी गलती मान ले तो गुग्गा जी उसे क्षमा कर देते हैं, वरना परिवार के किसी व्यक्ति की मृत्यु सर्पदंश से निश्चित है। उनके कोप से भयभीत लोग सभी व्यवस्था करके निशान चढ़ा देते हैं। जोगी स्वयं ही निशान बनाकर दे देते हैं, केवल उसका मूल्य चुकाना पड़ता है।

यह निशान भी लगभग छड़ी जितनी लम्बाई का होता है। छड़ी में और इसमें यही अन्तर है कि इसके ऊपर मोर पंखों का गुच्छा छत्र की तरह का घना न होकर कम घना होता है और पंख ऊपर को होते हैं। जबकि छड़ी के ऊपर के पंख घने होने के कारण चारों ओर को छत्र की आकृति में फैले हुए होते हैं। छड़ी के निचले भाग में लगी लोहे की स्याम नुकीली होती है, निशान में लोहे की स्याम नहीं होती, वह गाड़ा नहीं जा सकता। बाकी वस्त्रों का आकार–प्रकार छड़ी जैसा ही होता है, किन्तु वे वस्त्र छड़ी के मेले वाले वस्त्रों की तरह बहुमूल्य नहीं होते। निशान में केवल परिवार को अपनी ओर से दुपट्टा बांधना पड़ता है।

निशान चढ़ाने के लिए जोगी को कई दिन या एक दो दिन पहले कहना होता है। फिर परिवार का मुख्य पुरुष व स्त्री नि[illegible] दिन को उपवास रखते हैं। घर को लिपाई–पुताई द्वारा साफ व शुद्ध किया जाता है। घर में पकवान–पतोर, हलुआ–कचौरी, रोट गेहूं के आटे की घी में पकाई हुई बहुत बड़ी व बहुत मोटी रोटी आदि पकाया जाता है।

निशान चढ़ाने के उपलक्ष्यमें सभी पड़ोसियों, बिरादरी वालों, रिश्तेदारों व मित्रों को आमंत्रित किया जाता है। जिस स्थान पर निशान खड़ा किया जाता है, उसकी पहले गाय के गोबर से लिपाई की जाती है। फिर घर का एक सदस्य जोगी से निशान ले आता है जोकि दो चार की संख्या में छड़ी के पास ही हमेशा खड़े रहते हैं।

घर पर समस्त तैयारी हो चुकने के बाद जोगी को पूजन के लिये बुला लिया जाता है। इस पूजन के दौरान ढोल बजता रहता है। इसके बाद

घर का मुखिया या जिस पुत्र आदि के उपलक्ष्य में निशान चढ़ाने के लिए मनौती की गई हो, निशान उठाता है, दूसरा व्यक्ति आरती (वह थाल जिसमें आटे का प्रज्वलित दीपक रखा गया है) लेता है। एक अन्य व्यक्ति गुग्गा देव को अर्पित किया हुआ सामान (भोजन–सामग्री) ले जाता है। निशान उठाने वाला व्यक्ति तथा थापा देने वाली स्त्री नंगे पांव माड़ी तक जाते हैं। वहां जाकर छड़ी और निशान का मिलाप कराया जाता है अर्थात् निशान को छड़ी के साथ बांधा जाता है और समस्त वस्तुएं गुग्गादेव को अर्पित की जाती हैं और सब लोग गुग्गा देव को नमस्कार करते हैं। निशान जब गुग्गा देव की ओर जाता है, तब पूजन कराने वाला जोगी भी गुग्गा चरित्र का गान करता हुआ साथ जाता है।

इसके बाद गुग्गा देव का सांटा प्रसाद रूप में पाकर सब लोग लौट आते हैं, स्त्रियां मंगल गीत गाती हुई घर आती हैं। नगर के जिन स्त्री पुरुषों को आमंत्रित किया जाता है, वे सब निशान चढ़ाने वाले व्यक्ति के घर तक वापिस जाते हैं, सीधे अपने घर नहीं जाते। यदि जाना भी चाहें तब भी उन्हें साथ ले जाया जाता है।

उत्सव में शामिल होने वाले सभी लोगों को पतोर और हलुआ देकर विदा किया जाता है, कोई भी स्त्री, पुरुष बच्चा खाली हाथ नहीं जाता। अन्त में निशान चढ़ाने वाला परिवार उत्सव में शामिल होने वाले परिवारों के घरों में शाम को एक व्यक्ति का एक समय का खाना कचौरी व हलुआ, सूखी सब्जी आदि वितरित करता है। कचौरी नौ या सात प्रति परिवार वितरित की जाती हैं और इस प्रकार निशान–पूजन का समस्त कार्यक्रम समाप्त होता है।

गुग्गा–पूजन में, चाहे वह साधारण पूजन हो या निशान अर्पण, पकवान व भोजन में कहीं भी तेल का छींटा तक नहीं लगना चाहिए, अन्यथा गुग्गा जी के कोप का भाजन बनना पड़ता है। केवल छड़ी के पास हमेशा जलने वाले दीपक में ही तेल डाला जा सकता है।

❐

सिरमौर में गुग्गा गाथा

गोपाल दिलैक

लोक मंगल की भावना से पूरित अलौकिक शक्तियां धरती पर मानव कल्याण के लिए अवतार लेती हैं। जब–जब पृथ्वी पाप के असह्य बोझ से डगमगाने लगती है तो नारायण, नर रूप में अवतार ले कर सांसारिक प्राणियों का मार्ग प्रशस्त करते हैं। लोक विश्वास की डगर को सुदृढ़ करने के लिए अवतारिक शक्तियों को लीलाओं अर्थात् चमत्कारों का सहारा लेना पड़ता है।

हिन्दूवादी विचारधारा अवतारवाद का आलम्बन ले कर मनुष्य में आस्था की ज्योति जगाती है। पुराणों में शिव और विष्णु के नाना अवतारों का उल्लेख मिलता है। इन्हीं पौराणिक अवतारों ने असुरों का संहार कर मर्यादाओं की शिथिल डोर को सशक्त कर जीवन के नैतिक मूल्यों को बनाए रखने पर बल दिया है। देव भूमि हिमाचल में देवी–देवताओं को अलौकिक शक्तियों का अंशावतार मानकर उनकी पूजा–अर्चाना अनादिकाल से मठों और मंदिरों में की जा रही है। एक सर्वेक्षण के अनुसार हिमाचल के लगभग पांच हज़ार छोटे–बड़े मंदिरों में देवी–देवताओं की पूजा की जाती है जिसमें गुग्गा के मंदिर व मड़ियां भी शामिल हैं।

हिमाचल में पूजित देवी–देवताओं के साथ–साथ गुग्गा की पूजा भी असीम श्रद्धा एवं विश्वास से की जाती है। गुग्गा गाथाओं में लिखा है कि गुग्गा मां के गर्भ से जन्मा एक दिव्य शक्ति सम्पन्न बालक है। गुग्गा ने अपने देवत्व का परिचय मां के गर्भ से ही देना आरम्भ कर दिया था। गुग्गा उत्तर राजपूताना राजस्थान की बागड़ रियासत के नरेश जेवर के पुत्र हैं। राजा जेवर के बाछल और काछल दो रानियां थीं। रिश्ते में दोनों सगी बहनें थीं। विवाह के पश्चात् काफी लम्बी अवधि बीत जाने पर भी राजा के सन्तान नहीं हुई। राजवंश का उत्तराधिकारी न होने की चिन्ता राजा और रानियों के जीवन का नासूर बनता जा रहा था। सन्तति न होने की व्यथा को लेकर रानी बाछल और राजा जेवर के मध्य संवाद होता रहता था लेकिन राज पुरोहित

रंगाचार्य राजा के तीन पुत्र होने की भविष्यवाणी कर उन्हें सांत्वना देता था। गुग्गागाथा का वर्णन पाश्चात्य विद्वान कैप्टन आर0सी0 टेम्पल द्वारा लिखित पुस्तक "The Legends of the Punjab Vol-I" के पृष्ठ 121 से 209 तक भली भांति हुआ है। इसी ग्रन्थ के पृष्ठ 123 पर रानी बाछल के पुत्र न होने का मार्मिक चित्रण इस प्रकार हुआ है।

Text Rani Bachal
"Dosh Kaun ko dijiya ? Apna Nirbal Bhag!
Bina Putra Rao ji'. Lagi badan men ag
Lagi badan men ag : Soun yeh bat hamari"

अनुवाद

Queen Bachal
"Whom wouldst thou blame ? Thy fate itself is evil !
Without a son, Raja, Thy body is aflame.
Thy body is aflame : listen to these my words.

इस लोकगाथा में निबद्ध घटनाओं से प्रतीत होता है कि आखिर राजा जेवर शिव के अनन्य उपासक गोरखनाथ की शरण में जा गिरते हैं। रानी काछल, गोरखनाथ से छल करके पुत्र प्राप्ति के लिए दो फल प्राप्त करती है जबकि रानी बाछल को वरदान देने के लिए गोरखनाथ के पास कोई भी फल शेष नहीं रहता है। ऐसा होने पर गोरखनाथ आयुर्वैदिक जड़ी–बूटियों से सुगन्धित गुग्गल को वासुकीनाग–मंत्र से अभिमंत्रित कर रानी बाछल को खाने की लिए देते हैं। कालान्तर में रानी काछल के अर्जुन और सुरजन नामक दो पुत्र हुए। रानी बाछल की कोख से गुग्गा ने जन्म लिया। गुग्गा के नामकरण का आधार भी रानी बाछल द्वारा ग्रहण किया गया विशुद्ध गुग्गल माना जाता है।

लोक मानस में गुग्गा सर्पदंश–वैद्यराज के रूप में विख्यात है। लोकगाथान्तर्गत उल्लेखित है कि जब रानी बाछल बागड़ से अपने माईका गजनीपुर (रावलपिंडी) जा रही थी तो मार्ग में उनकी बग्गी के बैल को सर्प दंश मार कर घायल कर देता है और बैल मर जाता है। इस वेदना से रानी बाछल व्याकुल हो उठती है। तब गुग्गा मां के गर्भ से देव शक्ति का प्रदर्शन करवा कर बोलता है कि– "हे माता ! तू घबरा नहीं, नीम के वृक्ष की टहनी तोड़ कर ला और गोरखनाथ का स्मरण कर।" रानी बाछल इस दैविक वाणी का यथावत् पालन करती है। ऐसा करने से बैल पुनर्जीवित हो गया। इसी भांति एक अन्य चमत्कारिक घटना यह है कि गुग्गा मां के गर्भ से रानी बाछल

को देव पुकार दे कर कहता है कि – "मेरे जन्म का समय आ गया है। मां गजनीपुर से वापस बागड़ जाओ अन्यथा ननिहाल में मेरा जन्म होने से मेरी दिव्य दृष्टि धुल जाएगी।" रानी बाछल गजनीपुर से वापस बागड़ लौटती है तथा 8–9 भादों की अर्धरात्रि को गढ़ दरेड़ा बागड़, रियासत, बीकानेर राजस्थान के राजमहल में गुग्गा जन्म लेता है।

हिन्दुओं और मुसलमानों में गुग्गा की समान्तर मान्यता और पूजा का खासा प्रचलन रहा है। धर्म भेद के कारण गुग्गा को हिन्दुओं ने गुग्गवीर कहा तथा मुसलमानों में गुग्गा को गुग्गा जाहरपीर पुकारा गया। गुग्गा जाति विशेष के रक्षक या पोषक नहीं रहे। उनके लिए समूची मानवजाति हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई सब आपस में भाई–भाई हैं। जहां हिन्दुओं ने गुग्गा के मंदिर व मठ बनवाए वहीं मुसलमानों ने गुग्गा की माड़ियां बनवाईं। इन दोनों समुदाय के लोगों में गुग्गा के प्रति गहरी श्रद्धा रही है। मुसलमानों की आस्तिकता के प्रमाण की पुष्टि - A Glossary of The Tribes And Castes of the Punjab and North-West Frontier Province Vol-1 के पृष्ठ 182 पर दिए सन्दर्भ से होती है जिसमें लिखा है कि –When Muhammas of Ghor reached Daruhera on his way to Delhi, the drums of his army ceased to sound and hearing the tale of Guga the invader vowed to rise a temple to him on the spot if he returned victorious - Accordingly the present Mari at Daruhera was erected by the King."

इस तरह मुसलमानों में गुग्गा के प्रति विश्वास की बुनियाद और प्रगाढ़ होती गई। राजस्थान और पंजाब की भांति हिमाचल में भी गुग्गा का मान्यता क्षेत्र काफी व्यापक है। यहां कुल्लू, कांगड़ा, ऊना, हमीरपुर, सिरमौर, सोलन, शिमला आदि ज़िलों में गुग्गा के असंख्य मंदिर और माड़ियां हैं जिनमें गुग्गा की वीर और पीर के रूप में पूजा की जाती है। चम्बा ज़िला में गुग्गा मुण्डलिख, के नाम से जाना जाता है।

हिमाचल के सिरमौर ज़िला में भी गुग्गा मंदिर और माड़ियां काफी संख्या में हैं। सिरमौर जनपद के शिलाई ग्राम में गुग्गा का पहाड़ी शैली में स्लेट की ढलानदार छत से आच्छादित एक भव्य मंदिर है। यह चेवलादार (काठकूणा) मंदिर दो मंज़िला है। इस मंदिर निर्माण की पृष्ठभूमि में ठिंडाऊ राजपूतों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। लोकश्रुति है कि रियासतीकाल में शिलाई गांव के इर्द–गिर्द हाजा–कालवा नामक असुर ने त्राहि मचा दी थी। तत्कालीन परिस्थितियों में कोई भी व्यक्ति शिलाई गांव में सफेद वस्त्र धारण

नहीं कर पाता था। सफेद वस्त्रधारी को देखते ही हाजा–कालवा दानव उसका भक्षण कर लेता था। उस दानव उत्पीडन से तंग आकर ग्रामवासी खडकाहां के पाबुची ब्राह्मण शिरीमल की सांचा गणना सलाह पर हाजा–कलवा के मर्दन के लिए बागड़ से गुग्गा को शिलाई ग्राम में लाये।

शिलाई ग्राम के राजपूत साणियां नेगाईक की अगुवाई में गुग्गा को लाने बागड़ रियासत गए थे। शिलाई में गुग्गा के स्थापित होने पर गांव से हाजा–कलवा का भय और त्रास समाप्त हुआ। ग्रामीण खुशहाल जीवन व्यतीत करने लगे। ग्रामवासियों ने मंदिरों के अतिरिक्त शिलाईधार पर भी गुग्गा की एक माड़ी का निर्माण करवाया। इसी स्थान पर बागड़ रियासत से ग्रामवासियों द्वारा लाई गई गुग्गा की प्रतीकात्मक मिट्टी रखी गई थी। कालान्तर में यह चुटकीभर मिट्टी लिंगाकार अर्थात् टिब्बा के रूप में परिवर्तित हुई। शिलाईधार पर गुग्गा माड़ी के समीप विद्यमान टिब्बा आज भी इसी तथ्य की पुष्टि करता है। शिलाई का यह मंदिर सिरमौर का ही नहीं बल्कि समूचे प्रदेश का एक ऐसा मंदिर है जहां गुग्गा की द्विकाल पूजा–अर्चना का कार्य ठिंडाऊ राजपूत के नेगाईक खानदान द्वारा पुरातन रीति के अनुसार निभाया जाता है। इन्हीं परम्पराओं के पोषण से सिरमौर की लोक संस्कृति समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर कहलाती है।

सिरमौर में गुग्गा पूजा अर्चना की यह प्रथा शिलाई की तरह अन्यत्र प्रचलित नहीं है। गुग्गा मंदिर स्थापत्य शैली की दृष्टि से शिलाई के पश्चात् कलोग, कफोटी सैंज, रतवा, गुरकायण आदि गांवों में बने गुग्गा मंदिरों एवं माड़ियों के नाम आते हैं। सिरमौर में गुग्गा के अन्य मंदिर और मड़ियां–पनार, कशलोग, घण्डूरी, रजाना, बाऊनल, धमास, बोगर, कोटीधमान, काकोग, पंजाहा, सेरम्बी, जलाला, बड़ेक, मांगनल, नीमू, बकरास, बिंड़ला, कुडोली, कोटी–उत्तरो, बेला–मशुआ, कांटी–मशुआ, कोटापाब, शरली, शरगांव, बखोग, पनोग, पोईनाडी, कटाड़ी, कोट (कोटी–बौंच) आदि ग्रामों में स्थित हैं जहां गुग्गा की पूजा वीर और जाहर पीर के रूप में की जाती है। सिरमौर ज़िला के अन्य ग्रामों और स्थानों में भी गुग्गा की माड़ियां हैं।

सिरमौर में गुग्गा का पदार्पण शिरगुल देवता के दिल्ली से चूड़धार वापस आने पर भी माना जाता है। जनश्रुति है कि मुगल सम्राट औरंगज़ेब के शासनकाल (1658–1707) में शिरगुल देवता दिल्ली भ्रमण पर थे। दिल्ली में शिरगुल के चमत्कार को देखकर लोग आश्चर्यचकित हो जाते थे। इसकी

सूचना तत्कालीन शासक को मिलते ही शिरगुल को जेल में बंदी बना दिया जाता था। रानी बाछल के गर्भ में पल रहे गुग्गा को दैवयोग से इस घटना की जानकारी मिलती है। गुग्गा गर्भ से ही रानी बाछल से कहता है कि – "मां दिल्ली में शिरगुल देवता को मुगल सम्राट ने कैद में डाल दिया है। मुझे उनकी मुक्ति के लिए दिल्ली जाना है।" किंवदन्ती है कि गुग्गा दैविक चमत्कार से दिल्ली पहुंचता है और चूहे का रूप धारण कर जेल के किवाड़ पर लगे मशक को दांतों से काटता है। गुग्गा के इस कृत्य से शिरगुल देवता मुगलों की जेल से छूटकर वापस चूड़धार आते हैं।

इस प्रकार यही लोक मान्यता लोकमानस में प्रचलित है कि शिरगुल के साथ गुग्गा का सिरमौर जनपद में आगमन हुआ है। यही कारण है कि सिरमौर के अधिकांश हिस्से में गुग्गा की पूजा गुग्गा वीर और गुग्गापीर के रूप में की जाती है। सिरमौर में गुग्गा का वार्षिक त्योहार हर वर्ष भादों की नवमी को हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। ग्रामवासी गुग्गा मंदिरों और माड़ियों में रात्रि जागरण कर गुग्गागाथा गाते हैं।

शिलाई के गुग्गा मंदिर में गुग्गा नवमी मनाने की अलग ही परिपाटी है। यहां रक्षाबंधन के दिन गुग्गा के काजी गुग्गा के प्रतीक चिन्ह झण्डा, सलाखों (करड़े) को लेकर शिलाई "खत्त" अर्थात् बीरत का पूरा भ्रमण कर 9 भादों को दिन के समय मूल मंदिर शिलाई वापस लौटते हैं। इसके बाद मंदिर से माड़ी तक गुग्गा की शोभायात्रा निकाली जाती है जिसमें शिलाई "खत्त" के लोग अत्यधिक संख्या में भाग लेते हैं।

ग्रामवासियों की मान्यता है कि गुग्गा की शिलाई क्षेत्र में यह यात्रा कलवा असुर से सुरक्षा के प्रतीक के रूप में की जाती है। सायंकाल को गुग्गा की पूजा के लिए माड़ी तथा मंदिर में घी का दीपक जलाया जाता है। इसी समय माड़ी के पास अग्निकुण्ड में अग्नि प्रज्ज्वलित की जाती है।

इस प्रक्रिया के साथ–साथ ठीक उसी समय उत्तराखण्ड के कबायली क्षेत्र जौनसार–बाबर के हाजा ग्राम में ग्रामवासी हाजा–कलवा असुर के नाम भेडू की बलि चढ़ाते हैं। यहां ग्रामवासी माड़ी प्रांगण में रात्रि जागरण के लिए इकट्ठे हो जाते हैं। रातभर ग्रामवासी गुग्गागाथा गायन श्रृंखला में गुग्गा की वार और नारसिंह की वार को गाते हैं जिस पर गुग्गा के गूर खेलते रहते हैं। यह गायन डौंरू की लय तथा टंकरे की ताल पर किया जाता है। गुग्गा के गूर को घी का हव्य दिया जाता है जिसे ग्रहण कर गुग्गा का खेल खेलता

रहता है। माड़ी प्रांगण में जलाए गए अग्निकुण्ड में रखी लोहे की गर्म जंज़ीरों तथा सलाखों (करड़े) को गूर नंगे बदन एवं पीठ पर मार–मार कर खेलते हैं। गूर यह खेल देवशक्ति के प्रभाव से आवेश में आकर खेलते हैं और गुग्गा के सत्यपथ को प्रतिपादित करते हैं।

लोक विश्वास है कि गूर के इस खेल से वादियों में आसुरी भय भस्म हो जाता है तथा देव दृष्टि का संचार होता है। प्रातःकालीन बेला में ग्रामवासी गुग्गा के समक्ष नतमस्तक होकर सुख–समृद्धि की कामना करते हैं। मनोकामना की पूर्ति होने पर ग्रामवासी माड़ी में बकरे और मुर्गे की बलि चढ़ाते हैं।

❑

सिरमौर में गुग्गा पूजन

चिर आनन्द

पश्चिमोत्तर भारत में गुगा या गोगा जी महाराज वा ज़ाहरवीर की जिन्दा पीर अथवा अजर–अमर बली के रूप में सदियों से पूजा होती आ रही है। विशेषकर संतानप्राप्ति और दुःख, शोक, रोग, भय, चिन्ता अर्थात् त्रिविध तापों के निवारणार्थ लोक जीवन में गोगा जी रचे बसे हैं।

जनश्रुति के अनुसार वर्तमान राजस्थान प्रान्त के ज़िला चुरू में एक स्थान ददरेड़ा है, जो महाराज अनंगपाल के समकालीन छोटी सी रियासत थी। चौहान वंशी उम्मरसिंह नामक राणा उसके शासक थे। उन्होंने अपने पुत्र जेवर सिंह का विवाह राजा कुंवर पाल की पुत्री बाछल से किया, साथ ही पुत्र वधू की छोटी बहनों काछल व बाछल का भी अपने ही परिवार में विवाह करवाया।

राज्य–ऐश्वर्य बल–विक्रम, शौर्य–पराक्रम व धन वैभव होते हुए भी राणा जेवर सिंह के घर संतान नहीं थी। स्वयं उम्मर सिंह को भी जीते–जी अपने वंश वृक्ष को फलता–फूलता नहीं देख पाने का दुःख था।

किसी साधु–महात्मा के कहने पर इन्होंने नौ लखा बाग लगवाया, कुएं व बावड़ियां खुदवाईं, मंदिर, शिवालय तथा स्नानघाट बनवाए किन्तु एक मौके पर उस बाग में रानी बाछल के पैर रखते ही बाग सूख गया, कुएं–बावड़ी जलविहीन हो गए व मंदिर खण्डहरों में परिवर्तित हो गए।

कुछ समय के बाद किसी विद्वान ज्योतिषी की सलाह से रानी बाछल को उस समय के महान सिद्ध–योगी गुरु गोरख मिल सके। तदनुसार सिद्ध योगी गोरख नाथ की लम्बे समय तक सेवा करने व व्रत–उपवास, दान–पुण्य के पश्चात् ध्यानमग्न बैठे गोरखनाथ की तन्द्रा टूटी और योग विद्या से बाछल के दुःख निवारण हेतु उन्होंने अपने चौदह सौ चेलों सहित ददरेड़ा के उसी बाग में डेरा डाला जो सूख गया था। अपने शिष्यों की भूख–प्यास व तपती लू में जलने की परेशानी के सबब गुरु जी ने समीप के टीले पर धूनी रमाई जो

अब गोरख टीले के नाम से प्रसिद्ध है। गुरु गोरख ने अपने योग बल से बाग हरा–भरा किया व कुएं–बावड़ियां जल से पूरित कर मंदिरों में शँख ध्वनि व पूजा–अर्चना होने लगी।

इस समाचार को दासी के माध्यम से सुन कर रानी बाछल ने गुरु गोरख नाथ से वरदान पाने का उपक्रम किया, किन्तु सफल न हो सकी। क्योंकि वे भी बाँझ स्त्री से भिक्षा लेने व उसका अन्न–जल ग्रहण करने से परहेज करते थे। रानी को बहुत रोते–गिड़गिड़ाते देख गोरख नाथ ध्यानमग्न हो गए। इसके साथ ही रानी बाछल भी एक पैर पर खड़ी होकर गुरु जी का नाम जप करने लगी। बारह बरस की कठोर साधना के उपरांत गोरख नाथ ने आंखें खोलीं तो बाछल को साधना में लीन देख द्रवित हो गए और कहा–"बेटी तू धन्य है। मुझे बहुत भूख लगी है। तेरे हाथ का पका खाना ही खाऊँगा।"

गुरु की आज्ञा पार कर बाछल भोजन व्यवस्था हेतु महल में चली गई। इस बीच छोटी बहन काछल छल से बाछल का भेष धारण कर गुरु गोरख नाथ से पुत्रवती होने का वरदान पा कर लौट आई। इधर बाछल नाना प्रकार के व्यंजन बना कर जब बाग में पहुंची तो योगी जन अपना उद्देश्य व यात्रा सफल जान कर वहां से कूच कर गए थे। रानी बाछल रोती–बिलखती आखिर गोरख नाथ की शरण में पहुंच ही गई और अपने साथ हुए धोखे से उन्हें अवगत कराया, तब गोरखनाथ ने अपनी झोली से थोड़ी सी गूगल निकाल कर दी और कहा कि जाओ तुम्हारी नज़र में जो–जो भी निस्संतान हो उन्हें बांट कर स्वयं भी इसका सेवन कर लेना, ईश्वर इच्छा से तुम महान पुत्र की मां बनोगी।

बाछल ने अपने दयालु स्वभाव व सहृदयता के वशीभूत गूगल का कुछ भाग अपनी मिश्राइन को, कुछ लूना नामक दासी को और कुछ अपनी घोड़ी को दिया व शेष स्वयं खा लिया। इस प्रकार समय आने पर बाछल के जाहरवीर, मिश्राइन के नर सिंह या नारसिंह, दासी के भज्जू कुतवाल व घोड़ी के नीले घोड़े ने जन्म लिया। इन सभी का गूगा जाहरवीर से अन्त तक सम्बंध बना रहा। साथ ही अपनी बहन काछल के छल कपट को भुलाकर उसके अरजन–सुरजन नामक बेटों का भी बाछल ने यथोचित पालन–पोषण किया।

युवा होने पर जाहरवीर का विवाह राजा संजा या संजय की पुत्री सिरयल से हुआ। पश्चात् जेवर सिंह के स्वर्गवास के बाद स्वयं शासन की

बाग–डोर संभाली, इस बीच सिद्ध गुरु गोरखनाथ के ददरेड़ा आगमन पर जाहरवीर ने उनसे आशीर्वाद लिया और मां से उनके साथ भ्रमण की इच्छा जाहिर की। बाछल ने भी सहर्ष इजाज़त दे दी।

गुरु कृपा से जन्मे जाहर जहां शारीरिक शौष्ठव में अद्वितीय थे, वहीं उनकी वाणी में भी जादुई शक्ति थी। उन्होंने गुरु से वैदिक व यौगिक ज्ञान को आत्मसात् किया और गुरु के साथ–साथ सम्पूर्ण भारत, काबुल–कन्धार, ईरान, नेपाल, तूरान, गज़नी, अफगानिस्तान व मध्य एशिया तक का भ्रमण कर गुरु के उपदेशों का प्रचार किया। इस बीच यवन व इस्लामिक सभ्यता के लोगों को भी उन्होंने वेद व योग से परिचित करा कर अपना शागिर्द बनाया। वे अपनी लोक भाषा के प्रभाव से उन्हें वीर की बजाय पीर कहने लगे, इस प्रकार आज भी उन्हें जाहरवीर के साथ–साथ गुग्गा या गोगा पीर भी कहा जाता है, और सभी मजहब के लोगों में उनकी मान्यता है। गोगा पीर के अपनी राजधानी लौट आने व म्लेच्छों से व्यावहारिक सम्बंधों के रहते भारतीय आर्य राजा गुग्गा से शंकित व रुष्ट रहने लगे थे क्योंकि आठवीं सदी से ही पश्चिम एशिया के मुस्लिम धर्मालम्बी–लुटेरों व आततायियों की कड़वी हकीकत से वे तथा उनके पूर्वज परिचित हो चुके थे। वे अफगानों, पठानों, अरबी, इरानियों व मंगोलों का ज़रा भी विश्वास नहीं करते थे। इसी सत्य व तथ्य का हवाला देते हुए महाराज अनंग पाल ने गुग्गा को सन्देश भिजवाया, जिसमें उन्होंने अपने पिता व गुग्गा के दादा उम्मर सिंह के साथ मुसलमान अत्याचारियों का उल्लेख करते हुए कहा था कि आपको इन लुटेरों का साथ छोड़ कर आर्य राजाओं के साथ सहयोग करना चाहिए अन्यथा आपसे हमारा युद्ध निश्चित है।

जाहरवीर ने इस नसीहत को ललकार समझकर युद्ध के लिए तैयार रहने का संदेश भिजवा दिया। इस तरह जाहरवीर के आर्य–म्लेच्छ एकीकरण के घातक विचार के कारण अनंग पाल की विशाल सेना का ददरेड़ा की सेना से घमासान युद्ध हुआ। इस युद्ध में राजा अनंग पाल ने लालच देकर जाहर के मौसेरे भाइयों अरजन–सुरजन को गुग्गा की हत्या करने के लिए उकसाया। लेकिन इरादा भांप लेने पर स्वयं गुग्गा ने अरजन–सुरजन को मौत के घाट उतार दिया। इस युद्ध के समाचार से गुरु गोरखनाथ प्रकट हुए और उन्होंने जाहरवीर को भविष्य में आर्य सम्राटों को सहयोग करने का वचन ले अनंग पाल से गले मिलाकर, दोनों के बीच संधि करवाई और अन्तर्धान हो गए।

रानी बाछल को गुग्गा की भ्रातृ–वध की करतूत हज़म नहीं हुई और उन्होंने गुग्गा को राज्य से निर्वासित कर कभी मुंह ना दिखाने की सज़ा सुना दी। मां की आज्ञा मान कर गुग्गा दूर चले गए, मगर उनके शिष्यों ने उनका साथ नहीं छोड़ा। बाद में अपने गुरु भाई पूरणमल भक्त के सहयोग से गुग्गा अपनी पत्नी सिरयल से मिलने लगे। तीज पर श्रृंगार करती सिरयल को देख बाछल ने पूछा– जब तेरा पति यहां नहीं है तो किसके लिए श्रृंगार कर रही है। इस लांछन को सिरयल सह न सकी और उसने सत्य प्रकट कर दिया कि आपका बेटा मुझे मिलने आया करता है। इससे बाछल का क्रोध और भड़क गया कि भाइयों की हत्या करने वाले उस जाहर को मैं खुद मृत्यु को पहुंचाती हूं। लेकिन मातृभक्त जाहर वीर ने मां को इस पाप से बचाने हेतु पलायन करने की ठान ली। भागते–भागते वे भयंकर दलदल में समा गए। रानी सिरयल अपनी सासुओं को सात सौ जन्मों तक निपूती रहने का शाप देकर स्वयं भी पति के साथ दल–दल में समाधिस्थ हो गई।

चूंकि जाहरवीर के भक्त व चेलों की संख्या अपार थी, अतः भक्तों ने उनकी जयकार बुलाई। अपनी श्रद्धा व्यक्त करने के लिए समाधि या मढ़ी बना कर हर साल जात देकर मेला आरम्भ कर दिया। स्वयं गुरु गोरख नाथ ने अपना एक शिष्य गोगा मढ़ी पर सेवादार के रूप में नियुक्त करवाया जो आम जन को गोगा का इतिहास सुनाया करता। हर आर्य जन के लिए वे वीर थे और अन्यों के लिए पीर। धीरे–धीरे गोगा की ख्याति फैलती गई और जगह–जगह लोग गोगा माढ़ी बना कर उनसे मन वांछित फल पाने लगे। यह सिलसिला आज भी जारी है।

नाहन में गुगा पूजन का प्रचलन

जाहर वीर की प्रकाश–प्रख्याति से नाहन रियासत भी अछूती नहीं रही। कोई भक्त बागड़ से यात्रा करके आया और कच्चे जोहड़ में मोहल्ला चार्जान में, जहां आज श्री झाडू राम मिस्त्री का घर है, गोगा के नाम से पत्थर स्थापित कर मन्नतें मानने लगा। बहुत दिनों तक लोग उसी स्थान से वरदान पाते रहे।

बाद में महाराज फतेह प्रकाश ने लोगों की भावनाओं व गुग्गा की भक्ति से प्रभावित होकर वही पत्थर हरिपुर मोहल्ला में, जहां आज गुग्गा माढ़ी है, स्थापित करवा कर पूजन व छड़ी का मेला आरम्भ करवाया। इस

स्थान को विशेष रूप से इस लिए चुना कि यहां पर बहुत पहले से ही किसी महात्मा की समाधि थी। अतः स्थान की पवित्रता बनाये रखने के साथ खुली व एकान्त जगह पर माढ़ी स्थापित करवाई।

इस प्रकार हम देखते हैं कि वर्तमान माढ़ी में गोगा पूजन सन् 1821 ई0 के आस–पास से ही चला आ रहा है। सिरमौर के महाराज फतेह प्रकाश बागड़ देश यानी ज़िला हनुमान गढ़, तहसील नोहर गुग्गा माढ़ी की यात्रा पर निकले और उनकी भावना से प्रसन्न होकर गुग्गा जी महाराज ने आकाशवाणी से कहा कि तेरी मनोकामना पूर्ण होगी, मैंने तुझे यात्रा दी है। तू अपनी रियासत में ही माढ़ी स्थापित करा ताकि आम जन को सुख मिले। तभी उन्होंने लौट कर वर्तमान माढ़ी बनवाई थी।

नाहन में राजवंश द्वारा पूजन–परम्परा

नाहन में राजवंश द्वारा स्थापित गुग्गा की ख्याति चहुं ओर फैली थी, अतः नाहन में भी गुग्गा के पुजारी छड़ी लेकर आते और कच्चे जोहड़ स्थित पूजास्थल पर छड़ी स्थापित कर दान–दक्षिणा ले जाते रहे। लेकिन जब हरिपुर मौहल्ला में बाबा की समाधि पर माढ़ी बन गई तब प्रतिवर्ष हरियाली की संक्रांति के दिन भगत लोग छड़ी को गाजे–बाजे के साथ गुग्गा महिमा गाते हुए महलात में स्थापित करते। वहां उनका आदर–सत्कार होता और महाराज की ओर से सवा मन अनाज व चांदी के सवा रुपए नेग मिलता था। समय–समय पर वस्त्राभूषण भी भेंट किए जाते थे। महाराज राजेन्द्र प्रकाश के स्वर्गवास के बाद राजपरिवार के वंशज कंवर श्री अजय बहादुर सिंह व कंवर श्री अभय बहादुर सिंह इस परम्परा का पालन कर रहे हैं।

आम जन द्वारा गोगा पूजन

सिरमौर रियासत में लोक देवता के रूप में गिरिपार क्षेत्र में शिव के अवतार कहे जाने वाले सिरगुल या श्रीगुल और निचले क्षेत्र में गुग्गा की बड़ी महत्ता है। गिरिपार में भी जहां–जहां सिरगुल महाराज के मंदिर मठ हैं, वहां प्रस्तर रूप में गुग्गा भी स्थापित हैं। कहते हैं कि गुग्गा ने सिरगुल महाराज की भी सहायता की थी। रेणुका तहसील के बाउनल व रजाणा तथा पच्छाद में भी गुग्गा माढ़ी स्थापित हैं।

ऐतिहासिक महत्त्व से नाहन स्थित मोहल्ला हरिपुर की मढ़ी ही

पूर्वकालिक है जहां प्रतिवर्ष भाद्रपद कृष्ण नवमी को छड़ियों के मेले के नाम से मेला लगता है। इसमें शुभ छड़ी को पूजन हेतु साज–बाज के साथ सारे नाहन में भ्रमण करवाया जाता है। लोग अपनी श्रद्धा व्यक्त कर मन्नतें मांगते हैं।

वर्तमान भगत श्री ओम प्रकाश जी के नाना वीरू नाथ को चित्तौड़ से चलते समय बागड़ में गुग्गा माढ़ी के भक्तों ने 2 छड़ियां, एक घोड़ा और नगारे की जोड़ी देकर यह कहकर विदा किया था कि जाओ, संसार में गुग्गा की महिमा का बखान कर दुखियों का दुःख दूर करो। इससे तुम्हारा कल्याण होगा। तब से लेकर उनके 40 परिवार हो गए जो आज भी जगह–जगह मढ़ियों में सेवारत हैं। इससे पूर्व ओम प्रकाश के पिता रामानन्द, उससे पहले उनके ताऊ गोविन्द नाथ नाहन मढ़ी के सेवादार थे। लगभग दो सौ सालों से यही राठौर परिवार यहां पर सेवारत है।

दुनिया की पहली मढ़ी

भगत श्री प्रताप सिंह कहते हैं कि गुग्गा अमर हैं क्योंकि दलदल में समाने के बाद अपने भाइयों अरजन–सुरजन की अस्थियां प्रवाहित करने के लिए वे जी उठे थे। उन्होंने हरिद्वार जाते हुए सहारनपुर से पुल के पास पीपल के नीचे खुद अपना पहला चौंतरा बनवाया था। वही दुनिया की पहली मढ़ी है। वहां का सेवा कार्य काबली नामक एक धीवर परिवार को सौंप दिया था। उसके वशंज आज भी बारह हाथ की छड़ी (निशान) को हथेली पर रख कर नगर परिक्रमा करते हैं। वह सत्य वहां स्थित ताम्र पत्र पर अंकित है जिसे अंग्रेज वाइसराय ने परीक्षा के बाद बनवा कर दिया था।

बागड़ यात्रा

बागड़ में पहला मत्था गोरख टिल्ला पर टेकना आवश्यक है तभी जात सफल होती है। उसके बाद ही माढ़ी पर मत्था टेकना चाहिए। गुग्गा नवमी को सबसे पहले महाराज बीकानेर का निशान (छड़ी) चढ़ाया जाता है उसके बाद अन्य लोगों की छड़ी स्वीकृत की जाती है। गुग्गा पीर हिन्दू–मुस्लिमों के सांझे पीर हैं, सभी को समान वरदान देते हैं। आज भी बागड़ में मुख्य सेवादार मुस्लिम परिवारों से ही हैं।

मेढ़ी या माढ़ी की रचना

इसकी बनावट न तो पूरी तरह मंदिर की सी होती है और न पूरी

तरह मस्जिद की। चारों कोनों में मीनारें होते हुए भी यहां पूजा व आरती होती है। कहते हैं कि भगवान दास के परिवार के पूर्वजों को महाराज सिरमौर के दरबार में 19 वीं कुर्सी हासिल थी। लाला भगवान दास स्वयं जाहर वीर के वरदान से पैदा हुए थे। उनके पिता श्री आशाराम ने जन्म के साथ ही भगवान दास को पीर के चरणों में अर्पित कर दिया था। आज भी हरियाली संक्रांति को महलात में सबसे पहले छड़ी पूजन के बाद दूसरा पूजन भगवान दास के घर पर होता है। उसके बाद ही अन्य शहर वासियों द्वारा छड़ी पूजन किया जाता है।

❐

गुग्गा गाथा

योगेन्द्र सिंह 'तूर'

लोक जीवन में लोक साहित्य का विशेष महत्त्व है। लोक साहित्य से अभिप्राय सामान्य जन जीवन के साहित्य से है जिसके रचना परिवेश को किसी युग विशेष के फोकस से नहीं देखा जा सकता। इस प्रकार के साहित्य के मूल्य शाश्वत होते हैं जो युगयुगान्तर तक जीवित रहते हैं। इनके निरन्तर प्रवाह में जन साधारण के सांस्कृतिक पक्ष को परम्परित रूप में समझने में विशेष सहायता मिलती है। मूलतः ऐसा साहित्य मौखिक रूप से ही उपलब्ध होता है जिसमें जीवन के अनुभूत सत्यों की प्रधानता होती है, जो सर्वसाधारण की सामूहिक आत्मोपलब्धि होती है। इसीलिए लिखित साहित्य में जैसे–जैसे दुरूहता बढ़ती जा रही है तथा अनुभूत सत्यों का अभाव खटकने लगा है तो दूसरी ओर लोक साहित्य के संग्रह की ज़रूरत बहुत अधिक मात्रा में बढ़ गयी है। चूंकि लोक साहित्य में साधारण जन जीवन के सांस्कृतिक तथा सामाजिक जीवन की सर्वाधिक रूप में अभिव्यक्ति का अवकाश रहता है, इस दृष्टि से भी इस साहित्य का मूल्य बढ़ गया है।

लोक साहित्य में लोक गीत, लोक कथाएं, लोक गाथाएं, झेड़े, झमाकड़े आदि का विशेष महत्त्व होता है। नूरपूरे दा राजा जगता, गढ़ मलौण रा, चम्बे रा कंजरन बामण तथा राजा भरतरी आदि झेड़े हिमाचल में विशेष रूप में प्रचलित रहे हैं किन्तु इन झेड़ों में जो व्यक्ति आए हैं वे हिमाचल के इतिहास के ही चर्चित व्यक्ति हैं। किन्तु गुग्गा चौहान का झेड़ा (वीर काव्य) इन सभी झेड़ों में सर्वाधिक रूप में प्रचलित तथा सांस्कृतिक भाव भूमि के अनिवार्य अंग के रूप में हमारे सामने आता है।

गुग्गा चौहान का ऐतिहासिक वृत्त संदिग्ध है। फिर भी गुग्गा का संबंध चौहान वंश से था। गुग्गा का गोरखनाथ से घनिष्ठ संबंध बताया जाता है। यह देखकर इन्हें गोरख नाथ का समकालीन मानने में कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए। गोरखनाथ एक पहुंचा हुआ सिद्ध योगी था जिसकी भक्ति

करने पर माता बाछल ने गुग्गा को जन्म दिया था। गुग्गा चौहान मारूदेश का उत्तराधिकारी था। इनके जीवन वृत्त को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि गुग्गा को अपने मौसेरे भाइयों अर्जुन तथा सुर्जन से युद्ध करना पड़ा था जो इससे आधा राज्य मांगते थे। माता बाछल को इनके मरने से दुःख हुआ होगा जिससे विह्वल होकर उसने अपने पुत्र को देश से बाहर चले जाने की आज्ञा दे दी होगी। गुग्गा चौहान अपनी माता के इस वचन को अपना स्वाभिमान मान कर चला गया हो तो यह भी संभव है।

हिमाचल प्रदेश में स्थान–स्थान पर सिद्धों तथा नाथों के अवशेष देखने को मिलेंगे। गोरखनाथ की सम्पूर्ण उत्तरी भारत में प्रसिद्धि तथा उन्हें चोटी का नाथ भी इसीलिए माना जाता है। चमत्कार प्रदर्शन तथा तांत्रिक साधना में उनकी कोई होड़ नहीं ले सकता था। गुग्गा काव्य के आरम्भ में गोरखनाथ के चमत्कारों का वर्णन आया है जिसमें काछल माता, कुम्हारी तथा गंगा के अहं को खंडित किया गया है। सिद्ध लोग धन धान्य की इच्छा से दूर रहते थे। माता बाछल ने भिक्षा स्वरूप सैकड़ों मन व्यंजन गोरखनाथ की सेवा में प्रस्तुत करने के लिए दिए तो उनके एक ही शिष्य काहनी चेले ने उसके सारे अहं को तोड़ दिया। काहनी चेले की **डोडी पिआलुआ** ही भरने में न आया।

जे तेरा भोजन गिरी गिरी पहोंगा, अपे चुगी चुगी खाओ आं।
सौए मणे दे रोट पलटे, पिआलु पुरा न होया।
सौए भणे दे भोज लटे, पिआलु अधा वी नी होया।
सौए मणे दी झिंजण पाई, पिआलु पूरा वी नी होया।।

प्रसन्न होकर गोरखनाथ ने माता बाछल को एक फल देकर पुत्र का वरदान दिया था। यह फल गोरखनाथ ने अपनी सिद्धि से पाया था। ऐसा लगता है कि गुरु गोरखनाथ की नागों से मन ही मन शत्रुता रही होगी जिससे उन्होंने नाग जाति के दुश्मन गुग्गा को इस धरती पर लाने के लिये यह चमत्कार किया हो। गुग्गा चौहान की शादी में व्यवधान पड़ने पर गोरखनाथ ने ही इसकी सहायता की थी। काहनी चेले को पाताल में भेजकर वासुकि नाग को बुलाया तथा तक्षक सर्प को कौरू देश में भेज इन चमत्कारों के बल पर सुरिहल की गुग्गा से शादी की बात पक्की करना गोरखनाथ की ही कृपा थी। रानी के गुग्गा को जादू द्वारा मोती बना देने पर गोरखनाथ जी ही उसे पुनः मंत्र पढ़ कर व्यक्ति रूप में लाए थे।

गुग्गा काव्य में काहनी चेले के भी कुछ चमत्कार वर्णित हैं जो गोरखनाथ की ही कृपा से होते हैं। कौरू देश में पहुंचने पर गुग्गा और काहनी चेले को जब तंग किया जाता है तो काहनी अपनी करनी से कौरू सेना को अपनी मृगशाला में लपेट कर अदृश्य कर देता है। फिर वह बाग के प्रवेश द्वार को आकाश में उड़ा देता है।

गुरु गुग्गा को भी दिव्य शक्ति प्राप्त थी। वे सर्पों के घोर दुश्मन थे। अभी वे गर्भ में ही थे कि उन्होंने धौला बैल के सर्प–विष को उतार कर जीवित कर दिया था। बचपन में अभी वे झूले में ही थे तो उन्होंने सर्पों के आक्रमण के कारण इस रूप में विनाश किया था :–

नागां दा रस यूं चुस्से जिहां बालक दे मुंह मम्मा।
नागां दा रस यूं चुंघे जिहां कत्तक महीने दा गन्ना।
नागां दा रस जिऊं चुंघे, हड्डियां दे ढेर लगाओए।
चुंघी चुंघी राणे नागां दी अठकुली खत्म कित्ती।

इसीलिए हिमाचल में गुरु गुग्गा की सर्पों से रक्षा करने वाला देवता मानकर पूजा होती है। हिमाचल के कई भागों में यह विश्वास है कि जिस व्यक्ति को सर्प ने काटा हो, अगर वह गुरु गुग्गा के मंदिर में जाकर आराधना करे तो गुग्गा उस सांप को अपने पास बुलाता है और इस व्यक्ति के विष को उतारने के लिए मजबूर करता है। इसलिए विश्वास है कि डंक मारने वाले सर्प को नहीं मारना चाहिए।

हिमाचल में देवी देवताओं की पूजा तथा चढ़ावा कैसे करते हैं, गुरु गुग्गा काव्य में इसका वर्णन इस प्रकार से है :–

सुआए सेरे दा रोट पकाया गुड़ घि खंड लाईया
सुआए सेरे दा रोट पकाया, बुकले विच छुपाया।
हत्था लैंदी हूमे री कड़छी, गुरां दे डेरे आइयां।।

भारतीय सांस्कृतिक परिवेश में लड़के का जन्म शुभ तथा मांगलिक माना जाता है। इससे एक ओर कुल वृद्धि होती है तो दूसरी ओर वह पितरों की सेवा का कर्तव्य भी निभाता है। इस संबंध में यह भी मान्यता है कि पुत्र अपने माता–पिता का दाह संस्कार तथा पाठ पूजा करें तभी प्रेतात्मा की स्थिति से मुक्ति मिल सकती है। गुग्गा काव्य में बाछल और उसके स्वामी के चिंतित होने का यही कारण है। माता बाछल इसीलिए ब्रह्मा, विष्णु तथा गोरखनाथ की कई वर्षों तक भक्ति करती है :–

भरी भरी नैण माता बाछल रोंदी, औरा कर्म कमाया।
बारा बरसां ब्रह्म सियुरया से ओआं आकल गईयां।
बारा बरसां विशणु सियुरया, से ओआं आकल गईयां।
बारा बरसां तु जोगी सियुरया, आज छल लगाणे तु आया।।

आज भी अनेक परिवारों का सर्वेक्षण किया जा सकता है कि जिनके घर पुत्र रत्न का जन्म नहीं होता वे संत महात्माओं तथा देवी–देवताओं की आराधना में लगे रहते हैं।

गुग्गा के विवाह प्रसंग से ज्ञात होता है कि हिमाचल के विभिन्न भागों में लड़के या लड़की की शादी एक बार निश्चित कर देने पर वहां से हटा लेना बुरा माना जाता है, विशेषतः राजपूतों में। लड़की का जगह–जगह रिश्ता करना तो राजपूती आन के विरुद्ध है। गुग्गा के विवाह प्रसंग में कौरूदेश का राजा गुग्गा को सुरियल का टीका भेज कर शादी पक्की करता है किन्तु कुछ दिनों के बाद वह इनकार कर देता है जिसे गुग्गा अपना अपमान समझता है इसीलिए तो राजपूती आन में कहता है :–

छतरिआं राजपूता रा धर्म आ,
ब्याही री चली जाए कुआरी न जाओए।।

लड़की पक्ष की ओर से बारात का आदर करना तथा सुन्दर वस्तुएं उपहार में भेंट करना सम्मान का कारण समझा जाता है। कौरू देश का राजा जब यह देखता है कि गुग्गा केवल दो फकीरों के साथ ही आया है तो उसे बहुत ठेस पहुंचती है। रानी भोपाली तो क्रुद्ध होकर स्वयं गुग्गा के पास जाकर यह आदेश कर आती है :–

अठ लख घोड़ा, नौ लख पैर पिआदा,
दस लख लयाओणी बरात।

इतनी बारात जोड़ी ल्याएओ तां मेरे महले आएओ।।

वस्तुतः लड़की के पैदा होते ही माता–पिता को चिन्ता हो जाती है, उसके विवाह की। इसीलिए वे लड़की के पैदा होते ही धन तथा दहेज की वस्तुएं जमा करने लग जाते हैं।

बारहां बरसांदे पके पकुआन, अज किस दिया बरात जो खुआओआं
बारहां बरसां दीआं पकीआं मठयाइयां अब किसजो खुआओआं।
बारहां बरसां ते तम्बु सतरंज बणआए, अज किस जो लगुआओंआ
बारहां बरसां घोड़ेआं जो दाणा दलुआया इक घोड़ा लई के आए।।

हिन्दुओं में विवाह आदि वैदिक रीति से सम्पन्न होते हैं। गुग्गा के विवाह का ऐसा ही दृश्य देखिए :–

सौए लधे दी खाट बछाई, उपरा ते वेद गड्डाई।
सुईने री वेद, रूपे री थहमीयां,गड्डियां राजे संझी ने दरबार।
अम्बर गरजे, मेहा बरसे व्याहणे चढ़या चुहाण
गुग्गा रजादा वेदी बैठया, देवते बैठे चफेर।

कन्यादान का दृश्य हिन्दू संस्कृति के अनुसार ही यहां सम्पन्न हुआ लेकिन यहां राज परिवार का अपना प्रभाव है।

पहलीआं लाओआं तेरे नानकी आओए, करदे बेदी वाले दान।
दुज्जिया लाओआं राजा संझी आओए, करदा बेटी दे दान।
तिजिया लाओआं राणी भोंपाली आओए, करदी कुड़िया रे दान।
चौथिया लाओआं तेरे भाई आओए, करदे घोड़ेआं वाले दान।

लड़की की विदाई का दृश्य बडा ही कारुणिक होता है। उसकी सहेलियां, माता–पिता बिछुड़ जाते हैं जिससे वह इतना प्रलाप करने लगती है कि ऐसा लगता है जैसे सावन मास उतर पड़ा हो :–

बाल परोए सुच्चयां मोतिए, स्यूने दा चक लगुआया।
सठ सहेलियां कठियां हुइयां, कुजां वाले डार।
तुसें तां बैठो भैणों मेरियो, मै अज परदेसण वणी।
सठ सहेलियां गला मिलदियां, रोई रोई सौण लगाया।।

हिन्दू रीति में लड़की का डोला आगे–आगे ले जाया जाता है और पीछे--पीछे वर का रहता है। चलते समय लड़की अपने माता–पिता का देश छोड़ने पर प्रलाप करने लगती है :–

सुरिहल देई डोले बैठी, किंहां करे बरलाप।
डोले बैठी सुरिहल बोले, देखी लैणा बापू तेरा देस।
मजलें मजलें डोला तियार हुआ, चलणे जो हुंदा तियार।
अगे अगे सुरिहल दा डोला, पिछे पिछे हुंदा निले दा सुआर।।

विवाहोपरान्त यह मान्यता है कि अगर घरेलू कार्यों में व्यवधान पड़े तो नवविवाहिता के लक्षण को कोसा जाता है। गुग्गा पर विपत्तियों के आने पर गुगड़ी सुरिहल की आलोचना करती है :–

जली पर जावां मारूआ देसा, नित उठ गोधम पाया।
जदहकी ब्याही सुरिहल राणी, जदहकी गोधम पाया।।

सांस्कृतिक जीवन में लोक विश्वासों का विशेष महत्त्व है तारे का टूटना अशुभ माना जाता है। गुग्गा जब युद्ध क्षेत्र के लिए चलता है तो सुरिहल को तारा टूटता हुआ नज़र आता है जो उसके भावी जीवन में आने वाली विपत्तियों की ओर संकेत करता है।

महलां ते उतरीआं सुरिहल राणीयां, टूटया नौ लाख तारा।
मैं तिजो बोलां मेरे राजा, मिंजो मारी के तु जाणा।।

सामाजिक जीवन

गुग्गा काव्य में सामतीय परिवेश का चित्रण प्रधान है जिसके इर्द–गिर्द समाज के दूसरे वर्ग के लोग घूमते हुए दिखायी देते हैं। **गुग्गा काव्य** के अध्ययनोपरांत ऐसा ज्ञात होता है कि व्यक्तिगत भेदभाव अधिक न थे। माता बाछल जिस फल को खाकर गुग्गा चौहान को जन्म देती है, उसके छिलके उसकी एक दासी खा लेती है। जिससे गुगड़ी नाम की लड़की पैदा होती है जो गुग्गा की भांति बहादुर थी। गुग्गा और गुगड़ी के बीच भाई बहन का घनिष्ठ स्नेह था। फल के कुछ अवशेष भंगिन, चमारी तथा घोड़ी ने भी खाए थे जिनसे नार सिंह, भजन, रतनु तथा नीला घोड़ा पैदा हुए जो गुग्गे के आजन्म साथी रहे थे। स्पष्ट है कि जातिगत भेदभाव इनमें नहीं थे। किंतु इस रूप में इतिहास को झुठलाना होगा इसके अतिरिक्त कि झियुरियां, माली, लुहार, नाई, पुरोहित ये भी विभिन्न जातियों के लोग सामंतीय परिवेश के चारों ओर चक्र की तरह घूमते हैं।

गुग्गा काव्य में सामंतीय शानो–शौकत के प्रायः दृश्य देखने को मिल जाएंगे। माता बाछल के स्नान की तैयारी देखिए :–

हुक्म करदी माता झियुरां, बोटियां पाणी गर्म करायां।
ठण्डा पाणी गर्म कराया, चनण चौकी ढलायां।
चनने चौकी ऐन ठहराइयां, बाछला जो नहोण संजोयां।।

माता बाछल का योगी के दर्शनार्थ जल भरने जाने के लिए घोड़ा और बिन्नुआ साधारण नहीं हैं :–

माता बाछल तलमल हुईयां, मैं जोगिए देखणे जाणा।
सुईने घड़ोलु रूपे बिन्नुआ, माता नीर भरैणे जाओए।।

गुग्गा के विवाह प्रसंग में कौरव देश के राजा के भी सामन्तीय शानो–शौकत के दृश्य देखने को मिल जाते हैं।

चनण रूखा दा डोला बणुआया, मोतियां दी जड़त जड़ाया।
स्यूने रूपे दा कलस लगाया, डोला बांका बणाया।।

समाज में जादू–टोने का भी प्रसार रहता है। कौरव देश में जादू–टोना का अत्यधिक रूप में प्रचलन रहा होगा, ऐसा इस काव्य से ज्ञात होता है। राणी भोंपाली का अपने दामाद को मोती के रूप में बदल देना जादू का ही खेल है।

राणी भोंपाली ने क्या चरित कमाया,
कौरू देस रा जादू चलाया।
ऐसा चरित चलाया गुग्गें लाड़े दा मोती बणाया।

गुगा गाथा के पर्यालोचन के उपरान्त हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि **गुग्गा काव्य** लोक काव्य है। जिसका रचयिता व्यक्तिविशेष न होकर सम्पूर्ण जन जीवन का सामूहिक मस्तिष्क है जिसमें सामाजिक तथा सांस्कृतिक जीवन की कहीं स्पष्ट तो कहीं क्षीण झलक दिखायी देती है। चमत्कारों तथा सिद्धियों में जनजीवन की रुचि होना स्वभाविक है। गोरखनाथ तो चमत्कारों के अवतार ही थे जिसका प्रभाव अब भी हिमाचल प्रदेश के कोने–कोने में है।

गुग्गा चौहान की सम्पूर्ण गाथा गुरु गोरखनाथ से ही शुरू होती है और वे अंत तक गोरखनाथ की सहायता करते हुए दिखायी देते हैं। गुग्गा के संबन्ध में यह कल्पना संभव है कि वे राजस्थान के किसी मारू देश के शासक थे। हो सकता है कि उन्हें गुरु गोरखनाथ से किसी तरह की शक्ति मिली हो जिसके बल पर वे नागों को वश कर लेते हों और वे सर्पों द्वारा काटे गये व्यक्तियों के इलाज में जगत प्रसिद्ध हों। यह संभव है कि इस प्रकार ख्याति अर्जित कर लेने पर उनकी मृत्यु के बाद लोगों ने उनकी पूजा करनी शुरू कर दी हो। लगता है कि गुग्गा के पास सर्प दंश से रक्षा करने के लिए जन्मजात शक्ति थी।

❐

चम्बा में नाग एवं गुग्गा परम्परा

चंचल सरोलवी

प्रकृति के अनंत सौन्दर्य से अलंकृत चम्बा की धरा में शैव और शाक्त संस्कृति का प्रचलन प्राचीन है परन्तु लोक परम्परा में नाग संस्कृति भी पुरातन ही जान पड़ती है। चम्बा में जगह–जगह पर नाग व नागिन के मंदिर, कहीं पर तो शिखर शैली के बने हैं, तो कहीं पर पहाड़ी शैली के विद्यमान हैं। परन्तु यहां पर नाग और नागिन की 'डल–झील' है। जहां पर नाग डल–झील है, वहां पर नाग डल–झील मेला लगता है और जहां पर नागिन डल–झील है वहां नागिन–मेले की परम्परा है तो कहीं पर नाग जात्र मेला की परम्परा है।

चम्बा में गुग्गा (राणा मुण्डलीक) की मढ़ियां (मंदिर) भी विद्यमान हैं। जहां नाग व नागिनों के मंदिरों में काले पत्थर की मूर्तियां प्रतिष्ठित हैं वहीं गुग्गा मढ़ी में घोड़े पर सवार गूग्गा, मुण्डलीक, गुगड़ी, अजिया पाल, नीली घोड़ी, कैलू, गोरखनाथ, मच्छिन्द्रनाथ, हनुमान आदि की पत्थर की मूर्तियां घोड़े पर सवार प्रतिष्ठित हैं। लोगों का इन पर अटूट विश्वास, अगाध श्रद्धा व असीम आस्था है। इनकी कृपादृष्टि से इलाके में हर प्रकार की सुख समृद्धि है, विशेषकर जब कभी वर्षा की आवश्यकता पड़ती है तो उक्त नाग देवताओं और गूग्गा जी की मनौतियों तथा कृपा और पूजा से अवश्यमेव वर्षा होती है।

चम्बा में लोक परम्परा अनुरूप गुग्गा (राणा मुंडलीक) की मढ़ियों में गुग्गा मेला (गूगाहल) का समायोजित मेला लगता है। वहां नाग डल–झील मेला वा नागिन डल–झील मेला उसी प्रकार होता है कि जिस प्रकार मणिमहेश डल–झील स्नान मेला होता है तो कहीं पर नाग व नागिन जात्र मेला की परम्परा है।

इस प्रकार चंबा में गुग्गा मेला (गूगाहल) नाग जात्र मेला, नागिन जात्र मेला, नाग पूजा और गुग्गा की पारम्परिक रीति रिवाज़ों से मन्नत व पूजा की जाती है।

चम्बा में गुग्गा व नाग प्रथा के उद्‌गम बारे कई किंवदन्तियां पीढ़ी

दर पीढ़ी मौखिक रूप में चली आ रही हैं। शौर्य, वीरता तथा चमत्कारों की कई लोक धारणाएं हैं। गुग्गा या राणा मुण्डलीक के बारे में लोक विश्वास है कि गुग्गा पूजन की प्रथा राजपूताना के राजपूतों के इस क्षेत्र में आने के साथ हुई है। इसी लोक धारणा के अनुसार इसे राजस्थान का देवता मानते हैं।

नागों के उद्‌गम के बारे में भी लोगों की अलग–अलग धारणाएं हैं। चम्बा की चुराह तहसील में हिमगिरी कोटी के उत्तर–पश्चिम में लगभग ग्यारह हज़ार फुट की ऊंचाई पर अञ्जनी नागिन का मंदिर और झील विद्यमान है। कहते हैं कि जिस स्थान पर नागिन का मंदिर और झील है वहां पहले बहुत लम्बा–चौड़ा मैदान था जो सात किसानों में बंटा हुआ था। जनश्रुति है कि एक बार यहां ये किसान अपने सात जोड़ी बैलों से हल चलाकर खेत जोत रहे थे और कुछ स्त्रियां मिट्टी के बड़े–बड़े ढेलों को तोड़ रही थीं तो अचानक वह पूरे का पूरा मैदान धरती में समाहित हो गया और पाताल लोक से अञ्जनी–नागिन मंदिर व झील सहित प्रकट हुई। अञ्जनी नागिन एक काले पत्थर की प्रतिमा के रूप में अवतरित हुई। वहां अञ्जनी नागिन ने चार नागों को जन्म दिया। वासुकिनाग, मैहलनाग, खज्जीनाग और जुम्हार नाग। इनकी गाथा नाग–लीला में लोकवाद्य द्वारा या कारंगे के संगीत के साथ लोकगायक सुनाते हैं।

कहते हैं इन नागों का जन्म माघ मास में हुआ था। कालान्तर में इन्हीं नागों का वंश बढ़ता गया। ये जराड़ू में भुजगर नाग, घुलेई में चलियसर नाग, जुंगरा पंचायत में गोटया नाग, चाजु–चरड़ा में भुण्डोलू नाग, हिम नाग, भलेई परगना में सुंधार इत्यादि नागों की वृद्धि हुई। जिन नागों की डल झीलें हैं उनमें वासुकिनाग, खज्जी नाग, मैहल नाग तथा अञ्जनी नागिन हैं। इस प्रकार नाग संस्कृति का उद्‌गम किंवदन्ती अनुसार चुराह में हुआ।

एक अन्य लोकविश्वास अनुसार कहा जाता है कि सींस नाग के वंश की **किन्दरू** और **विन्दरू** नामक दो सौकिनें थीं। किन्दरू नामक नागिन ने गारडी (झाड़ फूंक करने वाला गूर) को जन्म दिया और विन्दरू ने नाग को जन्म दिया। यह नाग चलता हुआ जम्मू में आ बसा और इसके सात नाग पुत्र हुए। वे सातों नाग चम्बा में आकर बसे। खज्जी नाग खज्जियार में, मेल नाग चुराह में, सुण्डल और विणतरू नाग चुआड़ी की धार में आकर बसे। छतराहड़ नाग सिंहुता में, करगड़ नाग सिढ़कुंड तथा मण्ढौर नाग सुदली में आकर बसा। सुदली के एक आदमी को नाग ने सपने में कहा कि मैं सुदली (चुआड़ी) में पत्थर के रूप में प्रकट हुआ हूं। सुबह सुदली में जाकर उसने देखा कि

सचमुच पत्थर की मूर्ति के रूप में नाग प्रकट हुआ था। यह बात सारी जगह फैली और लोग नाग की पूजा करके अपने मनोरथ साधने लगे।

कहते हैं कि सुदली में पानी नहीं था। लोगों ने मण्ढौर नाग से प्रार्थना की। नाग मण्ढौर ने अपने भाई खज्जी (खज्जियार) से बात की और फिर उन दोनों भाइयों ने रातों–रात पानी सुदली पहुंचाया। लोग आज भी इस बात को सत्य मानते हैं, क्योंकि पानी के साथ चाहू और चीड़ के पत्ते बहते हुए आते हैं। चुआड़ी के आस–पास उक्त प्रकार के वृक्ष नहीं हैं, ये खज्जियार में ही हैं।

सुना जाता है कि चम्बा के एक राजा को भी नाग मण्ढौर ने सपने में कहा था कि मेरा मन्दिर बनाया जाए। राजा ने दिल्ली से एक मूर्ति बनवाकर कहारों द्वारा पालकी में लाकर चुआड़ी के कुठेढ़ गांव में मंदिर बनवाकर उसकी विधिपूर्वक स्थापना की । आज भी नाग मण्ढौर मन्दिर में सात दिन तक जात्र मेला लगता है। लोगों का मानना है कि जब वर्षा नहीं होती तो नाग देवता पर दूध–लस्सी गिराई जाती है। मूर्ति के पीछे नाली में जब दूध–लस्सी बहकर पहुंचे तो वर्षा ज़रूर होती है।

इसके अलावा कुछ नाग व नागिन मंदिर ऐसे भी हैं जिनके बारे में लोगों की अलग–अलग धारणा है। उदाहरणार्थ सलूणी में चिनार की छांव तले गुलधन नाग का मंदिर है। सदियों से गुलधन नाग देवता की प्रतिमा चिनार के वृक्ष तले विद्यमान है। लगभग अस्सी वर्ष पूर्व एक साधु ने यहां अपनी धूणी रमाई और स्थानीय लोगों की सहायता से कच्चे मंदिर का निर्माण करवा कर नाग देवता, अन्य देवता काली माता और चहूंमुखी शिव की पिण्डी की अलग गर्भगृह में विधिपूर्वक स्थापना की। जात्र मेला शुरू करने बारे लोगों का विश्वास है कि आठ दशक पहले जब गेहूं की कटाई के उपरान्त मक्की की बीजाई का समय बीत रहा था और वर्षा नहीं हो रही थी तो कुटेड़ी गांव के देवीदयाल ने, जो नाग देवता का पुजारी चेला था, देवता से मन्नत की कि वर्षा ठीक हुई तो भेडू की बलि देकर जात्र देंगे। परिणामस्वरूप वर्षा ठीक हुई और खेतों में पैदावर भी अच्छी हुई। तब से यहां जात्र मेला शुरू हुआ जहां ज्येष्ठ के पहले और दूसरे प्रविष्टे को पारम्परिक वेशभूषा में चुराही नृत्य किया जाता है।

इसी प्रकार जैंश्री गांव के मध्य में पीपल के पेड़ की छांव तले नागनी माता का मंदिर है। लोगों का कहना है कि इस प्रतिमा को चम्बा का कोई

राजा जम्मू–कश्मीर से चम्बा के लिए लाया था। पधरी जोत से होते हुए भंदलू–किघर से होकर जब जैंश्री गांव में पहुंच कर विश्राम हेतु बैठे और राजा अपने सिपाहियों के साथ चम्बा मुख्यालय को प्रस्थान करने लगे तो माता की पालकी इतनी भारी हो गई कि खूब प्रयत्न करने पर भी उठाई नहीं गई। तब जैंश्री के एक वृद्ध व्यक्ति ने राजा को समझाया कि नागनी माता चम्बा नहीं जाना चाहती है। राजा को यहीं कच्चा मंदिर बनवाना पड़ा। यहां जैंश्री नागनी माता के नाम पर आज भी मंदिर विद्यमान है।

चम्बा में गुग्गा मेला (गुगाहल) अश्विन व चैत्र के नवरात्रों में होता है। इस मेले में कारकून, जोगी, चेला गूर और साजिंदे मुख्य हैं। धातु से बना छत्र प्रतीक के रूप में मेले में शामिल किया जाता है तथा श्रद्धालु नंगे पांव ढोल, नगाड़ा, शहनाई बजा कर गांव के घर–घर में गुग्गा जी का दर्शन कराते हैं। लोग श्रद्धानुसार घर में विश्राम हेतु भी रखते हैं। ढोल, नगाड़ा, शहनाई बजाकर चेला जगाया जाता है। वह कांपता हुआ गूग्गा देवता की ओर से उन्हें सुख समृद्धि का आशीर्वाद देता है। जोगी द्वारा कारक लोक गाथा के रूप में गुग्गा के जन्म व शौर्य, के किस्से सुनाए जाते हैं।

चम्बा तहसील में स्थित धोलती गांव में गुग्गा मढ़ी विद्यमान है परन्तु इस मढ़ी में गुग्गा मेला (गुगाहल) पिछले पचास वर्षों से बन्द है। राजनगर गांव में सतवादी (सत्यवादी) मंदिर में गुग्गा की स्थापना है। इन्हें सत्यवादी शायद इसलिए कहा जाता है कि ये अत्यन्त सत्यप्रिय थे और उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन सत्य के पथ पर चल कर व्यतीत किया था। यहां राजनगर में सत्यवादी मंदिर में गुग्गा नौमी से एक सप्ताह पूर्व गुग्गा मेला शुरू होता है जो सप्ताह भर चलता है। गुग्गा का प्रतीक धातु का छत्र राजनगर, चक्कलू, पुखरी, चण्डी, कोटी एवं कियाणी आदि गांवों तक जाता है तथा यहां आज भी यह पारम्परिक मेला जीवित है।

गांव धोलती में विद्यमान राणा मुण्डलीक की गुग्गा मढ़ी आयताकार है जो बीस फुट लम्बी और आठ फुट चौड़ी है। इसकी तीन दीवारें हैं जो आठ फुट ऊँची हैं और पत्थर, मिट्टी, गारा से समतल की गई हैं तथा सलेटनुमा छत से सुसज्जित है। इस माढ़ी में कुल आठ मूर्तियां हैं जो काले पत्थर की बनी हैं और घोड़े पर सवार हैं। घोड़ा दस इन्च लम्बा व दस इन्च ऊँचा है तथा सवार राणा की मूर्ति लगभग छः इन्च लम्बी है। मूर्ति और घोड़ा एक ही पत्थर के बने प्रतीत होते हैं। घोड़ा छः इंच लम्बे तथा तीन इन्च चौड़े पत्थर पर खड़ा है। राणा मुण्डलीक के साथ अन्य देवता भी इसी प्रकार घोड़े

पर सवार लगभग इतनी ही लम्बाई और चौड़ाई के हैं, जिन में पीर सामदार, भैरो, कैलू, गुगड़ी, अजियापाल, हनुमान और आठवीं मूर्ति शेर पर सवार दीपक राजा की है। शेर की लम्बाई सोलह इंच और चौड़ाई बारह इन्च है। ये सभी मूर्तियां काले पत्थर की बनी हैं।

इसके अलावा गांव झरोली (डनून) में भी सिद्ध बाबा का मंदिर है जो वास्तव में गुग्गा ही है। चम्बा में गुग्गा को सतवादी, सत्यवादी और सिद्ध बाबा के नाम से भी जानते हैं। झरोली में भी चैत्र मास को सिद्ध बाबा मेला यानी गुग्गा मेला लगता है। इस गांव में लगभग 80 परिवार हैं। हर परिवार का एक सदस्य आज भी गुग्गाल में शामिल होता है। मेला पारंपरिक ढंग से मनाया जाता है। राजनगर की भांति यह भी घर–घर डेरा लगाते गांव गांव में घूमते हैं।

पुखरी के साथ छन्नी नामक गांव में छन्नी नाग मंदिर घर में ही विद्यमान है। यहां भी जातरू दूर–दूर से आकर अपनी मनौतियां मानते हैं तथा दुःख कष्टों व जादू टोने के निवारण हेतु यहां कई–कई दिन तक ठहरते हैं।

इस प्रकार चम्बा में नाग–नागिन व गुग्गा का लोगों के ऊपर प्रभाव है तथा इसके इलावा और भी कई स्थानों पर नाग मंदिर विद्यमान है।

इन देवताओं की पूजा पारम्परिक लोक मान्यताओं के अनुसार होती है। प्रसाद के लिए मक्की या गेहूं की दो रोटियां, एक मोटी तथा एक पतली, बाकी आम रोटी गुड़ का मीठा डालकर पकाई जाती हैं जिसे मिट्ठी रोटी कहते हैं। फिर धूप, दीप, फूल चढ़ा कर इसकी पूजा की जाती है। पूजा उपरान्त रोट पुरुषों को पतली रोटी स्त्रियों को, प्रसाद के रूप में बांटी जाती हैं। इसके इलावा दूध और लस्सी भी चढ़ाई जाती है।

राणा मुण्डलीक की व्युत्पत्ति के बारे में एक गाथाकार के अनुसार राणा मुण्डलीक की कारक लोकगाथा के अंश इस प्रकार हैं –

मुण्डलीक कारक गाथा

काछला ते बाछला सक्कीयां भैणां,
विरद्ध पाल राजे दीयां धीयां जी!
काछला बियाही भाइयो गुग गूंग राजे,
बाछला बियाही देवराजे जी !
इक पर दिन हाय कैसे बरतोरें जी,

सुत्ती सेज़ा सुपना जे होया जी !
अत्ते सेजा बो सतोरी हाय बाछला जे माता,
बालक सुपने जे आया जी!
अत्ते सर जट्टियालु, बेटे पैर घुंघरालु जी,
छणमण बालक जे खेले जी !
अत्ते सर जट्टियालु, बेटे पैर घुंघरालु जी,
बालक सुपने जे आया जी !
सुपने दी जागी हाय बाछलां जे माता,
चार पासे नजर ढ़लादी जी !
अत्ते चनणे दी चौंपड़ा ते रूपे दी सारा,
सार पासे देवराजा खेले जी!
अत्ते मंगदे सैह बारह जलेया पूंदा रोह ठारा,
जियां पासा पूंदा तियां पुट्ठा जी !
सुपने दी जागी हाय बाछलां जे माता,
छम–छम नैण भरी रोंदी जी !
अत्ते हिग्गटूए–हिग्गटूए लैई जे रौंदी,
अत्थरूएं गोंद भराई जी !
अत्ते ठण्डे से नीर सील करांदी,
बाछला से करदी स्नाना जी!
अत्ते न्हाई ते धोई, बाछला जे माता,
न्हाई नोएं वस्त्र लाए जी !
सुन्ने केरे केसा हाय रूपे केरी कंघी,
केस जिसा पाहरणा जे लाए जी !
अत्ते केस जिसा पाहरी बाछला जे माता,
अरसूए मुख जे दिक्खे जी !
अत्ते अरसूए मुख जे दिक्खा हाय बाछला,
सिंदिया धोले लगी आये जी!
कालड़े जे धिर केस धोले जे होए,
अबे होए विरद्ध सियाणे जी !
अत्ते गेई वो जुआनी हाय आया वो बुढ़ापा,
नस्से केस्से रंग बदलाया जी !
अत्ते सोना कने चान्दी राजा लखा वो करोड़ी,

भोगण हारा नहिंयों कोई जी !
अत्ते घरे नहियों असेया, घरे नी है जाया,
गढ़ दूनेरे खिल्ल पेई जाणा जी!
आज्ञा ता देया हाय देवराजा जी !
गोरख टिल्ले मैं ता जाणा जी!
गोरख टिल्ले रैहंदे हाय गुरु गोरखनाथा,
गुरु केरी सेवा मैं लाणी जी !
गुरु केरी तपसेवा लाणी मेरेया राजा,
पुत्र फल़ लेई मैं ईणा जी !
देवराजे का हाय आज्ञा जे लित्ती,
गोरख टिल्ले जो चली आई जी !

गाथा का हिन्दी अनुवाद

"विरूद्ध पाल नामक राजा की दो बेटियां क्रमशः काछला और बाछला नामक बहिनें थीं। काछला की शादी गंग नामक राजा से और बाछला की शादी देवराज से हुई। एक दिन पलंग पर सोई हुई निद्रा में लीन बाछला को सपना आया। सपने में बाछला ने एक बालक को देखा। बालक के सिर पर लम्बी-लम्बी जटाऐं थीं और पांव में धुंघरू पहने हुए था। ऐसा सुन्दर सलोना बालक उसे दिखाई दिया। सपने से जागी बाछला ने जब चारों ओर दृष्टिपात किया तो वह देखती है कि देवराज चंदन की चौपड़ खेल रहे हैं। वह दांव लगाने के लिए 12 मांगता है तो उसे दांव पर 18 मिलते हैं तथा उसका दाव उलटा ही पड़ता है।

सपने से उठकर बाछला अपनी आखों से मुसलाधार आंसू बरसाती है और हिचकी ले ले कर बिलखती है। आंसुओं के नीर से उसकी गोद भर जाती है। आंसुओं के ठण्डे नीर को गर्म करवाकर उससे बाछला स्नान करती है और फिर नये वस्त्र पहनकर अपने सोने स्वरूप बालों को रूपे की कंघी से संवारती है और फिर अपना मुख दर्पण में देखती है तो उसकी नज़र मांग भरने वाली जगह पर ठहर जाती है और वह यह देखकर चकित रह जाती है कि उसके बाल उस स्थान पर सफेद हो गए हैं। तब उसे आभास होता है कि काले बाल सफेद हो गये हैं, इसका मतलब बुढ़ापा आ गया है। इसलिए बालों और नाखूनों ने अपना रंग बदल लिया है। वह फिर सोच में डूब जाती है कि हमारे पास धन-दौलत, सोना-चांदी अथाह है, परन्तु उसका

भोग करने वाला हमारे बाद कोई नहीं है। हमारे गढ़दूनेरा में खिल्ल पड़ जाएगा। अर्थात् हमारा वंश समाप्त हो जाएगा।

वह अपने पति देवराज से गोरखटिल्ले पर गुरु गोरखनाथ के पास जाने की आज्ञा लेती है। वह कहती है कि मैं उनके पास जाकर तपसेवा करके पुत्र प्राप्त करूंगी। गुरु गोरख नाथ के पास जाकर उनसे पुत्र लेकर ही आऊंगी। अपने पति देवराज से आज्ञा लेकर बाछला गुरुगोरख के पास जाती है।

इस प्रकार गाथाकार के अनुसार जब बाछला गुरुगोरख नाथ के पास पहुंचती है तो गुरु धूनी रमाये बैठे थे। कहते हैं बाछला ने छः मास तक कड़ी तपस्या की तब जाकर गुरु गोरख नाथ की समाधि टूटी और उन्होंने बाछला को देखा। गुरु ने बाछला के सिर पर आशिर्वाद स्वरूप हाथ फेरा तो उसके मिट्टी के शरीर में आत्मा प्रविष्ट हुई और बाछला ने अपने नयन खोले।

गुरु ने बाछला से वर मांगने को कहा। बाछला ने आंसू छलकाते हुए रुंधे स्वर में कहा, कि गुरुवर आपका दिया सब कुछ है, बस एक पुत्र प्राप्ति की अभिलाषा है। हमारे मरने उपरान्त हमारा वंश समाप्त हो जाएगा। गुरु ने गहरी सांस लेते हुए कहा, कि आपकी किस्मत में संतान नहीं है। मैं क्या करूं ? बाछला बड़ी गिड़गिड़ाई, तब गुरु ने कुछ सोच कर कहा कि तुम आज से आठवें दिन पूजा की थाली में प्रसाद सजाकर आना, तुम्हारी इच्छा पूर्ण होगी। बाछला गुरु चरणों में नतमस्तक होकर वापिस लौटी।

❐

गुग्गा ज़ाहर पीर

देवराज शर्मा

भारत अपनी आध्यात्मिकता के लिए जहां सारे विश्व में अपना विशेष स्थान रखता है, वहां भारत वर्ष में हिमाचल प्रदेश को तपोभूमि कहलाने का गौरव सारे संसार में प्राप्त है। हिमाचल का प्रत्येक गांव, पर्वत, गुफा, दुर्ग तथा देवस्थल किसी न किसी देव गाथा, पौराणिक गाथा एवं ऐतिहासिक तथ्य को अपने में समेटे मौन साधक की भांति मानव ज्ञान की वृद्धि हेतु प्रतिक्षण तत्पर है। हिमाचल प्रदेश आराधना स्थली के रूप में विख्यात है। समय की झंझा, युग के परिवर्तन तथा आक्रान्ताओं के प्रयास भी हिमाचल प्रदेश की संस्कृति के भंडार को आंच नहीं पहुंचा पाए। तभी तो सारे भारत वर्ष की संस्कृति हिमाचल प्रदेश के किसी न किसी त्यौहार, मेले एवं मानव संस्कार में प्रतिलक्षित होती है और इस प्रदेश की लोक गाथाएं किसी न किसी महान घटना को प्रतिबिम्बित करती हैं, जिनमें गुग्गा जाहर पीर की गाथा का विशेष महत्व है।

सिद्ध गुरु गोरखनाथ, नाथ सम्प्रदाय के सशक्त चमत्कारी सिद्ध माने जाते हैं। राजा भर्तृहरि, राजा गोपी चन्द, राजा रसालु, गुग्गा जाहर पीर, चरपट नाथ आदि अलौकिक शक्तियों से युक्त माने जाते हैं, जिनका सिद्ध सम्प्रदाय सिद्ध पुरुषों, बाबा दियोट सिद्ध, बाबा सिब्बो, बाबा अजियापाल आदि से विशेष संबंध बतलाया जाता है। ये सभी सिद्ध तथा नाथ सम्प्रदाय के चमत्कारिक पुरुष जो अलौकिक शक्तियों से संपन्न थे, हिमाचल प्रदेश की रमणीक घाटियों में अपनी योग साधनाओं हेतु आराधना के लक्ष्य से आए और इन सिद्ध तथा नाथ पुरुषों ने हिमाचल प्रदेश की जिस भी गुफा, नदी, तट, टीले तथा वनखण्डी को अपनी–अपनी साधना हेतु चुना, उन्हें आज के युग में तीर्थ स्थल के रूप में इन सिद्ध पुरुषों का नाम लेकर पूजा जाता है।

हिमाचल प्रदेश में इन सिद्ध तथा नाथ पुरुषों ने अपने सम्प्रदाय का

प्रचार तथा प्रसार भी किया और यहां रहने वाले कुछ लोग इनके चमत्कारों से प्रभावित होकर इनके अनुयायी भी बन गए, जिनके वंशज नाथ (जोगी) जाति के लोग इन सिद्ध नाथ पुरुषों की गाथाओं को गाकर प्रचार के साथ–साथ आजीविका कमाने लगे। समय के बदलाव के साथ–साथ ये परम्पराएं भी बदलती रहीं, परन्तु आज भी विभिन्न क्षेत्रों में इनका प्रचलन है।

गुग्गा जाहर पीर के देवस्थल हिमाचल प्रदेश के अनेक भागों में विद्यमान हैं। इन देवस्थलों में सांप के काटे लोगों का इलाज पानी व मिट्टी से किया जाता है। इन देव स्थानों पर लोगों की भारी आस्था है और यह स्थल इस बात के भी प्रतीक माने जाते हैं कि इन स्थलों के आस–पास प्रतिवर्ष रक्षा बंधन से लेकर गुग्गा अष्टमी तक गुग्गा गाथा गाई जाती है तथा नवमी के दिन मेलों का आयोजन होता है।

इस भू–भाग की गुग्गा गाथा के अनुसार गुग्गा जाहर पीर राजस्थान के मारवाड़ इलाके के दुनेश रियासत के शासक थे। लोक गाथा के अनुसार इनके पिता का नाम जेऊर बताया जाता है। राजा जेऊर की दो रानियां बताई गई हैं, जिनका नाम काछला तथा बाछला था। यहां प्रचलित गाथा के अनुसार गजनी के राजा बलदेव राज की दो लड़कियां बाछला और काछला थी। वह दोनों ही राजस्थान के दुनेश रियासत के राजा की रानियां थीं। लोकगाथा के अनुसार गजनी का राजा बलदेव जब किसी शत्रु का दमन करने हेतु दूर भाग गया था, तब उसके गजनी से चले जाने के पश्चात् ही बाछला और काछला का जन्म हुआ।

राजा बलदेव जब 12 वर्ष के पश्चात् घर पहुंचा तो उसे काछला और बाछला महलों के पास मिलीं। राजा बलदेव के वंशज उन दिनों लड़कियों को पैदा होते ही मार दिया करते थे। बाछला और काछला की माता को जब इस बात का पता चला कि राजा बलदेव वापिस आ गए हैं, तो उन्होंने अपने एक मंत्री को बुलाकर दोनों लड़कियों का अंगरक्षक नियुक्त कर दिया तथा राजा बलदेव को एक पत्र भी लिख दिया कि वह इन दोनों लड़कियों को न मारें। बाछला और काछला का जन्म मंगलवार को हुआ इसलिए उनकी माता उन्हें देवियां समझती थीं। प्रचलित लोकगाथा में इसका वर्णन इस प्रकार से मिलता है :

मंगल वारें परगट होईयां शक्ति नाम रखाया
दक्खण पूर्व संघ चढ़ि आऊंदे दर बिच आसन लाया,
लै फिर दक्खणा फिरन चफेरे दर बिन आसन लाया।

गजनी के राजा बलदेव की लड़कियों के प्रति क्रूरता लोक गाथा में इस प्रकार प्रचलित है :–

गढ़ गजनी दा बलदेव राजा धीयां नूं रखदा नहीं।

अर्थात् राजा बलदेव बेटियों को मार देता था। जब राजा बलदेव अपने शत्रुओं का दमन करके बारह वर्ष के उपरांत गजनी वापस लौटा तो वह रास्ते में महल के पास बाछला और काछला दोनों बहनों को देख कर कहता है–

राजा– **केहड़ा लड़कियों तुहाड़ा शहर ग्रां हैं?**
किस राजे दी जाई?

काछला बाछला–

गढ़ गजनी दा शहर ग्रां है,
बलदेव राजे दी जाई।
इतनी गल सुणी राजे ने लैई ए तेग उठाई
कोलों उठ वजीर प्यारा
चिट्ठी राजे नू दिखाई ए।
चिट्ठी पढ़ी राजे ने
लैईयां गोद उठाई।

इस प्रकार जब राजा ने दोनों बेटियों को अपनी गोद में बिठाया तो लड़कियां कहने लगीं–

लड़कियां– **जे तू साढा धरमी बाबल**
पट दी पींघ पुआ दे।

राजा– **कुथु दे पट दियां मंगाई**
कैहदी पींघ पंवा मैं?
पच्छम पट मंगवा देवां मैं
पिपल पींघ, हुलारे
पींघा झूटदियां इक्क बाशला
दूजी काशला भैण वे, हां–
इक्का दईयां झूटदियां मेरी माता दे दरबार
सदा शिव दुर्गा दे अवतार।
सिर पर सूईयां चादरां सोबन।
गल फुलां दे हार
ठंडियां गुफां दियां छावां
उच्चे पिपल पीघां पईयां
सोहल पंघड़ू पर दियां तहासां
झूटन बारो बार।

इस गाथा में बाछला तथा काछला के बचपन से यौवन तक का वर्णन है। इसके उपरांत गजनी के राजा बलदेव ने इन दोनों बहनों का विवाह मारवाड़ (राजस्थान) की रियासत (दुन्धन्हेरा या दुनेश) के राजा जेऊर से कर दिया। लम्बे समय तक इन दोनों बहनों के कोई संतान नहीं हुई। लोकगाथा में गाया जाता है–

न्होई धोई इक्क दिन राणियां आरसिया मुख लाया
कालड़ियां केसां दे धौलड़े होए केसा रंग बदलाया।

रानी की रोने की आवाज सुन राजा महल आया और पूछने लगा–

राजा– **सुखे दी रोहंगी तां सटगा मारी**
दु:खे दी रोंगी तां पईएं पुजांगा।

रानी– **कंदू तां होणा न राजा पुतरियां सौतरियां**
कंदू खलहाणे गोदा जाए।

राजा– **कर्मा नी लिखे साड़े गोदा न्याणें,**
कुथु दे खलहाणें गोदा जाए।
हट्टिया हुंदे राणी महंगे खरीददे,
पुतर की मिलदे उधारे।
सद्दी के पण्डत बाशल पुछदी
सांजो आंसियां दा कोई जतन बता
पोथी वाची पण्डत बोलदा
गोरख टिल्ले जा।

पण्डित जी की इस बात को सुन कर बाछल रानी गोरख टिल्ले पर चली जाती है और बारह वर्ष तक गुरु गोरखनाथ की तपस्या करती है। 12 वर्ष की तपस्या से जब गोरख टिल्ला हिलने लगता है, तो गुरु गोरखनाथ के शिष्य टिल्ले के हिलने का कारण पूछते हैं, तो गुरु गोरखनाथ जी कहते हैं–

गुरु गोरखनाथ जी–

भगति सम्पूर्ण हो गई चेलेओ बाछल माई
गोरख टिल्ला टितिलियों गहरी नाद बजाई
तिन सौ सठ चेला चलया गासें धुंध मचाई
डर गए लोग शहर नगर दे ये क्या आफत आई?
मैहल चढ़ी राणी बाछल देखदी यह गुरु मेरे आए
संदल बाग पिपलां दे हेठें संतां आसन लाए।
फुल पताशे बाछल पाएं गुरां दे पासे आई

अग्गें गुरु बोलदे कौन खड़ी मेरी माई?
फलां दे कारन आईयां गुरुआ दे फल म्हारे तांईं
बेवक्ता फल कोई न पाए पहली किरना आंईं।

बाछला को जब गुरु गोरख नाथ ने अगली सुबह सुफल देने को कहा तो वह बहुत प्रसन्न हुई और घर लौट आई। उसने घर आकर यह सारी बात अपनी बहन काछला को बतलाई। काछला बहुत चालाक थी। जब सायं हुई तो अपनी बड़ी बहन के पास गई और कहने लगी–

काछला : **दियां नीं भैणें वस्त्र अपणे पीर मनावण जाणा**
बाछला : **एह लै चाबी, खोल पटारु, लैई लै नवां पुराणा।**
काछला : **नौएं वस्त्र रहन पटारु में तेडे दा लैणा।**

बाछला अपनी बहन काछला की यह बात सुन कर अपने वस्त्र उतार कर उसे दे देती है और काछला उसके वस्त्र पहन कर आधी रात के समय ही गुरु गोरखनाथ के पास चली जाती है। उसे देख कर गुरु गोरखनाथ कहते हैं :–

गुरु गोरखनाथ : आदि्दया राती पक्के धरातें तू कौन खड़ी मेरी माई?
काछला : **फलां दे कारन आई गुरुआ दे फल मेरे तांई।**

जब गुरु गोरखनाथ उसे सुबह आने की बात कहते हैं तो रानी काछला कहती है कि पण्डित ने यही मुहूर्त फल लेने का बतलाया है। रानी काछला की बात सुन कर गुरु गोरखनाथ ने अपनी झोली में हाथ डाल कर दो जौ के दाने उसे दिए, जिसको खा जाने के पश्चात् रानी काछला के दो पुत्र **अर्जुन** और **सुर्जन** पैदा हुए।

सुबह होने पर रानी बाछला भी थाली में फूल और पताशे डाल कर गुरु गोरखनाथ के पास जाती है। गुरु गोरखनाथ रानी को देख कर कहते हैं कि तू अभी–अभी तो फल ले कर गई है। परन्तु, रानी बड़े सहज भाव से कहती है कि वह मेरी छोटी बहन बाछला होगी। गुरु गोरखनाथ इस बात को सुनकर चकित रह जाते हैं और अपनी झोली में पुनः हाथ डालते हैं मगर झोली में कोई फल नहीं निकलता। वह अपने चेलों से सलाह करके विधि माता के पास जाते हैं। वहां से भी उनको कोई सन्तोषजनक उत्तर नहीं मिलता। ब्रह्मा, विष्णु और शिव के पास जाकर भी उनको रानी बाछला के लिए कोई फल नहीं मिलता।

जब गुरु गोरखनाथ जी को कहीं भी रानी बाछला के लिए कोई फल नहीं मिला तो गुरु गोरखनाथ जी पाताल लोक में वासुकी नाग के पास जाते

हैं तो वासुकी नाग उन्हें कहते हैं कि जिस प्रकार का भी फल लेना है, ले जा सकते हो। यह सुन कर गुरु गोरखनाथ कहते हैं :–

जे तू फल देणा मिंजो तां
अपणे सज्जे पौएं दा नाग देई दे
रोशन चार चफेरे दा।

गुरु गोरखनाथ जी की इस बात को सुन कर वासुकी नाग कहता है कि ऐसा करने से पाताल पुरी में अन्धेरा हो जाएगा परन्तु गुरु गोरखनाथ नहीं मानते और वह मन्त्र के द्वारा नाग को गुग्गल (धूप) बना लेते हैं। एक गाथा के अनुसार जो फल गुरु गोरखनाथ ने रानी बाछला को दिया वह स्वयं वासुकी नाग का बेटा था, इसलिए गुरु ने उसे सर्पों का विजयी शत्रु बनने का वरदान दिया था।

अच्छत मारे गुरु गोरख नाथां,
गुग्गल गडियां नाग बणाया।
अपणी झोली विच पाया,
फुंकारे मारदी नागण आई।।
कित्थे जाणा राजया तू जान बचाई,
तां अच्छत मारे गुरु गोरख नाथां,
गुग्गल गडिया नागणा बणाइ।।

नागण : **मैं शीतल होई, ते मेरी पेश न चले लाख**
कोई, मेरी जोडी न बछोडयां।

गुरु गोरखनाथ ने जो गुग्गल की गठ्ठियां अपनी झोली में डाली थीं वह लाकर रानी बाछला को फल के रूप में दे दी। गुरु गोरखनाथ ने रानी को बताया कि इस फल को खाने के उपरान्त जो पुत्र पैदा होगा, वह रानी काछला के पुत्रों से अधिक बलवान तथा तेजस्वी होगा, सांपों का दुश्मन होगा तथा सारे जगत में नाम कमाएगा।

रानी बाछला ने महल में जाकर नहा धोकर फल खा लिया तथा उसके छिलके फैंक दिए। रानी की नौकरानी ने कुछ छिलके उठा कर चूस लिए और कुछ फैंक दिए। जो महलों में सफाई करने वाली नौकरानी थी उसने वह छिलके उठा कर सूंघे तथा मैदान में खड़ी एक घोड़ी, जो बहुत कमजोर थी उसे खाने के लिए दिए। रानी की नौकरानी जिसने छिलके उठा कर चूस लिए थे उसके गर्भ से एक लड़की ने जन्म लिया जिसका नाम **गुगडी** रखा गया तथा वह भी गूगे की बहन कहलाई तथा उसने गूगे के साथ कई लड़ाईयों

में साथ दिया। नौकरानी ने, जिसने छिलके सूंघे थे वह 12 वर्ष की नौजवान सुन्दर कन्या बन गई तथा जिस घोड़ी ने वह छिलके खाए थे उसके एक सुन्दर सा घोड़ा पैदा हुआ जो नीले के नाम से आजीवन गूगे का साथी बन कर रहा और गूगे के साथ ही अमर हो गया। गाथाकारों के अनुसार सवेरे के समय में गूगे का जन्म हुआ। दोपहर को नीले घोड़े का तथा शाम को गुगडी का जन्म हुआ। परन्तु यहां एक बात रोचक है कि गूगे का जन्म 11 महीने गर्भ में रहने के उपरान्त हुआ बताया जाता है।

एक अन्य गाथा के अनुसार गुरु गोरखनाथ ने किसी वृक्ष की दो जड़ें रानी बाछला को दीं तथा उन्हें पीस कर खाने को कहा, रानी बाछला ने उसे सिल पर पीसा तथा उसका कुछ भाग बाछला की ब्राह्मणी, सफाई करनेवाली तथा नौकरानी ने भी खा लिया जिनके **नरसिंह, मजनु** तथा **रतनु** पैदा हुए तथा कुछ चूर्ण घोड़ी ने भी सिल से चाट लिया जिससे घोड़ी ने नीले टट्टू को जन्म दिया।

गूगे का जन्म

सूरज राजा उगम करे,
रिमझिम होया भ्याग।
सद्दी के लयायां अन्हिया दाईया,
जन्म लैणा चुहाना।।

अन्हिया दाईया कियां औणा,
नैणा हुए लोए नहीं।
अन्हिया दाईया जो लोए मिलदी,
पहला परतों पीरें ल्याया।।

रैण भ्याग गूगा जमेया,
सिकर दोपहर नीला।
संझकिया बेला गुगड़ी जन्मी,
तिन्नों सके भैण भाई कहाए।।

उवांसी चौथी बुधवारें,
राणे जन्म लैया।
सद्दी बुलाओ सहरा, रिया जनाना,
गुवाओं मंगलाचार।।

सद्दी बुलाओ कुल दे पुरोहता,

राणे दी रास गनाणी।
केहड़ी घड़िया राणा जमया,
केहड़ी रास गणाणी।।

पूरिया घड़िया राणा जमया,
दाडुए रास गणाणी।
ऐसिया घड़िया जमेया राणा,
दुनिया च नांव कमाणा।

रानी बाछला गुरु गोरखनाथ की सेवा में उपस्थित हुई। रानी बाछला ने 6 माह तक गुरु गोरखनाथ की सेवा की ताकि जो श्राप गुरु गोरखनाथ ने दिया था कि रानी काछला जो धोखे से फल ले गई थी उससे उत्पन्न सन्तानों का काल रानी बाछला की कोख से पैदा होगा। इस श्राप से मुक्त हो सके, परन्तु ऐसा नहीं हुआ। जब रानी बाछला का गर्भ बढ़ता गया तो वह राज महल में वापस आ गई। घर तथा पूरी रियासत में उस पर कई तरह के सन्देह व्यक्त किए गए परन्तु सामने बोलने का कोई भी साहस न जुटा सका। रानी काछला को अत्यधिक ईर्ष्या थी। जब प्रसूती समय पूरा होने पर सन्तान पैदा न हुई तब सबने यह कहना आरम्भ कर दिया कि यह जोगियों की औलाद है तभी समय पर जन्म नहीं हुआ।

काछला ने अपनी ननद **सनीर देई** को बुला कर बाछला के प्रति भड़का दिया ताकि वह सब कुछ जाकर राजा को बता दे। सनीर देई ने राजा को बाछला के प्रति यह कह कर भड़का दिया कि वह जोगियों की सन्तान लेकर आई है यदि आपकी सन्तान होती तो वह अब तक पैदा हो गई होती। राजा ने इन बातों को सुनकर कृपाण निकाली तथा बाछला के कक्ष में चला गया परन्तु सनीर देई ने उन्हें रोक दिया कि ऐसा करने से उन्हें पाप लग जाएगा। राजा ने बाछला को जान से तो नहीं मारा, परन्तु पीट–पीट कर घर से निकाल दिया। उसने बैलों की बग्गी के सारथी को बुलाया और बाछला को जंगल में छोड़ने को कहा तथा काछला ने उसे सहर्ष विदा किया।

वे जंगल में एक मैदान में पहुंचे तथा विश्राम हेतु रुके। वहां पर एक सांप का बिल था। सांप ने जब आहट सुनी, तो वह बिल से बाहर निकल कर बाछला की ओर लपका। परन्तु कुछ जनश्रुतियों में इस प्रकार का विवरण है कि नौ महीने का प्रसूति समय निकट आने पर राजा ने बाछला को खुशी से स्वयं आलीशान बग्गी में मायके भेजा था। परन्तु काछला ने उसकी बग्गी पे एक विषधर नाग डाल दिया था, जब रास्ते में बाछला विश्राम के लिए रुकी,

तो उसने बग्गी का सहारा लिया। वह नाग बाछला को काटने के लिए लपका तो बाछला ने उसे नीचे फेंक दिया, तभी उसने धौले बैल को काट लिया।

बाछला को चिन्ता हुई कि अब मैं मायके कैसे जाऊंगी। प्रभु से प्रार्थना की कि हे प्रभु! मुझे इतना दुखी क्यों किया जा रहा है अब मैं क्या करूं, कैसे मायके जाऊं। रोते–रोते वह बेहोश हो गयी। उसे अर्धचेतना में एक बालक दिखाई दिया, वह कहने लगा–"मां तुम चिन्ता मत करो, उठो और बैल के कान में तीन फूंक मारो वह ठीक हो जाएगा। उसका जहर उतर जाएगा।" उसी समय बाछला ने बालक से पूछा–"तुम कौन हो?" बालक ने कहा–"मैं तुम्हारा पुत्र हूं, आप मायके न जाओ, मैं वहां जन्म लेकर कलंकित होकर **नानकू** कहलाऊंगा। बाछला ने पूछा कि तुम जन्म क्यों नहीं ले रहे हो, लोग मुझ पर तरह–तरह से शक कर रहे हैं। गर्भ से बालक की आवाज आई, मैं तब तक जन्म नहीं लूंगा जब तक पृथ्वी पर सूतक हैं।" यह सुनकर बाछला वापिस आ गई तथा उसने गुरु गोरखनाथ जी के पास जाकर उन्हें पूरा वृत्तान्त सुनाया। गुरु गोरखनाथ ने कहा देवी तुम अपने घर जाओ। इस बालक के जन्म के लिए सूतक रुक जाएगा। बाछला प्रणाम कर वापस आ रही थी तो रास्ते में उसे प्रसव पीड़ा होने लगी। रानी ने सारथी को उस बूढ़ी दाई को बुलाने भेजा जो आंखों से अंधी थी। जब दाई आई तो गुरु गोरखनाथ ने सारा सूतक कील दिया था, उसी क्षण गूगा का जन्म हुआ।

एक अन्य किंवदन्ती के अनुसार, फल खाने के पश्चात् रानी बाछला गर्भवती हुई। जब गर्भ सातवें महीने लगा तो रानी बाछला ने मायके जाने की इच्छा व्यक्त की और धौला तथा नीला नाम के बैलों को बैलगाड़ी में जोड़ कर मायके चल पड़ी। रानी काछला रानी बाछला के गर्भवती होने पर ईर्ष्या करने लगी थी तथा जब काछला को रानी बाछला के मायके जाने का पता चला तो उसने पातालपुरी में जाकर कलिहर नाग को धौले बैल को काटने के लिए मजबूर किया ताकि रास्ते में बैल मर जाएगा। रानी बाछला को रास्ते में कोई और सहारा नहीं मिलेगा और वह भी अपने गर्भ में पल रहे बच्चे के साथ मर जाएगी।

रास्ते में माता बाछला विश्राम करने बैठ गई और बैल हरी घास में चरने छोड़ दिए। कलिहर नाग ने आकर धौले बैल को डंक मारा और वह वहीं मर गया। माता बाछला विलाप करने लगी, लेकिन उसे गर्भ से आवाज सुनाई दी कि वह चिन्ता न करे, एक आला (कच्चा) धागा लेकर उसे बैल के डंक पर लगा दे। माता बाछला ने ऐसा ही किया तथा गर्भ से मन्त्रोच्चारण हुआ

और उसी समय बैल फिर घास चरने के लिए खड़ा हो गया। माता बाछला ने फिर बैलों को गाड़ी में जोड़ा और आगे चलने लगी, किन्तु उसको अपने गर्भ से एक आवाज सुनाई दी कि वह अपने मायके न जाए बल्कि मारू देश वापिस चली जाए क्योंकि वह अपने नाना के घर पैदा होना पसंद नहीं करेगा, जिससे कि उसका नाम नानकु रखा जाए किन्तु वह मारू गढ़ में पैदा होगा और **गुगमल चौहान** अपना नाम रखवाएगा।

माता बाछला मारू देश अपने महलों को वापिस हो गई। दसवां व ग्यारहवां महीना भी पूरा होने को आया परन्तु राणा जन्म को नहीं आया जिससे माता बाछला को चिन्ता होने लगी उसने अपनी कहन बाछला को अपने पास बुलाया। रानी काछला ने द्वेष भाव से रानी बाछला को जहर पीने के लिए दिया मगर जहर का प्रभाव यह हुआ कि गुग्गे का जन्म हो गया।

जब गूगा बड़ा होने लगा तो उसे पलंघूडे (झूले) में झुलाया जाने लगा। एक दिन वह अपने झूले में झूल रहा था कि उसकी मासी काछला को उसे खेलता देख कर बहुत ईर्ष्या हुई तथा वह फिर पाताल लोक गई जहां उसने कलिहर नाग को फिर सोया हुआ जगाया। कलिहर नाग ने लाखों नागों की फौज बनाई तथा गूगा को मारने के लिए मृत्युलोक में आए। जैसे ही नागों ने गूगा पर आक्रमण करना शुरू किया गूगा ने एक–एक नाग को पकड़ कर गन्ने की तरह चूसना शुरू कर दिया तथा एक–एक करके उन्हें मार दिया। इस तरह जब नागराज वासुकी नाग ने अपने कुल का विनाश होते देखा तो उसने गूगा के पास जाकर प्रार्थना की कि वह उसके कुल के लोगों को छोड़ दे और सभी नाग गूगा की आज्ञा में रहेंगे। जहां गूगा का नाम ले लिया जाएगा वहां नाग का कोई बस नहीं चलेगा। गूगा ने सोच–विचार करने के पश्चात् उसकी बात मान ली तथा उन्हें छोड़ दिया।

एक अन्य गाथा के अनुसार जब गूगा की आयु पांच या छह वर्ष की थी तब गूगा जंगल में खेल रहा था तथा उसे सांपों ने घेर लिया। गूगा विपत्ति में पड़ गया। उसने गुरु गोरखनाथ को याद किया। गुरु ने सौ सोने के डंडे उसके हाथ में दिए जिनसे गूगा ने सांपों को मार–मार कर समाप्त करना आरम्भ कर दिया किन्तु बाद में वासुकी नाग ने ब्राह्मण के रूप में गूगा से प्रार्थना की कि वे उसकी कार (सीमा–रेखा) व आज्ञा में रहेंगे तथा उन्हें छोड़ दिया जाए। इस प्रकार गूगा ने सांपों को छोड़ दिया।

गूगे राणा री कुड़माई और ब्याह

कौरू देसा रा इक राजा,
संझी जिसदा नांव।
तिसदे घरें इक कन्या,
सुरिहल जिसदा नांव।।

इयां सैह बधदी जांदी,
जिहयां जे न्हेरे पक्खा दा चंद।
बांकी थी एहड़ी जिहयां सरूए़ रा बूटा,
बारह बरसां दी होई जवान।।

राजा संझी सोचदा,
बारहां बरसां दी कन्या कुंवारी।
इसा जो वर टोलना,
सोचां सोचदा दिन रात।।

सोचां सोचदा तिसा ही घड़िया,
हुक्मा जे करदा राजा।
नाई, पुरोहत, भट, पुआदा,
चारों लागी लैए सदाई।।

चारों लागी बराबर बोले,
क्या साहब असां जो फरमाया।
काहे कारण सद्दे मेरे राजा,
क्या हुक्म, देणा तुसां फरमाई।।

बारह बरसां री कन्या कुंवारी,
लैई के खारिया जाणा।
अन्न, धन, बल, कुला रा बांका,
ऐसा वर देखणा जाई।।

केढे देसां जाणा मेरे राजा,
किस जो टिक्का चढाणा।
तुसां दा हुक्म सिर मत्थे असां दे,
जिस पासे तुसां बोलणा तिस पासे जाणा।।

मारूए देसा सुणदा बाछल बेटा,
गूगा राणा जिसदा नांव।

मारूए देसा तुसां जाणा,
देखी सुणी ने टिक्का चढाणा।।

खींजया मलायें पतन बेड़ा,
चारों पार लंघाए।
इक्की मंजला दूजिया मंजला,
तीजिया पूजे मारूएं जाई।।

राणा था सैह चलया स्नाना,
अगे मिली गए सैह बाटा।
केहड़े देसा ते आए मेरे पंड़ता,
केहड़े देसा जो जाणा।।

देस बंगाल ते आए मेरे सांईं,
मारू देस जो जाणा।
रसते दा नी पता असां जो,
चारों अणजाण कहाए।।

मारू देसा च तुसें पूज्जे पंड़ता,
किस दे घरा जो जाणा।
क्या है तुसां दा खास स्नेहा,
किस जो लैईने जाणा।।

मारूए देसा सुणी दा राजा,
बोलदे तिस जो गूगा मल राणा।
राजा मालपे भेजया टिक्का,
तिसजो टिक्का चढाणा।।

अग्गे–अग्गे राणा चलदा,
पिच्छे–पिच्छे चलदे लागी।
मंजले–मंजले सारे रली मिली पुज्जे महलां आई,
गूगे राणे जो टिक्का दिन्दे सब खुशियां मनांदे।।

मंजले–मंजले लागी चले पूजे कौरूए जाई,
राजा संझी हालां पुच्छे पंड़त सब कुछ देंदा बताई।
राजा सांझी पंड़ता जो बोले आया मारूए जाई,
सुरिहल देई कछुए राजे दित्ती मारूए स्नेहा देया पुजाई।।

मंजले–मंजले पंड़त चलदा,
मारु देसा जो आया।

अरजन, सुरजन, गूगा चौपड़ खेले,
पूजयां पंड़त आई।।

मुसाफर पंड़त आई पुजया,
कैसे करे जवाब।
तेरियां मंगा कौरू देस मंग लैइयां
मंगा ते होई गया तिजो जवाब।।

स्नेहा पुजया राणे गूगे जो,
हाखीं होईयां लाल।
छड़ी चौपड़ धरती मारी,
राणे दा होया हाल बेहाल।।

अपणयां महलां जो राणा आया,
नीला बझया तूड़ तबेले,
चक्की मंजोली राणे ढाली,
सुत्ता दिने ही चादर ताणी।।

माता बाछला गूगे जो पुच्छे,
कैंह तू सुतेया ड़ावां डोल।
किनी तिजो मंदा बोलया,
किनी तिजो दितियां गाली।।

न मिंजो माए मंदा बोलया,
न मिंजो दिती गाली।
देई कुड़माई राजा मालप मुकरेया,
मेरी वर दिती कछुए दे राजे जो।।

गइंया वरा जो तू जाणे दे,
ब्याह कराई दूं तेरे दो चार।
राजे इन्द्रे दी तिजो बेटी ब्याही दूं,
पियाल ते ल्याई दूं शीला नार।।

जे माता ब्याही ने छुटदी,
तां हऊं छड़ी दिन्दा।
ब्याही दी जाओ कुंवारी न जाओ,
क्वारिया दी औंदी मिंजो लाज।।

बिजली कड़के तेरी इन्द्र दी बेटी जो,
शीला जो ड़ंगे काला नाग।

मैं जे ब्याहणी सुरिहल राणी,
नहीं तां देणे प्राण।।

देखी बेबस माता अपणिया जो,
गूगा बोले सुण माए मेरिये।
गुरुआं जो दस्सी दे मिंजो,
मैं जाणा हुण गुरुआं दे पास।।

बेटा गुरु है तेरे बड़े दूर,
मुशकल पुजणा कजली बणा च।
हऊं क्या जाणु क्या पछयाण,
केढि नुआर माए मेरे गुरु री।।

कैलेआं केसें झड़ोला जोगी,
कांचन जेही काया तिसदी।
हुक्मा करदा चरूएदारा जो,
नीले घोड़े जो जीन काठी चढ़ायां।।

नीला संगारयां इयां जियां माली रा बाग,
चरूएदारे घोड़ा गुगे दे हाजर कराया।
मार फराकी नीले होया स्वार,
कर्ते जो सीस नुआया चलयां–चलयां मेरे
नीलेया जाणा गुरुआं दे पास।।

घणेयां जंगला च गूगा पहुंचया,
जंगला च रैना पईया।
कालेयां जंगलां च गूगा राणा ठहरया,
कल्ले रा दिल घबराया।।

चौहं सुबें नीला उड़ेया,
पुजाया गुरुआं दे ड़ेरे।
हत्थां जोड़ी फेरियां लैंदा,
चरणे सीस नवाया।।

चेलेया कैहं तू मेरे ड़ेरे आया,
क्या औखी भारी तिजो आई।
क्या किसी दा भेजेया आया,
तूं कैहं गुरुआ दे ड़ेरे आया।।

भाईयां मसेरां मिंजो टोका मारेया,
मिहणे दा मारेया आया।
केहड़ा टोका तिजो भाईयां मारया,
सच देआं सुणाई।।

मुड़ी कुड़माई सौंजी मुकरी गया,
वर दिती कछुआं दे देस।
कोई नी चल्ली मेरी पेस,
तां हऊं तुसां दे ड़ेरे आया।।

न तू रोयां न तू घबरायां,
भला करहगा भगवान।
काहनी चेला गुरु पियारा,
नेड़े लैई बुलाया।।

चरणे सीस नवादां गुरु जी,
अर्ज सुणो तुसें मेरीं
किस कारण सदाया मेरे गुरुआ
क्या सवारूं हऊं तेरे काज।।

मैं तिजो बोल्या काहनी चेलया,
पियालपुरी जो जाणा।
जाई के उत्थी ते वासुकी नाग,
मैं बाल ल्यौणा।।

पियालपुरी नागां दे वासे,
तिना मिंजो लैणा खाई।
मेरा घलया डरदा मत
पियालपुरिया चली जायां।।

लैई लै तू मेरियां फौड़िया कने सेलिया,
तेरा बाल बींगा नी करी सकदा नाग।
पैरां च पड़ए काहनिए पाई लै,
गुरुआं जो कित्ता प्रणाम।।

तिन करूए झोली च पाई लै,
चलणे जो होई गया तैयार।
मंजले–मंजले काहनी चलया,
पियालपुरी उतरी आया।।

वासुकी नाग दे बेहड़े पुजया,
अन्दर नी जाणे दे कोई।
सोचां सोचया पेस नी चल्ली,
काहनिए अलख दित्ती जगाई।।

अलख सुणी ने पदमा नारें,
महलें कोई जोगी आया।
भरी थाल गज मोतियां दा,
जोगी जो भिछया लाई।।

क्या मैं करने तेरे माणक मोती,
हऊं तां वणी रा साधु निर्वाण।
दूर देसां ते हऊं चली आया,
मलाई दे मिंजो वासुकी नाग।।

सोहणी सूरत मोहणी मूरत,
तिजो देखी मिंजो दर्द आए।
बारह बरसां रा सुतेया वासुकी,
जगाया ता तू लैणां खाई।।

दौड़ी–दौड़ी पदमा जांदी,
पूजी वासुकी नागा गे जाई।
गंदल जिक्की, पूंछ मरोड़ी,
सुतेया वासुकी नाग जगाया।।

उठया तू मेरेया सुतेया पतियां,
महलां तेरे इक्क जोगी आया।
महलां तेरे इक्क जोगी आया,
बोले सैह मिंजो मंदड़े बोल।।

बारह बरसां दा सुतेया नाग जगाया,
भरी कटोरा जहरा दा पीता।
रोएं होए वासुकी नाग,
लैहरियां लैंदा बाहरा जो आया।।

जोगी ने नाग जे देखया औंदा,
गोरख नाम ध्याया।
पहला फुंकार नाग ने छड़या,
जोगी ने पहला करूआ अड़ाया।।

दुज्जा फुंकारा नागें छड़या,
काहनी दुज्जा करूआ अड़ाया,
तिज्जा फुंकारा नागें छड़या।
काहनी तिज्जा करूआ अड़ाया।
करूआ जलदा जाए जोगी दा कुछ न बिगड़े,
नाग सिर नवाए, नाग बोले केहड़ा तू हुन्दा देवता।
ब्रह्म विष्णु महेश
काहनी बोलया न ब्रह्मा न विष्णु न महेश,
मैं हुंदा काहनी चेला गुरु गोरखनाथ दा चेला।।
काहे कारण तू आया जोगी,
मिंजो कम दे तू फरमाई।
क्या तेरी हऊं करूं सेवा,
क्या तेरिया झोलिया देऊं पाई।।
गुरु गोरख नाथें मिंजो भेजया,
तिजो सदणे आया।
इतना जवाब नाग ने सुणया,
दिल विच करदा विचार।।
अग्गे–अग्गे काहनी चेला,
पिच्छे–पिच्छे वासुकी नाग।
मंजले–मंजले दोनों चलदे,
पूजे गुरु दे ड़ेरे जाई।।
हत्थां जोड़ी अरजां बासुकी करदा,
चरना सीस नवाया।
किस कारण सदेया मेरे गुरुआ,
क्या तेरे हऊं सवारूं काज।।
कौरू देसा जो जाणा वासुकी नागा,
मालप उत्थी दा इक राजा।
दित्ती कुड़माई मुकरी गया सह,
कुड़माई दुबारा लाई के औणा।।

गूगे का विवाह

कौरु देश में एक संझी नाम का राजा था। उसकी पुत्री का नाम

सुरहिल था। जब लड़की की उम्र बारह वर्ष की हुई तो राजा को उसके विवाह की चिन्ता होने लगी। उसने पण्डितों को बुलाया कि वे उसके लिए वर ढूंढें तथा साथ ही यह भी बताया कि वे मारू देश में जाएं, जहां चौहान वंश का राणा गूगा बताया जाता है, उसे देखें यदि सब कुछ ठीक–ठाक हो तो उसे टीका दे आवें। पण्डित लोग मारू देश में गये तथा गूगा को विवाह योग्य पाकर उसे टीका दे आए। जब पण्डित मारू देश में गये हुए थे तो उसी दौरान **कछु** नामक देश के राजा की ओर से सुरिहल के लिए विवाह का प्रस्ताव आया। राजा ने अपने मन्त्रियों से परामर्श करने के पश्चात् यह निर्णय लिया कि कछु देश का राजा एक बड़ा राजा है और मालप राजा के समान का है। अतः उसी से सम्बन्ध तय किया जाए। जबकि मारू देश एक उजाड़ देश है तथा वहां का राणा एक छोटा–सा राजा है।

जब पण्डित टीका देकर वापिस कौरु देश पहुंचे तो राजा मालप ने यह सन्देश मारू देश भेज दिया कि वे गूगा को राजा मालप की लड़की नहीं देगा। जब यह सन्देश मारू देश पहुंचा, तब गूगा अपने मसेरे भाईयों (अरजन व सुरजन) के साथ पासा खेल रहा था। जब उसके मसेरे भाईयों को यह पता चला तो उन्होंने गूगा को यह उलाहना दिया कि उसका जीवन व्यर्थ है तथा उसके लिए यह बात बड़ी शर्मनाक है। यदि विवाहिता पत्नी चली जाती तो कोई शर्म की बात नहीं थी परन्तु यह तो मंगेतर ही चली गई। अतः यह तो मरने के समान बात है और यदि अब उससे विवाह न कर पाए तो उसकी शूरवीरता व राजपूती के लिए लानत है।

गूगा ने जब यह बात सुनी तो वह आग बबूला हो गया और अपने महल में आकर एक चारपाई पर सो गया। जब माता बाछला ने उसकी चिन्ता का कारण पूछा तो उसने बताया कि या तो वह सुरिहल से शादी करेगा नहीं तो मर जाएगा। गूगा ने अपनी माता से आग्रह किया कि वे उसे गुरु गोरखनाथ का स्थान बता दे! इस कार्य में वह गुरु गोरखनाथ की सहायता लेगा। माता बाछला गूगा को बातों–बातों में टालती रही कि वह उसकी देव कन्याओं से शादी करवा देगी तथा गुरु गोरखनाथ बहुत दूर समुद्रों के पार रहते हैं। किन्तु गूगा नहीं माना।

अन्त में माता बाछला को गुरु गोरखनाथ का स्थान बताना पड़ गया। गूगा ने अपने नीले घोड़े की काठी चढ़ाई, एड़ी लगाई और गुरु गोरखनाथ को ढूंढने चल पड़ा। गूगा राजा अकेला जंगलों से होता हुआ चला। जंगलों में जंगली जानवरों ने उनकी रक्षा व पूजा की। नीले घोड़े ने उड़ कर समुद्रों

क़ो पार किया और गूगा गुरु गोरखनाथ के पास पहुंच गया। गूगा ने गुरु गोरखनाथ जी को अपनी सारी कहानी सुना दी। गुरु गोरखनाथ ने भी गूगा को माता बाछला की तरह टालना चाहा परन्तु गूगा ने उनकी बात को न मानते हुए यह कह दिया कि यदि आप मेरी शादी सुरिहल से नहीं करवाएंगे तो वह गुरु के सामने अपने प्राण त्याग देगा।

इतनी बात सुन कर गुरु गोरखनाथ ने अपने **काहनी** चेले को बुलाया और उसे कहा कि वह पाताल पुरी जाए और वहां से कलिहर नाग को बुला कर ले आए। काहनी चेले ने अपनी असमर्थता प्रकट की किन्तु गुरु गोरखनाथ द्वारा विश्वास दिए जाने पर वह तीन कोरे घड़े लेकर पातालपुरी के लिए चल पड़ा। जब काहनी चेला पातालपुरी पहुंचा उसने कलिहर नाग के द्वार पर अलख पुकार दी। कलिहर नाग उस समय सोया हुआ था तथा उसकी पदमा नार ने अपनी नौकरानी के पास भिक्षा भेजी परन्तु काहनी चेले ने भिक्षा लेने से मना कर दिया तथा यह सन्देश नौकरानी के पास दिया कि वह सिर्फ पदमा नार के हाथ से ही भिक्षा लेगा। पदमा नार को इस पर बहुत क्रोध आया उसने यह सारी बात कलिहर नाग को बता दी।

कलिहर नाग खूब जहर पीकर फुंकार मारता हुआ द्वार पर आया। उसने आते ही काहनी चेले को डंक मारा परन्तु काहनी चेले ने एक कोरा घड़ा आगे कर दिया जो जहर से जल गया। उसी तरह दूसरा घड़ा भी जल गया, किन्तु तीसरा घड़ा वैसे का वैसा ही रहा और कलिहर नाग का विष खत्म हो गया। चेले के इस चमत्कार से कलिहर नाग चकित हो गया और वह चेले की शरण में पड़ गया कि वह उसे क्षमा कर दे तथा आज्ञा दे कि वह किस कार्य से यहां आया है।

जब काहनी चेले ने बताया कि वह गुरु गोरखनाथ का चेला है और वह गुरु की आज्ञा से उसे बुलाने आया है तो कलिहर नाग अपने बेटे तक्षक को साथ लेकर गुरु गोरखनाथ के पास काहनी चेले के साथ पहुंचा। गुरु के डेरे में जब उसने गूगा को वहां बैठे हुए देखा तो वह कुछ दूरी पर ही रुक गया तथा यह कहा कि इससे आगे नहीं जा सकता क्योंकि उसका शत्रु वहां बैठा है। परन्तु गुरु गोरखनाथ ने उसे विश्वास दिला कर अपने पास बुलाया तथा आज्ञा दी कि वह कोरु देश में जाए और गूगा राणा की सुरिहल से टूटी हुई सगाई को पक्का करके आए। कलिहर नाग ने यह काम अपने बेटे को सौंप दिया तथा स्वयं पाताल लोक को वापिस चला गया।

तक्षक का कौरु देश जाना

तक्षक जो हुक्म जे मिलदा,
चलणे जो होई जांदा तैयार।
किरत कमाया, कैल कमाया,
बणी गया काला काग।।

इक उडारी मारी कागे,
घुमया गासों गास।
मंजले–मंजले नाग जे चलया,
कौरु देसा जो आया।।

सारे कौरुए सैलां कितियां,
सुरिहल देयां महलां जो आया।
सुरिहल बैठी चबारे,
कागें घेरा पाया।।

सठ सहेलियां सुरिहल दियां,
पीहंगा दे झूटणे आईयां।
सुरिहल उठ बोली बहणों इस कागा जो
पकड़ी ल्याओ पर पंछी नजरी ना आए।।

अंसे तिजो बोलया बैहणे,
पंछी नजरी न आए।
तुसे सारियां हटो पिच्छे,
बहणी मेरियो मैं अप्पू कागा जो पकड़ां।।

सुरिहल देई कागा जो पकड़े,
काग नेड़े–नेड़े आए।
कागे जो पकड़े सुरिहल देई,
काग पिच्छे–पिच्छे हटी जाए।।

मैं तुसां जो बोल्या भैणो मेरियो,
कागे ते लगे मिंजो डर।
सारी काया कागे दी कहिए,
पर नेतर हुंदे काले नाग दे।।

रेशम डोरी लैई के सुरिहल देई,
बागां जो झूटणे आई।

सरले सिमले पीघां पईयां,
पीघां दे झूटणे जो आई।।

तक्षक नागें फिरी किरत कमाया,
ब्राह्मण भेस बणाया।
मंजले–मंजले पण्डत चलदा,
बिच बागां दे आया।।

मैं तुसां जो बोलां कुड़ियो,
पाणियें दा घुट पिलायो।
हऊं, सत्त दिना दा प्यासा हुदां,
ठण्डा जेहा पाणी पिलायो।।

सुरिहल पण्डता जो पाणी पिलांदी,
पण्डत लैंदा पछयाणी।
सुरिहल देई पीघां जे बैठदी,
पीघां झूटा नी आंदा।।

सठ सहेलियां सौगी सुरिहल देई,
तलावा न न्हौणे जांदियां।
किरत कमाया तक्षक नागे,
छोटा जेहा नागा दा रूप बणाया।।

नागा दा भेस बणाया,
तलाबा दे विच छुपी जांदा।
सुरिहल देई न्हौणे लगी,
तलाबा च पाई तारी।।

तलाबा दे विच कौल फुल जे सुझदा,
सुरिहल सखियां भेजी ने फुल मंगाए।
सहेलियां नेड़े–नेड़े जांदियां,
फुल दूर–दूर नठदा जांदा।।

सहेलियां फुल तोड़ नी सकियां,
सुरिहल अप्पू फुल तोड़ने जांदी।
सुरिहल फुल जे तोड़े,
नाग पैरा च ड़ंग लाए।।

सुरिहल देई कनारे आई,
बोली मेरे पैरा च कण्ड़ा चुभया।

कण्ड़ा समझी सुरिहल गल्लां करें,
विष चढ़ने नी आए।।
सुरिहल हंसदी खेलदी देखी,
तक्षक दिला च करदा वचार।
बिणा नाग देखे विष न चढ़े,
सुरिहल हसी–हसी ड़ंग भुलाए।।
किरत कमाया तक्षक नागें,
भयानक नाग भेस बणाया।
सुरिहल देई नाग जे देखे,
मना च बैहम आई गया।।
चढ़दा–चढ़दा बिस चढ़ेया,
निकली जांदी तिसा दी जान।
जीह्ब बी फटी ने होई गई नीली,
निकलने लगे तिसा दे प्राण।।
राजे महले खबरे जे होई,
सुरिहल जो खाई गया काला नाग।
दौड़ी ने राजा संझी आया,
पुजया सुरिहल गे आई।।
चक्की बेटी कालजे ने लाई,
नैणा ते निकले छम–छम नीर।
इक ही बेटी थी मेरी,
तिसा जो खाई गया काला नाग।।
सारे सहरां दे चेले कठे किते,
विष न घटदा जाए।
सारा सहर वरलापां करदा,
सुरिहल देई जलाणे चलाई।।
वर्ण तटाया तक्षक नागे,
ब्राह्मण रूप बणाया।
चिट्टी धोती मत्थे टिक्का
बाटों बाट सैह चली आया।।
सहर बजारियां जो पण्डत पुच्छे,
कुण मरया कैंह बजोग मनाया।

सुरिहल देई नागें खादी,
तिसदा बजोग मनाया।।

तक्षक ने उसी समय कौवा बन कर उड़ान भरी तथा सुरिहल के महल के चौबारे पर जाकर बैठ गया। सुरिहल अपनी सहेलियों के साथ उसे पकड़ने लगी, किन्तु उसके सांप जैसे नेत्र देख कर डर गई तथा बाग में अपनी सखियों के साथ झूला झूलने चली गई। बाद में तक्षक ब्राह्मण का रूप धारण करके पानी पीने का बहाना बना कर उसके पास गया। सुरिहल की सहेलियों ने पानी पिलाना चाहा किन्तु उसने यह कहा कि वह केवल सुरिहल के हाथों से ही पानी पीएगा और इसी बहाने उसने राजकुमारी सुरिहल को अच्छी तरह पहचान लिया।

झूला झूलने के पश्चात् सब सहेलियां तालाब में नहाने चली गई। तक्षक भी छोटा सा सांप बन कर तालाब में घूमने लगा। तालाब में राजकुमारी ने एक कमल का फूल देखा तथा अपनी सखियों को कहा कि वह उस फूल को पकड़ कर मेरे पास लाएं। परन्तु जब सखियां उसके नजदीक जाएं वह फूल दूर--दूर जाता जाए। अन्त में राजकुमारी स्वयं ही उस फूल को पकड़ने गई। जैसे ही राजकुमारी ने उस फूल को हाथ मारा तक्षक जो कि एक सांप के रूप में तालाब में घूम रहा था उसने राजकुमारी के पैर में डंक मार दिया। तक्षक ने सोचा कि यदि राजकुमारी ने उसके डंक को कांटा ही समझ रखा तो उसे विष नहीं चढ़ेगा। अतः वह एक भयानक सांप बन कर उसके सामने घूमने लगा। जिसको देखा कर राजकुमारी को ध्यान आया कि उसे किसी सांप ने ही काटा है। उसके शरीर में विष चढ़ गया।

सुरिहल का जीवित हो जाना

पकड़ी के संदूक भुईयां तुराया,
राजा हऊं बी दिंदा बिस ड़तारी।
छोटे हुन्दे कुछ कमाई पढ़ी थी,
कुछ याद है कुछ भुली गई है।।
इक डाली बाही ब्राह्मणे पर विष उतारे न आए,
दूजी डाली बाही ब्राह्मणे पर फेरी वी विष न उतरे।
ब्राह्मण पुछदा राजे जो क्या ए कुड़ी ब्याही दी,
क्या ते ए मंग बणाई किसी दी सारी गल्ल दे सुणाई।।

राजा संझी मिणतां करदा,
पण्डत मेरया सुरिहल देयां बचाई।
पण्डत खोट देखि ने खेल देन्दा रचाई,
जे राजा सुरिहल ब्याए मारूए
तां देवां इसा जो बचाई।।

राजा संझी कागद मंगाए मुन्शी बुलाए,
कागद देन्दा लगाई अठें नौवें देणें लग्न राणे जी।
दसवें बराती दी बिदाई, लिखया कागद जो दिंदा संभाली,
पण्डत बोले हुण कोरुए ते मंगाओं डाली।।

छड़ी बरदारा डाली जे ल्यादें,
पण्डत विष दिन्दा उतारी।
सुरिहल देई सुरजीत हुन्दी,
खुशियां मनाई शहर बाजार।।

तक्षक नागें फिरी अपणा भेष बणाया,
बणी गया उड़णू नाग।
इक उड़ारी मारी नागे,
पुजया गोरख डेरे आई।।

लैई कागद तक्षक नागें,
गुरु गोरख दे हत्था पकड़ाया।
लैई परवाना गुरु गोरख नाथें,
गूगे दे हथ पकड़ाया।।

गूगा राणा कागद वाचे,
नैण भरी–भरी रोए।
गोरख नाथ क्या उठ बोले,
बेटा तू क्यों नैण भरी रोए।।

अठवें नौवें लग्न लगाणे,
दसवें विदा करनी बारात।
छेयां महीनया दा गुरु मेरे रस्ता,
सुरिहल ब्याही न जाए।।

ताड़ी लाई ने गुरु गोरख बैठे,
बैठे आसण लाई।
अन्तर्ध्यान लगाया गोरख ने,

पहुंच गये कैलास।।
ढाई घड़ी दी निंद च सुते शिवजी,
उठ गये अज दी रात।
शिवजी सुते जे उठे,
माता गौरा पुच्छे उठणे दी बात।।
उत्तम सुपने दी बात,
कईयां बरसां दे बिछुड़े गोरख।
आए मिलण अज दी रात,
पार्वती पुछदी कजो औंदे गोरख नाथ।।
शिवजी बोलदे जो चीजां गोरख ने मगणियां,
सैह नी देणिया मांह।
शिवजी ने भैंसा रूप बणाया,
बड़या भैसां कन्ने कदरां च जाई।।
गोरख पूजे कैलास पर्वत,
भोले नाथ नजर न आए।
पार्वती माता जो पुच्छे गोरख,
शिवजी किती जो गया है।।
माता पार्वती भोली जे हुंदी,
सब कुछ देन्दी बताई।
कन्दरां च पंच म्हैसियां कने छेवां भैंसा,
सब कुछ दिन्दी बताई।।
माता दियां मिणतां करदा,
शिवजी जो मिलणे दा भेद लैदां जाणी।
भैरों नाथ कन्दरा जो भेजया,
अपू द्वार खड़या जंघा ताणी।।
भैरों नाथ भैसां जो डंडे बरसाए,
पंजं भैंसा ता लंगी गईयां
छेवां अड़ी गया,
जंघा थले आई।।
छेवां भैंसा शिवजी जे हुन्दा,
फसया—फसया पछताए।
गोरख जंघा निचे न टपे,

अपणा असली रूप बणांदा।।
गोरख फेरियां लैदां प्रक्रमा लैंदा,
चरणे सीस नवाए।
हंसी–हंसी माफिया मंगे,
डंडे दिया मारां तांई पछतांदा।।
गुरु गोरख बोले सुणी लै अरज मन लाई,
गूगे राणी जो ब्याहणे जाणा लगन नेड़े आए।
अमरत जल, घुंधुनाद भस्म कड़ा,
पौणखटोलु लैणे आए।।
चारों चीजां लैई के गोरख डेरे आए,
जब गुरु डैरे पुजे गूगे करदे जवाब।
चली जा घरें अपणे ब्याह दा कर इन्तजाम,
मार फराकी नीले स्वार होयां मुड़ी के कौरू जो आया।
चलेयां–चलेयां तू मेरया नीलेया,
मारूए देसा जो जाणा।
चौंह सूबेयां नीला उड़या,
पुजया मारूए देसा आई।।

जैसे ही राजकुमारी को सांप के काटने का समाचार राजा के पास पहुंचा राजा ने तुरन्त उसे महल में लाकर सांप के डंक का उपचार करवाना शुरू किया परन्तु राजकुमारी का कोई इलाज न हो सका। तक्षक ने ब्राह्मण का रूप धारण किया और वह भी राजा के महल में पहुंच गया। उसने तन्त्र विद्या से राजा मालप को बताया कि वह तभी बच सकती है यदि उसका विवाह मारू देश के गूगा राणा के साथ हो जाए। राजा मालप ने उसे उस दिन से आठवीं व नवमीं तिथि के लग्न गूगा राणा के नाम लिख कर दे दिए।

ब्राह्मण के रूप में तक्षक ने चिट्ठी को अपने पास रखा और कोरू देश से बाहर से डाली मंगवा कर विष को झाड़ दिया तथा राजकुमारी ठीक हो गई। अब तक्षक उड़ने वाला सांप बन कर गुरु गोरखनाथ के पास पहुंचा तथा पत्र, जो राजा मालप ने लिखा था गुरु गोरखनाथ को दे दिया।

गुरु गोरखनाथ ने पत्र पढ़ा तथा पत्र गूगा के हाथ में दे दिया। जब गूगा ने पत्र पढ़ा तो वह रोने लग पड़ा। जब गुरु गोरखनाथ ने रोने का कारण पूछा तो उसने बताया कि यह शादी होना संभव नहीं है क्योंकि शादी का

लग्न आठ नौ दिन के बाद का है जबकि मारू देश पहुंचने के लिए छः महीने का समय लगेगा।

गुरु गोरखनाथ ने कहा कि वह इसकी चिन्ता न करे। गुरु गोरखनाथ ने ध्यान लगाया और कैलाश पर्वत की ओर चल पड़े। शिवजी उस समय सो रहे थे लेकिन दिव्य दृष्टि से उन्होंने गुरु गोरखनाथ को कैलाश पर्वत की ओर आते देख कर पार्वती को कहा कि कई दिनों से बिछुड़े गोरखनाथ आज उन्हें मिलने आ रहे हैं। किन्तु आज वे गोरखनाथ को वे चीजें नहीं देंगे, जो वे मांगने आ रहे हैं। इसलिए पार्वती से उन्होंने कहा कि वे किसी कन्दरा में पांच भैंसों के साथ छठा भैंसा बन कर छुप जाएंगे मगर गोरखनाथ को उसके बारे में कुछ नहीं बताना। वे भैंसा बन कर छुप गये।

गोरखनाथ जब कैलाश पर्वत पहुंचे तो उन्होंने पार्वती से शिवजी के बारे में पूछताछ की। पार्वती पहले तो उनके बारे में बताने से टाल मटोल करती रही परन्तु जब गुरु गोरखनाथ न माने तो पार्वती ने शिवजी के बारे में सब कुछ बता दिया।

गोरखनाथ ने विचार–विमर्श करने के उपरान्त भैरों को साथ लिया और उस कन्दरा की तरफ चले गये जहां शिवजी भगवान भैंसे का रूप धारण करके छुपे हुये थे। गोरखनाथ स्वयं अपनी टांगें कन्दरा के द्वार पर तान कर खड़े हो गये तथा भैरों नाथ को डंडा मारकर भैंसों को बाहर निकालने के लिए कहा क्योंकि उन्हें पता था कि शिवजी को छोड़कर शेष सभी भैंसें उनकी टांगों के नीचे से निकल जाएंगी। भैरों ने वैसा ही किया। पांच भैंसें तो निकल गई लेकिन छठा भैंसा नहीं निकला। जब भैरों द्वारा खूब डंडे लगाए गये, तो शिवजी अपने असली रूप में आ गये। गोरखनाथ ने मार डलवाने के लिए उनसे माफी मांगी तथा गूगे की शादी के लिए उनसे भस्म कड़ा, उड़न खटोला, नाद तथा अमृत जल मांगे। शिवजी ने नये सब चीजें उन्हें दे दी।

गोरखनाथ वापिस गये और गूगा को कहा कि वे मारू देश में जाकर बारात की तैयारी करे। गूगा ने गोरखनाथ से पूछा कि वे अर्न्तध्यान होकर कहां चले गये थे तब गोरखनाथ ने सारी बात गूगा को बता दी कि वे छः महीनों का रास्ता घंटों में तय करने के लिए शिवजी भगवान से उड़न खटोला ले आए हैं। यदि कहीं किसी से लड़ाई हो जाए तो उसके लिए भस्म कड़ा तथा यदि कोई अपना मनुष्य मर जाए तो उसके लिए अमृत जल तथा बारात में देवताओं को बुलाने के लिए नाद भी ले आया हूं। यह सुनकर गूगा अति प्रसन्न हुआ और मारू देश को चला गया। शादी की तैयारी हुई :–

गुग्गा की शादी–

पहला तंबोल गुरु गोरख लांदे,
मत्थे भबूत लगाई।
दूजा तंबोल श्री खण्ड ब्राह्मण लगांदा,
तिलक जनेऊ पाई।
तीजा तंबोल मासी काछला लांदी,
माख मण्डूक च आई।
चौथा तंबोल भैण लांदी
घोड़े बाग फड़ाई
पंजवा तंबोल माता बाछला लांदी
मुंहा दूध लाई,
सब साऊ सलाह करदे,
कैलू जानियां नैणा नाई,
भैण गुगड़ी अरजां करदी,
सब साऊ जानियां चल्ले,
मारू देश रिया न कोई,
मैं कल्लिया नी रैह्णा भाई,
जिन्हां गल्लां भैण तू गलांदी
मैं पहले ही जांणदा,
गोरे–गोरे सब जानियां नैणे
काला नी नैणा कोई।।

गोरखनाथ, काहनी चेला, नीले घोड़े सहित उड़न–खटोलू पर सवार होकर कौरू देश के लिए चल पड़े। वहां उतरने के उपरान्त गोरखनाथ ने काहनी चेले को अपने ठहरने के लिए स्थान ढूंढने के लिए कहा। काहनी चेले ने बहुत स्थान देखे मगर गोरखनाथ ने अपने ठहरने के लिए शमशान घाट को ही चुना तथा अपने चेले को समझा गये कि उचित समय आने पर उन्हें बुला लिया जाए। उसके पश्चात् वे दोनों राजा मालप के बाग जिसका नाम **"नलखे"** था, को चल पड़े। जब वे बाग के द्वार पर पहुंचे तो वहां उन्होंने रूपां नामक मालण को बाग का द्वार खोलने के लिए कहा लेकिन मालण ने द्वार नहीं खोला।

काहनी चेले ने मालण को बताया कि वे गूगा की बारात के साथ आए हैं परन्तु फिर भी मालण ने द्वार नहीं खोला। अन्त में काहनी चेले ने बाग के दरवाजे को तोड़ कर आकाश में उड़ा दिया और बाग में प्रवेश पा लिया। मालण ने जाकर राजा से शिकायत कर दी कि दो साधु बाग में जबरदस्ती प्रवेश कर गये हैं तथा उन्होंने बाग का दरवाजा भी तोड़ दिया है। राजा ने **गमा ब्राह्मण** को बुला कर साधुओं को बाग से निकालने के लिए भेजा। ब्राह्मण ने नौ लाख बच्चे एकत्र कर उनकी झोलियों में पत्थर भर कर गुरु गोरखनाथ व काहनी चेले पर पत्थर बरसाना आरम्भ कर दिया।

काहनी चेले ने नौ लाख बच्चे मृगछाला में लपेट दिए। सारे शहर में शोर मच गया कि किसी साधु ने सभी बच्चे बन्द कर दिए हैं। शहर की सारी स्त्रियां राजा मालप के पास जाकर उनसे अपने बच्चे मांगने लगी। राजा मालप काहनी चेले के पास गये तथा उनसे विनती की कि वे सब बच्चों को छोड़ दें तथा अपने नौकरों द्वारा किए गये व्यवहार के प्रति भी उनसे माफी मांगी तथा दिए गये अपने वचन के अनुसार सुरिहल के लग्न देने की भी प्रतिज्ञा की। काहनी चेले ने बच्चे छोड़ दिए तथा गोरखनाथ को भी बुला लिया।

अब राजकुमारी सुरिहल की माता जिसका नाम गाथा के अनुसार **भोंपली** था, भी योगियों के डेरे में आ गई तथा उन्हें कहने लगी कि हमने बारात के लिए भारी प्रबन्ध किया है लेकिन आप केवल तीन आदमी आए अर्थात् बाकी बारात कहां है उसने अपने पति को भी इसके लिए कोसा कि कैसे लोगों के साथ लड़की का सम्बन्ध जोड़ दिया। समयानुसार बारात लग्न के लिए चली। गुरु गोरखनाथ ने नाद को बजाकर शिवजी सहित सभी देवताओं को बुला लिया।

जब बारात को भोजन हेतु बुलाया गया तथा गुरु गोरखनाथ ने उन्हें यह कहा कि बारात तो कुछ ठहर कर भोजन करेगी लेकिन उनके साथ दो बच्चे आए हैं उन्हें भूख लगी है वे पहले खाना खा लें। दोनों बच्चों को खाना खाने के लिए भेज दिया, वे दोनों बच्चे शुक्र तथा शनि थे। उन दोनों ने जितना खाना पका हुआ था, सब खा लिया परन्तु सन्तुष्ट नहीं हुए। राजा मालप संकट में फंस गये वे नंगे पांव रानी भोंपली को कोसते हुए गुरु गोरखनाथ के पास पहुंचे तथा उनसे माफी मांगी। गुरु के प्रसाद से राजा के भण्डार फिर भर गये तथा वैसा ही भोजन पुनः तैयार हो गया। बारात को भोजन इत्यादि करवाया गया परन्तु जब बारात भोजन कर वापस अपने डेरे को गई, तो लग्न इत्यादि का कार्य शुरू हुआ। कौरू देश में जादू टोने का

बहुत प्रचलन था अतः वहां की स्त्रियों ने गूगा को बाली बना कर अपने कान में डाल लिया तथा गुरु गोरखनाथ जी के प्रयत्नों से ही उन्हें फिर वास्तविक रूप में लाया गया। गूगा की शादी हो गई और वह रानी सुरिहल को लेकर अपने महलों को चल पड़ा।

गूगा का अरजन व सुरजन से युद्ध

अरजन तथा सुरजन गूगा के मौसेरे भाई थे। गूगा का विवाह सुरिहल से होना पसन्द नहीं करते थे। एक गाथा के अनुसार गूगा विवाह के उपरान्त बारह वर्ष तक अपने ससुराल में ही रहा तथा अरजन व सुरजन ने राज्य पर अपना अधिकार कर लिया। जब गूगा वापिस अपने देश आया तो उसने अपना राज्य पुनः प्राप्त करना चाहा परन्तु अरजन व सुरजन ने राज्य वापस देने से इन्कार कर दिया। माता बाछला को इस बात की खबर नहीं थी कि गूगा अपने ससुराल से वापस आकर सीधा राजदरबार में गया है। राज्य प्राप्त करने के लिए गूगा का अरजन और सुरजन से युद्ध होता है।

अतः जब अरजन तथा सुरजन युद्ध में परास्त हो जाते हैं तो वे एक ब्राह्मण के उकसाने पर दिल्ली दरबार में दिल्ली नरेश पृथ्वीराज चौहान के पास न्याय मांगने जाते हैं। पृथ्वीराज चौहान ने अपने एक अधिकारी को झगड़े को मिटाने के लिए तथा राज्य का विभाजन करवाने के उद्देश्य से गूगा के पास भेजा। गूगा ने उस अधिकारी की भी खूब पिटाई की और उसका मुंह काला करके दिल्ली भेज दिया। दिल्ली जाकर उसने राजा को शिकायत की और उसके कहने पर स्वयं पृथ्वीराज चौहान मारू देश पहुंचा तथा अपने पुरोहित को भेज कर गूगा को बुलवाया। उस पुरोहित ने सलाह दी कि गौओं को घेर कर रख लिया जाए।

गौओं को न आया देख कर गूगा ने पास के बाईस गांव के सैनिकों तथा गुरु गोरखनाथ की अदृश्य सेना सहित राजा पर आक्रमण कर दिया। राजा के सामने जाकर गूगा ने अपना भाला जमीन पर गाड़ दिया तथा कहा कि तुम्हारा कोई भी वीर योद्धा इसे जमीन में से खींच निकाले तो मैं अपना सब कुछ त्याग दूंगा। किसी ने भी इस चुनौती को स्वीकार नहीं किया और दोनों तरफ से फिर युद्ध हुआ। गूगा ने अपने दोनों सौतेले भाईयों अरजन व सुरजन के सिर काट कर अपने घोड़े की काठी में दोनों ओर बांध लिए। गूगा ने राजा की सेना को बुरी तरह से परास्त किया तथा राजा की सेना हिसार के समीप किसी दुर्ग में छुप गई। गूगा ने राजा की सेना का पीछा किया तथा

दुर्ग में जाकर पूरी सेना को मार–काट दिया। अन्त में राजा ने अपनी पराजय स्वीकार कर ली तथा गूगा से अपने प्राणों की भीख मांगी।

जब गूगा घर लौटा तो माता बाछला ने पूछा कि किस पक्ष की विजय हुई है। प्यास के मारे गूगा का गला सूख रहा था उत्तर स्वरूप उसने अपने दोनों सौतेले भाईयों अरजन तथा सुरजन के सिर माता बाछला के चरणों में चढ़ा दिए। जब माता ने अरजन तथा सुरजन के सिर देखे तो उन्होंने गूगा को आदेश दिया कि तुम यहां से चले जाओ। अतः फिर कभी मुझे अपनी शक्ल न दिखाना। गूगा यह सुन कर बहुत दुःखी हुआ और एक चम्पक वृक्ष के नीचे खड़ा होकर धरती माता से प्रार्थना करने लगा कि हे धरती मां! मुझे थोड़ी सी जगह देकर अपने में समा लो। धरती माता ने गूगा से कहा कि या तो तुम योगी रतननाथ से योग सीखो या कलम ग्रहण करो। जब गूगा योगी **रतननाथ** के पास जा रहा था तो रास्ते में उसे गुरु गोरखनाथ मिल गए। गुरु गोरखनाथ ने गूगा को योग शिक्षा दी और पुनः धरती से प्रार्थना करने पर आश्विन कृष्णा चतुर्दशी की शैली धरती नामक स्थान पर भूमि ने उसे घोड़े तथा शस्त्रों सहित अपनी गोद में समेट लिया।

उस समय वहां एक गड़रिया भेड़ें चरा रहा था उसने यह दृश्य देखा तथा वह भागता हुआ महल में माता बाछला के पास पहुंचा और यह किस्सा सुनाया। गूगा की पत्नी तथा माता बाछला उस स्थान पर पहुंची पर वहां कोई ऐसा संकेत या चिह्न न देख कर घबरा गई। गूगा की पत्नी सुरिहल रात को रोते–रोते सो गई। स्वप्न में उसने अपने पति को घोड़े पर सवार तथा भाला हाथ में लिए हुए देखा। सुबह उसने अपना स्वप्न अपनी सास बाछला को सुनाया जिसने उसको शेष जीवन पूजा–पाठ तथा भक्ति में व्यतीत करने का उपदेश दिया। उसकी प्रार्थना स्वीकार हुई और परमशक्ति ने उस गूगा को आदेश दिया कि प्रतिदिन अर्धरात्रि के समय वह अपनी पत्नी से मिलने जाया करे। गूगा ने उसकी आज्ञा को तत्काल मान लिया लेकिन उसके लिए एक शर्त रखी कि माता को उसके आने का पता नहीं चलना चाहिए।

एक दिन श्रावण मास के तीज के त्यौहार पर सारे मारु देश की सभी सुहागिनें सोलह श्रृंगार करके माता वाछला के पास पहुंची और उनसे अनुमति मांगी कि सुरिहल को भी साथ जाने की अनुमति दे दी जाए। माता बाछला ने एक सेविका द्वारा उसे अपने पास बुलाया तो वह सोलह श्रृंगार करके आई। उसने गूगा के स्वागत के लिए श्रृंगार किया था। इसी अन्तराल में सेविका ने जो कुछ देखा वह सब माता बाछला को बता दिया।

माता बाछला को संदेह हो गया कि उसकी पुत्रवधु गूगा को भुला कर शायद पतिता भी हो गई है। उसने वधु को सब कुछ सच–सच बताने को कहा। सुरिहल ने सच--सच बताने से साफ इन्कार कर दिया तो उसे बुरी तरह पीटा गया। जब उसे अधिक मार पड़ी तो उसने सब कुछ अपनी सास बाछला को बता दिया। बाछला को तब भी विश्वास न हुआ और उसे गूगा को प्रत्यक्ष दिखाने के लिए कहा।

अगली रात जब गूगा अपने निर्धारित समय पर आया तो बाछला उसके घोड़े की लगाम पकड़ने के लिए लपकी, परन्तु गूगा ने अपना अच्छादक वस्त्र भूमि पर लटका दिया और मां को कहा कि इसे उठाओ। जब वह उस वस्त्र को उठाने के लिए नीचे झुकी तो उसने घोड़े को एड़ी लगाई व अपना मुंह न दिखाने की उसी की आज्ञा को याद दिलाते हुए ओझल हो गया।

कालान्तर में मुहम्मद गौरी जब दिल्ली जाता हुआ दारूहेड़ा में पहुंचा तो उसकी सेना के ढोल अचानक बन्द हो गए और उसने इसका रहस्य मालूम करने पर गूगा की कथा सुनी और वचन दिया कि यदि मैं युद्ध में विजय होकर लौटूंगा तो इस स्थल पर सुन्दर मन्दिर बनवाऊंगा। इस प्रकार दारूहेड़ा की माड़ी (मन्दिर) को मुहम्मद गौरी ने बनवाया था।

गूगा पूजा की प्रथा

गूगा के इस पहाड़ी प्रान्त के कई स्थानों पर चमत्कार हुए। जहां–जहां वे दिखाई दिए, वहां–वहां लोगों ने उनके मन्दिर बनवाए और उनकी प्रतिमाएं तथा चिह्न उन मन्दिरों में स्थापित किए और लोगों ने अपनी रक्षा हेतु अपने–अपने गांव में छोटे–छोटे मन्दिरों को बना कर उनमें गूगा के नाम से चिह्न स्थापित किए।

हिमाचल प्रदेश में गूगा पूजा की प्रथा बहुत प्रचलित है। यहां रक्षा बन्धन से लेकर गूगा नवमी तक गायक जिन्हें **'मण्डली'** का नाम दिया जाता है, गांव–गांव जाकर गूगा की गाथा को गा–गाकर लोगों को सुनाते हैं। मण्डली में प्रायः आठ से दस लोग होते हैं जो कि दो भागों में बंट कर गूगा की गाथा को गाते हैं। पहले एक टोली गूगा गाथा को गाएगी फिर दूसरी टोली उसी प्रसंग को दोहराती है। मण्डली के मुखिया को **चेला** कहा जाता है। उसके हाथ में लोहे की एक छड़ी होती है जिसके सिरे पर सांप के आकार का मुंह बनाया जाता है, उस पर मौली बंधी होती है। मण्डली में एक आदमी के पास कांसे की थाली होती है। उस कांसे की थाली बजाने वाले को

बजन्तरी कहा जाता है। बाकी सब के पास डमरू होते हैं।

जब किसी घर में मण्डली पहुंचती है तो चेला, जो उस मण्डली का मुखिया होता है, घर के दरवाजे के सामने छड़ी गाड़ देता है और उस घर का कोई आदमी थाली या किसी अन्य बरतन में अनाज या कुछ पैसे, मौली या फिर कपड़ा इत्यादि उस छड़ी के पास रख देता है। इस अवसर पर प्रायः गूगल धूप का ही प्रयोग किया जाता है।

सबसे पहले मण्डली द्वारा आरती गाई जाती है उसके उपरान्त गूगा गाथा का कोई प्रसंग गा कर सुनाया जाता है। हर गांव या फिर तीन या चार गांवों का एक सांझा गूगा का स्थान होता है। उस स्थान पर प्रायः गूगा की मूर्ति बनी होती है। यह मूर्ति प्रायः पत्थर की होती है। मूर्ति द्वारा गूगा को घोड़े पर सवार दिखाया होता है तथा अन्य मूर्तियां प्रायः पत्थर की ही होती हैं जिन्हें **गूगा की सेना या सेवक** कहा जाता है। गूगा नवमी से कुछ दिन पूर्व गूगा स्थान की मूर्तियों को सफेद चूने से रंगा जाता है।

आठ दिन तक मण्डली द्वारा घर–घर जाकर गूगा गाथा का गान किया जाता है। नवमी वाले दिन पूरी मण्डली गूगा स्थान पर पहुंच जाती है तथा **गूगा गाथा** का गायन करती है तथा प्रसाद में मीठा रोट (गेहूं या मक्की के आटे से बनाई गई रोटी) बांटा जाता है। गूगा स्थान पर यदि किसी व्यक्ति को जादू टोना किया गया हो तो वहां पर खेल भी डाली जाती है जिससे जादू टोना करने वाले व्यक्ति का नाम या कोई निशान बता दिया जाता है तथा उसका उपाय भी बताया जाता है। खेल डालने वाले व्यक्ति के हाथ में **संगुल** (जो कि लोहे का बना होता है) दिया जाता है उसे जोर–जोर से हिलाता हुआ अपनी पीठ पर मारता है।

लोगों का यह विश्वास है कि इस दिन सांप गूगा की कार (सीमारेखा) में आ जाते हैं तथा किसी को कोई हानि नहीं पहुंचाते। यह प्रसंग गूगा गाथा में आता है जब वासुकी नाग ने गूगा से कहा था कि हम आपकी आज्ञा (कार) में रहेंगे तथा जहां आपका नाम लिया जाएगा हमारा वहां कोई वस नहीं चलेगा। यह वचन देकर वासुकी नाग ने गूगा से अपने वंश को बचाया था। मण्डली द्वारा हर घर में पहुंच कर "जय गूगा जाहर पीर" का जयकारा लगाया जाता है।

जब किसी व्यक्ति को सांप द्वारा काट दिया जाए तो जो धागा विष को रोकने के लिए उस व्यक्ति को किसी चेले द्वारा बांधा जाता है उस समय भी जय गूगा जाहर पीर का नाम लेकर ही बांधा जाता है। जब किसी व्यक्ति

का सर्प विष उतारना हो तो किसी बर्तन में अनाज रख दिया जाता है उसके पश्चात् विष झाड़ने की प्रक्रिया धूप इत्यादि जला कर शुरू की जाती है जिसमें जय गूगा जाहर पीर का नाम कई बार आता है। जब विष उतर जाता है तो उस अनाज या आटे का रोट गूगा के स्थान पर चढ़ाया जाता है। कई लोगों द्वारा यह मान्यता भी की जाती है कि यदि सम्बन्धित व्यक्ति ठीक हो जाए तो चांदी का सांप बनवा कर गूगा स्थान पर चढ़ाया जाता है।

हिमाचल प्रदेश के प्रत्येक भाग में गूगा की देवता के रूप में मान्यता है। यह तीन रूपों में पूजा जाता है।

1. यह सांपों से रक्षा करने वाला देवता है।
2. यह जादू टोने के प्रभाव से मुक्त करता है।
3. यह हर इच्छा पूरी करने वाला देवता है।

इन उपरोक्त तीनों रूपों के लिए मीठा रोट, गूगल धूप, गूगा स्थान, गूगा मण्डली का विशेष सम्बन्ध रहता है। गूगा नवमी प्रतिवर्ष भादों नवमी को होती है।

गूगा एवं नाहरसिंह वीर का सम्बन्ध

राजस्थान में प्रचलित लोक कथा के अनुसार नाहर सिंह को भी गूगा के साथ ही उत्पन्न हुआ बताया गया है तथा बाद में गूगा का वजीर भी बना। इस तरह दोनों का आपस में घनिष्ठ सम्बन्ध है। इस सम्बन्ध की सत्यता का पता गाथा में गूगा पूजा के साथ वीर पूजा का अंश भी आता है तथा गूगा स्थानों पर नाहर सिंह जी की मूर्ति भी पाई जाती है। इसी से इस प्रसंग का पता चलता है कि गूगा एवं नाहर सिंह में गहरा सम्बन्ध है। जब कोई चेला नाहर सिंह जी की पूजा अर्चना करता है तो सबसे पहले वह एक वंशावली के रूप में इस प्रकार व्याख्यान करता है :–

राजे पाल का पडपोता, भूमिपाल का पोता,
राजे अजमेर का बेटा, माता सोनी का जाया,
गढ मारूए का राजा कहलाया।

इस प्रकार हिमाचल प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में गुग्गा पूजन की परंपरा है तथा यहां के लोग पूरी श्रद्धा, आस्था के साथ गुग्गा की पूजा करते हैं।

❑❑❑

हिमाचल प्रदेश में गुग्गा परम्परा

ISBN : 80-86755-60-8